

श्रीमद् बुद्धिसामर सुरिजी यथमाला यंथांक ६० मणकी

शास्त्रविशास्त्र योगनिष्ठ जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागर सरिजी विरचित.

॥ पूजा संग्रह ॥

सार्णद संघ तथा गोधाबी संघना जैन सद्गृहस्थोनी दृष्य सहायथी.

_{छपावी मसिद्ध} करनार, श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मंगल हा. वकील मोहनलाल हीमचंद.

मु. पादरा.

आहत्ति पहेली. प्रत १०००.

संवत १९७९ सन १९२२ महावीर सं. २४४९.

आ पुस्तक मळवानुं ठेकाणुं— वकील मोहनलाल हीमचंद्र. पाद्रा. (गुजरात) तथा गांधी आतमाराम खेमचंद्र. साणंद्र. (गुजरात)

श्री प्रजाहिताथ सुद्रालय प्रेसमां पटेल, डाह्याभाइ दलपनरामे छाप्युं ठे० शाहापुर नवीपीळ —अमदावाद.

निवेदन.

अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मंडळ तरप्रश्री, श्रीमद् बुद्धिसागर ग्रन्थमाळाना ६० मणका तरीके पूजा संग्रह ग्रन्थ के जेना रचयिता, शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिनी छे ते सं. १९७९ नी सालगां पारंभमां वहार पडयो है. तेनी किंगत रु. १-०-० राखनामां आवी छे. सुरिजी महाराज साहेबनी रचेछी प्रजाओं अपूर्व भाव रसवाळी अने अध्यात्मज्ञानभिकरसथी भरपूर छे. आ प्रन्थ छपाववामां सद्गृहस्थ जैनो तरफथी भेट मळवाथी किंपत जूज राखनामां आनी छे, आ मंडळ तरफथी सस्ती किंतते पुस्तको वैचाय छे, तेम जैन कोम सारी रीते जाणे छे. मंडळ तरफर्थी अनेक पुस्तको छपावीने वहार पाडवानी इच्छा थाय छे पग धन-वंतोनी मदत विना ते कार्य बनी शके तेम नयी. मंडळनी पासे उत्तम फंड नथी. छतां ते सहायकारकोनी मद्द्रशी उत्तम पुस्तकौ बहार पाडया करे छे. जे जे गृहस्थोए आ पुस्तक छपाववामां धननी मदत करी छे तेओनां मुवारक नामोने अत्र धन्यवाद पत्रमां छपान बवामां आव्यां छे, तथा तेओए केटला रूपैयाची मदत करी छे ते पण धन्यवाद पत्रमां जणाव्युं छे. अध्यात्मज्ञानगसारक मंडल तरफ-

थी तेओने धन्यवाद आषवामां आबे छे. जेओ अन्य पुस्तको छपान नवामां सहाय करशे तेओनो उपकार मानवामां आवशे अने पुस्तन कोमां आपेला रुपैयानी यादी सहित तेओनां नामोने अक्षरदेहथी अमर करवामां आवशे.

> म्र. पादराः अध्यातमप्रसारक मंडळः सं. १९७९ कार्तिक पूर्णमाः

धन्यवाद.

आ पूजासंग्रह ग्रन्थ गुरुराजश्री शास्त्रविशारद् जैनाचार्य योगनिष्ठ श्रीमद् बुद्धिसागरजी महाराज ज्यारे संवत १९७७ नी सम्छन्तुं
चोमासुं श्री संघना आग्रहथी साणंद्रमां विराजता हता, त्यारे महेता
त्रिश्चवनदास तथा चुनीलाल जमेद वगेरेण पोताना भाइना स्मरणार्थे
प्रसिद्ध करवा सहाय आपवानुं जणाव्याथी तेमनी विनंतिथी मुख्महाराजे रच्यो छे. केटलोक भाग साणंद्रमां, केटलोक भाग पहेसाणामां अने केटलोक भाग गुरुराजश्रीण पोतानी जन्मभूमि
विजापुर शहेरमां बनावेल छे. आ उपयोगी ग्रन्थना प्रकटार्थे नीचे
जणावेल बंधुओ तरफथी द्रव्य सहाय मळी छे माटे ते आपनार
अने अपावनार अने अपाववानी अनुमोदना करनार सबेने धन्यवाद
आपवामां आवे छे तथा द्रव्य सहाय सबेनी नोंच लेवामां आवे छे.
सद्ज्ञानना प्रगटार्थे द्रव्य सहाय सबें करतां अति उत्तम अने प्रशंसनीय छे, अने तेनुं फळ अनहद छे. ते दानबीरो जाणताज हरो.

२००-०-० महेता गोविंदजी उमेदभाइना स्मरगार्थे महेता त्रिश्च-वनदास तथा चुनीङाल तथा तेपना पुत्र दलसुख-भाइए आप्या. मु. सार्णद

१००-०-० महेता रायचं स्भाइ स्वचंदभाइए पोताना पुत्र त्रिश्चवन-ना स्मरणार्थे म्र. साणः

Ę

- १२५-०-० बाइ मोंघी महेता रायचंद करसनभाइनी पत्नीए आप्याः मु. साणंद
- १८०-०-० गांत्री वाडीलास रायवजीनी व्हेन हरकोरे संवत् १९७८ ना कारतक वदि ६ ना रोज गोधावीनो संज काढयो त्यारे आप्या ते. म्रु. साणंद

५०-०-० एक ग्रहस्थ. म्र. साणंद

१५०-०-० शेठ छमनलाल मीगामाइ. म्रु. साणंद

२५०-०-० शेठ भोगीलालमाइ वीरचंदभाइ जे. पी. गोधावी हाल अमदावाद तथा मुंबई.

खप्ती विगते आ ग्रन्थमां मदद मळी छे. संवत १९७८ ना कारतक बदि ६ ना रोज वाडीलाल राघवजीए गोधावीनो संघ काढ्यो इतो, ते संग्रमां गुरुराजश्री पधार्या इता. ते वखते गोधावीमां साणंद्थी आवेला संग्रने प्रेमजमण नवकारशी आपवामां आव्युं इतुं. अत्रे शेठ अमृतलाल केवळदासनी पेरणाथी पुस्तक प्रसिद्ध करवामां का. ५००) नी मदद मळी इती. जे पकें हि. २५०) नी नोंध आ अन्थमां लेवामां अत्वी छे. साणंदमां श्रीसागरमच्छमां घणाज वख-तथी एक खपाश्रयनी खामी इती ते दूर करवा महेता रायचं हिं

²⁰⁰⁴⁻⁰⁻⁰

सनभाइनी विधवाए रु. १०००) दसहजारनी मदद आपवाथी बाकीना रुपीया श्रीसागर संघना काढी एक भन्य धर्मशाळा (उपाश्रय) बंधावेल छे. आ प्रमाणे आ पुस्तकना प्रसिद्ध करवा अर्थ जे जे बंधुओए सहाय आपी छे ते सर्वेनो अंतःकरणपूर्वक आभार मानवामां आवे छे. भविष्यमां आवा अनेक ग्रन्थो मगट करवामां तेओ सहायक बनो, एम अंतःकरणनी उंडी लामणीयी इच्छिनवामां आवे छे.

हि. अध्यात्म झान प्रसारक मंडळ तरफथी. वकील शा. मोहनखाल हिमचंदभाइ. स. पादरा.

संवत १९७९

अने सद्गुरु चरणोपासक किंकर. शा. त्र्यात्माराम खेमचंद. ग्रु. शाणंद. C

॥ पूजा संग्रह उपोद्घात.॥

अनादिथी परमेश्वर छे अने तेनी पूजा पण अनादिकालथी छे. दरेक तीर्थकरनी अपेक्षाए आदि छे एम अपेक्षाए ज्ञानीओ जाणे छे. जल, चंहन, पुष्प, घूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल वगेरे पूजानां साधन वस्तुओं छे. अंगपूजा, अग्रपूजामां साधन वस्तुओंने उपचारे पूना कहेवामां आवे छे. द्रव्य पूजामां जलादि साधन पूजानो समा-वेंश थाय छे. भावना, श्रद्धा, पीति, प्रधु गुणोनी स्तवना, तथा व्रतादि गुणोवडे पश्चनी स्तवना करवी. पश्चनी पश्चना गुणो गाइ श्रद्धा पूर्वक मक्ति करवी, प्रश्नना द्रव्य अने गात्र अतिश्रयोनी स्तुति करवी. इत्यादि मानसिक सेवा भक्ति श्चभ परिणामनो अने स्तुति पूजामय शब्दोनो भावपूजामां समावेश थाय छे. द्रव्यपूजा अने भाव-पूजा ए बे भेद पण प्रश्चनी सेवा भक्तिरूप छे अने एवी सेवा भ-किमां मितश्चत ज्ञान पण अंतरमां नाम्रत् होय छे, तेनी साथे चारि-त्रनी भावनाओ पण चल्लसे छे झानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, जगत्मां अनादिकालथी सर्व देशमां अनेकरूपे होय छे. साधनम[्] क्तिनी अपेक्षाए भावभक्तिना पण अनेक भेद पडे छे. दरेक धर्ममां भक्तिने प्रश्ननी प्राप्तिनुं साधन पानवामां आव्युं छे. केटलाक पतवा-ळाओ प्रश्च परमात्माने साकार मानीने तेमनी भक्ति करे छे. ग्रुस-ल्मानो अल्ला खुदाने अनंत नूरनो दरियो मानीने पश्चनी भक्ति करे छे. वेदांतीओमां केटलाक मतवादीओ-रामानुज, रामानंह, मध्य,

निवार्क, वल्लभाचार्य, स्वामीनारायण वगेरे परमेश्वरने साकार माने छे अने भक्तोना उद्धार माटे परमेश्वर वारंवार जन्म अवतार ले छे एम माने छे. रामानुज वल्लभाचार्य मतवादीओ परमेश्वर सदा सा-काररूपी रहे छे एम माने छे. शंकराचार्यवाळा वस्तुत: परमात्माने नि-राकार माने छे अने विवर्तवादनी दृष्टिए परमेश्वरनां अमुक प्रतीको कल्पीने तेने साकार इश्वर तरीके माने छे. नैयायिको अने वैशेषिको परमेश्वरने निराकार माने छे. पतंत्रिष्ट पातंत्रलयोगदर्शनमां पर-मात्माने निराकार मान्यो छे. आर्य समाजीओ परमेश्वरने निराकार माने छे. स्त्रीस्तिओ परमेश्वरने साकार माने छे. बौद्धो परमेश्वरने साकार तथा निराकार माने छे. जैनो परमेश्वरने साकार तथा नि-राकार माने छे. हिंदुओ, ग्रुसलमानो, खिस्तिओ, जैनो, बौद्धो अनेक दृष्टिविदुओनी अपेक्षाए परमेश्वरनी द्रव्यपूजा तथा भावपूजाने माने छे. द्रव्य ते भावनुं कारण छे. साधनथी साध्यनी प्राप्ति थाय छै. ज्यां सुवी केवलबानी परमात्माओ अघाती कर्मना योगे शरीरमां रहेला होय छे त्यां सुत्री ते साकार परमेश्वरो छे. अने सर्व कर्मथी रहित थे सिद्रबुद्ध परमात्मा थाय छे त्यारे ते निराकार परमेश्वर तरीके गणाय छे. साकार परमेश्वरमां अरिहंत, जिन, आचार्य, उपाध्याय अने म्रानि गुरुनो समावेश थाय छे. अष्टकर्म रहित सर्व शुद्धात्माओनो निराकार परमेश्वरमां समावेश थाय छे. आत्माना असंख्य प्रदेशो अने तेमां रहेल अनंतज्ञान ज्योतिने अनंत नूर तेज सागर कहेवामां आवे छे. श्रद्धामीति ज्यां छे त्यां अवस्य प्रतिमा

8.

पूजा अहि स्वयमेव पगटे छे. प्रेम त्यां प्रतिपा पूजा छे. साकारना प्रेम-यी साकारनी पूजा यह छे. अने निराकारना पेमथी निराकारनी पूजा याय छे. साकारनी पूजा सिद्ध थया बाद निराकार पश्चनी पूजा यह कर्के छे. बाल जीवो, साकार पश्चओनी भक्ति करीने हृदयनी शुद्धि करी क्रके छे. हृदयनी शुद्धि थया पछी झान पगटे छे अने ते झानथी निराकार पश्चनी ध्यानरूप पूजा थाय छे. साकार पूजा ए प्रथम मोक्षमार्गनुं पगथियुं छे. साकार पूजा करनार साकार पशु अने तेना वियोगमां साकार प्रभुनी तथा गुरुनी पतिमानुं पूजन करे छे, तेनी दृष्टिमां पतिमामां साकार प्रभुनुं स्वरूप रमी रहे छे।

साकार प्रश्ननी द्रव्य पूजाना अधिकारी गृहस्थो छै अने प्रश्ननी भाव पूजाना अधिकारी ग्रुनियो छे. जेवा प्रश्नमां शुद्ध ज्ञानादि गुणो छे तेवा पोताना आत्मामां सत्ताए गुणो छे. प्रश्ननी श्रद्धा प्रीतिथी प्रश्नना गुणो प्राप्त करवा माटे प्रश्न पूजानी आवश्यकता छे. प्रश्ननी पूजा मिक्त करतां आत्मामां रहेला सद्गुणो प्रगटे छे अने आवरणो टळे छे. प्रश्नना जे जे गुणोनुं बहु मान स्तवन करवामां आवे छे ते ते गुणो पोताना आत्मामां तिरोभावे—सत्ताए रहेला होय छे ते प्रगट थाय छे. प्रश्नना गुणोनुं बहु मान पूजा ते वस्तुतः पोताना आत्मानी पूजा छे, कारण के तथी पोताना आत्मानी शुद्धि थाय छे अने गुणो प्रगटे छे.

ज्यारयी मनुष्यो छे त्यारथी गमे ते भाषामां अनेक रीते प्र-भुनी स्ट्रितिद्वारा पूजा करवानो रीवाज पवर्त्या करे छे श्री ऋषभदेव

प्रभुषी ते श्री महावीर प्रभुनी पूजाओ ते ते कालमां ते ते देशमां त्रवित भाषाद्वारा थती इती. पश्चनी पूजामां मुख्यभाव मेम होय के अने ते गमे ते भाषाद्वारा बहार आवे छे. पश्चना गुणोनी श्रद्धा बीति भावनाने भक्तो गमे ते भाषाद्वारा बहार मगट करे छे. पूर्वे संस्कृत भाषा अने प्राकृत भाषाद्वारा जैनो प्रभुनी पूजानां गानो गाता इता. संस्कृत पाकृत भाषादिद्वारा प्रभुनी पूजा अने व्रतादि गुणी-हारा यती प्रभु पूजाद्वारा जैनो प्रभुनी मक्ति करता हता. सोळमा वा सत्तरमा सैकाथी गुजराती भाषामां प्रमुनी पूजाओ रचावा हागी. श्रीसकलचंद्र उपाध्याये श्रीसत्तरमेदी पूजा रची ते पहेलांनी पुजाओ रचेली न जाणदामां आवे त्यां सुधी गुजराती भाषामां प्रथम पजाना रचयिता श्रीसकलचंद उपाध्यायजी गणावाना. श्रीसकल-चंद्रजी उपाध्यायजी पश्चात श्रीयञ्चोविजयजी उपाध्याय, श्रीज्ञानविषरु सूरि, श्री विजयलक्ष्मी स्र्रि, श्री पद्मविजयंजी पंन्यास, श्रीरुपविज-यजी पंडित. श्री वीरविजयजी पंडित. आचार्यश्री विजयानंद सूरि. पन्यासश्री गंभीर विजयजी. श्रीमान इंसविजयजी. श्रीमान बळुभविजय-जी वगेरे आज सुधी पूजाओ रचनार थया **छे. खरतरग**च्छ, अंचलग-च्छ वगेरेमां गुजराती भाषामां पूजाओना रचनार अनेक सूरि पंडित म्रुनि थया छे अने भविष्यमां घणा थरो. पूजाओ भणाववानो वितांबर जैनोमां घणो रीवाज छे. सर्व पूजाओमां नव पदनी अने वीश स्थानकपदनी पूजाओ वधारे भणावाय छे. उपाध्यायजी श्री यशोविजयजी, श्रीमद् देवचंद्रजी अने ज्ञानविषळजी सुरि ए त्रण-

नी नवपदनी स्तुतिनो संग्रह करीने कोइए नवपद पूजानी योजना करी छै. खरतरग्र अने तपागच्छ बन्ने पां:ए नवपहनी पूजा भणावाय छै. श्री विजयलक्ष्मी सूरिकृत वीशस्थानकनी पूजानी जैनोगां घणी प्रसिद्धि छे. विद्वानो ते पूजाने भणावी विशेष हर्ष पामे छे. पूर्व पुरुष ग्रुनिवरोनुं अनुकरण करीने मारावडे प्रसंगोपात्त केटलीक पूजाओ रवाइ छे ते आ पूजा संग्रहनुं पुस्तक वांचतांज वांचको जाणी शकशे.

मारी बनावेली पूनाओ— नसो, विनापुर, साणंद, महुडी (मधुपुरी) मेसाणा, प चार गामगं रचायेली छे. दरेकमां पूना रच्यानो संवत् छे विशेषमां गुरुपूना अने पश्च महावीर देवना यक्ष तरीके श्री घंटाकण महावीरनी पूनाओं छे. श्रीना, चोथा अने पांच-मा परमेष्ठीमां गुरुतत्त्वनो समावेश थाय छे. श्रीमद् रविसागरनी गुरु महाराज अने श्रीमद् सुखसागरनी गुरु महाराज, ए वे परम उप-कारी गुरुओना गुणनी पूजा रचवामां आवी छे. गुरुनी पादुका तथा मूर्ति आगळ अगर अन्यत्र गुरुनी स्थापना करी गुरु पूजा भणा-ववी. नवपदनी पूजामां अरिहंत, सिद्धनी पेठे आचार्य, वाचक, तथा साधुनी पूजा छे. गुरुमां आचार्य, वाचक, सिद्धनी पूजा भणतामां आवे छे. पूजाओनी चोपडीओमां दादानी पूजा परित्रपात्र चृहामणि थया छे, माटे तेमनी पूजा रचेली छे, गुरुमको गुरुगुण-

₹₹

रागीओ गुरुनी पूजा भक्ति करे तेयी तेओना आत्मानी शुद्धि थाय है. श्री घंटाकर्ण पहाबीर ए जैनशासन देव है. शांतिस्नात्रमां अष्टो-त्तरी स्नात्रमां अने प्रतिष्ठा विधिमां श्री घंटाकर्ण वीरनी स्थाली यंत्र-वाळी पंत्रीने वेदिका उपर स्थापवामां आवे छे. श्री सकलचंद्रजी जपाध्यायजीए प्रतिष्ठा विधिनी संस्कारित योजना करी छे. शांति-स्नात्र अने अष्टोत्तरी स्नात्र विधिनी योजना पण तेमना वखतमां तथा जगद्गुरु तपागच्छ गगनभातु समान श्री हीरविजयजीना बखतमां थएली छे अने ते बखते आचार्योप जैनकासन देवता तरीके श्री घंटाकर्ण महावीरनी प्रसिद्धि करी छे अने ते परंपरा आज सुधी तपागच्छमां चाली आवे छे. श्री महुदी (मधुपुरी) गाममां शासन यक्ष तरीके श्री पद्मप्रभु जिनेश्वर देवनी आगळ एक देरी करी श्री बंटाकर्ण महावीरनी मूर्तिनी अमोए मितिष्ठा करी छे. ते शासनयक्षनो चमत्कार प्रभावक सर्वत्र विस्तार पाम्यो छे. घंटाकर्ण कल्प वाच-बायी तेमनो प्रभाव समजारो. जेटला श्वासन देवो अने देवीओ छे तेओ समिकत धारी छे तेओ साधर्मिक बंधु तरीके छे. गृहस्थ श्रा-बको जैनो तेमनी शासन प्रभावक साधर्मिक तरीके सेवा भक्ति करे है अने तेथी शासनयक्ष देवो. गृहस्थ जैनोने धर्म साधतां संकट पडे हे ते काले सहाय करे छे. अमोए यहस्य जैनोने साधर्मिक देव तरीके तेमनी पूजा भणाववानो तेमनी मूर्ति आगळ अधिकार छे एवं जाणी तेओ माटे पूजा रची छे के जेथी जैनो पोते, मिध्यात्वी देवो अने देवी-

\$8

ओनी सहाय छंडीने समिकती देवदेवीओनी सहाय पामी शके—सम्मि-दिही देवा दिंतु समाहिंच बोहिं च (वंदितासूत्र) ए वाक्यथी श्रावकोए सम्यग्दृष्टि देवोने कहुं छे के हे सम्यग्दृष्टि देवो ! अपने समाधि अने बोधि—समिकत आयो. सम्यग्दृष्टि गृहस्थ जैनो सम्यग्दृष्टि देवदेवीना गुणोनुं स्तवन करी तेओनी द्रव्यपूजा करी शके छे. अष्टादश दोष रहित परमात्मा महावीर जिनेश्वरना सम्यग्दृष्टि देवो अने देवीओ सेवको छे अने ते जैनशासननी प्रमानवामां मदत करे छे. तेमने साधर्मिक समिकतदृष्टि देव तरीके मानवा पूजवामां दोष नथी. चक्रेश्वरी पद्मावती, माणिभद्र वगेरेनी देरासरोमां श्रावको पूजा करे छे तेम घंटाकण बीरनी मूर्ति आगळ तेनी स्तुति करी तेनुं पूजन करवं ए जैन शासननी सेवा करनार देवनी मिक्त छे.—

पूजा भणावनाराओए हानी मुनि वगेरेनी सेवा भक्ति करीने तेओनी पासेथी दरेक पूजाना अर्थ धारवा. दरेक पूजाना रागने धारवा. पूजाने सारी पेठे यातां श्वीखवुं. पूजानां साहित्य तरीके जे जो वाजित्र योग्य छागे ते वगाढतां श्वीखवुं, जे पूजा भणाववानी होय तेनो भावार्थ मयमयी समजी छेवो. एक सरखी रीते सर्व गानाराओए तालबद्ध गावुं. मुखे खेसनो छेढो राखवो पूजा एक सरस गानार उपाढे अने बीजा पालल ते पद्य गाय, वच्चे कोई जात्वनी गरबढ थवा न दे, वच्चे आढी अवळी वातो न करे, प्रभुना सन्मुख दृष्टि राखे, जे पूजामां जेवो भाव होय तेवो परिणाम भारण

१.५

करे. प्रश्न वीतरागना गुणोनुं बहु मान करे अने आनंद्थी गायतो पूजा भक्तिनुं वातावरण एवं छवाइ जायके जेथी तद्धेतु अनुष्टान अने अगृत अनुष्ठाननों आनंद रस प्रगटे. जिन पंदिरमां पूना भ-णावती वावते सर्वे श्रावकोए नियमसर बेसवुं. पूजा भणाववामां विधिनो खप करवो अने आशातनाना दोषो टाळवा. वेठनी पेठे पूजा न भणावनी. मोक्ष माटे पूजा भणावनी. सुद्ध भक्त स्नात्रीयाओ करवा. पतासांनी लालचेज प्रनामां सामेल थवुं ते विषानुष्ठान छे, माटे पूजा भणाववामां, गावामां अने पूजा श्रवण करवामां खास लक्ष्य राखबुं. गातां आवडे, सारुं गानारा गवैयाओ गाय, बाहिरनी सारी घामधून देखाय; तेटला माटेज पूजामां जबुं एवं न धारवं. परंतु सारी रीते गावुं. पूजाओ गातां तेना अर्थनो विचार करवो, आत्मामां प्रश्च भक्तिनो हर्षोडलास पगटाववो अने पश्चवीतरागना गुणोने पगटाववा खास लक्ष्य राखी सर्व पूजानी सावन सामग्री सेववी अने साध्य लक्ष्यनो केन्द्रसमान उपयोग मूली न जवी. श्री-मद देवचंदजी महाराजे कहुं छे के.

> स्वामी गुण ख्रोलखी स्वामीने जे भजे, दर्शन शुद्धता तेह पामे; ज्ञान चारित्र तप वीर्य उड्लासची, कर्म जीपी वाशे मुक्ति धामे, तार ॥

महावीर देवना गुणोनो प्रथम जाणी अने पछी मशु महा-वीरादि देवनी जे पूजा सेवा करे छे ते आत्माना सम्यम् दर्शननी शुद्धता प्राप्त करे छे. सम्यम् दर्शननी शुद्धताना बळे ज्ञान चारित्र तप वीर्य गुणना उल्लासने प्रगटावीने ते आत्माना शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्र गुणने पामीने तथा अष्ट कर्मनो क्षय करीने ग्रिक्त धाममां वसे छे. प्रथम ज्ञान प्राप्त करीने पश्चात् पूजा वगेरेनी क्रिया करवी. गाडरीया प्रवाहनो त्याग करी प्रथम पूजाओं सारी रीते ज्ञान करवं. विद्वान साधु गुरू अने दक्ष श्रावक पासेथी पूजाओना अर्थ धारवा. प्रवी रीते पूजाना गीतोद्वारा प्रश्वनी पूजा करवाथी श्रावको मोक्षपदने पामे छे, त्यागी ग्रुनियो प्रश्वनी आगळ भावनाथी पूजाओ गाइ शके छे पण द्रव्य पूजा करता नथी. कारण के तेओए द्रव्य पूजानो त्याग करेलो छे. पूजा भणावतां आत्मोल्लासथी अनेक क-भैनी वर्गणाओनो क्षय थाय छे.

में यथाशक्ति पूजाओ रचवामां प्रयास कर्यों छे. समिकत दृष्टि-वाळा जीवो श्री कृष्णनी पेठे तेमांथी गुण सार प्रहण करशे अने निध्यादृष्टियो काकनी पेठे दोषो जोशे. गुणानुरागी जे भक्तो हशे तेओ अवश्य फल मास करशे.

वसो गामना संघना आग्रद्थी पहेली अष्ट प्रकारी पूजा रच-वामां आवी इती अने स्यां प्रथम देरासरमां भणावी इती. वास्तुक पूजा विजापुरमां वकील. शा. रीखबदास अग्रुलेख, दोशी. नथुभाइ

मेळाचंद वगेरेना आग्रहथी रचवामां आवी हती अने प्रथम रोट. रीखबदास अम्रुलेखना नवा घरमां भणावी हती. पोटी नवपदनी पूजा पथम महुद्दी गाममां श्रीपद्ममञ्जूनी आगळे विजापुरनी अने सार्णंद श्रावकनी टोळीए सारी रीते भणावी हती. पुजासंग्रहमां आपेली पूजाओ जोवाथी मालुम पडरो के ते ज्ञानदर्शन चारित्ररूप मोक्ष मार्ग छे. व्यवहारनय अने निश्वयनय एम वे नयनीस्या द्वादशैलीथी अनेकांतनय सहित पूजाओ रचेली छे. तेनो भाव उत्तप क्रे. गीतार्थमध्यस्थभावी गुणानुरागी मुनियो पासे तेनो भावार्थ धारवी. पूजाओमां रुचिभेदे कोइने कोइ रुचे छे अने कोइने कोइ रुचे छे. रुचिज्ञानमेदे जुदी जुदी पुजाओ सर्वने रुचे छे. पूजानो सार ग्रहण करवो एजाओ पकेी जेना जे अधिकारी हरो ते तेने ग्रहण करी भणावशे अने फल पाप्त करशे. पुजासंग्रहने छपाववामां सार्णद संघना श्रावकोए आगेवानीभर्यों भाग लीघो छे. शेठ गोविंद्जी उमेदनी पाछळ तेमना भाइ त्रिभोवनदास तथा चुनीलाले तथा भाइ दलसुखभाइए धर्मदान करेलुं, तेओए तेमनी नाम स्पृति माटे पूजाओ वगेरे रचवानो आग्रह कर्यो, तेथी निमित्त पामीने बाकीनी केटलीक पुजाओ रचाइ छे. पुजासंग्रह छपाववामां जे जे श्रावकोए धननी सहाय करी छे तेओने धन्यवाद आपवामां आवे छे. पूजासंग्रह प्रथमाद्यतिमां जे कंड स्वलन, भूल, दोष रहेल जणात्रे तेने द्वितीयावृत्तिमां सुधारी लेवामां आवरो अने बनरो तो बीजी पण केटलीक नवीन पूजाओ

रची दाखल करवामां आवशे. पूजासंग्रहनां मुफ सुधारवामां मिन कीर्तिसागरे मदत करी छे तेथी तेने धन्यवाद आपवामां आवे छे. जे कंइ बीतराग महावीर पश्चनी आज्ञा विरुद्ध लखायुं होय तेनो मिच्छामि दुक्कडं देवामां आवे छे. पूजा भणायनारा अने श्रवण करनाराओना हृदयमां सेवाभक्ति पूजाना परिणामनी हृद्धि मृद्धि थाओ.

> इत्येवं ॐ अहँमहावीरशांतिः ३ मु. महेसाणा. सं. १९७९

पूजासंग्रहनी प्रस्तावना,

शास्त्रविशारद-कविराज, जैनाचार्य श्रीगद् बुद्धिसागर सुरिकृत वृजासंग्रह खरेखर ज्ञान भक्तिरस अने चारित्र भावरसनो सागर छे. श्रीमद्नी रचेली पूजाओमां भाव ग्रुख्य छे. जे जे विषयनी पूजा रचेली छे तेनुं उत्तम हार्दिक स्वरूप चितर्यु छे, एटलुंज नहि परंतु तेमां स्थळे स्थळे तेमना उद्गारो के जे ज्ञान भक्तिरसमय छे ते दे-खाय छे. कर्तानुं ज्या हृदय नीतरे छे ते काव्य छे. आनंद रसना **उभरा अने अनुभव ज्ञानना उभराओ** ज्यां त्यां पूजाओमां वांचतां अनुभवाय छे ते सहृदय साक्षर पूजानुभवी भक्तो स्वयमेव जाणी शकरो. गुरुमहाराजे रागों के जे पूजाओमां प्रचलित छे तेमां पूजाओ रची छे. केटलीक पूजाओने रागणीओमां पण रची छे. पंचधा योग पूजा, अष्टांग योग पूजा, दानशीयल तपजाव पूजा, पडावश्यक पूजा, महावीर जनम जयंती पूजा वगेरे पूजाओ के पहेलां कोइए रची नहोती एवी पूजाओ रचीने तैपणे पूजारसिकोने नवीन पूजाओना आनंदरस आस्वादन प्रति आकर्ष्या छे. गुरुपहाराजनी रचेली पूजाओमां पासानुपास, झडझ-मक साथे आध्यात्मिक ज्ञान भक्ति चारित्र रसनो प्रवाह वह्या करे छै. तेपनी रचेली पूजाओ घणे ठेकाणे भणाव शनी इच्छावाळा श्रा-नको ज्यां त्यां गामोगाम पूजासंग्रह बहार पडया पहेलां अगाउथी

मागणीओ कर्या करे छे. अष्टमकारी तथा वास्तुक पूजा आजसुधी घणा गामोमां शहेरोमां भणाववामां आवी छे. तेमनी रचेली नवप-दनी भोटी पूजा पहेळवहेळी विजापुर पासेना महुडी गाममां विजापुर तथा सार्णंदनी श्रावक टोळीए भणावी हती. गुरुश्रीए सत्तरभेदी पूजा एक दिवसमां पांच कलाकमां रची पूरी करी हती. पंचपरमेष्टी पूजा. षडावश्यक पूजा, अष्टांगयोग पूजा तथा पंचधायोग पूजा वगेरे पू-जाओ एकेक दिवसमां चार चार पांच पांच कलाकमां रची पुरी करी हती. गुरुमहाराज ज्यारे पूजा रचवा बेसे छे त्यारे गद्यना ल-खाणनी पेठे सपाटावंध पूजाओ रची दे छे. शीघ्रकवि तरीके तेओ जाहेर हो. तेओए भजन पद्यसंग्रहना आठ भाग रची बाहेर पाड्या छे. तेमनी रचेली सत्तरभेदी पूजानो भावार्थ, आध्यात्मिक दृष्टिए **उत्तम छै. वीश स्थानकनी पूजामां थोडी गायाओमां घणो भाव** समान्यो छे. पहेलांनी अनेक पूजाओ छे. हाल पण केटलाक पंडित मुनिवरीए पुजाओ रकेशी छै. भिन्न रुचिवाळा छोको छे तेथी आ पूजाओना रुचिवाळा जे छोको छे तेने आ पूजाओ भणावतां घणो भक्तिरस प्रगटशे तथा भविष्यमां जेओ आवी पूजाओनी रुचिवाळा जीतो प्रगटरो तेओने आ पूजाओ घणी उपयोगी थे पडरो. आचार्य महाराजजी भविष्यमां बीजी पूजाओ प्रसंगोपात्त रचे एवो संभव छे. आ पुजासंग्रहनी आरहित रूपी जतां बीजी आरहित छपावतां भविष्यमां रचारो ते पूजाओने पण आ पूजाओना सुधारा वधारा साथे दाखल कावामां आवशे.

सज्जनो गुणानुरागी होय छे. दुर्जनो काकना जैवा दोष दृष्टि-बाळा छे. दुर्जन इर्ध्याळुओ तो छता गुणने पण अवगुण तरीके दे-खाडवानो प्रयत्न करे छे अने पयमांथी पूरा काढवा जेवी चेष्टा करे . छे, एवा इर्ग्याळुओ उत्तम पूजाओ अने तेना रहस्यने दोषरूप देखा*-*डवा प्रयत्न करे तेथी सज्जन गुणानुरागी समजु जनोने खराव असर थती नथी. जेओने सम्यग् दृष्टि पगटी होय छे तेओ तो श्री कृष्णनी पेठे ज्यां त्यां सारू देखे छे तेनी प्रसंशा करे छे अने गूण-नारागी वने छे. जैन कोममां आचार्य महाराज साहेब जेवी प्रभाव-बाळी अल्प व्यक्तियो हो. तेमणे जैन कोमपर घणो उपकार कर्यो छे. जैनो अने हिंदुओं वगेरे सर्व कोमोमां, राजा रजवाडाओमां जैनाचार्य गुरु महाराजनी प्रतिष्ठा भारी छे, सर्व दर्शनवाळाओ ते-मना लेखोने ग्रन्थोने पेमभावथी वाचे छे. गुरु महाराजना रचेला अनेक ग्रन्थो है. ग्रन्थमाळाना मणकामां आ ग्रन्थथी वधारो थयो है. तैपना हाथे विश्व लोकोनं कल्याणथाय एवा म्रन्थो हजी घणा ललारो एती इच्छा राखीए छीए. पूजाओमां ज्ञानदर्शन चारित्रादि गुणोनी भक्ति स्तृति अने ज्ञानादि गुणीओनी भक्ति करवामां आवे छे अने ब्रत गुणोनी रुचि पगट थाय एवी भावना होय छे. आत्मानी छुद्धि करी आत्माने परमात्मा बनाववो अने अनंत जन्म जरा मरणना दुःखथी मुक्त थवुं एज सर्व शकारनी पूजाओनो मूळ उद्देश अने उद्देश ग.मी पूजाओनो भावार्थ होय छे. वाचको एपूजाओ गाइने वेसी न रहेतुं पण तेनो भावार्थ ग्रहवो, सांभळी सांभळी फुटचा कान-वाची वाची

फूटी आंख, गाइ गाइ थाक्युं मुख, एम गाडरिया प्रवाहे चालतां पूजानुं अने तेमां कहेवा भावनुं रहस्य समज्याविना आत्मानो आनंदरस प्रगटतो नथी. ज्ञानपूर्वक अने भावपूर्वक पूजाओ भणाववामां
आवे छे तो वक्ताओने तथा श्रोताओने अत्यंत आल्हादभाव भक्तिरस प्रगटे छे अने ज्ञानावरणीयादि कर्मोनी निर्जरा थाय छे. आरमामां पश्च भक्तिनो समाधिभाव प्रगटे छे तेथी पश्चनो हृदयमां प्रगटभाव थाय छे. पूजाओ भणाववामां, श्रवण करवामां एकांत भक्तिनुं
फल छे तेनो भावार्थ विचारी आत्मोल्लास प्रगटावतां उत्कृष्ट भावे
क्षणमां मुक्ति थाय छे. भक्त जैनो आवी उत्तम पूजाओ भणावीने
तथा श्रवण करीने पश्च भक्तिना रितया बनी आनंद रस पानो.
एम इच्छुं छुं. सं. १९७९ का. मु ११ एकाद्शी. ।।

गुरुभक्त. हेखक. गांधी आत्माराम खेमचंद, महेता हरिलाल मंगळदास, धु. साणंद.

श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी व्रन्थमाळामां प्रगट थयेला व्यन्थो.

प्रयांक		ष्रष्ट	किंगत.
ş	क. भजन संप्रह भाग १ लो.	२००	0-6-0
* ?	अध्यात्म व्याख्यानमाळा.	२०६	e-8-e
* २	भजनसं ग्रह भाग े २ जो.	३३६	0-6-0
* 3	भजनसंग्रह भाग ३ जो.	२१५	0-6-0
* 8	समाथि शतकम्.	६१२	0-6-9
* 4	-अनुभव पञ्चिशी,	२४८	0-6-0
Ę	आत्मपदीप.	३१५	0-6-0
* 9	भजनसंब्रह भाग ४ थो.	३०४	0-6-0
6	परमात्मदर्शन.	न२क	०-१२-व
* ९	परमात्मज्योति.	400	०-१२-०
* 60	तत्त्वविंदु.	२३०	0-8-9
* 88	गुणानुराग. [आवृत्ति बीजी]	ર૪	0-8-0

*	१२-१३. भजनसंग्रह भाग ५ मो		
	तथा ज्ञानदीपिकाः	१९०	०-६०
*	१४ तीर्थयात्रानुं विमान [आ. बीजी]	६४	0-2-0
*	१५ अध्यात्म भजनसंग्रह	१९०	o-ξ - o
华	१६ गुरुबोध.	१७४	0-8-0
*	१७ तत्त्वज्ञानदीपिका	१२४	o- = - o
	१८ गहुंलीसंग्रह भा. १	११२	0.3-0
*	१९-२० श्रावकधर्मस्वरूप भाग १-२		
	[आष्टति त्रीजी]	`	80-80-9-o
*	२१ भजन पद संग्रह भाग ६ हो.	२०८	o-१ २- o
	२४ वचनामृत.	८३०	0-88-0
	२३ योगदीपक.	३०८	0-88-0
	२४ जैन अतिहासिक रासपाळा.	४०८	<i>१</i> -0-0
媣	२५ आनन्दघन पदसंग्रह भावार्थ सहित.	८०८	₹-0-0
*	२६ अध्यात्म शाम्ति [आवृत्ति बीजी]	१३२	0-3-0
	२७ काव्यसंप्रह भाग ७ मो.	१५६	0-6-0
*	२८ जैनधर्मनी पाचीन अने अर्वाचीन		
	स्थिति.	९६	0-2-0
	२९ कुमारपाल चरित्र (हिंदी)	२८७	०-६-०

३० थी ३४ सुलसागर गुरुगीता.	300	0-8-0
३५ पड्द्रन्य विचार.	२४०	°-8-°
३६ विजापुर वृत्तांत.	९०	0-8-0
३७ साबरमती काव्य.	१९६	o-Ę-o
३८ मतिज्ञा पालन. २०४	११०	0-4-0
३९-४०-४१ जैनगच्छमत प्रवंध		
संघमगति जैनगीता.		8-0-0
४२ जैन घातुर्रातेमा लेख संग्रह		१0 0
४३ मित्रमैत्री.		0-6-0
४४ शिष्योपनिषद् .		0-5-0
४५ ^{जै} नोपनिषद्.	४८	0-2-0
४६-४७ घार्निक गद्यसंग्रह तथा		
सदुपदेश भाग १ लो.	९७६	3-0-0
४८ भजन संग्रह भा. ८	९७६	₹-0-0
४९ श्रीमद् देवचंद्र भा. १	१०२८	₹0-0
५० कमे योग.	१० १ २	₹-0-0
५१ आत्मतत्त्व द्र्शन	१ १ २	0-80-3
५२ भारत सहकार शिक्षण कान्य	१६८	o-१ ०-

५३ श्रीयद् देवचंद्र भा. २	2200	₹-८-0
५४ गहुली संब्रह भा. २	१३ ०	0-8-0
५५ कर्ममकृतिटीकाभाषांतर	600	₹-0-₹
५६ गुरुगीत गुहलीसंग्रह	१९०	0-84-0
५७-५८ आगमसार अने अध्यातम	गीता ४७०	0-6-0
५९ देववंदन स्तुति स्तवन संग्रह.	१७५	0-8-0
६० पूजासंग्रह	४१६	१-0-0

अ वा नीशानीवाळा ग्रंथो सीलकमां नथी.

चपरनां पुस्तको पळवानु टेकाणुं.

वकील मोहनलाल हीमचंद.

(गुजरात) पादरा.

जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिकृत पूजा संप्रह-विषयानुक्रमणिका.

,				पृष्ठ.	वृष्ट-
;	स्नात्र विधि	••••	••••	8	3
	नात्रपू जा		••••	3	१५
	छुण उतारण	विधि	****	१६	
	आरती	****	••••	१६	
	मॅगल दीवो	••••	****	<i>१७</i>	
ર :	नवपद बृहत्पूजा	••••		१८	85
	पंचाचारपूजां	····	••••	४९	५९
	वि श्वस्थान क लघुप	दपूजा	****	६०	૮₹
ય :	दञ्जविधयति धर्मपु	्जां	••••	S 8	१०५
Ę:	चार भावनानी पू	जा	****	१०६	११६
v	दान शीयल तप	भावनी पूजा	••••	११७	१२८
C	अष्टांग योगनी पूष	ना	••••	१२९	886
Q :	नवश क्रियाभक्ति	पू जा	••••	१४९	१७०
30	अष्टकर्म सूदनार्थ 🤻	मष्टमकारी पू ^र	जा	१७१	१९०
22	षडावश्यक पूजा	••••	••••	१९१	२०७
	अष्ट प्रकारी मोटीपू	जा	••••	२०८	२३१
	वास्तुक पूजा	****	****	२३२	२४३
	अष्टमकारी पूजा	****	****	ર ೪೪	ર ૫૭

				पृष्ठ.	ৰম্ভ-
१५	श्रीमद् रविसागर गुर	पूजा	••••	२५७	२७१
	श्री सुंबसागर गुरुपू		••••	२७१	२८६
	सत्तरभेदी पूजा		••••	२८७	३०३
	नवपद लघु पूजा	••••	••••	३०३	३१३
	पंचधा योगपूजा	••••	••••	३१४	३२९
	पंचपरमेष्ठी पूजा	••••	••••	३३०	३३७
	महावीर जन्म जयंती	प्रजा ॥	••••	३३८	३५०
	अष्टप्रकारी महावीर		••••	३५	8
	घंटाकर्ण महाबीर पूज		••••	३६	9
	घंटाकर्ण महाबीर आ		••••	३७	G
	गुरुनी आरती	••••	****	३७	९
	गुरु मंगल दीपक		:4000	३८	•
२७	जिनेश्वर आरती	••••	••••	३८	8
	मंगल दीपक		****	३८	ર



पूजासंग्रहनुं अशुद्धि शुद्धि पत्रक,

वृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि	
9	3	घूजो	धूजो	
१०	१५	घोदकथी	गंघोदकथी	
१६	१ ४	लइ	लहे	
१७	9	स्नात्रया	स्नात्रीया	
१९	६	भावरे	भावेरे	
३२	8	जहजो	जेहजो	
३९	8 8	अनंत	अनंता	
४६	१०	वासना	वास ना	
88	१७	<u> इं</u>	अं। इी	
६७	१२	पुण्य	पुण्ये	
ષ્ઠ	तप पू	<mark>जाना हो</mark> रीना रागमां	वीजा परने अंते रे	
	अने र	तप एम वे सुधारीने वां	वबुं.	
७६	२	कीधुं	दीधुं	
७९	v	आस्रवने	आस्रव	
९३	१६	रुग्घि	लब्बि	
१०३	ड्यां ३	ज्यां ब्रह्म होय त्यां ब्रह	ग वांच बुं.	
१०६	मैत्री ।	मैत्री भावनानी अरणिकवस्त्री देशी पूजामां वीजा		
	अने व	वोथा पदने अंते रे उमे	खो.	

		ર ૦	
पृष्ठ	स्रीटी	ু স্থা দ্ধি	হুব্রি
224	६	करवा	करवां
१४५	ર	शुद्दो	श्रद्धो
१ ८७	ધ્ય	गुण न	गुण ने
१४७	Ę	शकियो	शक्तियो
१४९	१३	उपदशने	उप देश ने
१५२	. 3	नानार	नरनार
१५२	१ ४	भवोदि	भवोद्धि
१५४	68	तमोरेजो	तमोरजो
	१%	सेवतारे	सेवनारे
१५६	११	कथ्यां । र	कथ्यांसार
१५८	3	बादीए	वांदी ए
१५९	१०	आखमां	आंखमां
१६०	२	जयी	जेथी
•	१२	विकासरे	विकासेरे
१६४	३	હ્યા માર્યે	लाभार्थ
१८२	ષ	पर्पुदल	परपुद्रल
१९०	6	যুজী	पूजा
१९१	१२	भवोद्घिमा	भवोदिधमां
२२ ४	११	श्राघे	बांधेरे

		३१	
QB	न्हींटी	अ शुद्धि	গুद
२३३	३	यनगा	मनमां
२३६	19	दीजीऐ	दीजीए
"	९	द्रव्यार्थिकपये	द्रव्यार्थिकनये
	१४	शाश्वता	शाश्वतां
२४०	१८	समकितदा	समकितदाय
२४२	8	गुणंरगी	गुणरंगी
२६१	Ø	सबळा	सवळा
२६३	१५	कया	कयां
२८३	. •	कलश छे तेमांनो एक कलश	भणाववी.
२९१	११	पूजता	पूजतां
३०६	8	मारी	सारी
३१६	१०	पुष्यं	पुरुषं
३२५	१	टाळेरे	टाळे
३३६	6	माहि	मांहि
३३९	१४	ग्रा∓	ग्राम
३४४	१३	नैवेद्यं	नैवेद्य. ॥
३५२	१५	निज	निज
३५९	१ ३	आखे	आंखे.
३५९	१५	नमो	नम्यो ॥

		३२	
वृष्ठ	स्रीटी	अशुद्धि	शुद्धि
३६१	१०	सद्सद्	सदसद्
३६९	१२	भक्त छे	भक्त छे।
३७८	१७	स्मरतां	समरंतां ॥

सूचना-पूजा पूरी थतां ॐ ही श्री आदि मंत्र भणीने सत्तरमेदी तथा वीशस्थानकनी पूजा वगेरेमां पूर्वनी पूजाओनी पेठे संपूर्ण मंत्र भणवो. तथा अष्टमकारी पूजा विनानी वाकीनी पूजाओमां प्रत्येक पूजा दीठ अष्टप्रकारी पूजानो सामान प्रहवो. वि० अन्य सूचनाओ वगेरे जे रही जती हशे ते दितीयाहत्तिमां दाखल करवामां आवशे.

इत्येवं ॐ अँह महावीर शांतिः ३

जैनावार्य बुद्धिसागर सृरिकृत स्नात्र तथा पूजा संग्रह.

पूजा संग्रह.

स्नात्रविधि.

प्रथम दुध, द्हिं, घी, केशर, फुल अने जळतुं पंचामृत करी वे कलश एक पाटली उपर चोखाना बे स्वस्तिक करी ते उपर मूकवा. कळशने महोडे नामाछमी बांधवी. एक त्रण बाजोठनुं सिंहासन करी ते उपर प्रभुनी पधरामणीनुं सिंहासन मूको तेमां एक रकेबीमां केशरना बे स्वस्तिक करी, त्रण नव-कार गणी एक धातुनी पंचतीर्थी प्रतिमाजी तथा एक सिद्धचक्रजीनी प्रतिमाजी पधराववां. प्रतिमान जीनुं मुख उत्तर वा पूर्व तरफ राखी पधराववां. प्रतिमाजी नीचे एक पैसो मुकवो. सिंहासनना वचला बाजोठ उपर चोखानो एक स्वस्तिक करी एक फळ मूकवुं. प्रतिमाजी पधराववाना सिंहास-नना एक ठेडे नाडाछमी बांधवी. एक रकेवीमां (2)

थोमां बूटां फुल केशरवाला चोखा करी राखवा अने चामर, दर्पण, पंखो, घंट, विगरे सामान त्यां नाडाछमीनो ककमो मूकवो, फूलनी अठत होय त्यां केशरवाळा चोखानो उपयोग करवो. स्नात्र जणाववावाळो माणस हाथमां फूल खइने उभो रहे अने विधि जणावनार माण्स विधि शरु करे. कुसुमांजिल बोली 'फूल चढाववुं '-विधि जणावनार माणस कुसुमांजिल चढाववानुं कहे त्यारे जगवानने कुसुमांजिल चढाववी. सात वखत कुसुमांजिल चढावी रह्या पठी स्नात्री-यो हाथ जोमीने ऊभो रहे अने विधि जणावनार विधि बोल्ये जाय, ज्यारे ' ग्रुभ लग्ने जन्म्या प्रभु ' ए दुहो पूरो थाय त्यारे स्नात्रियो त्रण विमासमण देइ चैत्यवंदननी विधि प्रमाणे चैत्यवंदनं करे ते जयवीयरायनो पाठ ' ऋाजव मखंना ' सुधी कही हाथमां कळश लेइने उभो रहे ने विधि जणावनार

(३)

ज्यारे 'सौधमेंन्द्रे पंच रूप करी' ए पद पूरं बोली रहें त्यारे जळनो प्रभुने ऋजिषेक करे. पछी ते ढाळ पूरी थया पठी जगवानने सिंहासनमांथी बहार खद्द चोखा पाणीथी न्हवण करावी ऋंगलूहणां त्रण करी चन्दन पूजा करे. पछी आरति मंगल दीवो करवो.

आ विधि सामान्य प्रकारे लखी छे. परंतु ज्यां नामावडी खखी छे त्यां उत्तम वस्त्रोनो उपयोग करे वा उत्तम उत्तम द्रव्यनो उपयोग शक्ति प्रमाणे करे तो ते उत्तम ठे.

" अथ जैनाचार्य बुद्धिसागर सूरिकृत " अथ स्नात्रपूजा प्रारंभ:

→>©**

दुहा

सर्वातिशये शोजता, प्रभु महावीर जिनेश, शासन नायक जगपति, प्रणमुं हुं विश्वेश. ॥ १ ॥ प्रभु स्नात्रनी जावना, करतां शान्ति थाय; रोग शोक दूरे टले, स्नात्रपूजा महिमाय. ॥ १ ॥ (8)

कुसुमांजिल ढाळ. ऋषभदेव पूजा

त्राठजाति कलशे न्हवरावे, इन्द्रो मनमां आ-नन्द पावे; प्रभु पूजा समिकत प्रगटावे,प्रभु जाणी प्रभुने दिल लावे; कुसुमांजलिथी ऋषज पूजीजे, यही प्रभुगुण मन रीजी जे. ॥१॥

(फूल चढाववुं.)

शान्ति जिनपूजा दुहो.

क्षायिक नव लिब्ध प्रजु, शान्तिनाथ जगदेव; द्रव्यजावर्थी शान्तिने, पामो करीने सेव. ॥१॥ ढाळ.

सहजानन्द स्वजावे शान्ति, केवल ज्ञाननी शोभे कान्ति; टाळे सर्व जीवोनी ज्ञान्ति, आपे तन्मय थातां क्षान्ति; चोसठ इन्द्रो सारे सेवा, पूजुं प्रणमुं शान्ति देवा. ॥ २ ॥

(फूल चढाववुं. ४)

(4)

नेमिनाथ पूजा

दुहा

केवलज्ञानमां भासतुं, अणु सम विश्व सदाय, ते नेमि प्रभु पूजीए, भाव ब्रह्म प्रगटाय. ॥ १ ॥ ढाल.

बाल्यथकी जे ब्रह्म व्रतधारी, खनन्त शक्तिमय ख्रवतारी, केवलज्ञानथी जग हितकारी; मोह शत्रु हणी ए मोहारी, नेमि जिनेश्वरने पूजी जे, प्रजु स्वरूप थे प्रभु प्रणमीजे ॥ २ ॥

(फूल चढाववुं ३)

पार्श्वनाथ पूजा दुहा.

पार्श्व प्रज्ञ प्रणमुं सदा, त्रेविसमा जिन्राय; वन्दे पूजे भावथी, सिद्धे वांडित काज. ॥ १ ॥ ढाळ.

पार्श्वप्रज जगमां जयकारी, परब्रह्म जगने सुख-कारी; चोत्रिश छतिशयथी छवतारी, पांत्रिशवाणी गुणना धारी पार्श्व, पूजीजे ध्याने रहीजे, आस्मिक गुण प्रगटावी लीजे ॥ २ ॥ कुसुमांजलिए पूजा कीजे, प्रभु स्वरूप घावा दील कीजे. ॥ १ ॥

(फूल चढाववुं. ४)

वीरप्रभु पूजा.

<u> पुहा.</u>

शासननायक जगधणी, परब्रह्म महावीर; सर्व-देवना देव जे, सर्वधीरमां धीर. ॥ १ ॥

ढाळ.

प्रभु महावीर देव सप्तरीजे, आविर्भावे आतम कीजे; वीर बनी महावीरने भजीए, कायरता प्रग्री-एने तजीए. प्रभुचरणे कुसुमांजिल धरीए, धीर वीरता वेगे वरीए; देहाध्यास तजी वीर थावुं, ते माटे वीर गावुं ध्यावुं. ॥ २ ॥

(फूल चढाववुं ५)

(9)

अथ सर्व जिनपूजा.

सकल जिनेश्वर प्रेमे पूजो, अशुजकर्मधी भवि जन यूजो; कुसुमांजिल जिन चरणे धरीए, सहज स्वजावे शिवपुर वरीए॥ २॥ कुसुमांजिल पूजो सर्व जिनन्दा, तुज चरण कमल सेवे चोसठ इंदा.

(फूल चढाववुं, ६)

इति चोवीश्रजिन धूजा.

सर्वजिन पूजा. ढाळ.

पन्नरक्षेत्रे अतीत कालमां, वर्तमानमां वर्तेजी, जाविकाले थारो जे जिन; वीतराग गुण शतेंजी, एकसो ने सित्तेर तीर्थकर, उत्कृष्टा जे कालेजी. पूर्जं वांटुं गावुं ध्यावुं, ख्यातम जे खजवाले जो ॥१॥ जन्मोत्सव कल्याणक उजवे, इन्द्रादिक बहुन्तावे जी; जन्मकाल तीर्थकर सहुने, मेरुपर लेइ जावेजी; सर्व जाति कलशा ख्रित्वषेके, प्रेमे प्रभु न्ह्रवरावेजी. एवा अरिहंता त्रण कालना, पूजीजे एक मावेजी ॥१॥ (फूल चढाववुं ९)

(2)

आतम जक्ति मल्या केइ देवा. ए राग

त्रीजे जवे तीर्थकर कर्भने, बांध्यु वीरे जावे, द्रव्यभाव वरथानक तपथी, प्रशस्य रागना दावे, सर्व जीवोने धर्मी बनावुं, सर्व विश्व उद्धारुं, रहे न जगमां कोइ दुःखी, सर्व जीवोने तारुं. ॥ १ ॥ शुज उत्कृष्टा हर्षोद्धासे, जिनवर नामने बांधे, अनन्त पुष्य ग्रहीने प्रभुजी, सकल जीव हित साधे,मानव आयुः पूर्ण करीने, द्शमा स्वर्गमां जावे, पुष्पोत्तर वैमानिक सुरवर, स्वर्गतणां सुख पावे. ॥२॥ त्यांथी चवीने दक्षिण जरते. क्षत्रिकुंडपुरमांहे, त्रिशला-सणी कुखमां आव्या, ज्ञातकुले उत्साहे, त्रिशला-माता स्वप्नो देखी, आनंद अतिशय पावे, जारतने उद्धरवा प्रगटया,प्रभुजी शक्ति प्रजावे ॥ ३ ॥ हाथी वृषज्ञने केसरी सिंह, लक्ष्मी पुष्पनी माला, चन्द्र रिव ध्वज कखश मनोहर, सरोवर पूर्ण विशाला, सागर रत्ननी राशी अग्नि, निर्धूम चौद निहाळे, चौदे स्वप्ननो अर्थ सुणीने, आनंद जीवन गाळे,

(9)

॥ ४ ॥ सिद्धारथराजाना हुकमे, जोषीओ त्यां आ-च्या, पुर बाहिर सुरम्य सभामां, ऋर्थ विचारे फाव्या, ज्योतिषित्रों भेगा थइने, बोले साची वाणी; तीर्थिकर वा चक्रवर्ती तुज, पुत्र थहो गुणखाणी. ॥५॥ राजा राणी अति हरखायां, ज्योतिषी संतोष्या; दानादि-कथी धार्मे लोको, याचकने संतोष्या; भारतमां सहु घरघर लोको, जाणी आनन्द पाया, त्रिशलामाता गर्भने पोषे, धरे निरोगी काया. ॥ ६ ॥ चैत्र शुदि तेरशना दिवसे, मध्यरात्रि घइ जातां; सर्व दिशाओ उज्वलशान्ति, त्यानन्द्वाळी सहातां; नव महिनाने सामा सातज, दिवस उपरे थातां; त्रिशलामाताए प्रभु जनम्या, त्रिलोके थइ शाता. ॥७॥ भारतदेशे घरघर मंगल, घरघर हर्ष वधाइ, सिद्धारथ राजा मन आनन्द, प्रगट्यो लोक न माय. ॥ ८ ॥ शुभ रुग्ने जनम्या प्रभु, त्रणभुवन उद्योत; नारकी पण श्चानन्दीयां, जेनी श्चनंत ज्योत. ॥ ९ ॥

((()

हवे चैत्यवन्दन करवुं तेनि विधि.

वीर आसने बेसी बे हाथ जोमी प्रभुजी सामी दृष्टि राखी 'इच्छाकारेण संदिसह जगवन चैत्यव-न्दन करुं' इच्छं एम कही 'सकळ कुशळविद्धं' कही जगचिन्तामणि कहेतुं. पठी जं किंचि नमध्युणं जाव-नित चेइत्याइं, जावन्त केविसाहु, नमोऽईत कही उवसग्गहरं कहेतुं, पठी आजवमखंमा सुधी अर्धा जयवीयराय कहेवा. आहें सुधि कही पठी छमा थइ स्नात्रीआए कलश हाथमां लइ प्रभुजीना माबा खंग तरफ उन्ना रहेतुं पछी विधि करनार विधि भणे.

राग उपरना.

छप्पन दिकुमरी तीहां खावे, प्रभु जन्मोत्सव हेते; प्रभु साताने प्रणमे प्रेमे, सूतिकर्म संकेते. आठे दिक्कुमरी वायुधी; कचरो करती दूरे, खाठे कुमरी गंधोदकथी, सुगंध जलने पूरे ॥ १ ॥ खाठ कुमारी कखशा धारे, दर्पण आठे धारे; खाठ कुमारी चामर

(११)

वींजे, भाव जिक्त अनुसारे आठ कुमारी पंखा क-रती, रक्षा करती चारे; चार दीपकने धारे प्रेमे, निज खातमने तारे. ॥२॥ कदलीनां घर करी मनोहर, बाल प्रभुने लावे; पवित्र कर्मने करवा माटे, जल कलरो न्हवरावे; जलपुष्पे त्याजरणे पूजी, प्रभु शरीर शणगारे; प्रभुना करमां राखकी बांधी, (वधावी नाडाछमी मूकवी;) जय जय शब्दोच्चारे. ॥ ३ ॥ माता पासे प्रभुने मूकी, निज निज स्थानक जावे, इंद्रासन ते वखते कंपे, महा पुण्य सद्जावे; अवधि ज्ञाने इंद्रे जाण्यो, प्रभु जन्म सुखकारी; सुघोषा **ऋादि घंटाऋों, वगमावे जयकारी. ॥ ४ ॥ पालक** नाम विमानमां वेसी, इन्द्र बहु परिवार; अन्य वि-मानने वाहन बेसी, निज ऋद्धि अनुसारे; अन्य सुरोने देवीत्र्यो छावे, इसुने देखी वंदे; प्रसु छने प्रभु मात वधावी, इंद्र वदे गुण ढंदे ॥ ५ ॥ (फूल तथा केसर वाळा चोखायी वधाववा.) जय जय माता जगमां जय जय, जय जय शब्दो बोले; तहारो

(१२)

पुत्र जगत्तीर्थकर, को नहि तेना तोले; प्रतिविंब मातानी पासे, मुकी प्रभु कर लीधा; पंचरूप इंद्रे निज कीधां, जावे कारज सिध्यां. ॥ ६ ॥ मेरु उपर पांकुक वनमां, शिला सिंहासन ठावे; सौधर्मेंद्रे खोळा मांहि, प्रत्रु धर्या शुज जावे; चोसठ इन्द्रो, जाव धरीने, आव्या त्यां जल्लासे; निज निज शक्ति ऋदि जाने, इंद्रो पूर्ण विकासे. ॥ ७ ।! ऋच्युतेंद्रे ऋौषि तीर्थनी, माटी जल मंगाव्यां; आठ जातिना कलश भरीने, इंद्रो ए न्हवराव्या; फूल चंगेरी थाळ रकेबी, उपक-रणो बहु जाति; प्रभुनी भक्ति करतां विध विध, निर्भक्ष करता छाति. ॥ ८ ॥ भुवनपति ने ब्यंतर ज्योतिष, करता बहु विध सेवा; एक कोम ने साठ लाख सहु, कलशानो ऋजिषेक; ऋढीसे अजिषेक सहु मळी, सुर नहि चूके विवेक ॥ ९ ॥ (थोडो जळ ऋजिषेक करवो) इशान इन्द्रे करमां लीधा, प्रभुनी भक्ति कोधी; सौधर्मेन्द्र पंचरूप करी, भक्ति करी प्रसिद्धिः; (संपूर्ण (१३)

जळनो अतिषेक करवो.) पूष्पादिकथी प्रस्न वधाव्या, श्रानंदना कह्लोले; मंगलदीवो श्रारति करोने, सुर-वर जय जय बोले ॥ १०॥ अनेक वाजित्रोने वजावे, अनेक नाचो नाचे; प्रभुनो जन्मोास्मव करीने, सर्व सुरासुर राचे; करमां धारण करीने प्रज़ुने, त्रिशला मातापासे;इन्द्रादिक ऋावीने बोले, पूरण हर्षोद्धासे ॥११॥ पुत्र तमारो प्रभु खमारो, सर्व विश्व खाधार; तुज कुखे प्रभु जन्म्या माटे, विश्व मात निर्धार; पंच धाव सोंपी प्रभु क्रीमां,-करवा माटे बेश; बत्रीश कोटि रत्नादिकनी, वृष्टि करे हरे क्वेश. ॥११॥ (फूल केश-रवाळा चोखा, नामाछमी विगरे प्रभु सन्मुख उछा-ळवुं.) इंद्रादिक प्रभु वांदि पूजी, नन्दीश्वरमां जावे; श्रष्टान्हिका महोत्सव करीने, श्रानंद मंगल पावे: निज निज कह्प सधावे सुरवर, दीक्षोत्सव ख्रजि-क्षाषे; केवलज्ञान महोत्सव इच्छा,राखी हर्ष विकासे. ॥१३॥ प्रभु जन्मोत्सव भारत देशे, जक्ते कीधो जावे: घर घर आनंद मंगल वर्तो, स्नात्र महोत्सव दावे:

(88)

सकल संघमां शांति वर्तों, इति उपद्रव शामो; स्नात्र महोत्सव सुणनाराने,-गानारा सुख पामो; ॥ १४ ॥ परब्रह्म महावीर प्रतापे, रोग टळो सह जाति; दुष्ट देवना टळो जपद्रव, व्हेम टळो बहु माति; नगर पुर देशमां शांति, वर्ती प्रभु प्रतापे; आधि च्याधि संकट टळतां, प्रभु महावीर जापे. ॥ १५॥ सर्व जगत्मां शान्ति वर्तो, धर्मी बनो नरनारी, दोषो क्षय पामो जित्तिथी, जनो बनो उपकारी; झघमा युद्धो उपशम थात्र्यो, वृष्टि घशो मनमानी; पुएय कर्म वधशो जगमांहि, वधशो शक्ति मंजानी. ॥ १६॥ तप गच्छ हीर विजयसूरी जगगुरु, पट्ट परंपरधारी; प्रुज्य ग्रुरु रिवसागर प्रगटचा, सर्वोपम जयकारी; र्श्वीन्तिदायक सुखसागर ग्रुरु, घर घर मंगलकारी; बुद्धिसागर सूरि आशीः, शान्ति बहो नरनारी ॥१७॥

फूल तथा केशरवाळा चोखाथी प्रभुने वधाववा. पछी सिंहासनमांथी प्रभुजी तथा सिद्धचक्रजीने खद्द चोखा पाणीथो पखाळ करी त्रण ख्रंगद्धहणां (१५)

करी केशर (चंदन)थी पूजा करी फूल चढाववां अने सिंहासन मध्येनी रकेबीमांथी पाणी काढी नांखी धोइ साफ करी फरी केशरना स्वस्तिक करी पधरा-ववा. छारती मंगळदीवो प्रगटी बंनेने नामाबमी बांधी एक रकेबीमां मूकी कंकुना छांटा नाखी चा-खार्था वधाववा, रकेबीमां सोपारी तथा एक पैसो मूकी रकेबी वचे राखी स्नात्रियाने हृन्मुख बेसामवो. रकेबीनी एक बाजु सात माटीनी कांकरी तथा सात मीठानी कांकरी लइ एक मीठानी कांकरी अने एक माटीनो कांकरी ए रीते दरेक ढगलीमां मूकी सात ढगलीओ करवी. पछी बीजी तरफ जळनी कुंमी राखवी. स्नात्रियाने जभा पगे बेसामी माबा हाथ उपर जम्णो हाथ रखावी विधि जलावनार माणस स्नात्रियाना हाथमां दरेक वखते एक मीठानी अने एक माटीनी कांकरी खापी ते साथे हथेलीमां चोखा पाणीना कलशमांथी थोर्चु पाणी आपे अने **ट्यारती मंगळ दीवानी रकेबी फरतुं छू**ण जतरावे. तेनी विगत.

(१६)

छुण उतारो जिनवर अंगे, निर्मल जलधारा मनरंगे. ॥ छुण ॥ १ ॥ जिम जिम तडतम छुण ज फ्टे, तिमितम अञ्चल कर्म बंध त्रुटे. ॥ छुण ॥ २ ॥ नयन सखुणां श्री जिनजीनां, अनुपमरूप द्यारस भीनां. ॥ छुणा ॥ ३ ॥ रूप सछुणुं जिनजीनुं दीसे, लाज्युं छुण ते जलमां पेसे. ॥ छुण ॥ ४॥ त्रण प्रद-क्षिणा देइ जलधारा, जल निखेवीए छुण जदारा ॥ छुण ५॥ जे जिन उपर दूमणो प्राणी, ते एम याजो छुण ज्युं पाणी. ॥ छुण ॥ ६ ॥ ख्रगर कृष्नागरु कुंदरु सुगंधे, धूप करीजे विविध प्रबंधे. ॥ छुण ॥ ९ ॥ एम सात वखत खूण उतारवं पढी ख्रारती जतारवी.

आरती.

जय जय वीर जिनेश्वर देवा, सुर नर इन्द्र लहे सेवमेवा, बार गुणे गुणवंता प्यारा, त्रण जुवनना छो आधारा. जय जय. ॥१॥ चोत्रीश अतिशय गुण-गणधारी, पांत्रीश वाणी गुणे जयकारी. जय जय.॥२॥

(१७)

त्रिशालानंदन शिव सुखकारी, सिद्धारथ कुल शोजा-कारी जय जय. ॥३॥ द्रव्य जावथी ख्रारित करीये, मंगल माला सहेजे वरीये. जय जय.॥४॥ बुद्धिसागर प्रभु गुण क्षेवा, संघ चतुर्विध करे नित्य सेवा. जय. ॥५॥

पढ़ी प्रज़जी न देखे तेत्री रोते पड़खे जइने खगर प्रभुजीना अने स्नात्रीया वच्चे खंतर पमदो राखी स्नात्र याना जमणा खंगुठा उपर कंकुना चां-मलो कराववा. पछी मंगळदीवा उतारवा. मंगळदीवा उतारतां कपुर लावेला होय ते सळगावी रकेबीमां मूकी मंगळदीवा उतारवा.

मंगळ दीवो.

मंगलदीवो मंगलकारी, करीये जिन आगळ जयकारी, अरिहंत मंगल पहेळुं जाणो. बीजुं सिद्ध मंगल मन आणो. ॥१॥ साधु मंगल त्रीजुं सहीए, सद्गुण पामी शिवपुर वहीए. ॥मं०॥१॥ धर्म मंगल षोयुं सुखकारी, चार मंगलनी छे बिसहारी. ॥ मं०

136)

॥३॥ भाव मंगल हेते चित्त धारी, मंगलदीप करे नर-नारी. ॥ मं० ॥ ४ ॥ बुद्धिसागर व्यानंदकारी, संघ चतु-र्विध शोजाकारी. ॥ मं० ॥ ५॥

> इति स्नात्रपूजा समाप्त. स्रय नवपद पूजा प्रारंजः ॥ प्रथम स्ररिहंतपद पूजा ॥

नमुं स्तवुं ख्रिरिहंतने, गेय ध्येय ख्रिरहंत. प्राप्य प्रभु पद एह छे, जेना रागी संत. ॥१॥ विश स्थानमां कोइ पण, एकाराधन योग; तीर्थकर पद संपजे, ख्रमंत पुण्यनो जोग. ॥२॥ त्रीजे जव ख्राराधना, अरिहंत ख्रादि थाय; ग्रुभ उंचा परीणामथी, ब्रहित् पद बंधाय. ॥३॥ सर्व जीवो उद्धारवा, धर्मी करवा काज; उत्कृष्टा परिणामथी, बांधे पद जिन्राज.॥४॥ तीर्धकर परमातमा, त्रण कालना जेह ख्रिरहंत ते सर्व छे, धाती हर्ष्याधी एह. ॥४॥ (१९)

श्री ख्रश्हित पद गाइए, ध्याइजे सुखकाररे; ऋरिहंत जेवा थाइए, दोष रहे न लगाररे. श्री ऋरि-हंत० ॥१॥ नमण ठवण द्रव्य भावथी, ऋरिहंत गातां ध्यातांरे; आतम अरिहंत पद वरे, कर्म सकल दूर जातारे. श्री अरिहंत० ॥२॥ वीश स्थानकने सेवतां. द्रव्य भावथी भावरे; तीर्थंकर कर्म बंध ए, पूर्व त्रीजा भव थावेरे. श्री ऋरिहंत० ॥ ३ ॥ वींश स्थानमय त्रातमा, भावथी हर्षोद्धासेरे; उज्ज्वल शुभ परिणामथी, ऋईत पदवी प्रकाशेरे. श्री ऋरि-हंत०॥४॥ अरिहंत नामना जापथी, स्थापनासां प्रभ ध्यावेरे, द्रव्य भाव वे जेद्शी, खातम जिनवर आवरे. भी खरिहंत०॥ ५॥ तीर्थकर नाम कर्मने, आतम ज्यारथी बांधेरे, द्रव्य तीर्थकर त्यारथी, श्लीण सोही गुण साधेरे. श्री अरिहंत० ।।६॥ जन्म-मकी त्रण ज्ञान छे, मति श्रुत अवधि ममाणोरे; क्रोशं दीक्षा यहे यके, मन पर्यव दिख कालोरे. ध्री अहिहंतए ॥ ७ ॥ ग्रुण स्थानक कोवा वकी। वास्सा

(२०)

पर्यंत जाणोरे; द्रव्यथी तीर्थंकरपणुं, खालंबन शुभ ळाणोरे. श्री ळारिहंत० ॥ ८ ॥ उपशम क्षयोपशम अने, क्षायिक समिकित भावेरे; चरणमां क्षयोयशम पणुं, द्रव्य तीर्थकर दावेरे. श्री छारिहंत० ॥ ९ ॥ भावथी तीर्थकर प्रभु, समवसरणमां सोहेरे; क्षा-यिक नवलिब्ध धणी. भव्योनां मन मोहेरे. श्री श्चरिहंत० ॥ १० ॥ अंतर क्षायिक भाव छे, श्रीद-यिक कर्मे प्रवर्तरे; ऋात्मपणुं परीणामधी, ऋाराधीए शुभ रीतेरे. श्री छारिहंत० ॥ ११ ॥ प्रारब्ध कर्म अधातियां, तीर्थकर भोगवतारे, जीवन्मुक्त जिने-श्वरा, ध्यातां कर्मो टळतांरे. श्री खरिहंत० ॥ १२ ॥ बार गुणे प्रभु शोभता, विश्वोद्धारक देवारे, असंख्य देवोने देवीओ, करती प्रभुनी सेवारे. श्री खारिहंत० ॥ १३ में निश्चय अरिहंत आतमा, राग देवने हण-तारे: क्षयोपराम उपराम क्षये,शुद्धातम पद वरतारे: बीर जिनेश्वर उपदिशे, आतम श्रारिहंत देवारे: बाहिरमां मुंझो नहीं, निज निजनी दिलसेवारे. वीर०

(33)

॥ १४॥ निश्चय समिकत चरणथी, छापो आप प्रका-होरे. छसंख्य योगनो जेपित, आतम ज्योते विलासेरे. वीर०॥१५॥ गुऊ ब्रह्म निजातमा, छसंख्य प्रदेशी पोतेरे; सेवा भक्ति ज्ञानथी, प्रगटे अनंती ज्योतेरे. वीर०॥ १६॥ आतम ते छरिहंत छे, प्रेमे गावो ध्यावोरे; बुद्धिसागर छातमा, अनंत आतम पावोरे. वीर०॥ १७॥

अर्हत्पदं नौमि गुणैर्युतं च।
स्वाभाविकं ग्रुद्ध मनन्तरूपम्॥
पूज्यंपरब्रह्म जिनेश्वरं च।
द्रव्येणभावेनचपूजयामि.॥ १॥

ॐ अहॅपरमेश्वराय सर्व देवाधिदेव पूजितायच श्रीमते जिनेन्डाय जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं अक्षतं, तण्कुलं, नैवेद्यं, फलं, च यजामहे स्वाहा॥

॥ इति अर्हत्यूजा समाप्ता ॥

(२२)

द्वितोया सिद्धपूजाः

अरिहंत उपदेशयी जेह जाण्या, नमुं सिद्ध ते शुद्धरूपे प्रमाण्या; ख्रातःआदिमां पूज्य खरिहंत देवा, पठीथी करुं सिद्धनी शुद्ध सेवा. ॥ १ ॥ ख्रानंता थया सिद्ध थाशे अनंता, परब्रह्म ज्योति स्वरूपी भदंता, परिपूर्णज्ञाने थया जेह सिद्धा; अयोगी अजोगी ख्रवेदी प्रबुद्धा. ॥ २ ॥

त्रीजे जव वरथानकतपकरी. ए राग.

कर्मातीत निरंजन निर्मल, निःसंगी निष्कामी; सापेक्षाए रूपी अरूपी, वर्ते द्यातमरामीरे, जिवका सिद्ध प्रभु आराधो, द्यातम शुद्धि साधोरे. भिवका, सिद्ध ॥ १ ॥ एक समयमां सर्व द्रव्यना, गुण पर्यायने जाणे; देखे द्यानंद जोगे वर्ते, वर्ते द्यात्मिक प्राणेरे. जिवका. सिद्ध ॥ २ ॥ द्रव्यथी सिद्धो शोजे अनंता,सिद्ध क्षेत्रे प्रसिद्धा;एकसिद्धने द्याश्रयीत्रादि, अनंत गुण समृद्धारे. जिवका. सिद्ध ॥ ३ ॥ द्यंतर रहितने अजर द्यमस्जे, नहीं मन वाणी काया;

(२३)

संसारी जीवोना जेओ, अनंत जागे सुहायारे. भवि-का. सिद्धः ॥ ४ ॥ क्षायिक भावे सिद्ध थया जे, पुद्गल संगधी न्यारा; परिणामिक भावे जीवनता, गंध रस स्पर्श रहित जे. आप स्वरूपे रुपी: पुरुगल रूपे जेह ऋरूपी, वर्ते रूपारूपीरे. भविका. सिद्ध०॥६॥ **ब्रा**ठे कर्मनो नाइा करीने, ब्राठ ग्रुणे जे शोभे; व्य-तिरेकी एकत्रिंश गुणी जे, भविजननां मन थोभेरे. भविका. सिद्धणा ७॥ अनंत गुण पर्याये जेस्रो. **ऋाविर्भावे सुहावे; प्रणमु**ंगावुं ध्यावुं सिद्धो, मोह सिद्धनी ज्योतिमांही, अनंत सिद्धो ज्योते; त्रण कालमां नित्य वे जेखो. जीवे भावोद्योतेरे. भविका, सिद्ध० ॥ ९ ॥ सिद्ध स्वरूपी त्यातम भावी, सिद्धा-नंद्ने पामे; एक समयमां ऊर्ध्वगातिथी, सिद्ध स्था-नमां जामेरे. भाविका. सिद्ध०॥ १० ॥ आत्मिक शुद्ध समाधि प्रकटे, मुक्तिनुं सुख प्रगटे; निर्विकरू समा-धि ज्ञाने, सर्वावरणो विघटेरे. भविका. सिद्ध०॥ ११

(२४:)

नाम स्थापना दृब्यने भावश्री, सिद्धो वंदो ध्यावो; आपोआप स्वरूपे सिद्धो, परमानंदने पावोरे. भविका. सिद्ध० ॥ १२ ॥

वीर जिनेश्वर उपदिशे. ए राग.

प्रभु महावीर उपिद्शे, त्रण भुवननो राणोरे; अनंत ग्रण पर्यायी हे, आतम प्रभु घट मानोरे. प्रभु० ॥ १३ ॥ निज आतम ते सिद्ध हे, जीव हे ते शिव जाणोरे; शुद्धोपयोगे आतमा, परब्रह्म प्रमाणोरे. प्रभु० ॥ १४ ॥ आरोपितपुद्गल दशा, तेथी आतम न्यारोरे; शुद्धातम उपयोगथी, सिद्ध स्वयं आधारोरे. प्रभु० ॥ १४ ॥ अनंत ज्ञाना-नन्दनो, आविर्भाव स्वभावेरे; बुद्धिसागर आतम, परमेश्वर निजभावेरे. प्रभु० ॥ १६ ॥

विरहितानपि कर्मभिरष्टभिः सहजिसद्ध गुणाष्टक धारिणः । समयदेशपदान्तरमस्पृशः, सकल सिद्धि गतान्परिपूजये ॥ १ ॥

उँ ही श्री परमण

(२५)

तृतीया आचार्यपद पूजा.

वत्रीशी वत्रीशी ग्रण वमे, सूरिपद सुखकार; गातां पूजतां ध्यावतां, सूरिपणुं निर्धार. ॥ १ ॥ द्रव्य क्षेत्रने कालथी, भावथी सूरि महंत; तीर्थेश्वर पाठळ प्रभु, राजा शोभे संत. ॥ २ ॥ जिन शासन साम्राज्यमां, संघ चतुर्विध भूप; वर्तमानमां संघना, प्रभु जे धर्म स्वरूप. ॥ ३ ॥

धन्य धन्य संप्रति साचो राजा. ए राग.

प्रेमे प्रणमुं श्री सूरीश्वर, जैनधर्मना धोरीरे; चार प्रकारे संघोन्नितनी, जेना हाथमां दोरीरे. प्रेमे. ॥ १ ॥ सूरि मंत्रनो जाप करेने, धर्माचार प्रचारेरे; पंचाचारने पाळे पळावे, संघनुं श्रेय विचारेरे, प्रेमे. ॥ २ ॥ द्रव्यादिक अनुसारे वर्ते, संघने जे वर्तावेरे; बत्रीश उपमा जेने छाजे, धर्मने रक्षे भावेरे. प्रेमे. ॥ ३ ॥ गौणने मुख्यपणे सहु आशय, सर्व धर्म समजावेरे, सर्वनयोनी सापेक्षाए, स्वाधिकार जणा-वेरे प्रेमे० ॥ ४॥ द्रव्यजावधी सर्व संघनी, प्रगतिने

(२६)

उपदेशेर: कार्यों करता निर्लेपी थे, रहे न मनमां क्लेरोरे, प्रेमे० ॥ ५ ॥ त्यागी गृहस्थी बन्ने संघने, उत्सर्गने ऋपवादेरे: धर्माचार विचार जणावे, आ• स्मिक सुखने आस्वादेरे. प्रेमे० ॥ ६ ॥ तीर्थपति समसंप्रतिकाले, धर्म करावे बोधेरे; तीर्थकरसम आज्ञाकारक, संघने रहे अकोधेरे. प्रेमे०॥ ७॥ द्रव्यने भावथी संघ जीवनने, शासन उन्नति काजेरे, जे काले जे क्षेत्रे करवं, आज्ञा करी जग गाजेरे, प्रेमे०॥८ ॥ प्रतिरूपादिक चौद ग्रणोना, धारक योगी ज्ञानीरे; क्षमा प्रमुख दश धर्मना धारक, समभावीने ध्यानीरे. प्रेमे० ॥ ९ ॥ बार भावना चार भावना, भावे विकथा वारीरे; चार अनुयोगने वर्तावे, सर्वे प्रमादने वारीरे. प्रेमे० ॥ १० ॥ करवुं कराववुंने अनुमोदवुं, जे जे योग्य ते करतारे; गामरीया प्रवाहे न चाले, स्वतंत्रता दिल धरतारे. प्रेमे० ॥ ११ ॥ सूत्रो शास्त्रो यन्थो आदि, परंपरा सह जाणेरे; अनुभवधी एक निश्चयधारी, संघनुं

(२७)

क्रैक्य जे मानेरे. प्रेमे० ॥ १२ ॥ निश्चयने व्यवहारे वतें, संघना क्रेक्यने संधिरे; एवा आचोरोने विचारो, आपी गुणोथी वाधेरे, प्रेमे० ॥ १३ ॥ सारण वारण चायणने जे, पडिचोयण गुणधारीरे; जे श्रुत केवली स्वपर समयना, ज्ञाता ग्रुणगण धारीरे. प्रेमे० ॥१४॥ तीर्थकर सम सूरि करे ते, क्षेत्रने कल्पानुसारेरे; धर्मा-चारमां जेह सुधारो, करता स्वाधिकारेरे, प्रेमे० ॥ १५ ॥ पडया पडंता भ्लाद्र प्रभेदो, टाळे उदार विचारेरे; बाह्यराज्यंसम धर्मराज्यना, उन्नति हेतु धोररे, प्रेमे० ॥ १६ ॥ चार निक्षेपे सूरिवर पूजो, वंदो गावो ध्यावोरे, बुद्धिसागर परम प्रभुता, परमानंदने पावोरे, प्रेमे० ॥ १७ ॥

आतम ते आचार्य छे, उपादान स्वभावेरे, क्षयोपशमने उपशमे, क्षायिक गुणगणदावेरे. आतम० ॥ १८ ॥ पूजो वंदो जावथी, गावोने मन ध्यावोरे, आत्मस्वभावे सहजथी, शुद्धो-पयोगे सुहावोरे, स्थातमण ॥ १९ ॥ आतमना

(२८)

एकतानथी, सर्व शक्तियो जल्लसेरे, बुद्धिसागर स्थातमा, सूरिपद गुणची विकसेरे. आतम० ॥२०॥

स्वपरशास्त्ररहस्य निवेदिनः चरितपञ्चविधाः चरणानिष, जिनसुधर्मधुरीणतया स्थितान्, सकल स्र्रिवरान्परिपूजये ॥ ॐँहो श्री परम० स्वाहाः

चोथी जपाध्याय पद पूजा.

पंचिवंशित सद्गुणे, जपाष्याय भगवंत, भणे भणावे शास्त्रने, पूजो वंदो संत० ॥ १ ॥ गुणो अने आचारथी, आत्म शुद्धि करनार, जपाष्याय जगमां जयो, युवराजा जयकारण ॥२॥ जपाष्यायनी भक्तिथी, प्रगटे दर्शनज्ञान, वाचंयम पाठक नमो, पूजो धरी एक तान० ॥ ३ ॥

सिद्धचक्रनी सेवा को जे. ए राग.

उपाध्यायनी सेवा की जे, विद्यमान सुखकारीजी, विद्यमान पाठकनो भक्ति, करतां तरे नरनारी, भवि-जन सेवोजी, त्यागी सर्व प्रमाद, व्हावो लेवोजीव बा १॥ श्रंग उपागना पाठकज्ञानी, भणे भणावे

(२९)

भावजी, जैनधम फेखावे जगमां, पुण्ये दर्शन थावे. भवि० ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी आदि कर्मी, अनेत क्षय झट थातांजी. पाठक प्रभुना वैयावच्चथी, आत्मस्वभावे सुहातां. भविष् ॥ ३ ॥ वर्तमानमा तरतमयोगे, वर्ते पाठक जेवाजी, गुणनी दृष्टिः धारी घटमां, करीए भावे सेवा. भवि० विनयने बहुमानथी सेवा, चार निक्षेपे करीएजी, जीवंता वाचंयम सेवो, समकित चारित्र वरीए. भवि० ॥५॥ निश्चयथी निश्वयमां वर्ते, व्यवहारे व्यवहर-ताजी: उत्सर्गने खपवाद विचारी, क्षेत्रकाळ अनुस-रता. भवि०॥३॥पंच समिति त्रण गुप्ति धारे, जैन धर्म विस्तारेजी; निज निज ऋधिकारे सहु वर्णने, राखे स्थिर आचारे. भवि० ॥७॥ सर्व संघनी द्रव्यभावथी-चढती हेतु प्ररुपेजी; कर्म करे सद्घ अकिय चैने, निष्कामी निज रूपे. भवि० ॥ ८ ॥ शासन सेवा संघनी सेवा, करता अर्पाइ जाताजी; वेष क्रिया कुछक मत भेदे, संघभेदे न रहाता. भवि० ॥९॥ भव्य जीवोनी द्रव्य भावथी. आतम श्रुद्धि करताजी: ज्ञानिकया

(0)

भक्तिने समाधि, अनेक योगने धरता, जवि० ॥१०॥
सूरिजी राजाने मंत्री, पाठक संघना हेतेजी, पूजी
वंदी स्तवीने ध्याइ, रहीए शिव संकेते. भवि०॥११॥
तरतम योगे द्रव्यजावयुत. उपाध्यायने जजीएजी;
पंचमकालने क्षेत्रानुसार, वर्तताने यजीए, भवि०॥१२॥

निज आतम निश्चय प्रभु, षाठक जाणी ध्यावीरेः उपाध्याय ते ख्यातमा, अंतरमां खय लावोरे, निज्ञण्या १३॥ अनंत गुणी आतमप्रभु, अनंतपर्यवी पोतेरे, धारणा ध्यान समाधिथी, वर्ते आनंद ज्योतेरे. निज्ञण्या १४॥ शुद्धातम उपयोगची, सहजे आत्मस्वभावेरे, सर्व करे निर्वध जे, मोहनी वृत्ति हठावेरे. निज्ञण्या अश्वय कांइ न आत्मने, ख्रनंत शक्ति स्पुराक्षेरे, बुद्धिसागर आतमा, श्रद्धा भक्तिथी जाकोरे, निण्१६

जिहिमधौर्यविनेयगणेषु ये।
प्रियत्तबुद्धियलाश्च गतस्मणः॥
श्रुत्तसुभागस्य भारतमाहिनः।
श्रुतिदिनं प्रणभामि सुपारकान्॥

(38)

पंचम साधुपद पूजा. दोहरा.

अप्रतिबद्ध जे विश्वमां, कर्म योगी निष्काम; साधे आतम साधना, रमता आतमराम. ॥१॥ मुनि तपसी अनगारी जे, साधु संयत नाम; यति ऋषि त्यागी श्रमण, आर्य भिक्षुक गुणधाम.॥ १॥ आश्रव त्यागी महंत जे, अनेक जेनां नाम; वंदो पूजो प्रेमथी, संत प्रजु विश्राम.॥३॥

॥ त्र्योधवजी संदेशो कहेजो स्यामने ए राग ॥

प्रीतलकीने सांधो साधु साथमां, साधु संगते प्रभुनां दर्शन थाय जो, पंचम आरे दुर्लभ साधु सं-गति, मुनि भजंतां जन्म जरा दुःख जाय जो, प्रीत-लडी०॥१॥ साधु संगतथी समकित प्रगटे खरु, ज्ञान अने चारित्र भक्षु प्रगटायजो, संतनी संगे रहीए श्रद्धा प्रेमथी, एक पखकमां धार्यु निश्चय थाय जो. प्रीतलडी०॥२॥ पंचम खारे मुनिनी अन्द्रा प्रीतली, करसं आतम परमातम झट थाय

(32)

जो, संस्कारी भव्योने जिक्त सांपडे, ग्रण रागे सवळी बुद्धि प्रगटाय जो, प्रीतलडी० ॥ ३ ॥ यम नियमने त्रासन प्राणायामथी, प्रत्याहारने धारणा ध्यानथी जहजो, आत्म समाधि योगे घटमां वर्तता, निष्का-मीने सम हे वनने गेहजो, प्रीतलडी० ॥ ४ ॥ धीरे थीरे मनने साधे साधुजी, सद्युण साधे करता दुर्गुण त्यागजो, आसक्ति वण ब्याचारोमां वर्तता, मुनिपर धारो स्वार्पण करीने रागजो, प्रीतलडी० ॥ ४ ॥ **छात्म**शुद्धि हेते सापेक्षे साधना, गौणने मुख्यपणे जाणे जे योगजो, उत्समेंने जे अपवादे वर्तता, निर्लेपी थै भोगवे सुख दुःख भोगजो, प्रीतलकी० ॥६॥ आपत्काले खापद धर्में वर्तता, बाह्य संगमां जे दिलमां निःसंगजो, ध्येयपेष निज दिलमां प्रभ प्रग-टावता. प्रगटे मनिनी संगे स्थातम रंगजो: प्रीतलडी ।। ७ ॥ अंतर बाह्यनी यन्थिमां ममता नहीं, गुरु आज्ञाए सर्वे कर्ता कर्मजो निर्भय खेद-रहित अद्वेषी साधुजी, समताभावे खनुभवे शिव

(33)

शर्मजो. प्रीतलडी ॥८॥ समभावे मुक्ति छे सह दर्शन विषे, किया पंथ मत बाह्यथकी पण होयजो, तो पण मुनिभावे निश्चय समिकतवडे, समभावीने नडे न बाह्यनुं कोयजो. प्रीतलडी० ॥ ९ ॥ गच्छनी नि-श्राए स्थविरो वर्ते सदा, गच्छोमां समभावे मुक्ति होयजो, सापेक्षाए हठ कदाग्रह त्यागीने, मुख्यपणे आतम उपयोगी जोयजो. प्रीतलडी० ॥ १० ॥ जे काले जे क्षेत्रे जे करवुं घटे, स्वपर जीवोना धर्म हितार्थे जेहजो, तेह करावे करे अने अनुमोदता, अल्पदोषने धर्म घणो करे तेहजो, प्रीतलडी० ॥११॥ सूरि गुरुनी ख्राज्ञाए वर्ते मुनि, अता कषायो रोधे साधे धर्मजो: आत्मराज्यनी स्वतंत्रता जे साधता, करे कर्म पण उपयोगे जे अकर्मजो. प्री. ॥ १२ ॥ पूर्णानंदी आतम ज्ञाने अनुजवे, साधक बाधक कृत्याकृत्य विवेकजो; जैनधर्म उपदेशे जक्तोने भलो, रहे समाधि एवी धारे टेकजो. प्री. ॥ १३ ॥ पूजो वंदो गावो मुनिपद्ने जलुं, निश्चयदृष्टिने धारी

(38)

व्यवहारजो; बुद्धिसागर मुनि सेवाभक्तिबळे, क्षणमां प्रञ्जपद पामे नरने नारजो. त्री. ॥ १४ ॥

साधु ते निज आतमा; शुक्कातम उपयोगेरे; शुं मुंग शुं लोचथी, त्यागे शुं बाह्यजोगेरे. साधु. ॥ १४ ॥ शुद्धातमरमणी मुनि, मोहनी वृत्ति रोकेरे; हर्षे निह जे बाह्यमां, रहे न बाह्यमां शोकेरे. साधु० ॥ १६ ॥ समजावी जव मुक्तिमां, सहजानंदना जोगीरे; रागने त्यागथी जिन्न जे, आतम देखे योगोरे. साधु० ॥ १८ ॥ निःसंगी निष्कामी जे, घटमां सिद्धि प्रकाशेरे; आनंदथी उजराइने, प्रसन्नताए विकासेरे. साधु० ॥ १९ ॥ आशा तृष्णा कामना, तेथी गणे निज न्यारोरे; बुद्धिसागर आतमा, सिद्ध बुद्ध निर्धारोरे. साधु० ॥ २० ॥

स्वपर कार्य सुसाधनतत्परान्। शिवभवस्थितिसाम्यसमन्वितान्॥ विदितपश्चमहाव्रतधारिणः। प्रणिद्ध प्रति साधु मतिस्किनान् उँ श्री परम.

(३५)

षष्टी दर्शनपद पूजा.

शुद्धातम दर्शन थतुं, निश्चय दर्शन तेह; देव गुरुने धर्मनी, श्रद्धा दर्शन एह. ॥१॥ दर्शन छे व्यवहारथी, निश्चयथी सुखकार; समसठ बोले श्राहंकर्यु, धारो नरने नार. ॥३॥ दर्शन पाम्यो श्रातमा, निश्चय मुक्ति जाय; जडचेतन सम्यक्पणे, जाणी नहि मुंझाय.॥४॥

ए ग्रुण वीरतणो न विसारु. ए राग.

सम्यग् दर्शन जग जयकारी, सर्व जीव हित-कारीरे; प्रभु महावीर जिन उपदेशे, पामो नरने नारीरे. सम्यग्०॥१॥ द्रव्यजाव वे जेदे दर्शन, निश्चयने व्यवहारेरे; देव गुरुने धर्मनी श्रद्धा, जेदे त्रण्य प्रकारेरे. सम्यग्०॥२॥ त्र्यातम ते निश्च-यथी देवज, आतम ते गुरु जाणोरे; त्र्यातममांही सत्य धर्म छे, निश्चय दर्शन मानारे. सम्यग्०॥ ३ मुनिभावे छे निश्चय समकित, रत्नत्रयी अजेदेरे; सापेक्षाए जाणी पामो, रहो न स्नातम खेदेरे. सम्य-

ं(३६)

ग्०॥ ४॥ मुनिजावे समकितपणुं छे, आचारांगे भारुयुरे; उस्कृष्टे क्षणमां छे मुक्ति, एवं प्रभुए दारुयुरे. सम्यग्० ॥ ५ ॥ दर्शनथी ज्ञान चारित्र प्रगटे, तेथी मुक्ति नक्कीरे; माटे दर्शन पामो भव्यो, राखो श्रद्धा पक्कीरे. सम्यग्० ॥ ६ ॥ गुरुने सेवे दर्शन प्रगटे, जिनवाणी सांजळतांरे; साधुसंत गुरु सेवा करतां, दर्शन कारण फळतांरे; सम्यग्० ॥ ७ ॥ श्रद्धा प्री-तिथी ग्रह सेवे, जिन प्रतिमा अवलंबेरे, समिकत दर्शन पामे जक्तो, पमे न मिथ्या ऋचंजेरे. सम्यग्० ॥ ८ ॥ स्थातमधी मिथ्यात्व टळे तेम, श्रद्धा साची प्रगटेरे; ख्रात्मानुजव थातां पूर्वे, मिथ्या मोहनी विघटेरे. सम्यग्० ॥ ९ ॥ सर्व संघनी सेवा भक्ति, करतां हर्षोद्धासेरे; त्रातम समकित पामे निश्चय, श्चाविजीवे विकासेरे सम्यग्० ॥ १० ॥ सम्यग् दर्शनीनो संग करशो, समकितीनी करो भक्तिरे; बुद्धिसागर त्यातम सम्यग्, दर्शन प्रगटे शक्तिरे. सम्यग्०॥ ११॥

(३७)

सांजळशो मुनि संयमरागे, ए राग.

निश्चयथी दर्शन ते आतम, उपशमने क्षयो-पशमेरे: क्षायिक दर्शनरूपी त्यातम, पडो न मिथ्या जलपंकजवत् न्यारोरे; निर्लेपी आतम गुण खेले, श्रानंद अपरंपारोरे. नि० ॥ १३ ॥ निकाचित जे कर्मना जोगो, त्यां नहीं शोकने प्रीतिरे; निर्जरतो कर्मोंने जोगे, खातम सुख प्रतीतिरे. नि॰ ॥ १४ ॥ पंचवार उपशम घट प्रगटे, क्षायोपशमी असंख्यरे; एकवार क्षायिक समकितनी, प्राप्ति थतां निःशंकरे; नि० ॥ १५ ॥ चार निक्षेपे सात नयोधी, सम्यग-दर्शन समजोरे: बुद्धिसागर आत्मस्वजावे; श्रद्धा श्रेमे रमजोरे; निष् ॥ १६ ॥

सक्टद्पि प्रतिपत्तिरहो नृणां।
भवति यस्य जवस्थिति मापिका॥
शिवसुखं प्रतिकन्द्खतां द्धत्।
नमत तद्गुरु दर्शनमाद्रात्॥
ज हाँ। श्री परम.

(३८)

सप्तमी ज्ञानपद पूजा.

ज्ञान ते ख्रात्मस्वरूप छे, चेतन गुण ठे ज्ञान; ङ्गान विना नहीं मुक्तिछे, वीर कहे भगवान्.॥१॥ ज्ञानथी ख्रानंद उपजे, ज्ञानथी विश्व प्रकाश; ज्ञान विना जगजीवका, पग पग पुःखी दास.॥२॥ ज्ञानीने पूजो भवी, सेवो नरने नार; ज्ञानावरणना नाशथी; व्यक्त ज्ञान सुखकार.॥३॥

ध्यान किया मनमां आणीजे. ए राग

ज्ञानने सेवो ज्ञानीने सेवो, ज्ञान जणोने जणा-वोरे; ज्ञानाज्यासीने स्हाय करो भवी, शास्त्रो लखावो छपावोरे. ज्ञान० ॥१॥ जैनधर्म जगमां फेलावो, ज्ञानीख्रो प्रगटावीरे; ज्ञान विना निह शासन चाले, ज्ञानछे मुक्तिनी चावीरे. ज्ञान० ॥२॥ श्रुत केवली केवली सम जाणो, ज्ञानथी धर्म प्रचारोरे; जोवंता तीर्थो ज्ञानीओ, जैनधर्म खाधारारे. ज्ञान० ॥३॥ ज्ञान विनानुं जीवन जम छे, खात्म जीवन छे ज्ञानेरे; (३९)

ज्ञानी ध्यान समाधि पामे, वर्ते ग्रुद्धातम तानेरे;ज्ञानण ॥१॥ ज्ञानीनो जे वनय न सेवे, तेने छे अतिचाररे; ज्ञानीनी आशातना टाळो, सफळ करो व्यवतारेर. ज्ञान० ॥ ५ ॥ जानु आगळ तम नहि रहेतुं, ज्ञानी श्चागळ अज्ञानरे; ज्ञानी घटमां दोष रहे नहीं, ज्ञान स्वतंत्र प्रमाणरे. ज्ञान० ॥ ६॥ ज्ञानथी चारित्र प्रगटे साचुं, ज्ञान छे श्रेष्ठ पवित्ररे; स्वपर प्रकाशक ज्ञान हे सुंद्र, तेथी वशमां हे चित्तरे. ज्ञानण ॥७॥ ज्ञानीनी व्याज्ञाए हलाहल, पीतां मुक्ति थातीरे; अज्ञानी वचने अमृतने, पीतां न शांति सहातीरे. ज्ञान० ॥८॥ पिंडस्थादिक ध्यानने ध्यावे, धर्म ग्रुकख वे ध्यावेरे; ज्ञानी ध्याननी सूक्ष्म क्रियाथी, क्षणमां मुक्ति पावेरे. ज्ञान**० ॥ए॥ ज्ञाननी दासी सर्व क्रिया**ं **बे, ज्ञानी पासे कि**रियारे; ज्ञाने जगमां अनंत जब्यो, भवसागरने तरियारे. ज्ञानण ॥ १० ॥ असंख्य योग छे मुक्तिना हेतु, ज्ञानयोग सहु मोटोरे; ज्ञानीनी सेवा जित्तची, रहे न कोई छोटोरे. ज्ञान०॥ ११॥ ज्ञानीने पूजो ज्ञानी ने वंदो, ज्ञानी छे अप्रमादीरे;

(80)

शुष्कज्ञानी एकांतवादी, क्रियाजमी जन्मादीरे. ज्ञान० ॥११॥ परोक्ष प्रत्यक्ष ज्ञान वे भेदे, श्रुत स्व-पर उपकारीरे; बुद्धिसागर सद्गुरु संगे, रहेशो नरने नारीरे. ज्ञान० ॥१३॥

वीर जिनेश्वर उपिद्देश, ज्ञान सकल उपकारीरे; चार निक्षेपे ज्ञानने, समजो नर छने नारीरे. वीरव ॥१८॥ मित अद्वावीश मेदे हे, श्रुत हे चउदश जेदेरे; अवधि असंख्य प्रकार हे, रूपी वस्तु वेदेरे. वीरव ॥१५॥ मन पर्यव बे जेदे हे, मननां पुद्गल जाणेरे; केवल रूपारूपीना, सहु पर्याय पिहानेरे. वीरव ॥१॥ अध्यातमज्ञाने भवी, केवलज्ञानने पामारे, बुद्धि-सागर आतमा, परम प्रभु चे जामारे. वीरव ॥१७॥

> सकल वस्तुसमृहिवभासनं । प्रचितकर्मविनाशनकर्मेठम् ॥ युगलजावगतं मितमुख्यकं । विरितदं रितदं प्रणिद्धमहे ॥१॥ उँ ह्राँ श्री परम.

(88)

ऋष्टमी चारित्रपद पूजा.

सदाचार सद्गुणमयी, चारित्र छे सुखकार; गावा ध्यावा आचरो, जावे नरने नार. ॥ १ ॥ द्रव्य-भाव चारित्र छे, निश्चयने व्यवहार; स्वर्गने मुक्ति-फळ मळे, तजा दुर्गुण खाचार. ॥ १ ॥

सिद्धिये नमो सिद्ध अनेता ए राग.

चारित्र एवं मळो सुखकारी, जाउ चारित्रीनी बिलहारीरे; चारित्रण समजावे जग सघळुं लागे, रागद्रेष न मनमां जागेरे. चारित्रण॥१॥ परजावे रस रीझ न आवे, रीझ लागे ख्रात्मस्वभावे रे; चारित्रण क्षोध जपर क्षोध जागे ज्ञाने, मन रहेतुं नहीं ख्राजिमानेरे. चारित्रण॥२॥ निर्देज निर्लोज जावे रहेवुं, सुख दुःख समजावे सहेवुंरे; चारित्रण देश-विरति सर्व विरति भेदे, ख्राठ बार कषाय न वेदेरे. चारित्रण॥३॥ रांक जीवो पण चारित्र पाळी, पाम्या मुक्ति वधू लटकाळीरे; चारित्रण शुक्ल शु-

(४२)

क्ल परिणाम वधंता, एतो अनुजवे ज्ञानी संतारे. षारित्रण ॥४॥ मैत्री प्रमोदने माध्यस्थजावे, करुणाए हृद्य ग्रुद्ध थावेरे; चारित्र० निर्मम निरहंकारे प्रणामे, सत्य ऋप्रतिबद्धता जामेरे. चारित्र० ॥ ५ ॥ अस्तेय ब्रह्मचर्य संतोषे, तर्जा व्यसनने सद्गुण पोषेरे. चारित्र० मित्र शत्रुपर राग न रोष, नहीं निन्दक दृष्टिनो दोषरे. चारित्रः ॥ ६ ॥ तृष मणिपर सम-भावनी वृत्ति, रहे मनमां न विषयासक्तिरे; चारित्र० **ळावे ळानुजव सुखनी खुमारी, थाय कर्मी** सकल उपकारीरे. चारित्रण ॥ ७ ॥ याय परमार्थ-नी योग प्रवृत्ति, दोष ऋल्पने बहुधर्मनीतिरे. चारित्रव कर्म करे पण मोहे न एमां, फल **ब्याशा रहे** नहीं तेमांरे चारित्र० ॥ ८ ॥ अतिचार दोष प्रगटचा वारे, मळ्यो मानव जब नहीं हारेरे. चारित्र० शुद्ध उपयोगथी आत्म प्रकाशे, शुज ब्राज्ञभ न मनमां भासेरे. चारित्रण ॥ ९ ॥ पूजो गावोने मनमां ध्यावो, लेवो चारित्रनो सत्य

(88)

स्हावेरि; चारित्रण संयमीनां दर्शन दुःखहारी, सेवो चारित्रीने नरनारीरे. चारित्रण॥ १०॥ समकीतीने चारित्रनी इच्छा, करी पुरुषार्थ प्रहे दीक्षारे. चा-रित्रण धर्म शुक्क ध्याने त्यातमऋद्धि, बुद्धिसारर मंगल सिद्धिरे. चारित्रण॥ ११॥ माया कारमीरे माया न करो चतुरसुजाण ए राग.

श्चातमगुणो विनारे, होळी राजा सरखो वेष: भवोभव जीवडारे, पाम्या छाधिवयाधि क्वेश. गुण-वण आडंबर शा खपनो, बाह्यक्रिया व्यवहारेरे; वेष किया छे गुणने माटे, जाणे ते निज तारे. आतमण ॥ १२ ॥ मोह वने नहि मनडुं भमतुं, ध्यान समाधि योगरे; जममां सुखनी रहे न इच्छा, आतम सुखने जोगे. त्यातम० ॥ १३ ॥ दुर्गुण दोषो टाळी सघळा, आत्मगुणो प्रगटावोरे: चिदानंद उपयोग रमणता, चारित्रज ते च्हावो. आतम० ॥१४ ॥ मोहनो उपशम क्षयोपशमने, क्षायिकनाव जे करवोरे: निर्विकल्प समाधि योगे, परमानंदने वरवो. आतम० ॥ १५ ॥ ख्रात्मोपयोगे ख्रात्मरमणता, निश्चयची

(88)

चारित्ररे; बुद्धिसागर पूर्णानन्दी, त्यातम पूर्ण पवित्र. आतमण ॥ १६ ॥

> रमणतात्मग्रणेषु हि यत्रच। विगतनूतनकर्मपर्थं च यत्॥ जगति जीवसमृहसुबह्मभं। सुलिखतं चरणं हृदि धारये॥१॥ उँ ह्वी श्री परम.

> > नवमी तपपद पूजा.

द्रव्यभावशी तप तमे, सक्छ विघ्न दूर जाय; पद्माश लिक्क उपजे, जय जय तप महिमाय ॥ १॥ तम तपतां कष्टो, दळे, दुःखो दूरे जाय; सर्व कर्म दूरे टळे, पग पग मंगल थाय ॥ २॥ तपना भेद खनेक हे, तपना बार प्रकार; पूजो वंदो तपस्वीने, तप तपशो नरनार ॥ ३॥

नमोरे नमो श्री श्रत्रुंजय गिरिवर

पूजो वंदोः तथः ग्रणः धारी, तय तपशो जयका-रहे, तथः तपताः अद्वाकीशः पञ्चास्र, खब्धि प्रगटे सा-

(84)

ररे. पुर ॥ १ ॥ सर्व शुजाशुभ इच्छा राधक, तपथी शक्ति प्रकारोरे: निष्कामी थे कार्यो करतां, तप छे जाणो पासेरे. पूर्णा २॥ देव गुरुने संघनी सेवा, भक्ति तप छे बेशरे; धार्मिक कर्म करंतां संकट-सहबां दुःखो कलेशरे.पू०॥३॥स्रात्मार्थे परमार्थे प्रवृत्ति,करतां भय नहि खेदरे; द्वेष न प्रगटे तप ए तपतां, नासे मोहना भेदरे. पू० ॥ ४ ॥ मन वाणी कायानी शुद्धि, धरवी तप जयकाररे; सर्व ग्रुभाशुभ फलनी इच्छा-त्यागथी तप वे उदाररे. पूरु॥ ५॥ तीर्थकर त्रिज्ञा-नी पण जे, ते भव मुक्ति जाणरे; तप तपता जाणी-ने भड्यो, तप तपशो ग्रण खाणरे. पूर्ण । ६ ॥ मरण जीवनपर नहीं आसक्ति, सर्व समर्पण थायरे; पर-मार्थे जीवननी करणी, शुद्धोपयोगे सुहायरे. पू० ॥ ७ ॥ सर्व जीवोना हितने माटे, काया मननी प्रवृत्तिरे; जैन्धर्मनी सेवा जिक्त, करवानी हे रीतिरे. पूर्ण ॥ ८ ॥ सर्व खोकनां दुःखो हणवा, सहेजे सम-पीइ जायरे; सुख दु:ख आवे हर्षे न शोचे, साक्षी

(84)

भाव सुहायरे. पू० ॥ ९ ॥ नामने रूपमां मोह रहे नहीं, कर्तव्योज करायरे; ज्ञानामिमां मोहने होमी, मुक्ति क्षणमां पायरे. पू० ॥ १० ॥ मान पूजानी होय न इत्ति, धार्मिक होय प्रवृत्तिरे; बाह्याभ्यंतर तपने तपतां, प्रगटे अनंती शक्तिरे. पू० ॥ ११ ॥ आतमने परमातम करवा, तप वे साधन सत्यरे; बुद्धिसागर मंगल पामा, तपथी करी शुज कृत्यरे. पूजो० ॥ ११ ॥

वीरकुमरनी वातडी कोने करीए. ए राग.

बासनारोधक तप तपो नरनारी, मनथी इच्छा-त्र्यो निवारी करो आत्म ग्रुद्धि जयकारी, शुजाशुभ परिणति वारी, रहो त्र्यात्म मगन्न, वासना ॥ १३॥ निश्चय तप क्षण मात्रमां शिव आपे, ग्रुद्ध केवल ज्ञाने ढापे; पूर्ण आनंद घटमां व्यापे, रहो तपथी प्रसन्न. वास०॥ १४॥ कामादिक मोह वृत्तियो सहु टाळो, शुद्ध त्र्यात्म स्वरूप निहाळो; भेदभावनी वृत्ति बाळो, राखो निर्मेख मन. वास०॥ १५॥

(80)

श्चात्मज्ञानने ध्यानयी हे समाधि, टळे श्चाधि व्याधि उपाधि; लहो मुक्ति तप श्चाराधी, बनो जीवनमुक्तः बासा ॥ १६ ॥ निश्चय तप पुरुषार्थयी भवी पामो, बनी निर्विषयी दुःख वामो; परब्रह्म बनी ठरो हामे; बुद्धिसागर बेश. वासा ॥ १७ ॥

गीत.

गायां गायांरे एम नवपद भावथी गायां; प्रभु
महावीर देवे प्रकाइयां, ते में भावथी प्यायांरे. एम.
चार निक्षेपे सातनयेजे, नवपदनुं करे ज्ञान; सिद्ध
चक्र आराधी ध्याइं, पोते बने भगवान्रे. एम०॥१॥
आंबिल ओळी आदितपथी, नवपदने आराधे. पदपद मंगस ऋदिसिद्धि, मुक्तिने ते साधरे. एम०॥२॥
ग्रुरुगम यंत्रने मंत्र महीने, जप जपतां एकताने.
जे जे भावे आराधे ते ते, जावे फळे वे ज्ञानेरे. एम०॥३॥
॥ ३॥ संवत् आंगणिश सत्तोत्तरनी, साले आश्विन
मासे, विजया दशमी चढता पहोरे, प्रजा रची उद्धा-

(86)

सेरे. एम० ॥ ४ ॥ सानंद शहरे छानंद ब्हेरे, चो-मासुं कर्युं भावे. संघनी सेवा भाक्त सारी, नवपद प्रजा जणावेरे. एम० ॥ ५ ॥ तपगच्छहीराविजय सू-रिपाटे, सहज भागर उवझाय, पष्ट परंपर योगी म-हासिद्ध, नेमि सागर गुरुरायरे. एम० ॥ ६ ॥ सागर **इा**ाखामां रवि सरखा, रविसागर ग्रुराज. ग्रुर्जर देशी संघ सुधार्यो, जेनां उत्तम काजरे. एमण ॥ ७॥ ते-मनी पाटे वैयावची, धर्म कियामां धोरी. श्री सुख सागर ग्रुरुजी वंदु, ज्ञाननी हाथमां दोरीरे. एम० ा। ८॥ ग्रह सुखसागर पूर्ण कृपाथी, नवपद महिमा गायो, बुद्धिसागर सूरिए जावे, सिद्ध चक्र वधायोरे. एम०॥९॥

> दहात यत्किल कर्म निकाचितं, विविध सिद्धि विधायकमप्य हो; जिनवेरैरपि सेवितमाद्रात्, हृदि वहामि तपो बहु भेदकम् ॥ १ ॥ उँ हुँ। श्री परमण

(88)

पंचाचारपूजा प्रारंज.

मङ्गलम्,

प्रभु महावीर जिनवरा, तीर्थंकर जयकार; सर्व विश्व शासन प्रभु, परब्रह्म सुखकार. ॥ १ ॥ प्रणमी वंदी पूजीने, गावुं पंचाचार, पंचाचारे वर्ततां, मुक्ति बहे नरनार ॥ १ ॥ द्रव्यभाव आचार हे, साधन साध्य प्रकार; सापेक्षे साधन सकत, आत्मशुद्धि करनार. ॥ ३ ॥

प्रथम ज्ञानाचार पूजा.

दुहा.

मोहनजी मेाकलोरे मोसाळुं अथवा खोहि जिन पूजीए मनरंगे-ए राग.

प्रभु महावीर जगहितकारी, प्रतिबोध्यां नरने नारी,धन्य महावीर जग उपकारीरे, आज मनोरथ ४ (40)

मुज फळीया. मनवंडित मेळा मळियारे. आज० ॥२॥ ज्ञानाचारने समजाव्यो, ते में मनमांही लाव्यो. द्रव्यने भावथको भाव्योरे. आज० ॥ २ ॥ काल विनयने बहुमाने, गुरुगम पामी उपधाने, अनि ह्रवताना तानेरे. आजण ॥ ३ ॥ शब्दार्थ तदुजय धारो, श्रुत जणतां सुख निर्धारो, तजीए आठे ऋति-चारोरे, आजः ॥ ४ ॥ त्यागम शास्त्र श्रवणयोगे, गुरुसेवा स्वार्पण भोगे, ज्ञान वधे मन आरोग्येरे, आज० ॥ ५ ॥ गुरु श्रद्धा प्रीति भक्ति, प्रगटे ज्ञान तणी शक्ति, प्रगटे परम प्रभु व्यंक्तिरे. आज ॥६॥ ज्ञानावरण सकळ दूर नासे, खागम खनुजव अभ्यासे, भावथी आतम उल्लासेरे. आजण् ॥ ७॥ तुज <mark>ञ्चागम गुरुमुख सुणतां, कर्म सक</mark>ळ वेगे टळतां, बुद्धिसागर, श्रेनुसरतांरे. श्राज० ॥ ८ ॥

ॐ ही अी परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय ज्ञानाचारपूजनाय.

(48)

जलादिकं-यजामहे स्वाहा.

द्वितीय दर्शनाचार पूजा.

दुहा-

दर्शनाचारने पाळीए, आठ तजी अतिचार; द्रव्यभाव वे भेदथी, समजी दर्शन सार, ॥ १ ॥ निश्चयने व्यवहारथी, दर्शनना बहु भेद; दर्शनना, स्राचारने, पाळी टाळो खेद, ॥२॥ देवगुरुने धर्मनी, भक्ति करतां भव्य, आत्मिकदर्शन प्रगटतुं, करतां शुभ कर्तव्य, ॥ ३ ॥

विनति धरजो ध्यान जगपति विनति ए-राग.

दर्शनना ऋाचार, भवी भजो, दर्शनना ऋाचार निःशंकित थै निःकांक्षित थै, रुडो धरो व्यवहार. भवी०॥१॥ वितिगिच्छा दोष निवारी, साधीए धर्माचार. भवी० मूढपणानी दृष्टि त्यागी, धरो प्रभु-पर प्यार. भवी०॥१॥ उपबृंहणथी दर्शन पुष्टि, (42)

जिनशासन जयकार. भवी० सकल संघनी सेवा भक्ति, निष्कामि स्त्राचार, भवी० ॥ ३ ॥ जिनशास-नना खाठ प्रभावक, सेवो नरने नार, भवी० उपयोगी थे दर्शनाचारे: रहेतां कर्म संहार. भवी० ॥४॥ लज्जा खेदने द्वेष निवारी, निर्जय थैने उदार. भवी० तनमन धननुं अर्पण करवुं, संघोन्नति हित-कार. जवीठ ॥ ५ ॥ अर्पाइ जास्रोने जैनो, त्यागी देहाध्यास, भवी० देवगुरुने जैन धर्मनो, तजो नहीं विश्वास. भवी० ॥ ६ ॥ स्थिर करीए धर्में सर्वने, यथाशक्ति नरनार, भवी० साधर्मिकनी भक्ति करीए. करी प्रभावना सार. जवी० ॥७॥ निश्चय शुद्धातम अनुभवतां, रहे न दर्शन दोष, भवी० बुद्धिसागर दर्शन पामे, सह रीते संतोष. भवी०॥ ८॥

> तृतीया चारित्राचार पूजा. <u>प्र</u>हा.

द्रव्यभाव चारित्र छे, निश्चयने व्यवहार, चारित्राचारे रमो, आठ तजी अतिचार. ॥१॥

(43)

पांच समिति त्रण गुितनो, उत्तम जगमां योग, जे योगे रमतां थकां, आतम होय ख्रयोग. ॥ २ ॥ ख्रपवादे समिति कही, उत्तमें त्रण गुित; गुत्ते गुप्ता मुनिवरा, पामे क्षायिक शक्ति, ॥ ३ ॥

सांभळजो मुनि संयमरागे-ए राग.

त्रभु महावीर जिन उपदेशे, समिति ग्रिति साचीरे, असंख्य योगनी प्रवचन माता, रहेशो तेमां राचीरे ॥ त्रभु ॥ र ॥ ज्ञानने जिक्क कर्म उपासना, इठयोगादिक योगोरे, त्रण ग्राप्तमां सर्व समाता, जेथी रहे नहीं जोगोरे ॥ प्रभु॥ २ ॥ ग्रहस्थ त्यागी बेने हितकर, योग क्षेप्र प्रदातारे, सिद्धवा सिजरो सिद्धे तेओ, पाळी प्रवचन मातारे ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ भावथकी त्रण गुति साधे, मुक्ति खनुभव आवेरे, द्रव्यने जावथकी निज मुक्ति, सहजानंद सुहावेरे ॥ प्रभु ॥ ४ ॥ रागद्वेष संकल्प विकल्पो, दूर थतां मन गुतिरे, निर्विकल्प स्वभावे समाधि, केवल प्रगटे शक्तिरे ॥ प्रभु ॥ ५ ॥ आतम ज्ञानोपयोगे रहेतां,

(48)

समिति ग्रित पासेरे, ज्ञानी सर्वे कमों करतो, ज्ञाने ग्रित उपासेरे ॥ प्रभु ॥ ६ ॥ ज्ञानी समिति धारे ज्यां त्यां, द्रव्यभावथी जाणीरे, उत्कृष्टाजंगे क्षण मुक्ति, भाखे केवल ज्ञानीरे ॥ प्रभु ॥ ७ ॥ समिति ग्रित साधे सर्वे, योग सधाता जाणोरे, बुद्धिसागर स्थातम उजागर, प्रगटे भाव प्रमाणोरे ॥प्रभु ॥८॥ चतुर्थी तपआचार पूजा.

<u> पुहा.</u>

बार भेदे तप भलो, बाह्य अभ्यंतर बेश; तप तपतां नासे घणा, कर्म निकाचित कलेश. ॥ १ ॥ अग्रुभ शुभ इच्छा सकल, सर्व क्रिया फलत्याग. निश्चय तप ते जाणवुं, तपता महा सौभाग. ॥ २ ॥ बारे अतिचारो तजी, धारो तप आचार, दुःख सही स्नातम चहो, तप तपशो नरनार. ॥ ३ ॥ बोमासी पारणुं आवे-ए राग.

प्रजमहावीर जिनजयकारी, तप तिषया बनी छ-नगारी, बन्या केवली जगहितकारी, भाख्युं तपवर्तन सुखकारीरे, तप सेवो सकल नरनारी, जाउ तिप-

(44)

यानी बालिहारीरे, तप० ॥ १ ॥ द्रव्यभावथी तप आचरवुं, भवसागर वेगे तरबुं, निश्चय निज ग्रुणमां जळवुं, समजावे रही सहु करवुंरे, तप०॥२॥परपुद्-गल मोह न धरवो. निश्चय तप गुण ए वरवो, द्रव्यजाव काम संहरवो, प्रभु पूजी तप दिख करवोरे. तप०॥३॥ द्रव्य जाव तपस्वीसेवा, करवा प्रगटे दिख हेवा; देवारे. तप० ॥ ४ ॥ जे जे कर्म उदयमां त्रावे, सुख दु:खपणुं दर्शावे; बुद्धि नहीं खावे, रहे ज्ञानी सम तप भावेरे. तपण ॥ ५ ॥ नाम रूपमां मोह न धारे, करे कर्मने स्वाधिकारे: उपकारमां जीवन गाळे, संघ सेवा तप ते भारेरे. तप० ॥ ६ ॥ करे सद्गुरु साधु भक्ति, कोइमां नहीं धारे आसक्तिः राखे नहीं सात जातनी भीति, एवी ज्ञानी तपस्वी रीतिरे. तपण ॥ ७ ॥ ग्रुद्ध उप-योग छे तपभारी, पामे ज्ञानी जन संस्कारी; ध्यान सहज समाधि सारी, रहे वृत्ति न कोइ विकारीरे. तप्राटा। पुरुषार्थथी तप्र आचरशो, यथाशक्ति भावची

(44)

करशो; खि॰ धि सिद्धि प्रकटता करशो, बुद्धिसा-गर मंगल वरशोरे. तप०॥ ९॥

पांचमी वीर्याचार पूजा.

दुहा-

श्रातम शक्ति फोरवो, त्रण तजी श्रातिचार, सर्व प्रमादो परिहरो, धर्म करो नरनार, ॥१॥ देव ग्रुरुने धर्मना, श्राराधनमां शक्ति, फोरवतां शक्ति वधे, प्रगटे प्रभुपद व्यक्ति, ॥२॥ टींटोमी उत्साहथी, श्रमंत ग्रुणो, जत्साह, धारी श्रातम ग्रुद्धिनो, राखो मनमां चाह.॥ ३॥

ध्यान किया मनमां आणी जे-ए राग.

प्रभु महाबीर जिन उपदेशे, वीर्याचारने धारोरे. धर्ममां शक्ति फोरवो लोको, करशो पर उपकारोरे. प्रभु० ॥१॥ दुःख पडंतां निहं मुंझाशो, परनी व्हारे धाशोरे, संकट पनता भागी न जाशो, करवा धर्म

(49)

उजाशोरे॥ प्रभु० ॥२॥ त्रत तप भक्तिमां ढीला न थाईंगे, उत्साहे सुख पाशोरे; कायर चै थाओ नहीं दासो, चूको न निज विश्वासोरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ **अनंत शक्तिनो स्वामी आतम, कायरथो न पमा-**तोरे; जीवंतां मरजीवा ज्ञानी, तेथी खारम लहातोरे. प्रभु०॥ ४॥ देहाध्यासथी मरतां मुक्ति, पडे न पाछा नीतिरे, शूराजननी एवी रोति, घरे न क्यांये भीतिरे. प्रभु०॥ ५ ॥ गोपवो नहीं बबवीर्यने धर्मे, उत्साही सत्कर्मेरे; थैने रहेशी आतम शर्मे, पड़ो न मिथ्या भर्मेरे. प्रभु० ॥ ६ ॥ भावीभाव हरो ते थारो, कर्में लख्युं ते थारेरे; एकांत मिथ्या एवी बुद्धि, टाळी रहो उल्लासेरे; प्रभु०॥७॥स्रातमना पुष्पार्थे सर्वे, थातुं निश्चय राखोरे; प्राण पडे पण कार्य न मूको, ञ्चातम सुखने चाखोरे. प्रभु० ॥८॥ वीर्याचारे कर्म टळे सहु, आतम शक्तियो प्रगटेरे; आतम ते परमातम थावे, मिध्या कर्मो विघटेरे. प्रभु ॥ ९ ॥ सर्व प्रकारे धर्म प्रवृत्ति, करतां धैर्यने

(46)

भारेरिः; बुद्धिसागर क्यानंद मंगस, सिद्ध प्रभु निर्धा-रोरे. प्रभु०॥ १०॥

कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो-

पंचाचार सदाचार जगमां, ते गातां हरखायो: वीर प्रज्ञ वचनामृत पीतां, तृति न मनमां पायोरे. महावीर० ॥१॥ पंचाचारना धारक पूजो, पंचमी गति सुखकारी; वीर प्रजुए समकित पामी, पाळ्या दुर्गति हारीरे. महावीर० ॥२॥ द्र्शन ज्ञानने चारित्रमांही, पंचाचार समाया; पंचाचारने पाळे मुक्ति, सहजानंद सुहायारे. महावीर० ॥ ३ ॥ अंतर त्र्यातम पंचाचारे, पूजी वीरने भावे; परमातम पोते घट थावे, ध्याता ध्येय सुहावेरे. महावीर० ॥४॥ सानंद शहेरे छानंद ब्हेरे, पूजा रची गुण दावे;ओगणीश सतोत्तेर आशो वदि, बीज दिने बहु जावेरे. महावीर० जणतां गणतां ने सांभळतां, पामो शिव नरनारी: संघ

(49)

चतुर्विध मंगल पामो, समकिती व्रती अवतारीरे.
महावीर०॥६॥ चउनिक्षेपे सातनेथ में, पंचाचारने जाण्याः ग्रुरु सुखसागर पूर्ण कृपाथीः, घटमां
भावे आण्यारे. महावीर ॥७॥ गावो जाणो मनमां
आणो, आचारने आचारोः बुद्धिसागर आनंद मंगल,
ऋद्धि वृद्धि अपारेारे. महावीर०॥८॥

(६०)

अथ विंशतिस्थानक पद लघुपूजा प्रारंज. प्रथम अरिहंतपद पूजा.

श्री महावीर जिनेश्वरा, चोवीशमा जिनराज; त्रिशलानंदन जयकरा, प्रणमुं जिनशिरताज. ॥ १ ॥ बहुविध तपशास्त्रो जण्यां, कर्म दुरित हरनार; विंशति स्थानक तम वहुं, सहु तपमां शिरदार. ॥ २ ॥ विशस्थानक पूजा रचुं, पूज्यपणुं दातार; पूज्यनी पूजा भक्तिथी, तीर्थकर पद सार, ॥ ३ ॥

प्रथम ऋरिहंत पद्पूजा.

परमेष्टीमां प्रथम हे, अरिहंत जगवंत. नय निक्षेपे ध्याइए, आविभावे संत.॥१॥

संभव जिनवर विनति. ए राग.

प्रभु अरिहंत जिन पूजीए, बारगुणे जयकारीरे, चोत्रीश अतिशयवंत जे, केवलज्ञानना धारीरे॥ प्रभु०॥ १॥ पांत्रीश वाणी गुणोवमे, जग बोधे

(६१)

सुलकारीरे; त्रणकाल अईन् विभु, सर्व जगत् उप-कारीरे. प्रभु० ॥२॥ क्षायिक नव लिध्य धणी, तारण तरण झहाजरे. तीर्थ प्रवचन संघने, स्थापे भवी हितकाजरे. प्रजु० ॥ ३ ॥ इन्द्र ऋसंख्य सुरासुरा, सेवे प्रजु हितकारीरे; घाती कर्म चउ क्षय करी, जाव प्रभुता धारीरे. प्रभु० ॥४॥ दोष अढार रहित प्रभु, सर्व शुभोषम छाजेरे. बुद्धिसागर ध्यावतां, आतम जगमां गाजेरे. प्रभु० ॥ ५ ॥

द्वितीया सिद्ध पद्पूजा.

सकल कर्मने क्षय करी, सिद्धया सिद्धशे जेह; त्रिकरणयोगे पूजीए, वंदीजे ग्रण गेह. ॥ १॥

ध्याइए ध्याइए ध्याइए- सिद्ध परमातम प्रभु ध्याइए; आठ कर्म क्षये आठ गुणोथी. सिद्ध थया दिल बावीए. व्यतिरेकी एकत्रीश गुणो जे. ब्यस्ति नास्तिमय जावीए. सिद्ध० ॥ १ ॥ जन्म जरा नहीं (६२)

मृत्यु न जेने, हृद्य धरीने रीजीए. शुद्ध गुणो पर्यायो अनंता, आविर्भावे ते लीजीए. सिद्ध० ॥ २ ॥ पूर्णानंदमयी परमेश्वर, आदि न अंत न पाइए. आतम सत्ताए परमातम. सत्ताच्याने सुहाइए. सिद्ध० ॥ ६ ॥ त्र्यातम गुण पर्यायथो अस्तिनास्ति परनी जाणीए. उत्पत्तिव्यय ध्रुवतारामी, समये समये चित्त त्र्याणीए. सिद्ध० ॥ ४ !। सिद्ध प्रभुत्रो गावो ध्यावो, प्रभु आज्ञा शिर धारीए. बुद्धिसागर सिद्ध प्रभु विभु, थैने जन्म सुधारीए. सिद्ध० ॥ ४ ॥

तृतीया प्रवचन पद्पूजा.

प्रवचन पूजतां वंदतां. ध्यावतां मंगलमाल. प्रवचन पद दिलमां वस्युं—सर्व पाप हणनार. ॥१॥

विमला नव करशो उच्चाट ए-राग.

अमे प्रवचन पूजो गावो. मनमां धारशोरे. भावे तीर्थ संघ सेवाथी, संकट टाळशोरे. असे संघ

(६३)

चतुर्विध सेवा भक्ति. करतां प्रगटे सघळी शक्ति. करीने शासन सेवा. खातमने उद्धारजोरे ॥ प्रेमे० ॥ १ ॥ तीर्थिकर पण तीर्थने नमता, तीर्थ नमे ते भव नहि जमता. भावे प्रवचन श्रुतने मनमांही अवधारशोरे. प्रेमे० ॥२॥ धर्भक्षेत्र साते श्रुभ पोषो, टाळो शंसय खादि दोषो. आतम उपयोगी चै कमे कटक संहारशोरे. प्रेमे० ॥३॥ जैन धर्म फेजावो करशो, तीर्थकर गणधर पद वरशो. प्रभुनी वाणोने जगमां सर्वत्र प्रचारशोरे. प्रेमे० ॥ १॥ प्रवचन सेवा माटे सर्वे, मळ्युं गणो नहि रहेशो गर्वे. जावे बुद्धि-सागर खाप तरो परतारशोरे. प्रेमे० ॥ ५॥

अथ चतुर्थ आचार्य पद पूजा.

नमो नमो श्री सूरिवर, गणधर संघ प्रधान; तीर्थकर पाछळ प्रभु, ऋईन्सम भगवान् . ॥ १॥

जीवलमा घाट नवा शीद घंमे. ए राग.

सूरिवर शासन जिक्त भर्या, हृदयमां ते में अंगीकर्या, देशकाल अनुसारे शासन, धर्म प्रचारक (48)

खरा. छत्रीशी वत्रीशी गुणे करी, आतम गुणथी भर्या. हृद्यमां०॥१॥ देशकाल तरतम गुण कि-रिया, शोभे जे जयकरा; बत्रीश जपमा जेने वाजे, गीतार्थ ज सुखकरा. हृद्यमां०॥२॥ धर्मशास्त्रना खर्थ प्रकाशे, शासन शोभा वर्या; स्वतंत्रताए वर्ते जगमां, अनंत ज्योते भळ्या. हृद्यमां०॥३॥ सर्व शास्त्रनी एक वाक्यता, करता अनुभव भर्या; आतम जपयोगे सहु करणी, करता ध्याने ठर्या. हृद्यमां०॥ ॥॥ ॥ ध्यान समाधि योगे योगी, कदि न जावे कर्या; बुद्धसागर सूरि सेवा, भक्ति मंगल धर्या. हृद्यमां०॥ ५॥

अथ पंचम जपाध्याय पद पूजा.

पच्चीश ग्रुणथी शोजता, उपाध्याय जयकार; भणे भणावे साधुने, युवराजा सुखकार. ॥ १ ॥

(६५)

आतम जिक मळ्या केइ देवा. ए राग.

वाचक पद पूजो नरनारी, स्वयं बनो जग तेवा; पुरुषार्थे वाचक पद प्रगटे, कर्म क्षये ग्रण लेवा. वा-चक० ॥ १ ॥ जीवंता वाचक सहु पूजो, द्रव्यथी भावथी जावे; गुणीनी संगे गुणीना ध्याने, गुण निज घटमां त्रावे. वाचक० ॥२॥ वाचक वैयावच क-रीने, मानव भव ल्यो ल्हावो; सर्व स्वार्पण करीने भक्ति, करतां गुण प्रगटावो. वाचकण ॥ ३ ॥ मिथ्या संशय तर्क वितर्कों, तजोने वाचक सेवो; लोक विषय संज्ञाने त्यागो, वाचक सेवा मेवो. वाचक० ॥ ४ ॥ अनेक सद्युणद्रिया वाचक, सेवो नरने नारी. बुद्धिसागर वाचक पदनी, जाउं हुं बलिहारी. वाचक०॥५॥

पंचमस्थविरपद पूजा.

स्थिर करता मुनि आदिने, जैन धर्ममां जेह; स्थिनरोने सेवो सदा, स्थिरतादिक ग्रुण गेह. ॥१॥

(६६)

श्रुतपद निमये भावे जविया. ए-राग.

स्थविर मुनि जगमां उपकारी, मुनिजन स्थि-रता कारीजी; स्थविर साधुनी संगति करतां, चंच-ळता टळनारी; स्थविरने, जजीएजी, पशुने करता देव. स्थविरने यजीएजी ॥ १ ॥ वीश वर्ष दीक्षा पर्यायी, साठ वर्ष वय धारीजी; ब्याचार आदि अं-गना ज्ञाता, श्रुतस्थविरा सुखकारी. स्थविर० ॥२॥ बालक ग्लान संशयी चंचलने, धर्मविषे स्थिरकारीजी: परिणामिक बुद्धि अनुभवी जे, बाल मुनि हित-कारी. स्थविर० ॥ ३ ॥ प्रभु महावीरे मेघ कुमरने, संयममां स्थिर कीधाजी; ठाणांगे दश स्थविरा भा-ख्या, त्रातम रमणी प्रसिद्धा. स्थविर० ॥ ४ ॥ ज्ञानी ध्यानी मुनिवरा जे, खपर समयना दुरि-याजी; बुद्धिसागर स्थविर मुनि शुभ, तारे ने जे तरिया. स्थविरण॥ ५॥

सप्तम साधु पद पूजा.

आत्म स्वजावे जे रमे, परोपकारी महान्; सत्तावीश ग्रण धारका, प्रणमो मुनि ग्रणखाण.॥१॥ (६७)

ए ग्रुण वीर तणो न विसारुं ए राग. मुनिवर देखी प्रणमो वंदो, पूजो ध्यावो भा-वारे; मुनिवरनी संगत करवामां, श्रद्धा प्रीति खावारे. मुनिवर०॥१॥ वर्तमानमां तरतम योगे, वर्ते साधु जेहरे; तेनी सेवा भक्ति करतां, थाशो स्वयं गुण गेहरे. मुनिवर० ॥२॥ मुनि व्याशातना हेलना लागो, वर्ततानी संगरे; करशो ग्रणरागी थै बोको, गुणनो धरो मन रंगरे. मुनिवर० ॥ ३ ॥ सर्व जीव उपकारी साधु, क्षांति खादि धरे धर्मरे; शुद्धा-तम उपयोगे वर्तीं, करता धर्मनां कर्मरे. मुनिवर० ॥ ४ ॥ अप्रतिबद्धपणे जे वर्ते, ग्रुरु निश्राओ संतरे; बुद्धिसागर मुनिवर सेवा, अनंत पुण्य मळंतरे. मुनिवरण॥ ५॥

अष्टम ज्ञानपद पूजा.

ज्ञानने पूजो जविजना, सकल धर्म आधार; ज्ञान प्रकाशी आतमा, परमातम निर्धार ॥१॥

(६८)

सिद्धचक पद सेवा कीजे. ए-राग.

सर्व गुणोमां ज्ञान छे मोटुं, ज्ञाने परमानंदोजी; आत्मज्ञान हे सर्वमां मोद्धं, टाळे जे भवफंदो; ज्ञानने भजीएजी, ज्ञान वे त्र्यातम रूप; निजगुण सजीएजी. ॥ १ ॥ ज्ञानोपयोगे त्र्यात्मरमणता, स्वरूप किया हे साचीजी; ज्ञानोपयोगे ध्यान किया-थी, रहेशो निजगुण राची. ज्ञान० ॥ २ ॥ ज्ञानो पयोगे सहज समाधि, निर्लेषे सह करणीजी; नय-निक्षेपे ज्ञानने जाणो, जे छे भवमां तराही. ज्ञानण ॥ ३ ॥ निजपरने उपकारी श्रुत हे, जाणे छे स्या-द्वादीजी; स्त्रनेकान्तपणे सह जाणो, थास्रो नहीं उन्मादी. ज्ञानः ॥ ४ ॥ ज्ञाने सर्वे कर्म क्षय क्षणमां, करे बतां निह्न कर्ताजी; बुद्धिसागर सद्युरु सेवो, ज्ञानी जवोद्धि तरता. ज्ञानने ॥ ५॥

नवमी दर्शनपद पूजा.

द्रव्य जाव दर्शन नमु, निश्चयने व्यवहार, स-म्यग् दर्शन पामीने, मुक्ति लहे नरनार. ॥ १ ॥ (६९)

तपपदने पूजीजे हो प्राणी. ए राग.

दर्शन दिल प्रगटावो हो सुखकर, दर्शन दिल प्रगटावो॥ ठपशम क्षयोपशमने क्षायिक, द्रव्यने जाव सुहावोः, व्यवहार निश्चय समकित पावो, अजरामर थइ जावो हो. सुखकर ॥ द्र्शन० ॥ १ ॥ सम्यग् द्र्शन योगे मिथ्या, शास्त्रो पण होय सवळां. मिथ्या दर्शन योगे सम्यक्-शास्त्रो पण होय अवळां हो. सुखकर॥ दर्शन ॥ २ ॥ सम्यक्पणे सघळुं परिणमतुं, सम-कितीने जावे. अल्पबंधने निर्जरा झाझी, प्रवृत्तिमां थावे हो. सुखकर ॥ दुईान० ॥ ३ ॥ सात ऋाठ त्रण चार भवोमां, समिकती लड़े मुक्ति. उक्कुष्टुं ऋंत मुंहर्तमां, पामे मुक्ति झटिति हो. सुखकर. दुईनि ॥ ४ ॥ समकितीनी सेवा जिक्त, करवा स्वार्णण करवुं. बुद्धिसागर आतम शुद्धि, मंगल पदने वरवुं हो. सुखकर. दर्शन० ॥ ५ ॥

दशमी विनयपद पूजा.

बाह्याज्यंतर विनयने, सेवो नरने नार. सर्वं भर्मनुं मूळ हे, सद्गुणमां शिरदार ॥१॥ ((%)

जीवलडा घाट नवा शीद घडे. ए राग.

विनयनी वाटे जे जन चडे, जगतुमां पाछो ते नहीं पड़े. देव गुरुने संत विनयथी, मारग धर्मनो जडे: विनये विद्याज्ञानने पामे, संसारे नहि समे. विनयनी ॥ १ ॥ पांचने दश्चिध तेरने बावन, भेदे विनयने करे. शमदम आदि ग्रणने पामे, वांछित वेळा वळे. विनयनी ॥ २ ॥ आहारी पण उपवासी छे, विनयी मुक्ति वरे. गुरु विनये ज्ञानादिक पामे, श्रद्धा प्रीति बळे. विनयनी० 🛭 ३ ॥ सर्व संघ ग्रुणी-जनना विनये, मोहनी वृत्ति टळे. शुद्धातम उपयोगे करणी. थावे निजग्रण जळे. विनयनी ॥ ४ ॥ सर्व शक्तिनुं मूळ विनय छे, जक्तोने सांपडे. बुद्धिसागर मंगल माला, ऋनंत सुखनां मळे. विनयनी ॥ ५ ॥

अग्यारमी चारित्रपद पूजा.

सर्वगुणी चारित्रथी, मुक्ति लहो नरना चा-रित्र सम जगको नहीं, पूर्ण मुक्ति दातार. ॥ १ ॥

(48)

कानुमो न जाणे मोरी प्रीत. ए राग.

चेतन धारी क्षे चारित्र, दुर्गुण दोष हरीनेरे, चेतन॥ द्रव्यने जावथी धारे, कर्मो सघळां संहारे; त्वं रुद्धं धर चारित्र, शाने मोह धरे छे रे. चेतनण ॥ १ ॥ सर्व प्रमादो वारी, चेती छे छात्म सुधारी; पृही वा त्यागीनुं चारित्र, धरी खे स्वाधिकारेरे. चे-तन. ॥ २ ॥ मोह काद्वमां खूंच्यो, भूंडनी पेठे मुं-झ्यो, रागद्वेषे पडिग्रो मूंढ, शीदने निज विसरेछेरे. चेतन ।। ३ ॥ हजी हे हाथमां बाजी, हारे शुं थैने पाजी; जीवो मुक्ति पाम्या अनंत, शाने वार करेछेरे. चेतन० ॥ ४॥ जुद्ध स्वनावमां रमवुं, एथी न जवमां जमबुं; बुद्धिसागर गुरु चारित्र, पामी ज्ञव्य तरेबेरे. चेतन० ॥ ५ ॥

बारमी ब्रह्मचर्य पद पूजा.

रत्न मिश्रमय मंदिरो, प्रतिमात्रो करनार; तेथी अनंतु फल लहे, ब्रह्मचर्य धरनार.॥१॥ (७२)

धनधन ते जगमां नरनार, विमलाचलके जानेवाले. ए राग.

धन्य धन्य जगमां ते नरनार, निर्मुल ब्रह्मचर्य भरनार; पूजो ब्रह्मचारी नरनार, धारो ब्रह्मचर्य सुख-कार ॥ रत्नम णि कंचननी प्रतिमा, चैत्य करावणहारः अनंत गणुं फल तेथी पामे, ब्रह्मचर्य धरनार. धन्य० H १ ॥ सहस घोराशी मुनिवरदाने, जे फल नकी अवतार, धन्यण ॥ २ ॥ द्रव्यथी कायिक वीर्यनी रक्षा, आत्म रमणता सार; भावधी ब्रह्मचर्य छे एउं, सह शक्ति दातार. धन्य० ॥ ३ ॥ सर्व प्रकारे विष-यनी वांठा, त्यागी जे रहेनार; ब्यनासक्तिए करे कृत्य सहु, ब्रह्मचारी शिरदार, धन्य० ॥ ४ ॥ देश थकी ने सर्वथकी जे, ब्रह्मचर्य धरनार; इन्द्रादिक तेना पद पूजे, देवो स्हाये थनार, भ्रम्यण ॥ ५ ॥ दिव्य औदारिक त्रिकरण योगे, सर्व काम हरनार, बुद्धिसागर ब्रह्मचर्यनी, अनंत शक्ति उदार, धन्य०॥६

(७३)

त्रयोदशमी क्रियापद पूजा.

ख्यातमज्ञानची सत् किया, करतां कर्म विनाशः साष्योपयोगे साधना, ख्यापे सिद्धि विलास. ॥ १॥

ध्यान क्रिया मनमां आणी जे. ए राग.

धर्मिकया करीए उपयोगे, निजपरने हितका-री रे; त्यावइयक जे धर्मनां कार्यो, करीए फर्ज विचा-री रे. धर्म० ॥ १ ॥ तिजपर उपकारक शुभ कार्यो, सर्व संघ उपकारी रे; करतां मरतां मोह न धरीए, फलनी इच्छा निवारी रे. धर्म० ॥ २ ॥ निजपर उप-कारक छे प्रवृत्ति, व्यवहारे व्यवहरीऐरे. क्रियाजस्थापे संघ रहे नहीं, समजी सर्वे करीऐरे. धर्म० शुज परिणामे शुज फल घातुं, आत्मोपयोगे मु-क्तिरे: व्यवहारिक धार्मिक कर्तव्यो, करवां व्यवहार री तरे. धर्म • ॥ ४ ॥ ध्यान क्रिया ध्यानी घट धारे, निज उपयोगे सुधारेरे; ज्ञानी बाह्याज्यंतर किरिया, करतो धर्म वधारेरे. धर्म० ॥ ४ ॥ अशुज

(80)

भ्यान वारी संतो, करता खातम ग्रुहिरः; बुद्धिसागर सहज स्वजावे, रमतां खानंद ऋदिरे. धर्म० ॥ ६॥ ॥ चौद्मी तपपद पूजा. ॥

तपथी प्रगटे लिडिययो, अहावीश पच्चाश; कर्म तपावे चीकणां, तप ते तपशो खास. ॥ १ ॥ फाग रंग मच्यो जिन दरबाररे चालो खेलीए होरी. ए-राग.

तप तपशो नरनाररे, तप छे सुखकारी; तपथी अनंती शक्तरे, प्रगटे हितकारी ॥ बाह्याभ्यंतर तप बहु भेदे, जन्म मरण दुःखहारी; फल इच्छानो रोध कर्याथी, कर्म खरे बहु भारीरे. तप छे सुखकारी. तपणाशाकर्म निकाचित क्षय बहु थातां, करो कर्तव्य विचारी; धर्म करंतां दुःख सहन तप, परपरिणति संहारीरे. तपण ॥ १ ॥ परीषह उपसर्गोने सहीने, कार्य करो छपकारी; मन वाणी कायानी प्रवृत्ति, परमार्थे जयकारीरे. तपण ॥ ३ ॥ जव मुक्तिमां सम परिणामी, थाशो मोहने मारी; उत्कृष्टं तपनुं फल ए छे, मुक्ति निश्चय धारीरे. तपण ॥ ४ ॥ तप त-

(৩५)

पिया शासनना प्रभावक, वंदु वार हजारी; बुद्धिसा-गर मंगल माला, पद पद ख्रानंद कारी रे. तप०॥ ५

पन्नरमी गोयम पद पूजा.

वर्तमान जे वर्तता, साधु श्रमणी जेह; दान दियंतां तेहने, पामो स्वर शिव गेह. ॥ १ ॥

ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे. ए राग.

भावधी दानने दोजे हो, जिवजन! जावधी दानने दीजे॥ अजय सुपात्रवे दान प्रभावे, आतम उज्वल कीजे. हषों ल्लासे तीर्थकर पद, बांधी सुक्ति वरीजे हो. जिवजन ॥ १ ॥ संघ चतुर्विध सेवा-जिक्त, करतां निश्चय मुक्ति; दानथी त्यागने त्यागथी शिवपद, आतम शुद्धि प्रयुक्तिहो. भिवजन ॥ २ ॥ आंखे अश्च रोमांच विकसित, हृद्ये हर्ष न माबे; गदगद वाणी दानी एवो, सर्वोत्कृष्ट कहावे हो. भिवजन ॥ ३ ॥ स्वार्पण भावे दानने देतां, शिव-पद सहेजे थावे; सात क्षेत्रमां दान दियंतां,

(७६)

परमानंदपद पावे हो. भविजन० ॥ ४ ॥ दान दीधुं तेने सघळुं कीधुं; दान करो नरनारी. बुद्धिसागर ऋदिवृद्धि, पामो शिव वधू सारी हो. जविजन०॥ ४॥

सोळमी जिनपद पूजा.

नमो नमो जिनपद भछुं, पूजो ध्यावोचित्तः दोष खढार रहित प्रभु, परमातम जे पवित्र.॥१॥

श्री श्रेयांसजिन द्यंतर्यामी. ए राग.

जिनपद गावो जिनपद ध्यावो, आतम तेवो भावोरे. सोळ कषायो जीते जिन, ते जिनपद घट प्रगटावोरे. जिनपद०॥१॥श्रुतक्कानी अवधि मन नाणी, छद्मस्या वीतराणीरे; जिनपद आराधकने पूजो, आतम रंगी त्यागीरे. जिनपद०॥१॥ विद्यमान आचार्यने वाचक, बालस्थविरने मांदारे; वियादृत्य करो बहु भावे, होय न भक्तिमां वांधारे. जिनपद०॥ ३॥ वियादृत्य करो बहु भावे, होय न भक्तिमां वांधारे. जिनपद०॥ ३॥ वियादृत्य फल नाश थतो नहीं,

(00)

वैयावच्ची न पमतोरे; सकल संघनी वैयावच्चे, कोइ न भवमां रखडतोरे. जिनपद्०॥ ४॥ चढता भावे जिनपद साधक, सर्व जैननी सेवारे; करतां महा पापी पण मुक्ति, पामे निश्चय देवारे. जिनपद्० ॥ ५॥ जैनोमां जिनपदने भावो, ख्यातमने जिन करशोरे; बुद्धिसागर ख्यातम जिनवर, पोते थे शिव वरशोरे. जिनपद्०॥ ६॥



सप्तद्श संयमपद पूजा.

शुद्धातम गुण रमणता, संयम छे सुखकार; धारण ध्यान समाधिमय, साधो नरने नार. ॥१॥

त्रीजे जव वरथानक तप करी. ए राग.

संयम ख्राराधो नरनारो, ख्रातम शुद्धिकारी; ध्यान समाधिमय संयम छे, निज परने उपकारीरे. भविजन! संयमने प्रगटावो, छेशो नरजव ल्हावोरे. भविजन ॥ १ ॥ द्रव्य समाधिष्री भाव समाधि, अनंत गुणी हितकारी; विकल्पक विकल्प रहित जै,

(%)

सेवो समाधि विचारीरे. भविजन० ॥१॥ हठ आदि श्रज्ञान समाधि, वीश दोष परिहरीए; ग्रहस्थने त्यागी भेदे संयम, व्यवहार निश्चय धरीएरे. जवि-जन० ॥ ३ ॥ चार निक्षेपे सात नये नव, तत्त्व सामायिक धारो; मन वश करतां आत्मसमाधि, शुद्ध थता श्राचारेरे. भविजन० ॥ ४ ॥ संयमीनी सेवा भक्तिथी, शक्तियो प्रगटावो; बुद्धिसागर आतम संयम, आविभीवे लावोरे. जविजन० ॥ ४ ॥

अष्टाद्शमी ऋभिनवज्ञानपद पूजा.

प्रतिदिन अभिनवज्ञानने, पामो नरने नारः; अभिनव ज्ञान विना कदा, रहीए नहि क्षणवार. १

सिद्धचक पद सेवा कोजे. ए राग.

श्रीभनव ज्ञान भएो भवी भावे, ग्रुरुगम छही सुखकारीजी, स्वर्ग श्रमे शिवसुख झट लहीए, स्वाध्याय पंचविध धारी; श्रुतने भणिएजी—त्यागी सर्व प्रमाद, नवश्रुत गणीएजी.॥१॥ बुद्धिना (99)

गुण आठ वधारो, आठ दोषने टाळोजी; सर्वथकी आराधक ज्ञानी, क्रिया रहित पण जाळो, श्रुतने. त्यागी० ॥ २ ॥ देश आराधक किरिया भाखी, ज्ञाननी किरिया दासीजी; ज्ञानि ज्ञान आशातना टाळो, शुद्ध स्वरूप उल्लासी. श्रुतने. त्यागी० ॥३॥ ज्ञानथी आतम शुद्धि अनंती, कार्य करंतां थावेजी; अज्ञानी संवरने आस्रवने—रूपे मन प्रणमावे. श्रुतने. त्यागी. ॥ ४ ॥ अनुजव ज्ञानी सूरि वाचक मुनि, संगे निशदिन रहेशोजी; वृद्धिसागर आत्म प्रभुता, चिदानंदपद लेशो. श्रुतने. त्यागी० ॥ ५ ॥

आगणिशमी श्रुतपद पूजा.

पंच ज्ञानमां श्रुत वे—स्वपरोपकारक वेश, चड मुंगां श्रुत बोलतुं, टाळे सर्वे क्लेश.॥१॥

चंद्र प्रभुजीसे ध्यानरे मोंये लाग। लगनवा, ए राग.

श्रुत स्वपर जपकारीरे, भवी भावथी सेवो-जवी भावथी सेवो; जगमां हे जयकारीरे. जवी० केवसज्ञा- (00)

नीना मुखनी वाणी, चउदने वीश प्रकाररे. जवी. नव तत्त्व ज षड् द्रव्य प्रकाइयां, नयनिक्षेपे उदाररे भवी० ॥१॥ तत्त्व फरे नहीं त्रएयकालमां, फरता रहे आचाररे. जवी० दुःषमकाले श्रुत छे जानु, भणो भणावो साररे. भवी० ॥२॥ श्रुतज्ञानी केवली सरखो, सेवो नरने नाररे. जवी० बत्रीश दोष रहित आगम क्के, वर्ते जगदाधाररे. जवी० ॥३॥ वीरप्रभुए ऋर्थ प्र-काइया-सूत्र रच्यां गणधाररे. जवी० श्रुत केवली आदि मुनियोए, शास्त्र रच्यां जयकाररे. जवीण ॥४॥ श्रुतज्ञानीनो विनय करो बहु, प्रेमे करो सत्काररे. जवी० बुद्धिसागर ग्रुद्धातम पद, हेते स्याद्वादधाररे. न्नवी० ॥ ५ ॥

" वीशमी तीर्श्वपद पूजा "

संघ चतुर्विध तीर्थ छे, सर्व विश्व सुखकार; अरिहा नमता तीर्थने, तीर्थ जजो नरनार. ॥१॥

(85)

वीरकुमरनी वातको कोने कहीए. ए राग.

संघ चतुर्विध तीर्थ हे जयकारी, पंच परनेष्ठी हितकारी: सर्व विश्वविषे उपकारी, सेवो नर-ने नार. संघ० ॥ १ ॥ जंगम तोर्थ स्नाराधना शिव-कारी, श्रद्धा श्रीतिथी सवा सारी: जाउ संघनी जग विलहारी, सेवे नासे पाप. संघ०॥२॥ स्थावर तीर्थने रक्षतो संघ शक्तें, रहो संघनी निशदिन जक्ते: संघथो जैन शासन वर्ते, जीवो संघना हेत. संघण ॥ ३ ॥ स्थावर जंगम तीर्थपर प्रेम लाबो, मोति पुष्पे संघ वधावो: जावे तीर्थकर पद पावो, बनो संघना दास. संघ० ॥ ४ ॥ सूरि वाचक मुनि सेवजो सुखकारी, करी स्वार्पणने दोष वारी; वुद्धिसागर तीर्थनी यारी, करे मंगलमाख. संघ० ५ कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो. ए राग.

गायुं गायुंरे वीशस्थानक पद तप गायुं; गातां पूजतां ध्यातां दिखकुं, आनंदथी उत्तरायुंरे. वीश.

(८२)

श्चातममां वीश स्थानक जाएयां, श्रनुजवमां एम **छा**व्युं; साधन योगे साध्यनी सिद्धि, जाणंतां मन जाव्युरे. वीराण्॥ १॥ एकमां वीराने वीरामां एकज, एक साधे वीश साध्यां; साध्योपयोगे साधन सफळां, भावथको आराष्यांरे. वीशण ॥ २ ॥ आतममां वीश द्रव्यने जावे, निश्चयने व्यवहारे; शुद्धातम उपयोगे घटमां, गुण पर्याय प्रकारेरे. वीशः ॥ ३ ॥ वीश स्थानक पैकी एक स्थानक, आराधंतां जावे: तीर्थंकर पद पामे भव्यो, मुक्ति अनंता पावेरे. वीशः ॥ ४ ॥ सिद्धश्चा सिद्धशे जीव स्थनंता. एकेक पद आराधे, गुण एक सेवे गुण अनंता, प्रगटे साधन साधेरे. वीश० ॥ ५ ॥ स्रोगणिश सत्तोत्तर ख्राश्विननी, चोथ वदि गुरुवारे; सानंद शहेरे चोमासुं करी, पूजा रची भवीतारेरे. वीश० ॥ ६ ॥ पूर्ण प्रतापी तप गच्छ नायक, जग गुरु बिरुद धराया; हीर विजयसूरि प्रणमुं पाया, अकबरे ग्रण गण गायारे. वीश० ॥ ७॥ सहज

(23)

सागर पाठक जयकारी, सागर शाखा धारी; पह परंपर रिवसागर ग्रह, रिवसम प्रगटया भारीरे. वीश्र ॥ ८ ॥ पूर्ण प्रतापी सुख सागर ग्रह, करुणा ख्राशोः प्रभावो; बुद्धिसागर पूजा रची श्रुभ, संघमां खाओ वधावोरे. वीश० ॥ ९ ॥ ॐ ह्वी श्री० तीर्थ पूजार्थ जलादिकं यजामहे स्वाहा. (82)

अय द्शविधयति धर्मपूजा प्रारंभ.

प्रणमुं श्री परमातमा, महावीर जगदाधारः षोवीशमा तीर्थकरा, शासनपति सुखकार. ॥ र ॥ जेणे संघने स्थापियो, सर्व धर्म आधार; प्रभु महा-बीर जग जयो, अनंत गुण दातार. ॥ २ ॥ यति भर्म दशविध कह्यो, आत्मशुद्धि करनार; जगजय श्री महावीर जिन, वंदु वार हजार. ॥ ३ ॥ वसरणमां बेसीने, कीधो तीर्थ प्रचार: जंगम तीर्थ ते मुनिवरा, तेना दश गुण धार.॥ ४॥ दश ग्रुणथी मुनि शोभता, पूजो दंश विध धर्म; दश विध धर्मे छात्मनुं, प्रगटे ज्ञान ने शर्म. ॥ ५ ॥ ते माटे दश धर्मनी, रचुं पूजा सुखकार; अष्ट प्रकारे वुजशां, वीर प्रभु जयकार. ॥ ६ ॥

प्रथम क्षमावूजा.

प्रज महावीर भारता, धर्म क्षमा सुखकार; आराधो भवी जावथी, अनंत सुख दातार. ॥ १ ॥

(64)

सहियर सुणिएरे भगवती सूत्रनी वाणी. ए राग.

प्रभु महावीर विभु उपदेशे, सर्व जगत् हित-कारी; धर्म क्षमा धारो नरनारी, क्रोधकषायने वारी.

आत्म स्वभावनेरे, समजी क्षमा ग्रुण धारो; क्षमावंत साधरे, बाकी वेषाचारो. आत्म० ॥ १ ॥ श्चपकारे उपकारे क्षमाने, धारे बहुला लोको; धर्म क्षमा सहजे घट प्रगटे, ज्ञाने क्रोधने रोको. आत्म० ॥२॥ कूरगृद्ध खंधकना शिष्यो, धन्य मेतार्य मुनोन्द्रा; काने गोपे खीखा मार्या, सहिया वीर जिनेन्द्रा. त्यात्मण ॥३॥ अचंकारी भट्टा मोटी, धन्य क्षमा गुण द्रिया; अहंवृत्ति ममता नहि जेने, क्षमा गुणी मुनि तरिया. आत्म० ॥ ४ ॥ वेष क्रिया तप जप सहु साधन, धर्म क्षमाथी सफळां; शुभ अशुभ वृत्ति नहि रहेतां, साधन नहि छे खपनां. आत्म०॥ ५॥ देहादिक अध्यासो छंमी, आतमना जपयोगे; रहेतां धर्म क्षमा ग्रुण प्रगटे, समताना संयोगे. आत्म०॥ ६॥ चिदानंद

(८६)

आतम प्रगटावो, असंग ख्यातम जावो; बुद्धिसागर पूर्णानंदे, रमता मुनिवर ध्यावो. आत्म॰ ॥ ७ ॥ ॐ हैं। छूँ। अहे परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय क्षमा लाभार्थ जलं, चंदनं पु॰ धूपं, दीपं, ख्रक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीया मार्दव धर्मपूजा.

द्रव्यभाव अहंकारना, त्याग चकीछे त्यागः मुनि श्रमणी खघुता घरो, घावो प्रभु वडभागः ॥ १ ॥ आठ जातिना मद तजी, थावो निरहंकारः श्रमुरु लघु निज आतमा, समजीने सुखकारः ॥२॥ मान अने अपमानमां, वर्ततां समभावः अनंत ग्रण प्रगटे खरा, साधो मार्दवदावः ॥ ३ ॥

श्रावक व्रत सुरतरु फळियो. ए राग.

परमेश्वर वीर उपदेशे, रहो न मुनि रागद्वेषे; मान तजे ते सुख खेशेरे, मुनिवर मान परिहरशो.

(८७)

क्षण क्षण ब्यातम ग्रुण स्मरशोरे, मुनि० जनसागर वेगे तरशोरे. मुनिवर० ॥ १ ॥ आठ जाति मद परि हरता, आतम शुद्धि ते करता; परम ब्रह्म वेगे वरतारे. मुनिवर० ॥ २ ॥ रावण मानथकी हार्यो, जीमे दुर्योधन मार्यो; मन पेसे मद अणधार्योरे. मुनिवर० ॥ ३ ॥ ज्ञानने ध्यानना अहकारे, तरे नहीं पर नहि तारे;गारवे जीव करे भारेरे. मुनिवर० ॥ ४ ॥ उंच नीच नेदे छावे, अज्ञानो मनमां फावे; मद केफे निज जूलावेरे. मुनिवर० ॥ ५ ॥ हुं मारुं ज्यां नही जागे, त्यांथी मद दूरे भागे; जयडंको घटमा वागेरे. मुनिवर० ॥६॥ हुं त्यांथी प्रभु छे आघा, बाहुबली समजी जाग्या; केवल ज्ञानी वीतरागारे. मूनिवर० ॥ ७ ॥ मद वण मनकुं रहे ज्यारे, आत्म प्रभु प्रगटे त्यारे; आप तरे मुनि पर तारेरे. मुनिवर०॥ ८॥ प्रञ्ज महावीर कथे एवुं. समजी लह्य विष देवुं; बुद्धिसागर सुख लेवुंरे. मुनिवर० ॥ ९ ॥ ॐ ह्वी श्री० पण मार्दव ग्रण लाभार्थ जलं०-यजामहे स्वाहा ॥

(33)

तृतीया त्याजिव धर्म पूजा.

द्रव्यभाव आर्जव गुणे. रमतां केवलज्ञानः मुनिवर आर्जव गुण रमो, स्वयं थशो भगवान् ॥१॥
जन मन रंजन स्वाथथी, कपट कियाओ थायः
माना[द्रकना त्यागथी, आर्जव गुण प्रगटाय ॥२॥
मिल्लिनाथ पूरवभवे, कपटे स्त्री ख्रवतार, पाम्या
जाणी मुनिवरो, धरो सरखता सार ॥६॥

जीरण होत जावना भावेरे, महावीर प्रभु घेर आवे. ए राग.

प्रज महावीरने दिख धारो, प्रज्ञने क्षण क्षण संभारो; उपयोगे आत्म सुधारो, धरो आर्जन ग्रण नित्त तारोरे; एवो वीरप्रस उपदेशो, माया त्यागी मुनि शिन छेशोरे. एवं। ॥ १॥ निष्कपटे कहे बुं ने रहे बुं, दुनियानुं कह्युं सहु रहे बुं; मान पूजामा लक्ष्य न दे बुं, जे बुं खंतर बाहिर ते बुंरे. एवो। ॥ २॥ माया त्यागे प्रभु दिख आने, अन्य दोषो नेगे जाने;

(< 9)

शोभे ञ्चातम आविर्जावे, शुद्ध सरलता आत्म स्वभावेरे. एवो० ॥ ३ ॥ 5ुनिया भले वंदे निंदे, करे हेसना रागी छंके; वध बंधन मारवा मंडे, रहोये पडशो नहीं मुनि फंदेरे. एवो० ॥ ४ ॥ मर्या पहेखां माया मारो, निर्मायी बनी निज तारो; मळ्यो मा-नव भव नहि हारो, मन कपटवृत्ति संहारोरे. एवो० ॥ ५॥ माया संगे क्षण क्षण मरवं, कदि दंजथी होय न तरवुं; माया मारी जीवन धरवुं, पछी मरवुं नहीं अवतरबुरे. एवो० ॥ ६ ॥ त्यागो सर्व प्रकारे माया, बूरा तेना छे पम्राया; माया त्यागयी प्रभु घटढाया, समजी संतो सुख पायोरे. एवो० ॥ ७ ॥ वसे कपट त्यां दुःखना दरिया, माया त्यागी मुनि गुण भरिया; बुद्धिसागर मुनि केशरिया, निष्कपटी केवल वरियारे. एवो० ॥ ८ ॥ ॐ ँह्वी श्री०-स्रार्ज-वप्राप्त्यर्थे जलादिकं. यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्थी मुक्तिधर्म पूजा.

होज तजे सर्वे तज्युं, होभ टळंतां मुक्ति; जन हों नहीं मुंझता, तेने नहीं छे भीति. ॥१॥ खोभ (%)

तज्याथी जीवतां, मुक्ति ख्रमुभव थायः जीवतां मुक्ति नहीं, देह तजे द्युं ? पाय. ॥ २ ॥ सर्व प्रकारे लोजनो, कीयो जेणे त्यागः जीवता ते मुक्त छे, सिद्ध बुद्ध वडजाग. ॥ ३ ॥

वीरकुमरनी वातमी कोने कहीए. ए राग.

वीरत्रमु परमातमा जयकारी, जेछे विश्वविषे उपकारी; प्रतिबोध्यां नरने नारी, जजो मुक्ति हेत; लोभ तजीदो साधुओ सुखकारी. ॥ १ ॥ लोभयी मुक्त ते मुक्त ठे नरनारी, तजो लोभने महा दुःखकारी; रहो निःसंग मनडुं धारी, रही जग समजाव. लोज० ॥ २ ॥ मूच्छी परिप्रह जाणशो वीर बोले, नहीं संतोषना कोइ तोले; चमशो नहीं लोभ हिंचोले, मुनि मुक्त स्वतंत्र. लोज० ॥ ३ ॥ सर्व जगत्वा संगथी नहिं संगी, व्यनासिक्तए आत्म सुरंगी. होय धनी पण चित्त निःसंगी, जममां नहीं मोइ. लोभ० ॥ ४ ॥ जम वस्तुनी लालचे जीव जटक्यों,

(९१)

ळाख घोराशीमां ळटक्यो; संत पासे जतां पण अ-टक्यो, धर्यो नहि प्रभु प्रेम. खोभ० ॥ ५ ॥ खोभे क्षक्षण जाय **बे सत्य नासे, दुर्बुद्धि रहे दि**ख पासे; हिंसादिक पाप प्रकाशे, लोभे सर्व विनाश. लोभ० ॥ ६ ॥ खोभी पापो सद्ध करे एम जाणो, अनास-क्तिने मनमां आणो; धरो संतोष दिल मझानो, करो उपयोगी काज. लोज० ॥ ७ ॥ देवगुरु संघ भक्तिनो लोभ करशो, निज फर्ज खदा करी फरशो: धर्म्य लोजने पहेलां धरशो, पढी निर्लोभभाव लोभ० ॥ ८॥ मुक्तिने भवमां समपणुं दिल धारो, सर्व संगे छतां लोभ वागे; शुद्ध आतम परिणति धारो, बुद्धिसागर गाय. खोभ०॥ ९॥ ॐ हैं। श्रें। परम० मुक्ति ग्रुण प्राप्त्यर्थे जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

पंचमी तपोधर्म पूजा.

मोह टळे शुद्धि वधे, तप ते धर्मने मान; दुर्गुण दोषो सहु टळे, तप करवुं गुण खाण. ॥ १ ॥ परो- (९२)

कारी साधुनां, तप रूपी सहु काज; सर्व दुःख सहेवां समे, तप ते ग्रुण शिरताज. ॥ २ ॥ बाह्याज्यंतर तपथकी, शक्ति प्रगटे अनंत; तपने पूजो आदरो. स्यावो मुनिवर संत. ॥ ३ ॥

कर्म परीक्षा करण कुमर चल्योरे ए राग.

निष्कामे तप तपशो मुनिवरारे, भाखे वीर जिनेशः कर्म निकाचित क्षणमां क्षय थतारे, नासे सघळा क्लेश. निष्कामे० ॥ १ ॥ परोपकारी कर्मो तप कह्यारे, विश्व जीवोनी सेव; सर्व ग्रुभाशुभ अभिलाषा विनारे, वर्ते थाओ देव. निष्कामे० ॥१॥ संघनी सेवा भक्ति तप भक्षंरे, वैयावच्चने ध्यानः प्रायश्चित्तने विनये राचशोरे. करो स्वाध्यायथी ज्ञान. निष्कामे० ॥ ३ ॥ देहाध्यासविना आतम प्रभुरे, देखाता भगवंत: बाह्य तपो पण ब्यात्म विश्रद्धि-नारे, हेते छे गुणवंत. निष्कामे. ॥ ४ ॥ ज्ञानी मुनिने तप सह कार्यमारे, जोगविषे पण योगः

(९३)

भोगो पण सहु रोग समा गणेरे, वर्ते योगे ख्रयोग-निष्कामेण ॥ ४ ॥ कार्य करे पण अकिय जे रहेरे, भरी छ।तम उपयोग: सर्व विषयनी वांछावण रहेरे, शोचे न हर्षे भोग. निष्कामेण ॥ ६ ॥ मुनिने मन दमतां तप छे सदारे, करतां सर्व प्रवृत्तिः; अन्तर तप अज्ञो निह जाणतारे, मनमां नहीं आप्ति. निष्कामेण ॥ ७ ॥ सुनिनी सर्व प्रवृत्ति तपमयीरे, देत्रकाल अनुसार; बाह्यथी ऋंतर अनंत गणु भल्लंरे. टाळे कर्म विकार. निष्कामे ।। ८ ॥ ज्ञानीने सह बंधन कारणोरे, निर्जरहेते थाय; बुद्धिसागर तपसी पूजतारे, ध्यातां तप प्रवटाय. निष्कामे**ः ॥ ९ ॥** 👺 ँह्री श्री प० तपोग्रण लाभार्थ जलादिकं यजा-महे स्वाहा ॥

छठी संयम धर्म पूजा.

संयम साधो संयमी, वश करी मन वच काय; संयमयो झट सिद्धि छे, लिध सकल प्रगटाय.

(88)

॥ १ ॥ आत्मिक बल संयम जलुं, टाळे खाठे कर्म; संयमो क्षणमां मुक्ति पद, पामे शाश्वत शर्म. ॥ २ ॥ धारणा ध्यान समाधिमय, संयम वे सुखकार; संयम धर्मनी पूजना, करशो नरने नार. ॥ ३ ॥

गंगातट तपो वनमांरे बनी रचना भारी. ए राग.

साधो संयम साधुरे, के आतम उपयोगे; पडों निह मोह वनमांरे. रहो मन वैराग्ये. साधो॰ ॥१॥ (साखी) लीन बनो निज आतममां, ग्रण पर्यायने ध्याइ; मोह परिणति वारतां, प्रगटे मुक्ति वधाइ; आतम श्रद्धा प्रेमेरे, के मस्तद्शा प्रगटे; निजशक्ति अनंतीरे, प्रकटे तम विघटे. साधो॰ ॥२॥ (साखी) क्षण पण संयमी संगवण, जीवो निह नरनार; संयम साधन साध्य हे, आतमशुद्धता सार. पंच समितने ग्रितरे, के साधन जह वरे; पूर्णानन्दी आतमरे, अनुभव तेह करे. साधो॰ ॥३॥ वत तप जपदम साधनो, सापेक्षे हे सत्य; मुनिवरनां संयममयी, संघळां जाणो कृत्य.

(९५:)

भक्ति कमेने ज्ञानेरे, संयम शक्ति वधे; शुद्ध आत्मो पयोगेरे, साधन सत्य सधे. साधोण ॥ ४ ॥ उपचा-रिक धर्मज भलो, संयम रूपी सर्व; तेमां पण संय-मीजनो, करो न क्यारे गर्व. हठ धर्म निवारीरे, संयम सहेजे सजो; बुद्धिसागर प्रेमेरे, महावीर देव भजो. साधोण ॥ ४ ॥ ॐ ँही श्रीण संयम लाभार्थ जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

सप्तमो सत्यधर्म पूजा.

द्रव्यभाव सापेक्षची, सत्य ख्रसंख्य प्रकार; सत्य समो नहीं धर्म हो, सत्य यहो नर नार. ॥ १ ॥ सत्य वदोने ख्राचरो, जैन धर्म छे सत्य; प्राणांते निह हंडशो, सत्य धर्मनां कृत्य. ॥ २ ॥ ज्ञानथकी साचुं यहो, करो असत्यनो त्याग; पक्षपात हंडी करी, धरो सत्यनो राग. ॥ ३ ॥

तेजे तरणिथी वडोरे. ए राग.

वीर प्रभुए भाखियोरे, सत्य धर्म जयकार; मिथ्या जूठने परिहरोरे, सत्य धरो ख्राचार हो भवि-

(९६)

जन !!! सत्य धर्मने धारजोरे, मानव जव नहि हारजोरे, समजो सत्य प्रकार.॥ १ ॥ सत्य वसे त्यां शक्तियों, देवो करता सहाय; देशने सर्वथी सत्य-नेरे, स्वाधिकारे यहाय हो. भविजन॥ सत्य०॥ २॥ कोध मान माय खोभथीरे, कामधी जूठ वदाय; प्रभु वीतरागी ब्यातमारे, बोले सत्य सदायहो. भविजन॥ ॥ ३ ॥ सत्य ते सेवा जाकि छेरे, सत्य समी नहीं शक्तिः; सत्य समुं बळ नहि कर्युरे, सत्य समी नहि नीति हो. जाविजनः ॥ ४ ॥ भयने हास्यधी जूठ-नेरे, बोलंतारे अधर्म: स्वार्थे अज्ञाने जनारे, बांधे अज्ञाता कर्म हो. भविजन० ॥ ५ ॥ दुःख पर्ने प्रा-श जो पटेंगे, तोपण ठंडो न सत्य; उपसर्गो थातां घणारे, बंडो न साचां ऋत्य हो. जविजन । है।। ज्ञान अने माध्यस्थचीरे, सत्य तत्त्व समजाय. विहारी सरयवादोनी रे, जूठाथी दूर जाय हो. भविजन०॥७॥ सत्य यहो सुनियोगीओरे, पाम्या पाप्तशे मक्तः; अनंत महिमा सत्यनारे, रविधी अनंती युति हो.

(99)

भविजन०॥८॥ सत्य वदो सत्य आदरोरे, प्रःख सहीने अनंत; सुवर्ण पेठे कसोटीएरे, चढीने थावो भदंत हो. भविजन० ॥९॥ रवि पहेला ते उगतारे, सत्यवादी नरनार; बुद्धिसागर आतमारे, पूणानन्द त्रपार हो. त्रविजन० ॥ १०॥ ॐ० सत्य लाभार्थ जलादिकं यजमहे स्वाहा ॥

अष्टमी शौच धर्म पूजा.

द्रव्यभाव व्यवहारने, निश्चय शौच छे धर्म, भाव शौच सेव्याथकी, विघटे सर्वे कर्म. ॥ १ ॥ द्रव्यथी जाव अनंत गुण, त्र्यात्मशुद्धि करनारः उपादान निमित्तथी, समजी यहो नरनार. ॥२॥ ब्रात्मशुद्धिकर शौच छे. लक्ष्य न भूलो लेश; साध्योपयोगे शौचने, भरतां टळता क्लेश. ॥ ४ ॥

श्रुतषद् निमये जावे भविया, श्रुत वे जगत आधारजी. ए राग.

समवसरणमां बेसी वीरजिन, केवलज्ञाने प्रका-शेजो; जाव शौचथी निश्चय मुक्ति, परमानंद (९८)

विलासे: शौचने धारोजी, तजी पर परिणति टेवं, आत्म सुधारोजी०॥१॥ सात नयोने चउनिक्षेपे, शोच धर्मने जाणोजी; देहनी झुद्धि बाह्य शोच हे, अंतर शुद्धता स्त्राणो. शौच०॥२॥ द्रव्ययकी पण भाव शौच छे, अनंत गुणो हितकारीजी; काय थको मननीज अनंत गुण, शुचिता छे सुखकारी. शौच० ॥ ३ ॥ भाव शौच ज्यां छे त्यां दर्शन, ज्ञानचरण जयकारीजी: भाव शौच धरता मुनि वंदो, पुजो जग उपकारी. शौच० ॥ आतम ज्ञौच विना कायाना-शौचयी याय न मुक्तिजी, हिंसादिक क्रोधादिक दोषो, टळतां शोचनी रीति. शोचणाया आंतरमळ मन मोहने टाळो, पवित्र करी मन म्हालोजो; बाहिर शौच कदायह ठालो, अंतरने श्चजवाळो. शौच० ॥ ६ ॥ मनने मेल टळ्याथी मुक्ति, जेनी तेनी थातीजी; एकखी पंडिताइ न खपनी, निर्मल करशो छाती. शौच० ॥ ७ ॥ राग-द्वेष मलीनता टाळो, दोष प्रगटता खाळोजी; का- (९९)

मवासना बीजंने बाळो, प्रभु जिन ख्यातम भाळो. शौच० ॥ ७ ॥ भाव शौचवण वेषाचारे, मुंझो नहीं नरनारीजी, ख्यातम शुद्धि करे ते शौच छे, समजो ब्रांति निवारी. शौच० ॥९ ॥ शौच धर्मथी साधु ख्यनंता, मुक्त थयाने थाशेजी; बुद्धिसागर ख्यात्मरमणता, करतां शौच छे पासे. शौच० ॥१०॥ ॐ०-शोच धर्म लाभार्थ जलादिकं यजामहे स्वाहा.

नवमी अकिंचन धर्म पूजा.

मूर्जा परिग्रह ग्रहथकी, मुक्त थतां हे मुक्ति; श्रकिंचन ते धर्म हे, त्यागीनी ए रीति. ॥१॥ द्रव्य-भाव परिग्रहथकी, न्यारा वर्ते संत; आत्मानंद रस अनुभवे, नमो नमो गुणवंत. ॥ २॥ मूर्च्छावण न परिग्रही, उपयोगी मुनिराज; उपिष देहादिक छतां, निःसंगी शिरताज. ॥ ३॥

दान सुपात्रे दिजेहो भवियां, दान सुपात्रे दीजे, एराग. परिग्रह मूर्च्छा त्यागी हो सुनिवर, परिग्रह (800)

मूर्च्छा त्यागी; श्रंतर बाहिर ममता रहित थै, वर्ते छे वडभागो हो. मुनिवर ॥ परिग्रह० ॥ १ ॥ नवविध परियहमां नहि ममता, वर्ते सकल पर समता; देहा-दिक गच्छ संगी ठतां पण: निःसंग ज्ञाने रमता हो. मुनिवर० ॥२॥ साधन उपयोगी उपधि सहु, ज्ञानी न त्यां बंधाता; तारु तरे जेम सरवरमांही, संवर जावे सुहाता हो. मुनिवर० ॥ ३ ॥ मूर्च्छा ए छे सर्वे उपाधि, मूर्च्छावण निरुपाधि; ज्ञानीने आस्रव पण संवर, उपयोगे नहि खाधि हो. मुनिवर०॥ १॥ जडमां शुजाशुभ भाव रहित जे, ते नहि जग बंधातो; बाह्य परिश्रह तेने करे ग्रुं ? जे नहीं पुद्रले रातो हो. मुनिवरण ॥ ५ ॥ ममतावण नहीं कर्मबंध छे, ममता त्यागे त्यागी; जडनी ममता त्यागी सु-ज्ञाने, याशो आतमरागी हो. मुनिवर० ॥ ६ ॥ यावतु मूर्च्डा अंतर तावत्, कोइ न मुक्ति पामे: मुर्च्वावण मणि पर्वत उपर, बेठो ठरे शिव ठामे हो. मुनिवरण्।। ७ ॥ परिग्रह त्यागी मुनिवर सेवा,

(१०१)

भक्ति करो बहु जावे; क्षण एक साधुनी संगत करतां, निश्चय मुक्ति थावे हो. मुनिवर ॥ ७ ॥ ऋणुसम गृहीने मेरु सरीखा, मुनिवर मोटा जाणो; संतोषे नहीं कोनी परवा, ऋानंद भोगी मानो हो. मुनिवरण ॥ ९ ॥ निश्चयने व्यवहारथी त्यागी, सेवो पूजो ध्यावो; बुद्धिसागर शुद्धातम पद, पूर्णानंदी पावो हो. मुनिवरण॥ १० ॥ ॐ०—अकिंचन धर्म लाभाय जलादिकं यजामहे स्वाहा.

दशमी ब्रह्मचर्य धर्म पूजा.

ब्रह्मचर्य सम को नहीं, सर्व धर्ममां श्रेष्ठ, द्रव्य-भाव ब्रह्म आगळे, अन्य सकल हे हेट. ॥१॥ नेमि सुदर्शन जंबुने, स्थृलिभद्रज अनगार; गावो पूजो जावथी, ध्यावो नरने नार. ॥ १ ॥ ब्रह्म मळे ब्रह्म-चर्यथी, भाखे वीर जिनेश; द्रव्यभावथी धारतां, नासे सघळा क्लेश. ॥ ३ ॥

(१०२)

ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे, ए व्रत जगमां दीवो. ए राग.

ब्रह्मचर्य सुखकारी हो जगमां, आतम आनंद-कारी: ॥ द्रव्यथकी देहवीर्यनी रक्षा, स्त्री मैथून परिहारी; जावथकी पर परिएति त्यागे, ब्रह्मव्रती जयकारी हो. जगमां, ब्रह्मचर्य सुखकारीण ॥ १ ॥ पांचे इन्द्रिय त्रेवीश विषयो, शुभ अशुभ नहीं लागे; स्वप्ने पण नहीं कामनी वृत्ति, ब्रह्मजाव घट जागे हो. जगमां ॥ २ ॥ मैथुन जोगे सुख नहीं शांति, आधि व्याधि जपाधि. जाणी मुनिवर ब्रह्मस्वरूपे, वर्ते हे निरुपाधि हो. जगमां० ॥३॥ कामी व्यजिचारी महादुःखी, रूप राग जरमाया; हडकाया कूतरनी पेठे, क्यांये सुख नहीं पाया हो. जगमां०॥४॥ कामभागर्थी थाय न शांति, उलटी कामनी वृद्धिः जाणी कामनी वृत्ति शमावो, पामो व्यात्मिक ऋदिहो. जगमां ॥५॥ चामडी रागी जन चामितया, खातमना नहि प्रेमी: श्चातमरागी जग वैरागी, वर्ते योगी क्षेमी हो.

(१०३)

जगमां० ॥ ६ ॥ आतमरागी प्रेमी ज्ञानी, भक्त संत मुनिरायाः; शुद्ध ब्रह्ममां निशदिन रमता, प्रणमो तेना पाया हो. जगमां ॥ ७ ॥ विराकार शुद्धातम ब्रह्ममां, रमवुं ब्रख्त हे जावे, पूर्णानंदनी मोझे रमतां, पोते प्रभुजी सुहावे हो. जगमां० ॥ ७॥ ब्रह्मरसे रसिया मुनिवरजी, बाह्यरसे दूर खासिया; एकवार आतम ऋानंद्रस, पाम्या ब्रह्म उल्लुसिया हो. जगमां० ॥ ९ ॥ ब्रह्मचर्चथी शक्ति अनंती, नासे दूरे रोगो, ब्रक्षचर्य छे सर्वनुं जीवन, एथी सबळा योगो हो. जगमां० ॥ ११ ॥ द्रव्यथी भाव अनंत गुण उत्तम, कारणे कार्यनी सिद्धि, ऋष्ट सिद्धि नवनिधियो प्रगटे, आस्मिक क्षायिक लब्धि हो. जगमां० ॥११॥ इन्द्रा-दिक सह देवो पूजे, ब्रह्मचारीने रागे; मुनिवर सेवा भक्ति करतां, ब्रह्मव्रत दिल जागे हो. जगमां० नाव ब्रह्मधारी उपकारी, भोगी जेह अजोगो; बुद्धिसागर ब्रह्म अलखने, पूर्ण जगावे योगी हो. जगमां० ॥ १३ ॥ ॐ० ँह्वी०-ब्रह्मचर्य खाभाय ज**खादिकं यजामहे स्वाहा.**

(808)

कलश गीत.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो॥ दश विध साधु धर्मनी पूजा-पुष्पे प्रभुजी वधायो. त्रिशला नंदन वंदन करतां, सहजानंदने पायोरे. महावीर० ॥ १ ॥ ओगणिश सत्योत्तर आश्विन वदि. छठ शनिवार ग्रहायोः; दशविध मुनिवर धर्मनी पूजा, रचतां हर्षे उमाह्योरे. महावीर० ॥ २ ॥ सानंदमां आनंदनी रुहेरे. दशविध धर्मने ध्यायो: संघनी भक्तिए चोमासामां, मंगल जय वर्तायोरे. महावीर० ॥ ३ ॥ सदसद्भृत ज स्थातम धर्मनो, अनुभव निश्चय आयो: आपोआप स्वरूपे खेली, जन्मी जगमां फाब्योरे. महावीर० ॥ ४ ॥ तपगच्छहीरविजय सूरि जगगुरु, धर्मना तेजे सवायो; पद्य परंपर रवि-सागर गुरु, झळहळ ज्योति सुहायोरे. महावीर० 🏨 ५ ॥ द्रीन ज्ञानने चारित्रमयश्री, सुखस्नागर युरु रायो; तेना चरशकमळमां ज्रमर सम, थातां

(१०५)

ब्रह्म जगायारे. महावीर ॥६॥ ग्रुरु क्रपाने आशीर्वादे, जगमां धर्म फेलायो; बुद्धिसागर ख्रानंदमंगल, जंगम संघ वधायोरे. महावीर०॥ ७॥

(१०६)

चार जावनानी पूजा.

परम ब्रह्म परमातमा, प्रभु महावीर देव, सर्व सुरासुरनत विभु, इन्द्रों करता सेव. ॥ १ ॥ प्रभु महावीरे कह्यों, चार भावना बोध; भावे चारे जावना, यातों मोह निरोध. ॥ २ ॥ चार भावना भावतां, प्रगटे आतम शुद्धि; ते कारण चउ भावना—पूजानी हे सिद्धि. ॥ ३ ॥ मैत्री मुदिता जावना, जाव मध्यस्थ विचार; करुणा चोथी जावना, जावंतां भवपार. ॥ ४ ॥ अष्ठ प्रकारी पूजना, प्रत्येक पूजा दीठ; प्रभु महावीर पूजतां, प्रगटे सम्यग् दृष्टि. ॥ ५ ॥ चार भावना जावतां, त्यागी गृही नर नार; क्षणमां केवल ज्ञानने, पामंता निर्धार. ॥ ६ ॥

प्रथम मैत्री भावना पूजा.

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी. ए राग.

चरम जिनेश्वर महावीर पूजीए, जेणे तार्यी नर-नार; भावना चारेरें जेणे उपदिशी, जावे शिव निर्धार.

(१०७)

मैत्रीभावना जावो भविजना ॥ ॥ १ ॥ सर्व जीवोने मित्रसमा गणो, छंडो वैर विरोध;शत्रृ दृष्टिरे दिखयी परिहरो, एवो प्रजुनोरे बोध. मेत्रीण ॥ २ ॥ आतम सरखारे सर्वे जीव है. कर्मवडे परतंत्र: श्रज्ञाने ते रे सत्य न जाणता, जपता मोहनो मंत्र. मैत्री० ॥३॥ कर्म प्रमाणेरे सुख दुःख संप जे, जीवो निमित्त होय; कर्म विना कोइ नििमत्त नहीं यतुं, शत्रु न मानारे कोय. मैत्री० ॥ ४ ॥ सम्यगृदृष्टिने सवळीबुद्धिथी, सर्व जीवो होय मित्रः खात्मोन्नतिमारे हेतु परिणामे, कोइ न होय ऋमित्र. मैत्री० ॥ ५॥ सातनयो-थीरे मैत्रीभावना. चलिक्षेपेरे जाए: द्रव्यने जावेरे निश्चय व्यवहारे, प्रगटे केवल ज्ञान. मैत्रीव ॥ ६ ॥ जेना मनमारे मित्र जगत् बन्युं, ते छे जग-नोरे मित्र; जव बंधनथीरे मुक्त प्रभु थयो, ज्ञानी संत पवित्र. मैत्रीण ॥ ७ ॥ खर्मी खमावारे सर्वे जीवने, टाळी रागने रोष; जैनधर्मनोरे ए व्यवहार हे. करवो खातम पोष. मैत्री० ॥ ८ ॥ मैत्रीजावना

(१०८)

वर्तन आदरो, टाळी मोहनी वृत्तिः, दुःख सहीनेरे सघळा जीवनी, करशो प्रेमेरे जिक्त. मैत्री०॥९॥ परमातम सत्ताए सहु जीवो, आतममां एम भावः, खुद्धिसागर मैत्रीजावना, जवसागरमांरे नाव. मैत्री०॥ १०॥ ॐ०—मैत्रीभाव लाभाय ज० य० स्वाहा.

->#E-

द्वितीया प्रमोदजावना पूजा.

प्रमोद भावना पुष्पथी, पूजो वीरजिनेन्द्र; प्रमोद जावे जे रहे, थाता तेह महेन्द्र. ॥ १ ॥ दोष दृष्टिने टाळवा, प्रमोद जावना बेश; निंदादिक दूरे टळे, नासे मिथ्या कलेश. ॥ २ ॥ गुणने गुणीने देखतां, मनडुं हर्षित थाय; ए छे मुदिता जावना, ख्याचरतां दुःख जाय. ॥ ३ ॥

ते जे तरिण्यी वकारे. ए राग.

वंदु प्रभु महावीरनेरे, जेखे ओळखाव्यो धर्मः; उपकारी नहीं तुज समोरे, टाळ्यो मिथ्या जर्म हो.

(१०९)

Iद्रुमां. मुद्तिता भावना जावीएरे, त्र्यात्म प्रभु प्र**ग**∹ टावीएरे. टाळी दोषनी दृष्टि. ॥ १ ॥ कर्म वशे सहु प्राणियारे, दोषी काल अनादि: अचरिज ग्रं त्यां मानवुरे, गुण देखो निरुपाधिहो. दिखमां मुदिताण ॥ २ ॥ सर्व संसारी जीवमांरे, दोषने गुण बे साथ: युण देखी चित्त रीझीएरे, रीझे त्रिभुवन नाथ हो. दिलमां मुदिता० ॥ ३ ॥ परग्रुण परमाणु समारे, जाणी गिरिसम चित्तः खुशी यता जग सज्जनारे, करता आत्म पवित्र हो. दिलमां मुदिता॰ ॥ ४॥ कृष्णे श्वानना दंतनेरे, प्रशंस्या धरी राग: गुण रागे प्रगटे गुणोरे, जीव बने महाजाग हो. दिलमां मुद्तिता ॥ ५ ॥ नय निक्षेपे जाणीनेरे, स्रादरशो नरनार; समकितवंता जीवनोरे, एवो हे आचारहो. दिलमां मुदिता० ॥ ६ ॥ मिथ्यादृष्टिपणुं टळेरे, टळती दोषंनी दृष्टि; सर्व गुणो प्रगटाववारे, पुष्करा वर्तनी वृष्टि हो. दिलमां मुदिताण् ॥ ७ ॥ निन्दा थती नहीं कोइनीरे, सद्गुण लेश जणाय; सर्व जी- (११०)

वोनी साथमारे, आतम भाव सुहायहो. दिलमां मुद्ता० ॥ ८ ॥ सर्व कषायो उपशमेरे; क्षयोपश क्षय याय: खात्म स्वभावे खातमारे, प्रणमे सुख प्रगटाय हो. दिलमां मुदिता ॥ ९ ॥ क्षपक श्रेणि चढे आतमारे, समजावे वर्तमान; क्षीण मोही खंत-रातमारे, पामे केवल ज्ञान हो. दिलमां मुदिता० ॥ २० ॥ कोटि दोष छतां ग्रणोरे. देखंता संत धार: दोष त्यजी गुण हर्षथीरे, राची नरने नार हो. दिलमां मुदिता० ॥ ११ ॥ शत्रुना पण गुण जुनोरे, करो न नामची निंद; प्रभु महावीरना बोधचीरे, गुण गुण्। मानो वंच हो, दिलमां मुदिता० ॥ १२ ॥ जैन धर्मनी जावनारे, गुण रागे प्रगटाय; बुद्धिसा-गर आतमारे, ज्योति ज्योते सुहाय हो. दिलमां मुदिता० ॥ १३ ॥ ॐ०-प्रमोद् भाव लाभाय. ज० या स्वाहा.

(१११)

तृतीया माध्यस्य भावना पूजा.

दुहा.

माध्यस्य त्रीजी भावना, आदरे जे नरनार; सर्व प्रकारे सत्यने, पामे शांति अपार. ॥१॥ मिध्या दुर्बुद्धि टळे, पक्षपात दूर जाय; दुराग्रहो सर्वे टळे, रागने रोष पलाय. ॥ २॥ ज्यां त्यां सत्य प्रकाशतुं, रहे नहीं अज्ञान; नय निक्षेपे धर्मने, जाणंतां हे ज्ञान. ॥ ३॥

धन धन संप्रति साचो राजा. ए राग.

जेम जेम राग छने हेष विघटे, तेम प्रगटे समजावरे; दृष्टि रागनो त्याग धतां दिल, प्रगटे मध्यस्थ जावरे. वीर प्रभुए ए गुण जाख्यो, छादरो नरने नाररे; मध्यस्थ भावे सत्य प्रकाशे, छानंद अपरंपाररे. वीर०॥१॥ पक्षपात धाय रागने हेषे, मानव स्वार्थे अन्धरे; मिथ्याबुद्धियोगे लोको, छावळी दृष्टिए बन्धरे. वीर०॥ २॥ सर्व कदाग्रह

(११२)

दूरे नासे, प्रगटे सत्यं प्रकाशरे; स्रत्यने माटे सर्व समर्पण, शुद्धातम विश्वासरे. वीर० ॥ ३ ॥ द्रव्य क्षेत्रने कालने भावथी, सत्यासत्य जणायरे: सत्यनां सर्वे दृष्टि बिंदुओ, प्रगटे सत्य यहायरे. वीर०॥४॥ सत्यने न्याय बहे मध्यस्थी, पकमे न गद्धापुच्छरे; जुद्धं ते साचुं नहीं माने, सत्य खागळ सहु तुच्छरे. वीरः ॥ ५ ॥ नय निक्षेपने जंग प्रमाणे, जैन धर्म बे सत्यरे: सर्व नयोनी सापेक्षाए, समजो द्र्शन क्र-त्यरे. वीरण ॥ ६ ॥ ज्ञानी संतनी सेवा जिल, करतां मध्यस्थ जावरे: प्रगटे सर्व कर्म व्यवहारे, समजाता सत्य दावरे. वीर०॥ ७॥ काख स्वभावने नियति कर्मे, उद्यमे थातुं काजरे; पंचना समवाये हे कार्यनी-सिद्धिनुं साम्राज्यरे. वीर० ॥ ८॥ माध्यस्यभावे वर्तो लोको, करशो धार्मिक कर्मरे; सुणशो वांचशो जोशो चिंतशो, दिलमां प्रगटशे शर्मरे. वीर. ॥ ९ ॥ सर्व बाजुर्थी सत्य तपासो, करो मध्यस्थे काजरे; दर्शन ज्ञान चरणनी प्राप्ति, प्रगटे शिव साम्राज्यरे.

(११३)

वीर०॥ १०॥ मध्यस्थ जावे वोर प्रभुने, पूजो ध्यावो हमेशरे; बुद्धिसागर शुद्धातम पद, पामो ख्रलख प्रदेशरे. वीर०॥ ११॥ ॐ०—माध्यस्थ भाव लाभाय ज० य० स्वाहा.

चोथी करुणा भावना पूजा.

दुहा.

चोथी करुणा भावना, सर्व धर्मनुं मूल; करुणा वण समिकत नहीं, सर्व धर्म अनुकूल. ॥१॥ दया धर्ममां सत्यने, दान शीयल तप माय; सर्वे धर्म समाय छे, करुणामां सुखदाय. ॥२॥ प्रभु महावीर प्रकाशियो, द्या धर्म दिखन्नाव, भवोदिध तरवा खरुं, करुणा उत्तम नाव. ॥ ३॥ सांभळशो मुनि संयमरागे उपशम श्रेणि चढियारे.

ए-राग.

प्रभु महावीर जग उपकारी, तीर्थकर जय-कारीरे, करुणा भावने उपदेश्यो शुभ, आदरशो (११४)

नरतारीरे. प्रभु० ॥ १॥ द्रव्य करुणा सर्व जीवोनां, दुः को दूरे करवां रे; सर्व जीवोना प्राणनुं रक्षण, करवुं कर्म ब्याचरवांरे. प्रभु० ॥ २॥ यथाशक्ति जपकारो करवा, रोगादिकने हरवारे; द्रव्य करुणा एवी पहेली, भावी गुण अनुसरवारे. प्रभु० भाव करुणा निज आतमपर, कर्म शत्रु संहरवारे; सर्व लोकने आतमज्ञाने. प्रतिबोधी जद्भरवारे. प्रसु० ॥ ४ ॥ जैन्धर्म जगमां फेलावे, भाव करुणाः थातीरे; निजपर स्थातम ग्रुद्धि माटे, भाव दया प्रगटातीरे. प्रभु० ॥ ५ ॥ सात नये करुणाने जाणी, कहेणी रहेणीए रहेवुंरे, शत्रु उपर पण करुणा बुद्धि, राखी दुःखने सहेबुंरे. प्रभु० ॥ ६॥ ज्ञानथकी करुणा घट प्रगटे, हिंसा बुद्धि विघटेरे; ज्यां करुणा त्यां प्रभु छे निकटे, आतम भवमां न भटकेरे. प्रभु०॥ ७॥ नेमि प्रभुए परणवा जातां, ऋगनी करणा कीधीरे; वीरप्रभुए चंडकौशिकपर, करुणा की श्री प्रसिद्धिरे. प्रभुण ॥ ८ ॥ द्रव्य द्याथी जाव

(११५)

दया छे, अनंत गुण हितकारीरे; जे जे भावे करवी घटे ते, करशो समय विचारीरे. प्रभुण ॥९ ॥ दया विनानो धर्म नहीं छे, धर्म न हिंसा कमेरे; रागने द्वेष विना निष्कामी, रहे छावश्यक धर्मेरे. प्रभुण ॥१०॥ अल्प दोषने धर्म महा लाभ, द्या कर्म आचरवांरे; स्वाधिकारे तरतमयोगे, कर्म विवेके करवारे. प्रभुण ॥ ११ ॥ प्रभु महावीर श्रद्धा जिक्त, पामी करुणा करशोरे; बुद्धिसागर परमब्रह्मने, शुद्ध बनीने वर-शोरे. प्रभुण ॥ ११ ॥

कलश गीत.

गाया गायारे प्रभु महावीर प्रेमे ध्याया॥ चारे भावना पुष्पथी पूज्या, वीर जिनेश्वर राया; आतम ते महावीर प्रभुजी, घटमां व्यक्त सुहायारे. प्रभु० ॥ १ ॥ चार भावना द्रव्यने जावे, भावंतां प्रभु पाया; स्थारम सरीखुं जग सहु भार्स्, अनुजव रंग वधा-यारे. प्रभु० ॥ २ ॥ संवत् ओगणिश सत्योतरमां,

(११६)

साणंद रही चोमासुं; आश्विन वदि सातम रवि-वारे, पूजा रची सुख भास्युरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ चारे प्रमु महावीर देवने भावे, भावना भावी वधायोरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ महावीर पट परंपर तपगच्छ, हीर-विजय सूरिरायो; जगगुरु पदवी पाम्या साची, अकबरशाहे वधावयोरे. प्रजु० ॥ ५ ॥ वाचक सहज सागर ग्रुरु पद्दनी, परंपराए ख्राच्या: श्री रविसागर गुरु महंता, जगमां प्रसिद्धि पायारे. प्रञुण ॥ ६ ॥ तस शिष्य वैयावचीशिरोमणि, चारित्री राजा; श्री सुखसागर शांत सुधाकर, क्रियावंत शिर ्ताजारे, प्रञ्ज० ॥ ७ ॥ ग्ररु सुखसागर पूर्ण ऋपाथी, पूजा रची सुखकारी; भणे गुणे जे सांभळे ते सुख-पामो मंगल भारीरे. प्रञ्जु ॥ ८ ॥ आत्मोपयोगी भावना जावी, आतम शुद्धिकारी; बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धिः; शांति खहो नरनारीरे. प्रभुव ॥ ९ ॥ ॐ० करुणा लाभाय ज० य० स्वाहा ॥

(289)

दान शोयल तप भावनी पूँजा. प्रथम दान पूजा.

जय जगमां महावीर जिन, सर्व विश्व आधार; परम ब्रह्म तीर्थकरा, गरमेश्वर जयकार. ॥१॥ केवल-ज्ञानी जिनपति, सुरतर पूजे पाय; वीतराग परमा-तमा, सेवंतां सुख थाय. ॥ २ ॥ समवसरणमां बेसीने, सत्य जणाव्यो धर्म; दान शीयल तप भा-वनां, सत्य जणाव्यां मर्म. ॥ ३ ॥ दान शीयल तप भावथी, मुक्ति लहे नरनार; एमां शंसय निह जरा, समजाव्युं निर्धार. ॥ ४ ॥ ते माटे पूजा रचुं, दान शीयल तपभाव; द्रव्यजावथी पूजतां, प्रगटे गुण सद्भाव. ॥ ४ ॥

प्रथम दान पूजा.

दान समो नहि धर्म जग, दान दियो नरनार; दानथी जावे त्याग हे, दानथी जग उपकार. ॥१॥ दीक्षा ग्रहतां पूर्वे, तीर्थकर दे दान; दानथी निश्चय

(११८)

मुक्ति पद, जाखे हे भगवान्. ॥ २ ॥ दान सुपात्रे वापरो, धारी सत्य विवेक; दान विना नहीं सिद्धि हे, दाने समकित टेक. ॥ ३ ॥

सांभळशो मुनि संयम रागे. ए राग.

नमो नमो महावीर उपकारी, जगमांही जय-कारी रे. दानस्वरूप प्रकाइयुं साचुं, द्रव्यभाव सुख-कारीरे. नमो०॥ १॥ अजय सुपात्र उचित अनु-कंपा, कीर्ति पांच ए भारूयारे; यथायोग्य सेवे नर-नारी, उत्तम फल तस दाख्यांरे. नमो० ॥२॥ अन्न वस्त्रने औषधदाने, परोपकार करातारे; ज्ञानदान सह दानमां मोटुं, महिमा न वर्णव्यो जातोरे. नमोण ॥३॥ भावघी समकित दान अभय छे, चारित्रा-दिक जाणोरे: जन्ममरणथी बटे आतम, दान ते न्नाव प्रमाणोरे. नमो० ॥४॥ ममता टळतां दान ज यातं, ऋगियारमो प्राण ऋापेरे; सर्व प्राणापण ज्यां दाने, त्यां प्रञ्ज प्रगटी ब्यापेरे. नमो० ॥ ४ ॥ राचे

(११९)

माचे दान करीने, ते उत्तम पद पामेरे; आतम गुण **ब्यातमने आपे, ते ठरतो शिव ठामेरे. नमो० ॥६॥** दानथकी गुण सर्वे प्रगटे, दुर्गुण दोषो टळतारे; वैरोजन पण व्हाला थाता, वांबित मेळा मळतारे. नमो०॥ ७॥ सातनयेने चउ निक्षेपे, दानस्वरूप विचारोरे; सर्व धर्ममां दान छे पहेळुं, त्रिकयोगे ते धारोरे. नमो० ॥ ८ ॥ दानने देतां सर्वे दीधं, धन धन जगमां दानीरे; दाने तीर्थंकर पद बांधे, समजे थर्मी ज्ञानीरे. नमोण्या ए ॥ संघ चतुर्विध शासन जिक्ति, दानने देतां थातीरे; देव गुरुने संतनी सेवा, तरतमयोगे सुहाती रे. नमोण ॥ १० ॥ अरस्परस उपकारक हितकर, दान समुं नहीं कोइरे; प्रभु महावीर देवे प्रकाइयुं, आदरशो शुज जोइरे. नमो॰ ॥ ११ ॥ द्रव्यने जावथी धर्मदानथी, दानीनो बिल-हारीरे; बुद्धिसागर दानने आषो, धर्मी नरने नारीरे. नमो० ॥ १२ ॥

ॐ ह्रँ । श्रॅी०परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु

(१२०)

निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय दान लाजाय जलं चंदनं युष्पं धूपं दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं यजामहे स्वाहा॥

द्वितीया शीयल तप पूजा.

शीयल सम नहीं धर्म कोइ, सकल कम हरनार. शीयल सागर सम जिंद्धं, अन्य नदी सम धार.॥१॥ शीयल पाळे पाळ्युं सहु, पाळ्या व्रत आचार, शीय-लवंताने नमो, पूजो नरने नार.॥२॥ शीयलव-तथी मुक्ति हे, स्वर्ग तो सहेजे होय; दुष्ट उपद्रव झट टळे, नडे न निजने कोय.॥३॥

श्री जिनजाषित वचन विचारीए-ए राग.

आतम प्रभु महावीरने पूजीए, ध्याइ जे बहु
भाव-जिवकजन; प्रजु गुण लेतां प्रभुसम शोभिए,
बक्ष्य न चूको एह दाव. जिवकजन शोयलने
पालो साचा जावथी ॥१॥ सीतादिक सतीयो
संभारीए, ध्याइए तीर्थकर स्थादि, भविक०॥ शेठ

(१२१)

सुदर्शन जंबुने स्मरो,कामनी वारोरे व्याधि. भविक-शीयलः ॥ १ ॥ धन्य धन्य स्थूलीभद्र महंत जे, शीयलधारीमांही श्रेष्ठ. जविक ॥ कामना घरमां पेसी कामने, पाडयो पटकीर हेठ. भविक. शीयख॰ ॥ ३ ॥ विजयने विजयाने धन्य धन्य छे, टाळ्युं कामनुं मूळ; भविकणा शीयलवंतां नरने नारीओ, टाळो कामनुं शूळ. भविक. शीयल ॥ ४ ॥ शीय-खधारी जनने पूजीए, वंदोए करीने संग; भविक. संगे रंग प्रगटतो दिंलविषे, प्रभुवचने दढ रंग. जविक. शीयल० ॥५॥ सातनयोने चन निक्षेपथी, जाणी शीयलनुं रूप; भविक. द्रव्यभावधी सेवे शिव मळे, नासे भव भय धूप. भविक० शीयल० ।।६॥ द्रव्य ते जावनुं कारण जाणवुं, कारणे कार्यनी सिद्धिः; भविकः।। कायिक वीर्यनी रक्षा धारतां, प्रगटे बाह्यनी ऋद्धि. भविक. शीयल ॥ ७ ॥ पतित्रता पत्नो त्रत शीयल छे, गृही आश्रम हितकार; भविक. द्रव्य भावथी शीयल छे त्यागोने, दुर्गुणनो परिहार.

(१२२)

भविक. शीयल ॥८॥ सद्वर्तन चारित्र ते शीयल छे, उत्तम गुणना आचार; भिवक. दोष व्यसन दुर्गु-णना त्यागथी, शीयल छे सुखकार. जिंवक. शोयल ॥९॥ द्रव्यने भाव शोयल पूजावडे, पूजो महाबीर देव; भिवक. आत्म महावीर प्रगटे आत्ममां, निज्ञ गुण पर्याय सेव. भिवक. शीयल ॥ १०॥ त्यातम शुद्ध उपयागे वर्तीए, भाव शीयल हे ऐ बेश. भिवक. हुद्धिसागर परमानंदनी, प्राप्ति होय हमेश. भिवक शीयल ॥११॥ ॐ० शीयल लाजाय ज० य० स्वाहा॥

तृतीया तप पूजा.

तप पूजो भवी जावथी, सेवो ध्यावो बेश; तपथी प्रगटे सिद्धियो, नासे सघळा क्लेश. ॥ १ ॥ अनेक जातनां तप भलां, द्रव्यभाव व्यवहार; कार्य-सिद्धि पुरुषार्थता, दुःख सहन तपसार. ॥ २ ॥ तन मन धनना जोगथी, करतां शुभ पुरुषार्थः संकट दुःखोने सहे, तप प्रगटे परमार्थ. ॥ ३ ॥

(१२३)

ओधवजी संदेशो कहेजो इयामने. ए-राग.

द्रव्यभावथी तप तपशो नरनारीओ, कार्यनी सिद्धि तप वण कोइ न होय जो; मोहपरिणति रोधक निश्चय तप भद्धं, कर्तव्यो करतां सहेजे तपः जोयजो. द्रव्य० ॥ १ ॥ बाहिर तप षड्नेदे सुखकर छे सदा, भव्यजीवो तेनो धरता व्यवहारजो: अज्यं-तर तप षर्भेदे हे निर्महुं, शुद्धातम कारक ते छे सुखकारजो. द्रव्य. ॥ २ ॥ देवग्रुक्ते संघनी सेवा जित्तमां, सर्वे समर्पण करवुं तय ए बेशजो; निष्का-मे निज अधिकारे फर्जी खदा-करतां तप ते पनता सहेवा कलेशजो. द्रव्य० ॥ ३ ॥ प्राण पमे पण धर्म कर्म नहीं मुकवां, निर्जय निश्चल भावे रहेवुं चि-त्तजो; सर्व ग्रुभाशुभ भावविषे समभावना, धरवी तप ए जाणो श्रेष्ठ पवित्रजो. द्रव्य० ॥ ४ ॥ दुर्गुण दोषने सर्व व्यसनने टाळवां, उपकारी कर्मो करवां सही दुःख जो; लाभालाभमां मान त्र्यने अपमा-नमां, समताए रहीए ने सहीए जूखजो. द्रव्य० ॥ ५ ॥ रोगी क्यादि जीवोनां दुःख टाळवा, तनमन (१२४)

धन शक्तिनो देवो भोगजो; परमार्थो करवामां स्वार्थो होमवा, एवो साचो दुष्कर तपनो योगजो. द्भव्यण ॥ ६ ॥ फलनी इच्छा राख्या वण परमार्थनां, करवां कृत्यो त्यागी भयने द्वेषजो: खेद विना धर्म प्रवृत्ति धारीए, साध्योपयोगे मुक्तिनो उद्दे-दाजो. द्रव्य० ॥ ७ ॥ नामरूपमां निर्मोही वनी वर्तवुं, सर्व शुजाशुभ इच्छानो करी रोधजो; अर्पाइ जावुं गुरु खादि भक्तिमां, योग्यजनोने देवो घटतो बोधजो. द्रव्य० ॥ ८ ॥ प्रायश्चित्तने विनये, वैया-चृत्यथी, स्वाध्याय ध्यानथी प्रकटे आतम शुद्धिजो; देहादिकमां निर्मोही थे वर्तता, प्रगटे आतमनी नव क्षायिक लिधिजो. द्रव्य० ॥ ९ ॥ मनवाणीने कायाथी तप योग छे, तपथी शुद्ध करो आचार विचारजो; बुद्धिसागर प्रभु महावीर देवनो, जाख्यो त्तप एवो छे जग सुखकारजो. द्रव्य० ॥ १०॥

> ॐ० तपो लाजाय ज० य० स्वाहा ॥ चोथी भाव पूजा.

भावथकी क्षणवारमां, प्रगटे केवलङ्गानः

(१२५)

क्षणमां जावथी मुक्ति छे, वीर कथे भगवान् ॥ १ ॥ वीरो शाळवी भाव वण, पाम्यो काया क्लेश; जाव रुचि रस प्रेमथी. विघटे रागने द्वेष. ॥ २ ॥ भाव विना किरिया सकल, निष्फळता देनार; हषोँ हासे जावना, भावो नरने नार. ॥ ६ ॥

जीरण रोठ भावना भावेरे. महावीर प्रभु घेर स्थावे-ए राग.

महावीर प्रज्ञ जयकारी, जावे उपदेशे सुख-कारी; जावथी सर्व सिद्धि थनारी, भाव दिलमां धरो नर नारीरे; जावनी जगमां बलिहारी, जाव अमृत आनंदकारीरे. जाव.॥१॥

चक्री भरते भावना जावी, क्षणमां घाति कर्म ह्वावी; ये केवली मुक्तिने पावी, जाव; जितनी छे चावीरे. जाव०॥१॥ जावे जावना भावतां ज्ञानी, यया आषाढा मुनि ष्यानी; थया क्षणमां केवल-

(१२६)

इानो, रही खप नहीं बीजा कशानीरे. जाव० ॥२॥ वांस उपर नाटक करता, इसा पुत्रजी ध्यान धरंता; जावथी श्रे िए संचरंता, एक क्षणमां केवल वरतारे. भावण ॥ ३ ॥ प्रज्ञ महावीर पारणुं आवे, जीरण होठ भावना भावे; पूरण घेर दानने पावे, जीरण होठ स्वर्ग सिधावेरे. भाव० ॥ ४ ॥ जावथी धर्म कोइ न मोटो, भाव रह्मवण सर्वमां तोटो; याय ब्रप्त तप मांही गोटो, भाव वण **ख्रा**डंबर खोटोरे. भाव ॥ ५ ॥ भाव त्यानंद रस रुचि प्रीति, जेमां द्वेष नहीं खेद भीति; हर्षोल्लासनी उत्तम रीति, उज्वल परिणाम प्रवृत्तिरे० भाव० ॥ ६ ॥ जाववण कोइ सुक्ति न पामे, भाववण नहीं शक्तिथी झामे; कोइ किरीया न आवे कामे, भाववणवळतुं नहि दामेरे. भावणाणा भाव चढतीरसनी धारा, सेवा जिल्छी सुखकारा; वहे आनंद ऋपरंपारा, रस वेधक सिद्धि उदारारे. भाव०॥ ८॥ श्रद्धा प्रीतिवडे जाव आवे, शुष्कज्ञानीन जम शुं पावे; सत्य आनंद रस उप-

(१२७)

जावे, तेनी घेंन खुमारी न जावेरे. जाव० ॥ ९ ॥ जेथी जाव वधे ते करशो, एवुं सांभळी व्रत व्याच-रशो; भावरस ज्या त्यां मन धरशो, तेथी व्यातम जीवन वरशोरे. भाव० ॥ १० ॥ शुद्धभाव आनंद रस व्यापे, क्षणमां मुक्तिरस छापे; कर्म अनंत भवनां कापे, बुद्धिसागर आनंद व्यापेरे. भाव० ॥११॥ ॐ० जाव लाजाय ज० य० स्वाहा॥

गीत कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो.

दान शीयल तपभाव पूजाए, अतिशय आनंद् पायो; द्रव्य पूजाने भाव पूजानो, ए अधिकार रचायोरे. महावीर. ॥ १ ॥ द्रव्य पूजाने जाव पूजानो, यहस्य छे अधिकारी; भाव पूजाना अधि-कारी मुनि, शुद्धातम सुखकारीरे. महावीर०॥ २॥ दानशीयल तप जावना योगे, मुक्ति लहे नरनारी; सर्व साधारण धर्म छे जगमां, सर्व जीव हितकारीरे.

(१२८)

महावोर० ॥ ३ ॥ एक दिवसमां पूजा रची शुभ, सर्व भवी उपकारी; ऋाश्विन वदि आठम साम-वारे, वर्ते जग जयकारी र. महावीर. ॥ ४ ॥ स्रोग-णिश सत्ते।त्तरमां साणंद, चोमासुं कर्युं भावे; संघनी भक्तिए उपदेश, रहेतां आनंद दावेरे. महावीर०॥ ॥ ॥ प्रभु महावीर पट परंपर, तपग-च्छ संघना राजा; जगगुरु हीर विजय सूरि शोजे, सर्व गच्छ (शरताजारे. महावीर० ॥ ६ ॥ तपगच्छ सागर पट्ट परंपर, रविसम पूर्ण प्रतापी; रविसागर गुरु प्रेमे प्रण्मुं, जगमां कीर्ति व्यापीरे. महावीर. ॥ ७ ॥ तश शिष्य चारित्री शिर शेखर, सुख सागर गुरु धीरा; शांतने दांत महत मुनीश्वर, सर्व मुनिमां वीरारे. महावीर. ॥ ८ ॥ ग्रह सुखसागर पूर्ण कृपा-थी, आत्मामृतरस पीधो; बुद्धिसागर आनंद मंगल, पामी पूर्ण प्रसिद्धोरे. महावीरण ॥ ९ ॥

(१२९)

अष्टांग योगनी पूजा.

प्रणमुं तीर्थकर विभु, चोवीशमा जिनराज; परमेश्वर महावीर देव, योगेश्वर सम्राट. ॥ १ ॥ योगनां अंगो आठ छे, तेह प्रकाइयां बेश; सम्वस रणमां बेसीने, दीघो शुभ उपदेश. ॥ २ ॥ इठनां श्रंगो चार हे, राजनां अंगो चार; निश्चय नेव्यवहा-रथी, समजी यहो नरनार. ॥ ३ ॥ द्रीन ज्ञानने चरणमां, अंगो आठ समाय; पंचाचारने समितिमां, ग्रितमांही सुहाय. ॥ ४ ॥ स्याद्वादी समिकतीने→ सम्यक्पणे प्रणमायः साधननी जपयोगिता, स्वाधि-कारे जणाय. ॥ ५ ॥ त्यागी गृहस्थने योगनुं, आरा-धन सुखकार; असंख्य योग वीरे कहाा, मुक्ति हेतु निर्धार. ॥ ६ ॥ ज्ञानी ग्रहगमने लही, जैन शास्त्र अनुसार; योगाष्ट्रक पूजा रचुं, स्वर्गने शिव दातार.॥७

प्रथम यम योग पूजा.

ऋहिंसा सत्य यम कथ्या, ऋस्तेय छे जयकार;

(१३0)

ब्रह्मचर्य संतोषने, ख्राद्रतां शिव सार. ॥१॥ पाप कर्मने रोधतो, यम ते संवर जाणु; ख्राद्रतां आस्रव टळे, प्रगटे अनुभव ज्ञान. ॥२॥ सर्व योगतुं मूल छे, सर्व योग ख्राधार; प्रथम पगिथयुं मुक्तिनुं, पाळो नरने नार. ॥ ३ ॥

देखो गति दैवनीरे. ए राग.

प्रणमो पूजो वीरनेरे, जेने जणाव्यो योग; पंच महावृत यमथकी रे, नासे कर्मनो रोग. भवी यम आदरेरे; टाळी दुःखकर भोग. भवी यम आदरोरे. ॥ १॥ हिंसा दुःखनी वेलडी रे, अहिंसा सुखखाण; वैर विरोध रहे नहींरे, मुक्तिनुं छे प्रमाण. जवी॰ ॥ १॥ सत्य समो नही धर्म हे रे, सत्य जगत् आ-धार; सत्यथी धर्मो प्रगटतारे, सत्य प्रहो धरी प्यार. जवी॰ ॥ ३॥ सर्व प्रकारनी चोरीथीरे, विरमे शांति सुहाय; चोरी करतां प्राणियारे, सुख शांति नहि पाय. भवी॰ ॥ ४॥ द्रव्यथी मैथुन त्यागतारे, नववाडो धरी बेश; आधि व्याधि छपाधिनेरे, नासे (१३१)

रोगने क्लेश. जबी०॥५॥ भावधकी ब्रह्मचर्य छेरे, मोह परिणति त्यागः गुज्जब्रह्ममां म्हालवुरे, सर्वयाग शिर याग. भवी०॥६॥ मूर्च्छा परिश्रह त्यागधोरे, मन चंचलता जायः द्रव्य परिश्रह पण टळेरे, खात्मानुजव थाय. भवी०॥७॥ जोगोप-भोगधो विरमतारे, पाप कर्मनो अंतः यमवने प्रभु पूजोनेरे, मुक्तिवर्या बहु संत. भवी०॥८॥ देहनी शुद्धि यमधकीरेः मनवच कायनी शुद्धः, बुद्धिसा-गर आत्मनीरे, प्रगटे चिदानंद ऋद्धि. भवी०॥९॥ ॐ ०प० यमयोग लाजायज० य० स्वाहा॥

द्वितीया नियम पूजा.

बोजी नियमनी पूजना, करतां दुःखनो नाश; मन इन्द्रिय वशमां रहे, नियम ते जाणो खास. ॥ १ ॥ जे जे उपाये मन तनु, आतम वश वर्ताय; नियम ते जाणो सहो, पाळंतां सुख थाय. ॥ २ ॥ नियम योगने खादरी, पाम्या सुक्ति अनंत; नियम

(१३२)

सिद्धि हे यमथकी, जाखे वीर जदंत. ॥ ३॥

सुत सिद्धारथ भूपनारे, सिद्धारथ भगवान्-ए राग.

ग्रुभ नियम बहु जातनारे, द्रव्यने भावधी जाण; मोह पशुबळ झट टळेरे, आदरतां गुण खा-णरे; नियमने पाळशो, टाळो विषय कषायरे, दोषो टाळशो. ॥ १ ॥ बाह्याच्यंतर तप तपेरे, पडु आव-इयक कर्म; सहज कर्म सदोषीनेरे, करतो साधे ध-र्मरे. नियमण ॥ २ ॥ घोर अभिग्रह धारतोरे, गुर्वी-दिकनीरे जक्ति; परोपकारी कार्यमांरे,फोरवतो निज शक्तिरे. नि० ॥३॥ देवग्रुरुने साधुनारे, दर्शननी शुभ टेक; आवश्यक सहु फर्जनेरे, धारे धरीने विवेकरे. नियम० ॥ ४ ॥ सकस साधन नियमनांरे, द्रव्यने भावधी जेह, साध्योपयोगे धारतोरे, देह छतां निर्दे हरे. नियम ा ५॥ द्रव्यभावश्री शौचनेरे, धारे मन संतोष; निन्दादिक दुर्गुण त्यजेरे, धरी ग्रुण दृष्टि पोषरे. नियम० ॥ ६ ॥ धर्म कर्म करवां घटेरे.

(१३३)

ते ते करतोरे सर्व; इष्ट जे कामनी वासनारे, टाळे प्रगटचो गर्वरे. नियमण्॥ ७॥ सूरिवाचक मुनि सेवतारे, करतो हषीं छास; जिन प्रतिमा अवलंब-तोरे, प्रभु वचने विश्वासरे. नियम ॥ ८॥ सम-कितवण हठयोगधीरे, पामे नहि कोइ मुक्ति; सम्यग्ज्ञाने नियमनीरे, पाळे जे शुभ रीतिरे. नियम० ॥९॥ इठयोगी अज्ञानथीरे, निष्कामी नहीं थायः सम्यग् ज्ञानी नियमनेरे, पाळंतो शिव जा-यरे, नियम०॥ १०॥ द्रव्यक्षेत्रने भावशीरे, सातनयोधीरे जेह; जाणी नियमने आद्रेरे, सिद्ध बने छे तेहरे. नियम० ॥ ११ ॥ पाळो नियमना योगनेरे, जेथी ब्यास्रव जाय; बुद्धिसागर आतमारे, परमेश्वर पद पायरे. नियमण ॥१२॥ ॐ ०प० नियम योगलाजाय ज य० स्वाहा ॥

तृतीया खासन योग पूजा.

आसनथी आरोग्यता, देहनी पुष्टि थाय; रो-गादिक दूरे टळे, देहथी धर्म सधाय. ॥१॥ ते

(१३8)

माटे आसन घणां, जेने घटे जे तेह; करतां देहनुं बळ वधे, निमित्तसाधन एह. ॥ २॥ आसन जय करीने जनो, सेवा भक्ति योग; साधे पंचाचारने, टाळे कर्मना रोग.॥ ३॥

इडर आंबा आबलीरे, ए राग.

ळासन जयथी योगनोरे, भूमि शुद्धि थाय; देह आरोग्यता संपजेरे, वायु रोगो जायरे; त्रविजन !!!: आसन जयने साध्य, तेवडे प्रभु ख्याराध्यरे. जविव ॥ १ ॥ गोट्रहिकासनथी प्रभुरे, वीरजिने कर्यु ध्यानः पर्यकासन बेसीनेरे, वीर खह्या निर्वाणरे. भवि० ॥ १ ॥ काउसग्गना आसनेरे, कीधां ऋनेके ध्यान: पद्मासनथी साधुओरे,खद्या घणा निर्वाणरे. जविणी३॥ योग वहन देव वंदनेरे, आसननो उपयोग: प्रतिक-मणने मंत्रनीरे, साधनामांहि योग्यरे. भवि० ॥४॥ कायिक आसन जय करेरे, वायु रोगो जाय; अनेक रोगो न उपजेरे, धर्म साधनमां सहायरे. भवि 🗠

(१३५]

॥ ५॥ भावय। आसन जाणवुरे, आतम स्थिर परीयाम; आशावण मन ध्येयमारे, वर्ततां स्थिर धामरे. भवि०॥ ६॥ मननी चंचलता मटेरे, ठरी रहे स्थिर ग्राम, भाव आसन ते जाणवुरे, निश्चलता निष्कामरे० जवि०॥७॥ पद्मासन बेटा प्रभुरे, वंदो पूजो जव्य; बुद्धिसागर योगनुरे, साधो झट कर्तव्यरे. भवि०॥८॥ ॐ ०प० आसन योगलाजाय ज० य० स्वाहा.

चतुर्थ प्राणायाम पूजा.

प्राणायामथी प्राणनो, मन तनु शुद्धि थायः, अष्टधा प्राणायामना, जेद कह्या ग्रणदायः ॥ १ ॥ जैन शास्त्रमां भाखिया, ते रीते नरनारः, प्राणायामने साधीने, मनोजयने वरनार, ॥ २ ॥ द्रव्यजावथी जाणतां, करतां प्राणायामः, सहज योगनी पृष्टिनुं, साधन छे परिणामः ॥ ३ ॥

छुंबखडानी देशी. प्राणायामनी साधनारे, करशो नरने नार; प्रभु

(१३६)

पद पूजीए. रेचक पूरक कुंभकेरे, प्राणनी शुद्धि थनार. प्रभु पद पूजीए, पूजीए जिनवर पूजीएरे, **ञ्चा**नंद प्रगटे अपार. प्रभु पद् ॥ १ ॥ प्राणाया-मना ज्ञानथीरे, शुभ अशुज्ञ जणाय, प्रज्ञ ॥ इडा पिं-गला नामीयोरे, सुषमणा बोध थाय. प्रभु० ॥ २ ॥ ऋष्टधा प्राणायामथीरे, टळता रोग अनेक. प्रञ्जुः वायु अने पित्त कफतणारे, टळता महाउद्रेक. प्रभु० ॥ ३ ॥ प्राणायामना जयथकीरे, प्रगटे बाहिर सिद्धि. प्रभु॥ वीर्यादिक रक्षण यतुंरे, ऋायु-ष्य बलनी ऋद्धि. प्रभु० ॥ ४॥ मन तनु वाणी शक्तियोरे, विकसे सात्विक बुद्धि. प्रभु॥ बाह्य शक्ति कारणपणेरे, आतम शक्तिनी दृद्धि. प्रभु० ॥ ५ ॥ भाव प्राणायाम साधनारे,सम्यग् ज्ञानीने होय. प्रभु ॥ द्गष्ट संकल्प विकल्पनोरे; रेच करे सुख जोय. प्रभु० ॥६॥ धर्म शुकल ध्याने पूरतोरे, पूरक प्राणायाम. प्रभु ॥ ग्रुद्ध स्वजावे स्थिरतारे. कुंभकना परीणाम. प्रभु० ॥ ७ ॥ ऋशुद्धनुं रेचन करेरे, शुद्ध पूरण

(१३७)

पुरुषार्थ. प्रभु ॥ निज गुणधी पूरण थवुंरे,पूरकनुं पर-मार्थ. प्रभु० ॥ ८ ॥ अष्ट कर्मने आत्मथीरे, कर्षवां रेचक जाव. प्रभु ॥ उपराम क्षयोपराम क्षयेरे, पूरावुं पूरक दाव. प्रभु० ॥ ९ ॥ क्षायिकजावे आत्ममरि, स्थिरता रमणता जेह. प्रभु ॥ कुंभक भावथी जाणी-नेरे, छादुरशो धरी स्नेह. प्रभु० ॥ १० ॥ भाव प्रा-णायाम योगचीरे, क्षणमां केवल सिद्धि, प्रभु॥ द्रव्य-थको भाव जाणवोरे, अनंत गुण प्रद ऋद्धि. प्रभु० ॥ ११ ॥ द्रव्य ते भावनो हेतु छेरे, कारणे कारज थाय, प्रभु ॥ बुद्धिसागर त्र्यात्मनीरे, शुद्धता हेते उपाय. प्रभु० ॥ १२ ॥ ॐ ०प० प्राणायाम योगखा-भाय जा या स्वाहा ॥

पंचम प्रत्याहार योग पूजा.

बाहिर जाती वृत्तियो, रोधवी प्रत्याहार; अना-सक्ति विषयोविषे, राग रीस परिहार. ॥ १ ॥ त्रेवीश विषयोमां थतो, राग रीस परिणाम; तेथी विमुख चवुं भल्लं, निर्विषयी मन ठाम. ॥ २ ॥ (१३८)

सकल शुभाग्रभ वृ(त्तयो, रोकः) प्रत्याहार; धारी समकितीजनो, पामे जवोद्धिपार.॥ ३ ॥

तेजे तरणीथी वडोरे, ए राग.

प्रज्ञ महावीर पूजीएरे, वंदीए धरी भाव. प्रत्याहार प्रकाशियोरे, जेथी वधे गुणदावहो. भविका० प्रत्याहारने धारशोरे, मननी मलोनता टाळशोरे. शुद्ध थशो नरनार० ॥ १ ॥ मोहनी वृत्तियो बाह्यमारे, जातां रोकवी योग; बाहिर वृत्ति जीवमारे, पामे शोकने रोगहो. ॥ भविकाण ॥ २ ॥ बाह्य परिणति वृत्तिएरे. ग्रणश्रेणि न चढाय: अंत-रंग परिणामचीरे, क्षायिक गुणमां जवाय हो. भविका० ॥ ३ ॥ उत्तरोत्तर उज्जवलपणेरे, ज्ञानादिक परि-णामः उत्तरोत्तर गुणस्थानकोरे, पामे मन विश्रामः हो. जविका० ॥ ४ ॥ ग्रुभ अशुभता नहीं रहेरे, हृश्य श्रहश्य मझारः प्रत्याहारनी सिद्धतारे, निज-गुण निजमां धार हो. भविका०॥ ५॥ दुर्गुण दोषोः

(१३९)

सद्भ टळेरे, नासे व्यसनो दुष्ट; प्रत्याहारनी सिद्धि-एरे, आतम निर्मल पुष्ट हो. जविकाण ॥६॥ रात्री दिवस क्षण क्षण विषेरे, करतां कर्माचार; मन वाणी काय प्रशृत्तिमांरे, धरशो प्रत्याहार हो० भविका० ॥ ७ ॥ सम्यग्ज्ञानीने सहजथीरे, थातो प्रत्या-हार: योगपणे घट परिणमेरे, प्रारब्धनो व्यवहार हो. भविका० ॥ ८ ॥ सम्यग्ज्ञानोपयोगथीरे, सुख दुःखमां समभानः निजगुण निजमां खेंचतोरे, एवो श्चाविर्जाव हो. जविंका० ॥ ९॥ प्रत्याहारे जे परि-णमेरे, यहे न छंमे जेह; बुद्धिसागर आत्मनीरे, पूर्णता पामे तेह हो। भविका।। १०॥ ॐ ०पण प्रत्याहार योगलाभाय ज० य० स्वाहा ॥

छठी धारणायोग पूजा. दहा.

अरिहंत महावीर धारणा, धारो नरने नार. शब्दथी अर्थनी धारणा, धरतां शक्ति ख्रपार ॥ १ ॥ श्रद्धा प्रेमथी धारणा,धरता जे निष्काम; शुद्धि करी (\$80)

निज हृदयनी, पामे शिवपुर ग्राम ॥ २ ॥ नव पदनी दिल धारणा, धरतां केवलज्ञान; बाह्यांतर त्राटक भळे, धारणमां गुणखाण. ॥ ३ ॥

सनेही संत ए गिरि सेवो. ए राग.

द्रव्य भावची धारणा धरीए, प्रभु महावीर दिलमां स्मरीए. ब्यन्य परिणतिने परिहरिए, निज श्चातम शुद्धता करीए: प्रभु महावीरने दिल धरीए, एवी धारणाए प्रभु वरीए. प्रभु० ॥ १ ॥ प्रञु ध्येयनी धारणा धारो, षट चक्रोमां निर्धारो; प्रभु भारणमां मन वाळो, तेथी घटमां थतो उजियारो. प्रजु० ॥ २ ॥ बाह्य द्यांतर त्राटक करीए, दुर्ध्या-नने झट परिहरीए; उपयोगे रहीए फरीए, प्रजुमय थे प्रजुने वरीए. प्रभु० ॥ ३ ॥ प्रभु महावीरमां मन राखो, मुखे महावीर नामने भाखो; मोह शत्रुने मारी नाखो, आतम आनंद रस चाखो. प्रत्रूण ॥ ४ ॥ प्रभु महावीरमय थे जाशो, बीजुं सघळुं भूखी जाशो;

(\$8\$)

सिद्धियोमां नहीं लोभाशो, सत्य धर्म कमाणी कमाशो. प्रभु० ॥ य ॥ खातां पीतां हरतां फरतां. उपयोगे कर्मो करतां; प्रजुनी घट धारणा धरतां, नरनारी संयम वरतां. प्रभु० ॥ ६ ॥ पहेली साकार धारणा आवे, पछी निराकार सुहावे; प्रभु नवधा भक्ति प्रभावे, भक्त योगी शिवपद पावे. प्रभु० ॥७॥ सर्व जापो धारणा माटे, वळो वहेला शिवपुर वाटे: मुक्ति मळे छे शिरने साटे, मळे धारणा ज्ञानीना हाटे. प्रभु० ॥ ८ ॥ मनथी मोह दूर इठावो, शुद्ध आतम महावीर भावो; धारणाए वीर वधावो, भाव **श्चनहद तान बजावो. प्रभु० ॥ ९ ॥ गुणस्थानक** षढवा निसरणी, धारणा भवसागर तरणी; बुद्धि-सागर ब्यमृत सरणी, धरो मनमां धारण करणी० ॥ प्रभु० ॥१०॥ ॐ ०प० धारणा योगलाभाय. ज० य० स्वाहा ॥

सप्तमी ध्यानयोग पूजा. धर्म ध्यानने शुक्कथी, मुक्ति सहेजे थाय; निरा-

[१४२)

कार साकार वे, ध्यानथी कर्मी जाय. ॥ १ ॥ अरि-हंत आदि ध्येयमां, मन एकाय प्रधान; यातां क्षायिकभावथी, प्रगटे केवलज्ञान ॥ २ ॥ चार प्रकारे ध्यान वे, ख्रात्म ग्रुद्धि करनार; ध्यानथी प्रभु-मय ये जतां, प्रगटे प्रभु निर्धार. ॥ ३ ॥

> सांजळशो मुनि संयम रागे उपशम श्रेणि चढियारे. ए राग.

धन्य महावीर जिन उपकारी, जगमांही जय-कारीरे; ध्यान धरीने केवल पामी, मुक्तिवर्या सुखकारीरे. धन्य० ॥१॥ सर्व प्रकारनां ध्यान प्रका-इयां, उपदेश्यां नरनारीरे; आर्त रोद्रने धर्म ग्रुकल चड, समजो गुरुगम धारीरे. धन्य० ॥२॥ पिंमस्थने पदस्थने ध्यावो, रूपस्थयी लय लावोरे; रुपातीतना ध्याने केवल—ज्ञानने क्षणमां पावोरे. धन्य०॥३॥ ध्येयमां खंतर्मुहूर्त ध्यानज. थातां जीवन्मुक्तिरे; आत्मानंद रसोद्धि प्रगटे, विषयोमां न आसित्तेरे. धन्य०॥४॥ अंतर्मुहूरत ध्यान प्रतीते, आत्म समाधि प्रगटेरे; खातां पीतां कार्य करंतां, शुद्ध (१४३)

स्वरूप न विघटेरे. धन्यव ॥ ५ ॥ श्रुतज्ञानी ध्याने अधिकारी, आत्मार्थी अविकारीरे; आतमरंगी ध्यानी संगी, निःसंगी नरनारीरे. धन्य ॥ ६॥ मुरुकुछवासी गुरुना भक्तो, सर्व स्वार्पणकारीरे; लोकादि संज्ञा परिहारी, ध्यानी बने गुणधारीरे. धन्य०॥ ७॥ धर्म शुकल वे जावना भावो, ऋशुभ ध्यान हठावोरे; शुद्धातम उपयोग जमावो, परमातम प्रगटावोरे. धन्य० ॥८॥ ऋशूभ ध्यान ठाण त्रेसठ वारो, शुद्ध स्वरूप विचारोरे: मानव भवनी क्षण नहि हारो, त्यातम गुणने सुधारोरे. धन्य०॥ ९॥ साकार ध्यान निराकार ध्यान वे, अनुक्रमधी भवी भ्यावे।रे; बुद्धिसागर आतमशुद्धि, करवा लगनी लगावोरे. धन्यव ॥१०॥ ॐ वपव ध्यान योगलाजाय ज० य० स्वाहा ॥

अष्टमी समाधियोग पूजा.

ध्यानतणा ऋभ्यासथी, प्रगटे आत्म समाधि; राग द्रेषने कामनी, होय नहीं मन आधि॥१॥ (388)

आतममां मन स्थिर थतां, शुद्ध समाधि थाय; मोहात्मक संकल्पने, विकल्प उपशमी जाय ॥ २ ॥ ज्ञानोपयोगे सहज ठे, आत्म समाधि व्यक्त. परमा-नंद रस स्वाद्थी, बाहिर नहि स्थासक्ति ॥ ३ ॥

> चौद लोकके पार कहावे ए राग-वा. जिनपद जगमां जाचुं जाणो-ए राग.

सहज समाधियोगे महावीर, केवलज्ञानने पान्याजी. अप्रमत्त दशा प्रगटावी, घाती कर्मने वाम्या; जिनवर नमीएजी, त्यागी मोह स्वजाव, निज गुण रमीएजी. ॥ १ ॥ उपशमने क्षय क्षयोपशम्यी, आत्म समाधि प्रकाशेजी; मोहाजावे सहज समाधि, द्यातम आनंद जासे. जिनवर० ॥ २ ॥ ब्रह्मरन्ध्रमां प्राण चढंतां. हठ समाधि कथातीजी; तेनी किंमत कोमी सरखी, गुद्धोपयोगे जणाती. जिनवर० ॥३॥ द्रव्य समाधि ज्ञान विनानी, शाता वेदनी भोगेजी; भाव समाधि सहजानंदे, आतमना

(१84)

जपयोगे. जिनवर**० ॥ ४ ॥ द्रव्य समाधिकर्मने** करवां, भाव समाधि पामोजो; ग्रुद्वोपयोग छे सहज समाधि, ख्यातम गुण विश्रामी. जिनवर० ॥ ५ ॥ श्रभ उपयोग छे द्रव्य समाधि, शुज कषाय प्रणामेजी; शुभर्यी शुद्ध उपयोगमां रमतां, आतम मुक्ति पामे. जिनवर० ॥ ६ ॥ यावत् रागने द्वेष विना मन, आतम निज उपयोगीजो; तावत् शुद्ध समाधि वर्ते, खातम खानंद जोगी. जिनवरण ॥ ७ उद्ये आव्यां कर्म शुजाशुज, ज्ञानी त्यां समजा-वीजी; आतमनो उपयोग न चूके, देतो मोह ह ठावो. जिनवर०॥८॥ निर्विकल्प समाधिमांहो. मोह विचार न आवेजी; मोह विकल्पो प्रगटे त्यारे, सविकल्प कहावे. जिनवरण ॥ ९ ॥ शुद्धातम महा-वीर प्रभु एक, स्थिर उपयोगे प्रकाशेजी; एकता ली-नता समता अगटे, मोहनुं द्वैत प्रणाशे. जिनवर० ॥ १० ॥ मिथ्या ज्ञानीने जे समाधि, मिथ्याभावे ते कहीएजी; भव मुक्तिमां समपरिणामे, केवल ज्ञानने लहीए. जिनवर० ॥ ११ ॥ कर्म योगीने

(१४६)

चक्तने ज्ञानी, गुद्ध समाधि पामेजी; असंख्य योग यता अहीं भेळा, घाती कर्म विरामे. जिनवरण ॥ १२ ॥ ज्ञानानंदे गुद्ध समाधि, पामे केवल प्रग-टेजी; बुद्धिसागर स्त्रानंद मंगल, पामे माया विघटे. जिनवरण ॥ १३ ॥

कखश गीत.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो.

अष्टांग योगनी पूजा रचीने, वीर जिनेश्वर ध्यायो; अष्टांग योगना भाव पूजनथी, आतम शुक्कि पायोरे. महावीर. ॥ १ ॥ सम्यग् ज्ञानीने आठे छंगो, प्रणमे सम्यग् भावे; मिध्यात्वीने मिध्या स्व-रूपे, निज दृष्टिना स्वभावेरे. महावीर० ॥ २ ॥ जैना गम अनुसारे अंगो, हेमसूरिए प्रकाइयां; ज्ञानी ग्रहगमथी प्रहतां ए, सम्यग्भावे विकास्यांरे. महावीर ॥ ३ ॥ देशथकी गृहो वे अधिकारी, सर्वथकी मुनि त्यागी; ग्रहगमथी अधिकार लहीने, थाशो योगना रामीरे. महावीर० ॥ ४ ॥ पाशव आधुरी

(889)

बलने हणवा, योगांगो हितकारी; सत्ताए आतम परमातम, व्यक्त करे निर्धारी रे. महावीरण ॥ ४ ॥ तिरोजावीय ज्ञानादि गुण, आविभीवने माटे; योजे निजग्रणमां ते योगो, धूर छे तेमां आठेरे. महा-वीरण ॥ ६ ॥ आतम ग्रुणने आतममां जे, योजे ते योग कहेवो; ज्ञानादि शिक्यो योगज, सम्यग अ-र्थने लेवोरे. महावोर० ॥ ७ ॥ अनंत ज्ञानानंदनी प्राप्ति-कारक योग ते जाणो; सात नयोथी योगने जाणी, निश्चय अनुभव आणोरे. महावीर. ॥ ८ ॥ निमित्त जुरादान वे भेदे, द्रव्यने भावधी जाणी; ग्रुद्धातम प्रगटावो संतो, एवी वीरनी वाणीरे. महा-वीर. ॥ ९ ॥ म्हारेतो ग्रह सेवा पसाये, सम्यग् अ-नुजव आब्यो; नय निक्षेपादिकथी तत्त्वो, जाणी स्याद्धाद जाव्योरे. महावोर० ॥ १० ॥ प्रभु महावोर पद्ट परंपर, श्वेतांबर मुनिराया, तपगच्छ जगगुरु हीर विजय सूरि, अकबरे पूज्या पायारे. महावीर० ॥ ११ ॥ तस पद्यसागर शाख परंपर, रविसागर ग्रहराया; तस (शब्य संत (शरोमणि ग्रहवर, सुख

(\$85)

सागर नमुं पायारे. महावीर० ॥ १२ ॥ ओगणिश सत्तोत्तर आश्विननी, वदि दशमी बुधवारे; पूजा रचीने पूरण कीधी, लाभ घटिका सवारेरे. महा-वीर० ॥ १३ ॥ संघनी श्रद्धा प्रीति जक्ति. आग्र-हथी चोमासुं; सानंद शहेरे कीधुं भावे, धर्म स्वरूप प्रकाइयुरे: महावीर० ॥ १४ ॥ योगनी पूजा जणे ने गणे ते, पामो उत्तम शक्ति; बुद्धिसागर संघमां मंगल, प्रगटो ऋद्धि भक्तिरे. महावीर. ॥ १५॥ ॐ ०प० समाधि योगलात्राय ज० य० स्वाहा ॥

(१४९)

ख्रथ नवधा क्रिया भक्ति पूजा.

परम प्रभु परमातमा, चोवीशमा जिनराजः, वर्धमान महावीर नमुं, विश्वपति शिरताज. ॥ १ ॥ नवधा भक्ति पूजना, पूज्यनी करतां सारः, पूजक पूज्यपणुं वरे, पूज्य बनी निर्धार. ॥ २ ॥ नवधा भक्तिनी जलो, पूजा शिवदातारः, आतम ते परमातमा, व्यक्त बने नरनार. ॥ ३ ॥ जित्नी पूजा रचुं,हृद्य शुद्धि करनारः, शुद्ध हृद्यथी ज्ञाननी, प्राप्ति छे जयकारे. ॥ ४ ॥ देवगुरुने धर्मनी, संघनी भक्ति बेशः, करतां मुक्ति थाय छे, नासे सघला क्रेशं. ॥ ४॥

प्रथम श्रवण क्रिया पूजा.

प्रभु महावीर देवनां, वचन सुणो नरनारः, युरु संत उपद्शने, सुणतां ज्ञान थनार. ॥ १ ॥ श्रवणयकी श्रुत ज्ञान हे, श्रुति ते हेत कथायः, प्रजु वचनामृत सांजळे, सम्यग्ज्ञान सुहाय.॥ २ ॥ ब्राह्मी सुंदरी मुख्यको, सुणी वचनामृत सारः,

(१५0)

बाहुबली जिन केवलो, बन्या धन्य अवतार. ॥ ३ ॥ श्रवण करे जे शास्त्रने, ते पामे श्रुत- ज्ञान. माटे श्रवण क्रियावडे, पूजो प्रभु जग- वान्. ॥ ४ ॥

राग केदारो अथवा आशावरी.

प्रभु महावीरनां वचन सुणो जवी, जेथी प्रगटे ज्ञानरे; रोहिणीयो जेम स्वर्गने पाम्यो, सफल करो निज कानरे. प्रभु० ॥ १ ॥ प्रभु गुरु वचनामृत सुणतां जे, धारे मन बहुरागरे; समकिती ते मि-थ्यास्वने छंडे, पामे साचो स्यागरे. प्रभु० ॥ २ ॥ इन्द्रभृति आदि गणधर मुनिवर, सांजळी प्रभु उपदेशरे, प्रतिबुध्या चारित्र धरी शुभ, टाळ्या कर्मना कलेशरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ चंड कोशियो स्वर्गने पाम्यो, श्रवण करी प्रभु बोधरे; श्रवण क्रियावण मुक्ति नहीं छे, श्रवणे कर्मनो रोधरे. प्रञ्जू ॥ ४ ॥ विनय ऋने बहुमान सुरागे, सांभळो प्रभुनी वाणीरे; सर्व प्रमादो दूर करीने, सांभळो थाशो

(१५१)

ज्ञानीरे. प्रभु० ॥ ५॥ ग्रुरुसंत मुख्यी प्रभु वाणीने, सांजळतां वे ज्ञानरे: वांचन करतां खनंतगणुं फळ, श्रवज करे श्रुति मानरे. प्रभु० ॥ ६॥ मिथ्या कषायो निंदा न सुणशो, सुणशो धर्मनो बोधरे; तन मन धनने तुच्छ गणीने, सुणतां मोहनो रोधरे. प्रभुष् ॥ ७ ॥ जांगुली श्रादि मंत्र श्रवणथी, सर्पा दिक विष जायरे; गुर्वादिकनो बोध सुणंतां, मोहनुं विष पलायरे. ॥ ८ ॥ मोरखी सुणतां नाग हरण जेम, भूखे तनुनुं जानरे; अर्पाइ जातां तेम नव्यो, श्रवण करो जिनवाणरे. प्रभु० ॥ ९ ॥ प्रति-दिन क्षण क्षण गुर्वादिकनी, सेवा करी सुणो र्धमरे: बुद्धिसागर आत्म महोद्य, पामो ज्ञानने शर्मरे. प्रभुव ॥ १० ॥

ॐ हीं श्री परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जद्य मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय, श्रवण पूजार्थ जलं, चंद्नं, पुष्पं, धूपं, दीपं, श्रक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजामहे स्वाहा— (१५२)

अथ द्वितीया कीर्तन किया पूजा.

दुहा.

अहेत् सिद्धने सूरिनी, कीर्ति करो नरनार; वाचक साधु ख्रादि नव, पद स्तवतां सुखसार. ॥ १ ॥ गुर्वादिक गुण गावतां, खरे अनंतां कर्म; ख्रनंत गुण प्रगटे दिले, अनंत प्रगटे शर्म. ॥ २ ॥ देव गुरुने धर्मनी, कीर्ति करी नरनार; पूज्यपणुं पामे सही, विघटे दुःख अपार. ॥३॥ कीर्तन पूजा-खी प्रभु. पूजो धरी मन प्यार; द्रव्यथी भावधी सिद्धि छे, ख्रात्म शुद्धि निर्धार. ॥ ४ ॥

न्हवणनी पूजारे निर्मल स्थातमारे. ए राग.

कीर्तन पूजारे करो जिनगजनीरे, भाव धरी नरनार; अरिहंत महावीर कीर्ति गावतांरे, पामो भवोदिपार. कीर्तन ॥ १ ॥ सिद्धने सूरिवाचक साधुनुंरे, कीर्तन गुणनुं बेश; गुरु गुणीजननुं कीर्तन मन थकीरे, करतां राग न द्वेष. कीर्तन ॥ २ ॥ तपसी पन्नरसे त्रणने बोधियारे, गोतम लिध प्रयोग;

(१५३)

अनुमोदन कीर्तनधी ते वर्चारे, केवल ज्ञाननो योग; कीर्तन०॥ ३॥ कीर्तन करतां रावणे बांधियुरे, श्री तीर्थंकर नाम; नामने रूपनो मोह त्यजी घणारे, पाम्या शिवपुर धाम. कीर्तन० ॥ ४॥ अपकीर्ति अपयश अवगुण टळेरे, दोषनी दृष्टि पलाय, गुणने गुणीनी एकता झट चतीरे, कर्मनो नेद हणाय. कीर्तन ॥ ४ ॥ गुणनी स्तवनाथी समिकत मळेरे, प्रगटे सम्यग् ज्ञान, क्षपक श्रेणिए चारित्री चढेरे, थाय न मान अमानं. कीर्तन०॥६॥कीर्तन करतां क्षणमां केवली रे, ऋसंख्य थयां नरनार; गुणनी स्तुति अवगुण ढांकवारे, कीर्तन पूजा सार. कीर्तनण र्ग ७ ॥ सत्यादिक गुण वृन्दनी कीर्तनारे, प्रभुनी पूजा एह; शुद्धातम करवा अभु प्रार्थनारे, स्तवना छे गुण गेह. कोर्तन०॥८॥ द्रव्यने जात्रथी प्रभु कीर्तन करोरे, प्रभुने गावो जव्यः बुद्धिसागर शुद्धा-तम प्रभुरे, भक्तिनुं कर्तव्य. कीर्तन०॥९॥

👺 ०प० कीर्तन पूजार्थ ज० य० स्वाहा ॥

(१५४)

तृतीया मेवन क्रिया पूजा.

अरिहंत छादिनी करो, द्रव्यजावथी सेव; सेवक बनी उपयोगथी, सेव्य बनो खयमेव. ॥ १ ॥ सात नयोथी सेवना, आत्मशुद्धिने हेत; गुर्वादिकनी सेवना, छात्म मुक्ति संकेत. ॥ १ ॥ श्रवण अने कीर्तनथकी, सेवाभाव सुद्धाय; सेवाथी सहु सिद्धि-यो, प्रगटंती घटमांह्य. ॥ ३ ॥

पुरुखलवइ विजयेजयोरे. ए राग.

प्रभु महावीर सेवीएरे, श्रद्धा प्रीति धरी मान; विनये वैयाइत्यथीरे, पामो केवल ज्ञानरे; भविजन !!! सेवा करो धरी भाव, लेजो नरभव ल्हावरे. भवि-जन०॥१॥ स्वापण करी गुरु सेवीएरे, रही छंतर निष्काम; सेवा फल नहीं इच्छीएरे, ख्रिधकारे करो कामरे. भविजन०॥२॥ तमोरेजोग्रण सेवनारे, त्यागी सात्विक सेव; करतां शुद्ध छपयोगधीरे, बनो प्रभु जिनदेवरे. जविजन०॥३॥ संघ चतुर्विध सेवनारे, ख्रातम सेव ते जाण; ग्रणीजन दश सेवा

(१५५)

थकीरे, प्रगटे आतम ज्ञानरे. जविजन० ॥ ४ ॥ सेवा योग छे ब्यायमांरे, सकल धर्मनुं बीज; खेद रहित निर्नय दशारे, ऋद्वेष सात्विक रीझरे. अवि-जन. ॥ ५ ॥ संशयने निंदा त्यजीरे, त्यागी सर्व आसक्ति: उपकारी जीवन धरी रे, पामो प्रज्ञपद व्य-क्तरे. भविजन० ॥ ६ ॥ प्रभुमय यइ प्रजु सेवीएरे, द्या सत्य धरी टेक; संकटमां धीरज धरोरं, चूको न धर्म विवेकरे. भविजन ॥ ७ ॥ दुःख पडे नहीं शोचीएरे, सुख थतां नहीं हर्ष; मानामानमां सम-पणुरे, त्यागो चित्त अमर्षरे. भविजन० ॥ ८॥ स-त्ताए सहु जीवनेरे, सिद्धसमागणो चित्त; चारे भावना भावीनेरे, सेवा करतां पवित्ररे. जविजन० ॥ ९ ॥ दीन दरिद्री दुःखीनीरे, धर्म हीणानी सेव; फर्ज खदा करो सर्वदारे, त्यागी दुर्गुण टेवरे. भवि-जन० ॥ १० ॥ चढते भावे सेवनारे, करतां ऋातम ग्रुद्धिः, बुद्धिसागर मंगलोरे, पगले पगले समृद्धिरे. भविजनः ॥ ११ ॥

ॐ ०प० सेवन क्रियालाभार्थे ज० य० स्वाहा.

(१५६)

चतुर्थी वचन क्रिया पूजा.

वाचिक शक्तिए पूजीए, प्रञ्ज महावीर जिएंद; वीरे वाचिक शक्तिथी, टाळ्या भवना फंद ॥१॥ प्रभु वाणीने पूजीए, सेवीए सुखकार; प्रभु वचन समज्याथकी, पामो भवनो पार. ॥२॥ सत्य स्रमत्य जे वचन छे, समजो तेना भेद; निश्चयने व्यवहारथी, समजे नासे खेद. ॥३॥

सुमितनाथ गुणशुं मलीजी. ए राग.

सत्य वचनने छादरोजी, भावधरी नरनार; धर्म संघ परमार्थमांजी, करवी वचन व्यापार; महा-वीर प्रभुए, सत्य वचन कथ्यां तर. ॥ १॥ निज-पर उन्नति काजमांजी, देवा धर्मोपदेश; सदुपयोगे वचननेजी, वापरशो सही क्केश. महावीरण॥ १॥ जूठां वचनो नहीं वदोजी, सत्यवचननो प्रकाश; सत्य असत्यना जेदनेजी, जाणीने करशो विकास. महावीरण॥ ३॥ मृत्यु छादि भय त्यजीजी,

(240)

कोधादिक त्यजी दोष; हिंसादिक अत्रत तजीजी, सत्य वचन करो पोष. महावीर० ॥ ४ ॥ स्वाधि-कारे सत्य वचनने, वदतां धर्म अपार; सापेक्षाए जाणशोजी, सत्यासत्य प्रकार. महावीर० ॥ ५ ॥ सत्यअसत्य वचन सकळजी, देश कालादिसा-पेक्ष; ऋधिकार समज्या विनाजी, वचन सकल एजी, वदो सापेक्ष वचन: वचन भलामां वापरोजी, आशय शुभ घरो मन्न. महावीर० ॥ ७ ॥ परमार्थे उपयोगथीजी, सर्वदा वचन व्यापार; करशो निर्भयता धरीजी, करशो जग उपकार. महा-वीर० ॥ ८ ॥ द्रव्य जावथी देवगुरुनी-धर्मनी सेवा काज; बुद्धिसागर सत्य वचनने, वदतां सुख साम्रा-ज्य. महावीर० ॥ ९ ॥

ॐ ०प० वचनक्रिया लाभाय जा या स्वाहा.

पंचमी वन्दन क्रिया पूजा. अरिहतादिक वंदतां, भावयो मुक्ति थायः

(१५८)

नवपदने वंदन करे, अपकीर्ति दुःख जाय. ॥१॥ द्रव्यने जावथी वादीए, ग्रुरुने घरी बहुप्रेम; ज्ञान चरण छानंद ग्रुण, प्रगटे योगने क्षेम. ॥ २ ॥ सात्विक वंदन श्रेष्ठ छे, मोहनी करे चकचूर; वंदक वंद्यपणुं वरे, सुख पामे भर-पूर ॥३॥

संभव जिनवर वोनति. अवधारो ग्रण ज्ञातारे-ए राग.

प्रभु महावीर वंदना, द्रव्यने जावथी होशोरे; मारे एक तुं शरण छे, व्हारो एक भरोंसोरे. प्रभु० ॥ १॥ वन्दन आवश्यक क्रिया, केवल ज्ञाने प्रकाशीरे; देवग्रुरुने वंदतां, नासे सकल उदासीरे. प्रभु० ॥ २॥ सातनये छे वंदना, चार निक्षेपे धारोरे; गुद्धोपयोगे घटविषे, प्रगटे छे उजिया-रोरे. प्रभु० ॥ ३॥ श्रद्धा प्रीति उल्लासथी, विन-यने बहुमानेरे; गुर्वादिकने वंदतां; भक्तो शोजे

(१५९)

ज्ञानेरे. प्रभु० ॥४॥ एकवार जो भावथी, प्रभुने वंदन यावेरे: तो क्षणमां घाती हणी, केवलघट प्रगटावेरे. प्रञु० ॥५॥ प्रभु महावीरमय वनी, ख्रातम महावीर जाणोरे, गुद्धोपयाेगे वंदतां, स्रातम केवल ज्ञानीरे. प्रभु० ॥६॥ अरिहंतादिक वंदना, त्र्यातम प्रति ते होवेरे; आपो आपने वंदना, आपो आपने जोबेरे. प्रभु० ॥ ७ ॥ व्यवहार निश्चय पूज्यने, पूर्ण प्रेमे वधावोरे; गीतार्था(दक संतने, वंदन करी ल्यो ल्हावारे. प्रभुष ॥ ८ ॥ रोमराजी विकसे घणी, हैंडे हर्ष न मावेरे; ऋानंद अश्र आंखमां, गद् वाणी सुहावेरे. प्रभु० ॥ ९॥ पूज्यथी स्वरूपता, आनंदोद्धि प्रगटेरे; ध्येय ध्यातानी एकता, चातां कर्मो विघटेरे. प्रभु० ॥ १०॥ एकवार महावीरने, अमृत वंदन थावेरे ब्रुद्धि-सागर आतमा, सहजानंदने यावेरे. प्रभु० ॥११॥

🕉 🗝 वन्दन क्रियालाजाय ज० य० स्वाहा.

(१६०)

षष्टी ध्यान क्रिया.

आतम शुद्धि जेथी थती, ते छे उज्वस ध्यान; धर्म शुक्क वे ध्यानथी, प्रगटे केवलज्ञान. ॥ १ ॥ मनथी ध्यान क्रिया थती, ध्यानथी कर्म विनाश; कर्म विनाशथी मुक्ति छे, मुक्ति अनंत सुखवास. ॥ २ ॥ पिंमस्थादिक ध्यानथी, अक्रिय थावो जव्य; रागद्वेषादिक विना, अक्रियता कर्त-व्य. ॥ ३ ॥

ध्यान क्रिया मनमां आणीजे. ए-राग.

घ्यान करो भवी भाव धरीने, प्रञ्ज महावीर प्रकाशेरे; अरिहंत आदि घ्यान धरंतां, गुण पर्याय विकासरे. घ्यान०॥१॥ घ्याता घ्येयने घ्याननी एकता, योगे पूर्ण समाधिरे; नामने रूपनो मोह रहे नहीं, विघटे उपाधि आधिरे. घ्यान०॥२॥ शुद्धोपयागे प्रभु महावीर, रंगरसे जे रिसयोरे; क्षण क्षण प्रभुरसरंगे रीझे, चढता जावे उल्लिस-

(१६१)

यारे. ध्यान० ॥ ३ ॥ कर्म करे पण अकिय आतम, शुद्धोपयोगे रसियोरे; पर परिणतिने दूर करीने, निज स्थातममां वसियोरे. ध्यान० ॥ ४ ॥ पिंडस्थान दिक चार प्रकारे, ध्याने छात्मखुमारीरे; घटमां प्रगटे स्वाद न उतरे, ध्यानीनो बलिहारी रे. ध्यान० ॥ ४ ॥ क्षण क्षण ध्यानीने छे महोत्सव, खानंदनी वहे हेलीरे; जीवनमुक्ति प्रभुमय जीवन, करतो नि-जगुण केलिरे. ध्यान० ॥ ६ ॥ बाहिर श्रंतर सर्व-मयी ते, सर्वथकी तें न्यारोरे; कर्ता अकर्ता योगी अयोगी, जोगी अजोगी धारोरे. ध्यान० ॥ ७ ॥ जलपंकजवत निर्लेपज्ञानी, आतममां मस्तानीरे: रहे दशा नहीं प्रगटी छानी, अनुजव ज्ञाननी वा-णीरे. ध्यान० ॥ ८ ॥ अंतरमां मन राखी वर्ते, होय न लेश उदासी रें; कर्मविपाके सुख दुःख ज्ञाने ध्यानने ध्यातां, आतम ज्ञान प्रकाशेरे; कर्म विपाकोद्धिपर तरतो, ऋापोआप विलासेरे. ध्यान०

(१६२)

 १० ॥ त्रातम लय लागी छे जेने, ते ध्यानी जय-कारी रे; बुद्धिसागर ध्यानानुज्ञव, प्रगटयो त्र्यानंद-कारी रे. ध्यान. ॥ १० ॥ ॐ० ध्यानिकया लाजाय जलं० य० स्वाहा ॥

सप्तमी लघुता क्रिया पूजा.

दुहा.

लघुताथी प्रभुता मळे, टळे दोष श्रभिमान; बाहुबिल लघुता धरी, पाम्या केवलज्ञान. ॥ १ ॥ लघुता ग्रणानी वेलडी, लघुता मुक्तिद्वार; जवोद्धि-पर तुंबीवत्, तरतां नरने नार. ॥ १ ॥ कर्मजार हलको थतो, श्रातम नहीं लेपाय; लघुता पूजाथी प्रभु, पूजंतां सुख थाय. ॥ ३ ॥

उत्तम फल पूजा कीजे, मुनिने दान सदा दीजे. ए राग.

वीर प्रभु पूजो ध्यावो, सेवक बनो लेवो स्हावो; लघुताए प्रभुने जावोरे, प्रभु उपदेशे मनः

(१६३)

खावो. लघुताए प्रभुता पावोरे. खघु० ॥ १ ॥ **ऋा**ठ प्रकारे मद त्यागो, देहाध्यास तजी जागो; शुद्धा-तम जावे लागारे, लघुताण ॥ २ ॥ सेवक ते स्वामी ळावेरे. खघुता० ॥ ३ ॥ जडपुद्गलमद्मां मुंझे, तेने प्रभु दिल नहीं सूजे, आत्मप्रभुने शुं पूजेरे. खब्रता० ॥ ४ ॥ रस ऋद्धि गारव पडिया, शातागा-रवे खडथडिया, जीवोने प्रभु नहीं जडियारे. खषुता० ॥ य ॥ इन्द्रादिकपद्वी सर्वे, रहेवुं नहीं तेहना गर्वे; त्रभु मळता नहि मन भमेरे. लघुता० ॥ ६ ॥ गुरुता लघुता जममाया, मोहद्शाना पमछाया, ऋगुरु लघु आतमरायारे. ॥ लघुता० ॥७॥ ऋगुरु लघु गुण जप-योगी, षट्कारक आतमयोगी, थातां न मोहे संयो-गीरे. लघुता. ॥ ८ ॥ यावत् जमगुरुता त्रावे, तावत् खघुताना जावे, रहेशो अग्रस्खघ दावेरे. लघुता**०** ॥ ९ ॥ दीनभाव लघुता छंडो, व्यात्मप्रभुता रढ मंडो. बंदो मानतणा झंडोरे. लघुता ॥ १०॥

(१६४)

सापेक्षे लघुता समजो, मान अहंदृत्ति दमशो, बुद्धि-सागर दिल रमशोरे. लघुता० ॥ ११ ॥ ॐ० लघुता लाभार्य ज० य० स्वाहा ॥

अष्टमो एकता कियापूजा.

वीर प्रभुथी एकता, भावो नरने नार; अक्य करी प्रभु साथमां, लहो जवोद्धिपार. ॥१॥ संग्रह नय सत्तावके, सर्व जीवो छे एक; आतम सत्ता ध्यावतां, प्रगटे व्यक्ति विवेक. ॥२॥ जक्यी न्यारो आतमा, ग्रणपर्यायाधार; एकता जावे भावतां, कर्म रहे न लगार.

मेरुशिखर न्हवरावे हो सुरपित मेरुशिखर न्हवरावे. ए राग.

आतम एकता ध्यावो हो, जविजन!!! आतम एकता ध्यावो; प्रभुमां ख्रयखीन धावो हो, जविजन! ब्यातम एकता ध्यावो॥ एकता भावना जावो विवेके, नय सापेक्ष प्रमाणे; द्रव्यार्थिकथी एकता ध्यातां,

(१६५)

निर्विकल्पता जाणे हो. जविजन० ॥१ ॥ गुणपर्याये अनेकता आतम,-मांही समावे ध्याने: राग रीस रूप मनकुं मरेने, शोजे केवलज्ञाने हो. भविजन० ॥ २ ॥ ज्ञाताज्ञेयने ध्याताध्येयनी, एकता अनुभव थातां; पूरण आत्म प्रतीति प्रगटे. कर्मो सकख दूर जातां हो. भविजन० ॥ ३॥ सत्ताए महावीर प्रभुनी, साथे एकता ताने; रहेतां आतम आनंद् स्वादो, अनुभव श्रनुजवी जाणे हो. भविजन० श श गाडेषनुं द्वैत टळ्याथी, निज गुण पर्याय योगे; आतम एकता थावे नकी, रहे न भिन्नता भोगे हो. भविजन० ॥ ५॥ जड द्रव्योना ग्रुण पर्यायो, तेथी खातम न्यारो; आपोखाप स्वभावे खेले, एकता एह विचारो हो. जविजन० ॥ ६ ॥ अनंत ज्ञानानन्द्यी आतम, एक स्वरूप सुहायो; गुणगुणीनी एकता एवी, लीनता आनंद थायो हो. जविजन०॥ ७॥ स्राद् अंत न स्रातम एवो, भावो ध्यावो गावो; परमातम महावीर प्रभुषी,

(१६६)

एकमेक यइ जावो हो. भविजन ॥ ८॥ एकलो आव्यो एकलो जारो, कोइ न साथे जारो; प्रभु महावीर जिन उपदेशे, चेते ते सुख पारोहो. भवि-जन ॥ ९॥ तत्त्वमिससोऽहं पद्ध्याने, अकता अ-नुभव आवे; बुद्धिसागर आत्ममहावीर, आपोद्याप सुहावेहो. भविजन ॥ १०॥ ॐ० एकता लाभार्थ ज० य० स्वाहा॥

नवमी समताक्रिया पूजा.

समताथी पूजो प्रभु, विभुमहावीर जिनेश; ज्यां समता प्रगटी खरी, त्यां निह रागने द्वेष. ॥१॥ सकल साधना सिद्धता, समता प्रगटे थाय; क्षाः यिक समता प्रगटतां, बाकी न कार्य रहाय.॥ २॥ ज्यातम ते परमातमा, समभावे प्रगटाय; ज्ञापो आ-पनी पूजना, अकता अनुभव पाय.॥ ३॥

मेतारज मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार.

ए राग.

समतारस सागर प्रभुजी, वीर जिनेश्वर देव;

(१६७)

समभावे प्रभु सेवर्ताजी, नासे कर्म कुटेव. महावीर जिनेश्वर, धन्य धन्य तुम उपदेश, ॥ १ ॥ जडचेतनमय विश्वमांजी, समभावे उपयोगः विषमपणुं प्रगटे नहींजो, आनंद जोग. महावीर० ॥२॥ खंधक शिष्यो पांचरोजी, प्राणांते समभाव, मोहने मार्यो छेवटेजी, धन्य अ समता दाव. महावीरः ॥ ३॥ मुनि मेतार्ये समपणुंजी, धार्ये छंडयो देह, शुभाशुज बुद्धि विनाजी, पाम्या मुक्तिगेह. महावीरण।। ॥ ४ ॥ समता भावने छादयोंजी, गज सुकुमाल मुनीश, देहनी ममता परिहरीजी, सोमिलपर नहि रीस. महावीर० ॥ ५ ॥ अन्य तीर्थियो पण लहेजी, समता जावेरे मुक्ति, समता ते पाम्या प-छीजी, नहीं तप किरिया रीति. महावीर• ॥ ६ ॥ दर्शन ज्ञान चरण सकलजी, समतामांही सुहाय, समता प्रगटे सिद्धताजी, अक पलकमां थाय. महावीर० ॥ ७ ॥ काने खोला मारि-

(१६८)

बाजी, पगपर रांधीरेखीर: तो पण समभावे रह्याजी, परमेश्वर महावीर, महावीर० ॥८॥ त्रभु समता धरीजी, कमठे कीधोरे रोष; नासापर जल आवियंजी, तोपण रोष न तोष. महावीर० ॥ ९ ॥ वृत्ति शुजाशुभ नहीं रहेजी, प्रगटे केवल-ज्ञानः ख्रापोआप प्रभु विभुजी, चिदानंद भगवान्. वर्ते पूर्व प्रयोग, समभावे शुद्धातमाजी, चिदानंद ग्रुणभोग. महावीर० ॥ ११ ॥ शुभाशुत्र दृत्ति विनाजी, कर्म निकाचित जोग; जोगवतां तनु वर्त-तांजी, केवळ ज्ञाननो योग. महावीरण ॥ १२॥ हर्षशोक सुखटुःखमांजी, समता भावेरे वर्तः बुद्धिसागर ख्रात्ममांजी, खनंत खानंद शर्त. महावीरण॥ १३॥

कखश-गीत.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो. नवविध किरिया भक्तिथी पूज्यो, आतम स्रानु-

(१६९)

भव पायो: एकता लीनता समतायोगे, सहज स्व-जावे सुहायोरे. महावीर ॥ १ ॥ श्रद्धाधीति पूजन अर्चन, स्पर्शनजाव लहायोः; दास्यने सख्यने आ-तमअवये, अमृत किरियाए छायोरे. महावीर ॥२॥ नवधाभक्ति सापेक्षाए, अनेकभेदे ध्यायो; अजेदजावे अद्वैतभक्ति, करतां सुख प्रगटायारे. महावीर ॥३॥ सम्यग्दष्टिए भक्तिनां अंगो, यहोने सापेक्षभावे: आतमशुद्धि करीए रंगे, सहेजे आत्मस्वजावेरे. महावीर ॥ ४ ॥ भक्तिना तानमां भेद न भासे, **ख्यातमज्ञाने प्रकाशे; नवविध किरिया ख्रक्रियपद्ने,** आपे परमोल्लासेरे. महावीर ॥ ५ ॥ अन्यो अन्यने विषगरलथी, विश्वभ्रमणता थावे; तद्धेतु अमृत किरिया योगे, परमानंद सुहावेरे. महावीर ॥ ६ ॥ म्हारे तो गुरुकृपा पसाये, अमृत आनंद आयो; आपोळाप स्वरूप सुहायो, ऋकिय अनुजव पायोरे. महावीर ॥ ७ ॥ ओगणिश अठोत्तरनी साले, ज्ञान पंचमी शुक्रवारे; नवधा किरिया पूजा रची शुभ,

(१७०)

जन्य जीवोने तारेरे. महावीरण ॥ ८ ॥ सानंद सं-घनी शुभ भक्तिओ, कर्यु चोमासुं जावे; पूजा रचंतां अनुभव त्यानंद, प्रगटयो भाक्त प्रजावेरे. महावीरण ॥ ९ ॥ शासन नायक वीर जिनेश्वर, श्वेतांवर मुनि राजा; तपगच्छ जगग्रह हीर विजय सूरि, संयमी गुण शिरताजारे. महावीरण॥ १० ॥ पष्टपंरपरा श्री ने मि-सागर, रविसागर गुरुराया; श्रीसुखसागर समता द्रिया, संवेगी शिरसुहायारे. महावीरण॥ ११ ॥ गुरु कृपाश्चे पूजा रची शुज, संघ सकल हितकारी; बुद्धिसागर मंगल माला, द्यानंद्घन अवतारीरे. महावीरण।११॥ ॐण समता लाभार्थ जण्यणस्वाहा॥

(१७१)

अष्टकर्मसूदनार्थे ऋष्ट प्रकारी पूजा.

परमेश्वर महावीर जिन, तीर्थंकर जगदेवः परमप्रज परमातमा, भावे करीये सेव. ॥ १ ॥ अष्ट कर्मना नाशहेत, पूजा अष्ट प्रकारः रचतां गुण अठ संपजे, प्रगटे शांति अपार. ॥ २ ॥ ते माटे पूजा रचुं, संक्षेपे हितकारः प्रभु महावीर देशना, अनुसारे सुखकार. ॥ ३ ॥

प्रथम ज्ञानावरणीयसूदनार्थ जलपूजा. न्हदणनी पूजारे निर्मल खातमारे, ए राग.

न्हवणनी पूजारे जिव भावे करोरे, प्रस्न महा-वीरनी सत्य; ज्ञानविना ख्रज्ञाने प्राणियारे, करता ख्रास्रव कृत्य. न्हवण०॥१॥ ज्ञानावरणे ज्ञान न संपजेरे, भवमां भमवुं थाय; ज्ञानावरणनी पांच प्रक्र-तिछेरे, ज्ञानाच्छादन न्याय. न्हवण०॥२॥ क्षयो-प्रामने क्षायिक जावथीरे, ज्ञानावरण विनाश; मित श्रुत अविध मनपर्यव अनेरे; प्रगटे केवल खास. (१७२)

न्हवण० ॥ ३ ॥ मति ऋडावीश भेदेछे तथारे, त्रणरो चालीरा भेद; श्रुतछे चउद छने वीरा भेद-**चीरे, प्रगटे नासे खेद. न्हवण० ॥ ४ ॥ ऋसं**ख्य प्रकारे ख्रवधिज्ञानछेरे, मनपर्यव बे जेद: केवल ज्ञान ते एक प्रकारवेरे, प्रगटेवे निर्वेद. न्हवण० ॥ ५ ॥ ज्ञानावरणी क्ञानने रोघतुरे, तेनो नारा जो थाय; तो प्रगटेछे ज्ञान प्रकाशतारे, नाहि अज्ञान रहाय. न्हवण० ॥ ६ ॥ ज्ञानने ज्ञानी सेवा जिल्न-चीरे, वसतां गुरुकुख वासः ज्ञानावरणी कर्म विना-श बेरे, टळतां मोह विलास. न्हवण० ॥ ७ ॥ ज्ञा-नीनी निंदा आशातनारे; तजजो नरने नार; श्रुत-ज्ञानी गुरुना भक्तो बनोरे, प्रगटे ज्ञान उदार. न्हवण० ॥ ८ ॥ जणो भणावो श्रुतने जविजनारे, श्रुनुमो-दो यो दान: बुद्धिसागर आतम शुद्धतारे, प्रगटे केवल ज्ञान. न्हवणा ॥ ९ ॥

ॐ हैं। श्रें। प० ज्ञान वरण सूदनार्थ ज० य० स्वाहा॥

(१७३)

द्वितीया दर्शनावरणीयकर्मसूदनार्थे जलपूजा

द्रीनावरण हठाववा, चंदनपूजा सार; द्रीनावर-णनी प्रकृति, नव कोजे परिहार. ॥ १ ॥ चक्षुत्रादि चारनां, त्रावरणो छे चार; पांचे निद्रा त्यागतां, द्रीन गुण जयकार. ॥ २ ॥ देवगुरुने धर्मनी, आ-शातनथी कर्म, बंधातां ते जाणीने; सेवो जिनवर धर्म. ॥ ३ ॥

सांजळशो मुनि संयम रागे–ए राग.

चंदनपूजाए प्रभु चर्चो, निजआतमने अचेरि; दूर करो झट कर्मनो फडचो; राखो न भेदनो कर्चो रे. चंदन ॥ १ ॥ दर्शनावरणना क्षयोपशमधी, क्षा-ियक्यी गुण प्रगटेरे; चक्क अचक्क अविध केवल, दर्शनयी दुःख विघटेरे. चंदन ॥ २ ॥ दर्शननुं आवर्ण करे ते, दर्शनावरणी जाणोरे; दर्शनावरणने हणवा माटे, सेवाभिक्त प्रमाणोरे. चंदन ॥ ३ ॥ गुरुनो श्रद्धा प्रीतियोगे; आक्षातनने वियोगेरे; सद्गुण गणना पूर्णप्रयोगे, वर्ते न हर्षे शोकेरे. चंदन ॥ ४ ॥

(१७४)

दर्शनावरण टळे छे क्षणमां, ज्ञानने ध्यानाच्यासेरे; समताजावे कर्म करंतां, द्र्शनशक्ति प्रकाशेरे. चंदन ॥ ५॥ पांच प्रकारनी निद्राक्तयथी, द्र्शनगुण झट प्रगटेरे; आतमद्र्शन अनुभव आवे, मिथ्याबुद्धि विघटेरे. चंदन ॥ ६ ॥ चंदनसम द्रीन शीतलता, नावे आतम पूजोरे; निंदा विकथा परपरिणतिथी, मनमां लेश न मुंझोरे. चंदन ॥ ७ ॥ जिनवर पूजा ते (न जपूजा, ग्रुद्धातम उपयोगेरे; केवलज्ञानने के-वलदर्शन, प्रगटे निजगुण जोगेरे. चंदन ॥ ८॥ दर्शनावरणीय कर्मने हणवा, स्थिर उपयोगे रहेशोरे; बुद्धिसागर ब्यानंदमंगल, परम प्रभुता चंदन ॥ ए॥

ॐ० पण्दर्शन। वरणीय कर्म सूदनार्थ चंदनंण य० स्वाहा॥

तृतीयवेदनीय कर्म सूदनार्थ पुष्प पूजा. शाताअशाता वेदनी, सुखदुःख फखदातार;

सुखदुःख वेदे सर्व जीव, बक्षचोराशो मझार, ॥१॥ सुखदुःख मोहयी वेदतां, यातो कर्मनो बंध; सुख

(१७५)

दुःखमां समभावथी, ख्रातमछे निबर्धे ॥ २ ॥ आतम सुखन वेदवा, पुष्पे पूजो राज; ख्रात्ममहावीर प्रगटतां, सफळा सर्वे काज. ॥ ३ ॥

→⇒珠€〜

इडर आंबा आबलीरे. ए राग.

पूजो प्रभु महावीरनेरे, जेणे जणाव्यो धर्म; पुष्पनाल प्रजु कंठमारे, स्थापंतां शिवशमरे. भवि-जन. पूजो महावीर देव, फळती प्रभुनी सेवरे, भवि जन!!! पूजो० ॥१॥ शाताअशाता वेदतारे, समभाव पुष्पनी माळ, धारंतां प्रभु कंठमारे, रहे न मोहनी जाळरे. भविजन पूजो० ॥ २ ॥ छाया ताप परे आ-वतुरे, सुखदुःख वाराफेर; पुण्यपापकमीं फळेरे, करो न राग न वैररे. जविजन!पूजो महावीर देवण ॥३॥ सुखटुःख वेदे समप्रेषेर, अधिकारे करे काज; सहज समाधि ते योगछेरे, प्रगटे शिव साम्राज्यरे. भविव पूजो०॥ ४॥ शुद्धोपयोगे वर्ततारे, वर्णादिक करे कर्भ; बाहिर व्यवहार साधतारे, वर्ते आतम धर्मरे. भवि. पूजी ।। ५॥ बाहिर वर्ते बाह्यमारे, अंतरमां (१७६)

उपयोग: निर्वेध आतम वर्ततोरे, जोगवतो सह जोगरे. जवि० पूजो० ॥ ६ ॥ सुखदुःख वेदनी जोग-मारे, धरे न सुखदुःख बुद्धिः त्यातममां सुख अनु-जवेरे, प्रगटे सिद्धनी ऋद्धिरे. जवि० पूजो० ॥ ७ ॥ सुख आवे हर्षे नहींरे, दुःख प्रगटे नहीं शोक; सुख पुःख बुद्धि न भोगमारे, तेने पूरण योगरे. भविजन पूजो० ॥ ८ ॥ कर्म निकाचित प्रगटतारे, सुखटुःख जोगवेरे जोग; जोगी अजोगी अंतरविषेरे, योगे वर्ते अयोगरे. जविजन! पूजो० ॥ ९ ॥ चक्री इन्द्रादिक भोगमारे, रहे म सुखनी वृत्ति; आतम सुख अनु-जव थतारे, जीवंतां निर्वृत्तिरे. भविजन! पूजो० ॥ १० ॥ प्रभु महावीर देवनोरे, स्रोवो वे उपदेशः बुद्धिसागर त्रातमारे, त्रानंदरूप हमेशरे. जविजन! पूजोण ॥ ११ ॥

ॐo पo वेदनीय कर्म सूदनार्थे पुष्पं यo स्वाहा ॥



(१७७)

चतुर्थ मोहनीयकर्मसूदनार्थ धूपपूजा.

दर्शनचारित्र मोहनी, सर्वकर्म शिरदार; मोह टळे कमों सकल, विणसंतां निर्धार. ॥१॥ मोह तणा परिणामथी, आठकर्म बंधाय; निर्मोही आतम पणे, शुद्धातम प्रगटाय. ॥२॥ ध्यानधूप प्रजु आ-गळे, करतां नहि दुर्गध; आतम आत्मपणे रमे, आतम वर्ते ऋबंध.॥३॥

दशमे देशावगाशिकरे, चउद नियम संखेव—ए राग धन्य महावीर जगधणीरे, केवलक्षानी देव; आतमध्यानना धूपथीरे, साधुं ताह्यरी सेव हो. जिनवर० आतमसुखने आपशोरे, रोमे रोमे व्यापशोरे; ताह्यरो रहो उपयोग. ॥ १ ॥ दर्शन मोहनी नाशथीरे, प्रगटे समिकत धर्म; चारित्र मोहनी नाश्यीरे, प्रगटे आतमशर्म हो. जिनवर॥ आतम॥२॥ अठावीश मोह प्रकृतिरे, क्षयोपशम तस होय; उपराम क्षायिकभावथीरे. शुद्ध परिणति जोय हो.

(१७८)

जिनवर॥ आतम. ॥ ३॥ सकल कर्ममां मोहतुंरे, अनंतगणुं छे जोर; मोह टळे बीजां टळेरे, नासे छे जेम चोर हो. जिनवर. आतम. ॥ ४ ॥ निर्मोहभावे वर्तवंरे, आतमधर्म छे एह; आतम शुद्धोपयोगचीरे, रहे न मोहनीरेह हो. जिनवर. आतम्।। ५॥ अत्र-ततजी व्रत आद्रोरे, धारो संवर भाव, निर्जराहेतु **ब्यादरोरे, ब्यातमञ्जू**डि दावहो. जिनवर० ब्यातम० ॥ ६ ॥ ञ्चातमज्ञानने पामतारे, प्रगटेछे वैराग्य: ष्ट्यातमना उपयोगचीरे, वर्ते सहेजे त्यागहो. जिन-वरा ब्यातमा ॥ ७॥ जिनआगम गुरु संगतिरे, करतां संतने। संगः निर्मोहभावे आतमारे, परिण-मतो जिनरंगहो. जिनवर० खातम० ॥८॥ देवगुरुने धर्मनेरे, ब्याराधे मोह जाय: रवि उगे परभातमारे, तम तो दूर पत्नायहो० जिनवर० ख्रातम०॥९॥ ग्रही त्यागीदशाविषरे, करतां व्यवहार कर्म; नि-मोहे नहीं कर्मछेरे, प्रगटे मुक्ति शर्महो. जिनवर० आतम् ॥ १० ॥ ज्ञानिकयायी मोहनोरे, क्षय क्षण- (909)

मांहे थाय; नामरूपिनमींहथीरे, केवल ज्ञान सुहा-यहो. जिनवर० आतम० ॥११॥ आतम आतमने दियेरे, प्रभु भक्ते निज मुक्तिः; बुद्धिसागर आत्म-नारे, उपयोगे निह भीतिहो. जिनवर० आ० ॥१२॥ औ० प० मोहनीय कर्मसूदनार्थं धूपं य० स्वाहा ॥

पंचम ऋायुःकर्मसृदनार्ध दीपपूजा.

सुरनर तिर्यच नरकतुं, आयुः चार प्रकारः चार गितमां त्रायुषी, तनु स्थितिठे निर्धार. ॥ १ ॥ चारगितमां आयुषी, वंधावानुं थायः अनंतजीवन पामतां, त्रायु वंधन जाय.॥ २ ॥ ज्ञानदीप प्रगटा-वीने, पूजो प्रभु जिनराजः अनंत शाश्वत जीवनने, पामो सिद्धे काज.॥ ३ ॥

मल्लिजिननाथजी व्रतलीजेरे ए राग.

प्रभु महावीरपर धरो प्रीतिरे, टाळो दुष्टाचार अनीति. प्रजु० द्रव्य दीपक धरी भाव दीवोरे, प्रग-टावी अनंतुं जीवोरे; प्रभु वचनामृतने पोत्रो. प्रभु०

(१८०)

॥ १ ॥ पुण्ययोगे सुरनर आयरे, प्रायः तिर्घेच छायु वंधायरे, पापे नरकतिरि गति थाय. प्रभु०॥२॥ आयुः कर्मतणीए मायारे, जेवा पाणीमां पडढायारे; ज्ञानी जक्तो नहीं मुंझाया. प्रभु० ॥३॥ स्थिति अनंत पामीने ठरवुंरे, पठी जन्म मरण नहि कर-वुरे; एवुं शुद्धातम पद वरवुं. प्रभु० ॥ ४ ॥ मोह योगेछे आयुष्य बंधरे, निर्मोहे वर्ते अबंधरे; परभा-वनी होय न गंध. प्रभु०॥ ५॥ पूर्व कर्म निका-चित जोगोरे, तेवा मळता सर्व संयोगोरे; वर्ते छंत-रमां योगो. प्रभु०॥ ६॥ ज्ञानीने जे आस्रव कमीरे, परीणमे ते संवर धर्मोरे; टळे ज्ञाने मिथ्याभर्मो. प्रञ्जुः ॥ ७ ॥ श्रुत दीपकची प्रज्ज पूजेरे, शुद्धआत्म स्वरूप झट सूजेरे; पामी आतम मन नहीं मुंझे. ॥ ८ ॥ शुद्ध आत्मस्वरूपना रसियारे, गाति छता न गतिमांहि वसियारे; कर्मयोगी श्रकर्म उल्लसिया. प्रज्ञु ॥ ९ ॥ गति आयुछे बंदिखानुरे, तनु हेड-समुं न मझानुंरे; त्यांतो ज्ञानीने रुचे शानुं ? प्रभुव

(१८१)

॥ १०॥ मनुजनमां थायछे मुक्तिरे, ज्ञान वैराग्य व्रत धरो नीतिरे; टळे सर्व प्रकारनी जीति. प्रभुष्ण ॥११॥एनी प्रभुमहानीरनीनाणीरे,ज्ञाननेराग्यथी दिल आणीरे; प्रभुपूजा करो ग्रणखाणी. प्रभु०॥ १२॥ ज्ञानानन्द अनंतपद वरनारे, जनपाथीधि नेगे तरनारे; बुद्धिसागर ग्रह अनुसरना. प्रभु०॥ १३॥ अ० प० आग्रः कर्म सूदनार्थ दीपं य० स्वाहा॥ षष्टनाम कर्म सूदनार्थ दीपं य० स्वाहा॥

नामकर्मनी प्रकृति, एकसोत्रण वे सर्व; देहा-दिकमां मोह वा, करवो निह कंछ गर्व. ॥ १ ॥ नाम कर्मना क्षयथकी, श्ररूपपद प्रगटाय; रुपीपणुं निह आत्मनुं, रूपादिक जडमांद्य. ॥ २ ॥ श्रक्षयरूप के आतमा, अक्षत करवा हेत; व्यवहारे अक्षतथकी, प्रभु पूँजा संकेत. ॥ ३ ॥

> सनेही संत एगिरि सेवो. चउद्भुवनमां तीर्थ न एवो.-ए राग.

प्रभु महावीरजी जयकारी, पूजो अक्षतथी

(१८२)

सुखकारी. प्रभु ॥ प्रकृतिरस स्थिति प्रदेश, चारेभेदे बंध न लेश: सत्ता उदीरणा नहीं कलेश, टाळया राग अने मन द्वेष. प्रभु० ॥ १॥ टीळया कर्मवि-पाको सर्वे, रही शुकलध्याने ऋगर्वे; रह्या परपुद्रल भर्मे, मुंझ्या नहि मिथ्याजिङ्शमें. प्रभु० ॥२॥ नामरूपमां निर्मीह जावे, रहे जे कोइ सा-क्षीना भावे: नाम कर्मथी तूटो थावे,शुद्ध अरूपपद निज पावे. प्रजु० ॥ ३ ॥ नाम कर्म प्रारब्धना भोगो, अनासक्तिए वर्तें योगोः, थाय नहीं कंइ हर्ष न शोको, याय विषम न प्रकटे रोगो. प्रभु० ॥ ४ ॥ थतां केवल नाम रहेछे, आयु पर्यंत तेह वहेछे; समजावे ज्ञानी सहेछे, शुद्ध आत्मरमणता चहेछे. प्रभु०॥ ५ ॥ प्रभु सरखा घावा माटे, वळो केवल ज्ञानोनी वाटे; माल वेचायछे युरु हाटे, लेजो स्वा-र्पण करी शिरसाटे. प्रभु० ॥ ६ ॥ नामरूप अध्या-सने त्यागो, गुद्ध त्यातम भावे जागो; त्याग प्रह-णमां मनयी न लागो, मोहजावयी दूरे जागो. प्रभुक

(१८३)

॥ ७ ॥ नामकर्म अघातीं जाणों, ज्ञान प्रगटे अ-बंध प्रमाणों; निमोंही आतमराणों, निजगुणथी खेले मझाना. प्रभु० ॥ ८ ॥ नाम कर्मने परोपकारे, वापरों जैन धर्म प्रचारे; वापरे ते धर्म न हारे, करों कर्तव्य निज अधिकारे. प्रभु० ॥ ९ ॥ एवी वीर प्रभुनी वाणी, सर्व नयथी यथातथ्य जाणी; श्रद्धा प्रीतिए मनमां आणी, कर्म तलने पीलवा घाणी. प्रभु० ॥ १० ॥ नामच्पमां नहीं मुंझाशों, शुद्ध उप-योगथी सुख पाशों; बुद्धिसागर दिल हरखाशों, चि-दानंद स्वच्प प्रकाशों. प्रभु० ॥ ११ ॥

ॐ० प० नाम कर्म नाशार्थ अक्षतं य० स्वाहा ॥

सप्तमी गोत्रकर्मसूदनार्थे नैवेचपूजा,

उच्च नीच व्यवहारथी, निश्चयथी नहीं कोय; उच्चनीच जडमोहथी, आत्मस्वरूपे न जोय. ॥१॥ उच्चने नीच बे गोत्रछे, यश अपयश करनार; मान अने अपमानना, हेतुछे व्यवहार. ॥ २ ॥ प्रभु महा- ({<8})

वीर बोधधी, उच्च नीच वे भेद; बेमां समजावे रहे, ज्ञानीनें निवेंद्. ॥ ३ ॥ उच्च नीच वे प्रकृति, तेमां निर्मोह हेत; नैवेद्य पूजानो भलो, द्रव्यजाव संकेत. ॥ ४ ॥

त्रभु प्रतिमा पूजीने पासह करीए.-ए रागः

महावीर जिनवर पूजीने गुण लीजेरे; उच्चने नीचनो भेद विसारीए. निज आतमनुं शुद्ध स्वरुप विचारोरे, पुद्गलनी माया जुठी धारीए, आतमछे सरखा मन त्र्यवधारीए, कुलादिक मद्ने प्रगटयो वारीए. ॥ १ ॥ उच्चपणाना माने हर्ष न धरोएरे. जातिना अभिमानेरे धर्म न हारीए: सत्ता विद्या लक्ष्मी आदि मोहरे, भूलंतां भानरे निज नहि ता-रीए. आतमण ॥२॥ कर्मनी माया पाणीना पड-**ठायारे, उंचने नीचना भेद नहीं खरा: समज्या ते** मुंझाया नहि भरमायारे, पाम्यारे आनंद अमृतना झरा. आतमण।। ३॥ चडती पडती उच्च नोच अवतारोरे, संसारे एह अवस्था सर्वनी; परने पोतानुं

(१८५)

मानी शुं फूलोरे, छाजे नहि कोइ अवस्था गर्वनी. **ळातम** ॥ ४ ॥ ळाठमदे भरिया जीव दुःखने वरि-यारे, स्वप्नानी वाजीरे जूठी जागतां; उच्चने नीच पणुं खप्नानी बाजीरे; खातमरे खगुरुख लागतां. त्यातमण ॥ ५ ॥ कुल विद्या लक्ष्मी सत्ता हिए।इरे, पामंतां हर्ष न उद्देगे रहो; उच्च नीचनी माया स्वप्ना जेवीरे, जाणीरे समभावे जीवन वहो. आतम०॥६॥ मान छाने छपमानने लाजाला-चेरे, समताने धारी कर्तव्यो करो; योगी भक्तजीवन एवुं आतमनुरे, परमातम प्रगटावी मुक्ति वरो. आतमण।। ७॥ उच्चने नीचना भेदे नहि मुंझा-शोर, खत्तारे खाशो पडती पामशो; खातमने कदि नीच न मानो भव्योरे, बाहिरनी वृत्तिथकी विरामशो. आतम०॥८॥ उच्चने नीचनी च्रांति कर्मनी दृष्टेरे, ब्यातमनी दृष्टिए कशूं हे नहीं; आतम दृष्टि जीवनथी संचरशोरे, परमानंद पामोरे अधिकारे वही. आतम ० ॥ ९ ॥ उच्चनीचना जेदे सुखदुःख दृत्तिरे, स्वप्नामां एछे जागंतां नहीं; कर्भ अञ्जूषो उंचा ज्ञानी जाग्यारे,

(१८६)

स्वप्तामां जेद खेद प्रगटे सही. खातमः ॥ १०॥ अग्रुरु खघुछे खातम निजअनुभवतोरे, तेनीरे खान्यळ कर्म ते शुं करे; बुद्धिसागर आतम रिवझळ- हळतोरे, केवलज्ञानज्योतेरे प्रभुपदने वरे. आतमः ॥ ११॥ ॐ० प० गोत्र कर्म विनाशाय नैवेद्यं य० स्वाहा॥

ऋष्टम ऋंतरायकर्म सूदनार्थ फल पूजा.

दान लाजने जोगने. वीर्य छाने उपभोगः पांच तणां छावर्णने, हणतां निजगुण योग. ॥१॥ छांत-राय हणवा भवी, फलघी पूजो देवः द्रव्य भावथो शक्तिने, पामो करी जिन सेव. ॥२॥ दानादिक आवर्णनो, क्षयोयशम क्षय घाय, दानादिक निज शक्तियो, प्रगटे धर्म सुहाय.॥३॥

वाजां वाग्यारे प्रभु दरबाररे. मोहन वाजां वागिया. ए राग.

मुक्तिफल पामवा हेतेरे, फले प्रभु पूजीए;

(209)

सर्व इच्छाञ्चो करीने निरोधरे, निजातम रीजीए; गुणपर्यायदान निज दीजीए, चिदानंदनो लाभज निजरे. फले॥ग्रणपर्याय भोगोपजोगमां, परपुद्गलनी नही खीजरे. फले० ॥ १ ॥ शुद्ध आतमबल प्रग-टावीए, दुष्ट टाळीए पशुबळ वेगरे. फले॥मन इन्द्रि योमां पद्मुबल वसे, तेथी करीए नहिं अविवेकरे. फले ।। २ ॥ लब्धि शक्तिओने प्रगटावीए, नहीं रीजीए खीजीए बाझरे. फले. परमार्थमां तनमन वापरो, करो विश्वमां सारां काजरे. फले॰ ॥ ३ ॥ जैन धर्मने संघनी उन्नति, करवामां होमशो सर्वरे, फले॰ अणुशक्तिए खेद न कीजीए, होय शक्ति छतां निह गर्वरे. फले॰ ॥ ४ ॥ देवगुरुने धर्मनी भ-क्तिमां, मृत्यु थतां न हठीए लगाररे, फले. ॥ खेद भय छने द्वेषने त्यागीए, करो परमार्थो नरनाररे-फले॰ ॥ ५ ॥ समभावथी कर्मीतरायनो, क्षयोपराके क्षय झट थायरे, फले.॥ दानलाजादि वापरो जावथी, थतां निष्काममुक्ति सुहायरे. फलेण ॥ ६ ॥ जोक

(१८८)

श्रजीव उपकार सहजछे. एतो थाय परस्पर जाएरे. फले. दानादिक प्रवृत्तिनिवृत्तिमां, शुद्ध उपयोग हिष्ठ प्रमाणरे. फले॰ ॥ ७ ॥ देशो तेवुंज नकी पामशो, वावो तेवुं फले निर्धाररे, फले.॥ बाह्यफल मिष शिवफल पामवा, लहो सहज समाधि साररे. फले॰ ॥ ८ ॥ ज्ञानपरमानंद फल जीवतां, लही मुक्ति अनुजव थायरे. फले. सर्व कर्तव्य कर्मों कर्या करो, तेथी शक्तियो प्रगटी सुहायरे. फले॰ ॥ ९ ॥ शुद्ध श्रातम प्रज महावीरछे, एवा निश्चयथी जाय दु:लरे, फले. बुद्धिसागर शुद्ध प्रभु विभु, आपो आप श्रनंतु सुखरे. फले॰ ॥ १० ॥

कलश् ॥

गायो ध्यायोरे महावीर जिनेश्वर गायो, अष्ट-कर्म निषूद्रनहेते, अष्टधा पूजा गायोरे. महावीर० आतम साथे काल खनादि, कर्मबंध व्यवहारे; कर्म-नो कर्ता जोक्ता आतम, रागद्वेष विकारेरे. महा-वीर०॥१॥ बंध उद्य उदीरणा सत्ता, कर्मभेद

(१८९)

व्यवहारे; प्रारब्ध संचितने क्रियमाणज, अशुद्धनय उपचारेरे. महावीरण ॥ २॥ सम्यग्ज्ञान वैराग्यन त्यागे, वर्ते साक्षी भावे; कर्म शुभाशुन सुखदुःख फळने, वेदो समता दावेरे. महावीरण ॥ ३ ॥ ज्ञान ध्यानथी क्षणमां मुक्ति, निर्मोह कर्म करंतां; यही त्यागी निज ऋधिकारे, गुण कर्में विचरंतारे. महा-वीर०॥ ४॥ द्रव्यार्थिक शुद्धनय दृष्टिए, कर्मनो कर्ता न हर्ता; आतम सत्ताए निर्सेपी, बेनय समजे संतारे. महावीर ।। ए ॥ व्यवहारने निश्चय बेन-यथी, सापेक्षाए जाणो; निश्चयदृष्टिना जपयोगे, रहीने अनुभव म्हाणोरे. महावीर० ॥ ६ ॥ पुण्य पाप बे भेदमां खाठे, कर्मो समाइ जातां, खास्रव-मांही पुण्य पाप बे, अंतर्जावी थातारे. महावीर० ॥ ७ ॥ तमो रजो गुण सचनी वृत्ति, मोहनीमांही समाती; मोहनी जीते जीत्यां वाकी, सम्यग्दष्टि सुहातीरे. महावीर० ॥ ८ ॥ रागरीस अरि जीत्या छिरहंत, महावीर केवल ज्ञानी; प्रभुए कर्म स्वरूप

(१९o.)

अकाइयुं, समजे समकीती ज्ञानोरे. महावीरण ॥९॥ पुनर्वधक नहीं छे ज्ञानी, नहीं पुरुगल अभिमानी; ञ्चल्पबंध महानिर्जरा करतो, निर्मोहभावे ध्यानीरे. महावीर०॥ १०॥ सम्यग्ज्ञाने बळियो छातम, अज्ञाने बळियुंछे कर्म: कर्म निकाचित प्रारब्ध भोगमां, जपयोगे खातम शर्मरे. महावीर० ॥ १९ ॥ ओगणिस छठोत्तर कार्तिक सुदि, छाठम मंगल-बारे; पूजी रचीने आनंद पाम्यो, प्रभुदाणीना प्यारेरे. महावीर० ॥ १२ ॥ सानंद शहेरमां चोमासुं कर्यु, संघनी भक्तिछे सारी; प्रत्र महावीर पट परं-ंपर, तपगच्छ जग जयकारीरे. महावीर० ॥ १३॥ जगगुरु हीरविजयसूरि राजा, पट परंपर छाजे, श्री नेमिसागर रविसागरजी, सुखसागर गुरु गाजेरे. महावीरण ॥ १४ ॥ गुरु कृपाए पूजा रची शुभ, संघमां आनंदकारी, बुद्धिसागरसूरि मंगल, जिन-ञ्चासन जयकारीरे. महावीर० ॥ १५ ॥

🦥 ० प० अंतराय नाशार्थ फलं य० स्वाहा ॥

(१९१)

षडावइयकपूजा.

श्री परमेश्वर वीरजिन, चोवीशमा जिनराजः त्रिशालानंद जगधणी, सर्वदेव शिरताज.॥१॥ समवसरणमां बेसीने, भारुयो साचो धर्म; षट् आ-वरयक भावियां, गृही साधुनां कर्म. ॥ २॥ षट् त्रावश्यक कर्मथी, चित्तनी शुद्धि थाय. मनशु-द्विथी आतमा, केवल ज्ञानने पाय. ॥ ३ ॥ सामा-यिक चउविश जिन, स्तव गुरुवंदन वेश; प्रतिक्रमण आवश्यके, नासे कर्मना कलेश. ॥ ४ ॥ कार्योत्स-र्गने आदरे, करतां प्रत्याख्यान; आत्मशुद्धिची प्रग टतुं, सहेजे केवलज्ञान. ॥ ५ ॥ पडावइयकनी रचं. पुजा द्रव्यने भाव; जेदे उपयोगे भली, जवोद्धिमा नाव. ॥ ६ ॥ अष्टप्रकारे पूजना, प्रत्येक पूजा दीठः आत्मानुभव पामवा, ज्ञान क्रियाची मिष्ट. ॥ ७॥

प्रथम सामायिक आवश्यक पूजा. सामायिक करतां थकां, रागद्वेष विनाश; क्ष-

(१९२)

णमां केवल उद्जव, नासे भाव उद्दासण ॥१॥ अनंतजीवो पामिया, समता योगे मुक्तिः; समतावण मुक्ति नहीं, साधे कोटि युक्ति. ॥ २ ॥ सर्व धर्म मत पंथमां, समत्वथी छे मोक्षः; समत्वपणुं सहु ध-र्ममां, मुक्तिभाव परोक्ष. ॥ ३ ॥ सर्व व्रतादिक सार हे, समता धारो भव्यः समत्व सामायिक भद्धं, आ-वइयक कर्तव्य. ॥ ४ ॥ नयव्यवहारथी बे घडी, च्चाराधो नरनार; निश्चय समता हेतुछे, सेवो जिब सुखकार. ॥ ५ ॥ चउनिक्षेपे धारीए, सातनये ते जाणः द्रव्यभावथी सेवतां, प्रगटे सम्यग् ज्ञान-॥ ६ ॥ समताभावे सर्वदा, त्यागी निश्चय जावः समता ते चारित्रछे. उपयोगे दिल लाव. ॥ ७ ॥

त्रभु पडिमा पूजीने पोसह करीएरे-ए राग.

समताभावे सामायिकमां रहीएरे, सामायिक योगे शिवसुख थायठे; समभावे रहेवाथी अनुभव जागेरे, स्थिरताना योगे तत्त्व जणायठे, अंतरना

(१९३)

उपयोगे धर्म प्रहाय छे, चंचळता मननी दूरे जाय छे; वैराग्ये भाव भलो परखाय हे, धन्य धन्यरे स-मताभाव सुहाय छे. श्रंतरण।।१॥ गुरुमुख्यी सामायिक उच्चरे श्रावकरे, लाखबोराशी जीवयोानिने खमा-वती: दश मनना दश वचनना द्वादश कायारे, ब-त्रीश दोषो टाळी व्यातम जावतो. अंतर०॥२॥ पिंडस्थादिक चार ध्यानने धरीएरे. वरीएरे धर्म शुकल व ध्यानने; आर्त रीद्र वे ध्यान बूरां परिह-रीएरे, तजीएरे माया ममता मानने. श्रंतर० ॥३॥ धर्मग्रंथने जणीए गणीए भावरे, विकथानी वातो लेश न कीजोए; द्रव्य ग्रुण पर्याये वस्तु विचारीरे, वस्त स्वजाव धर्म ग्रहीने रीझीए. ऋंतर० ॥ ४ ॥ स्थिर उपयोगे ध्यान समाधि वरीएरे, झळकेरे ज्यो(त आतमरामनी; श्वासोश्वासे ख्रजपाजापे स्म-रीएरे, वाटेरे चालो ऋविचळ धामनी. ऋंतरण ॥५॥ आत्मज्ञानधी सत्य समाधि पामोरे, वामोरे रागद्रेष वे दोषने; मैत्री प्रमोद करुणा माध्यस्थ विचारोरे; 13

(१९४)

धारोरे निरुपाधि सुखपोषने. अंतर० ॥ ६ ॥ नय निक्षेपे सामायिकने समजीरे, कोजीये सामायिक शिववेखकी; समतामृत भोजनथी प्रगटे शान्तिरे, समतानी खागेरे शुं हे ? शेखकी. अंतर० ॥ ७ ॥ सिद्ध समा समताथी सर्वे जीवोरे, जटकेरे कर्मथकी संसारमां; कर्मदोष त्यां जाणी जीव खमावोरे, सम-तानो व्हावोरे मनु द्यावतारमां. अंतर० ॥८॥ जाग ! जाग! चेतन तुं सामायिकमांरे, मुंझीश निह मुसा-फर मायाजाळमां; बुद्धिसागर सामायिक उपयोगेरे, गाळोने जीवन सह कल्याणमां. अंतर० ॥ ९ ॥

सामायिक निज ख्यातमा, समता परिणतियोगेरे; परमानंदना जोगमां, वर्ते निज उपयोगेरे; वीर जिन् नेश्वर जाखता, आत्म स्वजावे रहेशोरे; विषम स्वजावे नहीं रहो, शुद्ध परिणति वहेशोरे. वीरण्ण १॥ ॐ हैं। श्री परमण् सामायिकार्थ जलं चंदनं पुष्पं धूपं दोपं ख्यक्षतं नैवेद्यं फलं यजा-महे स्वाहा.

(१९५)

द्वितीया चतुर्विंशतिस्तव पूजा.

चोवीश जिनवरने नमो, वंदो पूजो भव्य, स्त-वो जिक्त बहुमानधी, ए बीजुं कर्तव्य. ॥१॥ चोवीश तीर्थकर प्रभु, वीतराग भगवंत; स्तवतां ध्यातां आतमा, पामे भवनो अत. ॥२॥ चंद्र समा निर्मख सदा, रिवधी अनंत प्रकाश; एवा चोवीशवे विभु, ध्यातां छात्मविलास. ॥३॥ सागरवत् गंभीर जे, सिद्ध गित दातार; प्रभुमय थे प्रभुने स्तवे, स्वयं प्रभु निर्धार. ॥४॥

हे सुखकारी आ संसार चकोजो मुजने उद्धरे. ए राग.

जग उपकारी चोवीश तीर्थंकर मुज मनमांही वस्या, प्रभु जयकारी शुद्धातम उपयोगे अंतर ज-ख्लस्या, चोविश जिनस्तव जावे करतां, अंतर्मां उप-योगे वरतां, घातीकर्मों वेगे खरतां, नरनारी केवल पद वरतां. जग० ॥ १ ॥ एकतान प्रभु साथे जागे, (१९६)

मनडं वर्ते प्रभुना रागे; श्रद्धा प्रीतिखय जो लागे, मनडुं वर्ते भव वैराग्ये. जग०॥ २॥ प्रभु ज्ञेय स्व-भावे घट आवे, कर्तव्य सकल योगे थावे; आतम निर्लेपपणुं जावे, आतम परमातम घै जावे. जग० ॥ ३ ॥ परमातमने दिलमां धारो, आविर्भावे घट जिज्ञारोः; नहीं नामरूपना अहंकारो, कर्तव्य करे आवे पारो. जग० ॥ ४ ॥ चोवीश जिनवर साथे प्रीति, तेथी नासे सघळी भीति; प्रगटे जगमां साची नीति, प्रामाणिकता साची रीति. जग० ॥ ५ ॥ मुजध्याने ध्येयपणे ऋावो, मुज ज्योते हो श्राविभीवो; एकमेक स्वरूपेछे ल्हावो, परमानंदे प्रगटे दावो. जग०॥६॥ सर्वे जिनवर पूजा गावो, वंदो प्रणमो प्रेमे ध्यावोः; ध्येयाकारे घट प्रणमावोः; प्रभुसम निज आतम प्रकटावो. जगव ॥ ७ ॥ प्रभु स्तवतां केवलने मुक्ति, भक्ति खावश्यकन्। रीति: प्रभु स्तवतां प्रगटे गुण नीति, आचारे रहे नहि दुर्नीति. जग॰ ॥८॥ प्रभुरूपे अकेय

(१९७)

भळवुं, प्रभु ज्योते ज्योतथकी मळवुं; पछी जगमां निह्ने ख्रवतरवुं, प्रभु प्रार्थी निश्चय पद वरवुं. जगण ॥ ९॥ प्रभु वीर बोध मनमां विसयो, चोविश जिन स्तवनानो रिसयो; बुद्धिसागर प्रभु जब्लिसियो, शु-द्धातम जावे विकिसयो, जगण॥ १०॥ ॐ० प० चतुर्विंशति स्तव अत्राधनार्थ जलंण यणस्वाहा॥

तृतीया गुरुवन्दन आवश्यक पूजा. दुहा.

श्रावश्यक गुरुवन्दना, प्रतिदिन त्रण्ये काल, करतां ज्ञानादिक गुणो, प्रगटे मंगलमाल. ॥१॥ श्रिष्ठा प्रीति जावधी, गुरु वंदंतां ज्ञान; गुरुवण ज्ञान न थाय हो, गुरुवण होय न सान. ॥२॥ विधिपूर्वक गुरुवन्दना, करतां नासे कर्म; शुद्धातम घट उल्लसे, प्रगटे साचो धर्म. ॥३॥ गुरुदीवो गुरुदेव हो; गुरुनो सत्याधार; गुरुवण मुक्ति न कोइनी, समजो नरनेनार.॥४॥ वंदो पूजो सहुरू, प्रणमो वारंवार; सूरिवाचक यतिसंघनी, भक्ति ह्नदा फळनार.॥४॥

(१९८)

गुरुवंदन आवश्यके, पाम्या मुक्ति त्र्यनंतः चडानि-क्षेपे नये जला, सेवो सद्गुरु संत. ॥ ६ ॥ क्षणपण सद्गुरु संगति, टाळे रागने रीसः समकितप्रद गुरु जित्थी, मुक्ति विश्वावीस. ॥ ७ ॥

ध्यानक्रिया मनमां आणीजे. ए राग.

जगगुरु महावीर जिन जयकारी, वंडु वार हजा-रीरे; गुरु वंद्न आवश्यक जाख्युं, जेथी तरे नरना-रीरे. जग०॥१॥ गुरुवंदनमां मुज मन राचे, गांजे घन मोर नाचेरे; रीझे निह मन कुगुरु काचे, स्वार्प-णता हे साचेरे. जग०॥२॥ गुरूवंदनधी केवल विरया, अनंत जीवो तिरयारे; खघुता विनयवंडे संचिरिया, गुरुभक्ते जे भिरयारे. जग०॥३॥ सद्-गुरू रागे गुण सहु आवे, दुर्गुण सघळा जावेरे; गुरू-पदेशे श्रद्धा जावे, शक्ति सकल प्रकटावेरे. जग० ॥ ४॥ सर्व खमावुं कृत अपराधो, सद्गुरु जगमां लाध्योरे; तुज कृपाए अनुजव वाध्यो, साधनधी प्रभु

(388)

साध्योरे. जग० ॥ ५ ॥ विधिपूर्वक ग्रुह्मंद्रन होशो; वर्गुण स्हामुं न जोशोरे; माफ करो ग्रुह्म म्हारा दोषो, मुज आतमने पोषोरे. जग० ॥ ६ ॥ एवी रीते ग्रुह्म वंदन करता, ग्रुह्म सदा अनुसरतारे; समिकती गृही त्यागी ग्रुण वरता, भव पाथोधितरतारे. जग० ॥७॥ दोषदृष्टि त्यागी ग्रुह्म रागी, शिष्य जक्त वमजागीरे; इद्धिसागर सद्गुह वंदन, करतां लगनी लागीरे. जग० ॥ ८ ॥ ॐ० प० ग्रुह्म वन्दन आराधनार्थ ज० य० स्वाहा ॥

चतुर्थी प्रतिक्रमणावश्यक पूजा.

दुहा.

प्रतिक्रमण करवाथकी, आतम शुद्धि थाय. श्रात्माजिमुख भावथी, प्रतिक्रमण कहेवाय. ॥ १ ॥ अतिचारादिक दोषथी, पाछा फरवुं जेह; पापतणुं करवुं नहीं, प्रतिक्रमण छे तेह. ॥ २ ॥ पंच प्रतिक्रमणों कथ्यां, आतम शुद्धि हेत; द्रव्यजाव करतां थकां, मुक्तिनो संकेत. ॥ ३ ॥ प्रतिक्रमणने जाणता,

(200)

सातनयोथी जेह; चउनिक्षेपे आदरे, दोष रहे नहि रेह. ॥ ४ ॥ निंदो गहीं दोषने, खमो खमावो जीव, कर्म भेद दूरे टळे, पामे आतम शिव. ॥ ५ ॥

ए व्रत जगमां दीवा मेरे प्यारे, ए व्रत जगमां दीवो. ए राग.

महावीर प्रभु जयकारीहो, जगपित ! महावीर प्रभु जयकारी, प्रतिक्रमण आवश्यक भाष्युं, सर्व जीव हितकारी, दुर्गुण दोषथी पाछा फरवुं, प्रतिक्रमण जयकारी हो. जगपित महावीर० ॥ १ ॥ गृहो त्यागी व्रत समिकतमांही, अतिचारादिक लाग्या; निंदे गहें फरी करे नहीं, प्रतिक्रमणे तेह जाग्याहो. जगपित० ॥ २ ॥ क्षयोपशमी समिकत चारित्रे, वारंवार छे दोषो; तेमाटे प्रतिक्रमणावश्यक, करी आतम ग्रण पोषोहो. जगपित० ॥ ३ ॥ दोषने ग्रण निरोक्षा करतां, प्रायिश्वत्तने धरतां, निंदो गहीं निजग्रण वरतां, भवि नरनारी तरतां हो. जगपित०

(208)

🔃 ४ ॥ मोहीना मन मीठो कहेणी, पण कडवीछे रहेणी; कहेणी प्रभाणे चातां रहेणी, चढशो मुक्ति ानिसरणी हो. जगपति ।। ।।। मनवचनकाया प्रतिक-मण्यी, मनवचन काया शुद्धिः क्षण क्षण उपयोगे पडिक्रमणं, करतां चिदानंद ऋदिहो. जगपति० ॥ ६ ॥ आतमना उपयोगे ध्याने, नहि आवश्यक करणी; शुजाशुभपरीणाम निवृत्ति, जवपाथोधि-तरणीहो. जगपाति०॥ ७॥ चलिक्षेपे सातनयोथी, प्रातिक्रमण अवधारो. निज निज ऋधिकारे प्रतिक-मतां, शुद्ध चता आचारोहो. जगपति ॥८॥ अप्रशस्य कषाय प्रवृत्ति, प्रतिक्रमता संसारी; प्रति-क्रमणयो क्षणमां मुक्ति, पाम्या घणा नरनारोहो. जगपति० ॥ ९ ॥ पंच पडिक्समणां व्यवहारे, निश्चय निज उपयोगे; जाणीने वर्ते जे भावे, रहे न जवभय रोगेहो. जगपित० ॥ १० ॥ पश्चात्तापथी भूलो ख-मावो, खमो दुर्गुणने हठावो; बुद्धिसागर सङ्गुरु संगे, आनंद मंगल पावोहो. जगपति०॥ ११॥ ॐ० प० प्रतिक्रमणाराधनार्थे ज० य० स्वाहा ॥

(२०२)

पंचमी कायोत्सर्गावश्यक पूजा.

देह छतां जेने जरा, रहे न देहाध्यास; कायो-स्मर्गज जाणवो, खातम ध्यानाज्यास. ॥१॥ द्रव्य भावणी जाणवुं, वायोत्सर्ग स्वरूप; आवश्यक विधि योगथी, नासे भवभय धूप.॥२॥ शुद्धातम उप-योग ठे, कायोत्सर्ग प्रमाण; निश्चयनयथी खादरे, प्रगटे केवलज्ञान. ॥३॥ व्यवहारे विधिषी करो, टाळो मनना दोष; दर्शन ज्ञानने चरणनी, शुद्धि प्रगटे पोष.॥ ४॥

हम मगन जये प्रभु ज्ञानमां. ए राग.

प्रञ्ज महावीर जिनवर ध्याइए, ध्याइए ध्या-इए ध्याइए, प्रञ्ज०। कायोत्सर्ग करो ग्रण हेते, आव-इयकदिल धारिये; देहादिक जम वस्तुषी न्यारो, ख्यातम शुद्ध विचारिये. प्रभु० ॥ १ ॥ देह छतां नहि देहनो ममता, धमें तनु व्यापारीए; शुद्धातम उपयोगे रहीने, परमानंदमां म्हालीए. प्रभु० ॥ २॥ दर्शन ज्ञान चरणनी शुद्धि, काउसग्गयोगे कोजीए;

(२०३)

देहादिक मोहसागर उपर, ज्ञाने तरंतां रीझीए. प्रभु०॥ ३॥ काउसग्ग योगे क्षणमां केवल, मुक्ति अनंता पामिया; शुभ ऋशुत्र परिणाम त्यजीने, ग्रुद्ध स्वरूपे जामिया∴ प्रभु० ॥ ४ ॥ शुद्धातम उप-योगे रहेतां, सर्व प्रभुने ध्याइयाः निश्चयनयथी एका-तममां, सर्व जिनेश्वर आविया. प्रभु० ॥५॥ व्यव-हारची विधि काउसग्ग करवो, एम सापेक्ष विचा-रीये; स्रातम शुद्धि हेते साधन, हठकदाग्रह वारिये. प्रभु० ॥ ६ ॥ द्रव्यभाव व्यवहारने निश्चय, नयसा-पेक्षे जाणीए; सांज सवारे छावइयकने, रहेणीमांही आणीए. प्रज्ञ० ॥ ७ ॥ मोहादिक कर्मो झट विण से, मानव जव नहि हारिए; प्रभुनी साथे तन्मय थैने, मोही मनडुं मारीए. प्रभु० ॥ ८ ॥ ग्रही त्या-गीने आवश्यक छे, निखनी करणी कीजीए: बुद्धिसागर मंगलमाला, परमानंद पद लीजीए. प्रज्ञ० ॥ ९ ॥ ॐ० प० कार्योत्सर्गाराधनार्थ ज़़० यण स्वाहा ॥

(२०४)

छठी प्रत्याख्यानावश्यक पूजा.

छडुं स्रावइयक करो, जावे प्रत्याख्यान; द्रव्य-जाव वे कर्मनो, नाश थतो भवी जाण. ॥ १ ॥ सर्व ग्रुभाशुज वांछना, त्याग ज प्रत्याख्यान; निश्चयथी ए स्रादरे, प्रगटे केवलज्ञान. ॥ २ ॥ स्रासक्तिनो त्याग ते, निश्चय प्रत्याख्यान; रागद्वेषने परिहरे, प्रत्याख्यान प्रमाण. ॥ ३ ॥ द्रव्यथी प्रत्याख्यानना-स्रमेक भेदो जोय; साध्यतणा उपयोगयी, साधन सफ्लां होय. ॥ ४ ॥ आतम तांबे मन थतां, वर्ते प्रत्याख्यान; प्रहणत्याग बुद्धि विना, सहजयोगथी मान. ॥ ५ ॥

श्रीपालना रासनी देशनो.

जिमतर फूले जमरो बेसे. ए राग.

प्रभु महावीरने वंदो पूजो, गावो प्रणमो ध्यावो, प्रत्याख्यान जिणे उपदेश्युं, भावथी मनमां लावोरे, जविका, प्रत्याख्यानने धारो, थाय सफळ खवता-

(२०५)

रोरे. जविका० ॥ १ ॥ ठयवहारथी पञ्चखाणने क-रिये, मनपर काबू धरिये; गुरु पासे पञ्चखाण उच्च-रिये, कर्म निकाचित हरियरे. भविका० अशनादिक इहा संवरीये, सुखदुःख समता वरिये, कर्म अनंतां क्षण निर्जरीए, आतमने उद्धरिएरे. भविकाण ॥ ३ ॥ पापकर्म इच्छाओ त्यागो, आतमः जावे जागोः परपरिणामथी दूरे जागो, पर पुद्गल नहीं मागोरे. भविका० ॥ ४ ॥ जोगादिक इच्छाळो वंडो, निज ञ्चातम रह मंडो; काढो मोहतणो पग दंडो, छंडो मिथ्या घमंडोरे. भविका० ॥ ५ ॥ दुष्टे-च्छात्रो दूर निवारो, कामेच्छाओ वारो; हिंसादिकः वृत्ति संहारो, आतममां प्रेम धारोरे. भविका० ॥६॥ कायिक सुख माटे जे जोगो. निश्चय तेह छे रोगो: तेना जे प्रगटे संयोगो, वेदो निवेंद योगोरे. जविकाव ॥ ७ ॥ आतमवण अन्य इच्छा सर्वे, ते त्यागे पच्चः खाणो, निकाचित भोगो भोगवतां, विषमभाव न आणोरे. जविका० ॥८॥ जीवो अनंता मुक्ति पाम्या,

(२०६)

श्रत्याख्यानना योगे; बुद्धिसागर आनंद मंगल, वर्तो निजग्रण भोगे हो. जविका० ॥ ९ ॥

कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो.

रायो, चोवोशमा तीर्थकर ईश्वर, परमब्रह्म सुह[ा]-योरे. महावीर० ॥ १ ॥ षडावश्यक पूजा रचीने, प्रज्यात्रभु हरखायोः आनंदमंगल घटमां पायो, शुद्धोपयोगे रमायोरे. महावीर० ॥ २ ॥ ऋोग-णिश त्राठोत्तर कार्तिक सुदि, नवमी बुध सुहायो; सानंद शहेरमां आनंद व्हेरे, पूजा रची गुण पायोरे. महावीर० ॥३॥ वीरजिनेश्वर पट परंपर, तपगच्छी ग्रुरुराजा; हीरविजयसूरि शासन धोरी, भारतमुनि शिरताजारे. महावीर**ण ॥ ४ ॥ वाचक सहज सागर** गुरु मोटा, पद्ट परंपर राजे; श्री नेमिसागर रविसा-गरग्रह, मेघपरे जग गाजेरे. महावीर० ॥ १ ॥ श्रीर-विसागर शिष्यसनूरा, पटधर गच्छना राजा; श्रो

(२०७)

सुखसागर सद्गुरु प्रणमुं, सागर पेठे माझारे महा-वीर०॥६॥ ग्रुरु कृपाथी पूजा रची शुज, सर्व जीव सुखकारी; बुद्धिसागर आनंद मंगल, शांति तुष्टि करनारीरे महावीर०॥७॥ षडावस्यक पूजा सुणे जे, जणे भणावे जावे; सकल संघमां आनंद मंगल, घर घर शांति थावेरे. महावीर०॥८॥ ॐ० प० प्रलाख्यानाराधनार्थ ज० य० स्वाहा॥ (२०८)

अष्टप्रकारी पूजा.

-3#6-

दुहा.

श्री संखेश्वर पार्श्वजी, पुरीसादाणी जह; पद पंकज नमी तेहना, रचना रचुं ग्रुणगेह. ॥१॥ पूजा श्रष्टप्रकार छे, आद्य न्हवण जयकार; चंदन कुसुमने धूपनी, पंचम दीप मनोहार.॥२॥ अक्षत नैवेद्य फुल इम, पूजा श्रष्टप्रकार; करतां शिवसुख संपजे, पामीजे भवपार.॥३॥ द्रव्य भाव भेदे करी, पूजे जे जिनराय; पूजा करतां प्राणिया, पूजक प द्वी पाय.॥ ४॥ शुभ सिंहासनमां प्रभु, पिन्मा स्थापी सार; समय विधि श्रनुसारथी, पूजीजे सुख-कार.॥ ४॥

१ जलपूजा.

ळानिहारे जिनमंदिर रिलयामणुरे-ए देशी.

बहुभावे सुरवरकोडाकोडी मिलीरे, प्रजुने सुर-गिरि खड़ जाय; आठजाति कलशा भरीरे, प्रभुन्ह- (२०९)

वण करे सुरराय. सुरवरकोमा० ॥ १ ॥ बहु भावे नाचे राचे जिन प्रेमथीरे, अभिषेक करी हरखायः तिम प्रभुपूजा करतां यकांरे, जव्यातम निर्मेख थाय. सुरवरकोमा० ॥ २ ॥ बहुभावे विश्वधू जस रेमतीरेः जिनपामिमापर सुखकारः स्वर्गादिक सुख पामतीरेः तिम भवियण वर्तो सार. सुरवरकोमा० ॥ ३ ॥ •

धन धन संप्रति साचो राजा-ए देशो.

रामजलशी निज चेतन निर्मल, थाय कहे जिन-वाणीरे; रामजलशी शुद्ध चेतन अर्चन, करतां भव-जय हाणीरे. रामजलपूजा चेतन करीए. ॥१॥ मिथ्यात्वाविर ति कषायने योग, तेथो कर्म वंधायरे: चारगतिमां भटके चेतन, विविध द्वःखने पायरे. राम०॥२॥ गज सुकुमालजी रामजल पूजा, करनां बहु सुख पाम्यारे; स्कंधक सूरिना शिष्यो तेमज, कर्मपंक झट वाम्यारे. राम०॥३॥ मुनिमेतार्ये रा-मजल ्जा, चेतननो जिम कीधीरे; भाव न्हवण— रान चेतन अर्चन, करतां शिवफल सिद्धिरे. राम०

(२१०)

॥ ४॥ भावपूजा साधु ऋधिकारी, द्रव्य भाव दोय श्राद्धरे; बुद्धि शिवसुख पामे शाश्वत, होवे निरावा-धरे. शम०॥ ५॥

ॐ हाँ श्राँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मरा-मृत्युनिवारणाय श्रोमते जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा.

२ षंदनपूजा.

टुहा.

बीजी चंदन पूजना, करतां पाप पसाय; मि-ध्यादोष ळानादिनो, टळतां शिव सुख याय. ॥१॥ पुद्गल संगे ळातमा, दुर्गिधियुत जाण; सुगंधे जिन पूजतां, सुवासित मन ळाण. ॥ २॥

सुण बहेनी पियुको परदेशी-ए देशी.

चंदन पूजा करो ग्रुज भावे, जिनवरनी सुख काजेरे; चंदनसम चेतन शोतलता, थातां शिवसुख ठाजेरे. चंदन० ॥ १ ॥ केसर-चंदन घसी जयणाये,

(२११)

मांहे घनसार मिखावोरे; रजत कचोलीमांहे ठवोनें प्रभु पूजा विरचावोरे. चंदन० ॥ २ ॥ चंदनपूजा योगे जयसुर, शुजमति शिवसुख पामेरे; तिम भवि-जण चंदन पूजाथी, ठरता अविचल ठामेरे. चंदन० ३

वीर जिनेश्वर उपादिशे.-ए देशी.

चंदनसमकित भावधी, पूजन चेतन कीजेरे; मिथ्यामल दूरे करी, छाविचल पदवी लीजेरे. चंदन० दोष अढार रहित प्रभु, देव तत्त्व मन आणोरे; सुसाधु गुरुतत्त्व छे, द्रव्य क्षेत्र काल जाणोरे. चंदन० ॥ २ ॥ जिनवर जाषित सत्य छे, धर्मतत्व चित्त लावोरे: द्रव्य समकित अवलंबतां, भावसमकित गुण पावोरे. चंदन० ॥ ३ ॥ क्षायिक समकित चंदने, जे जवि चेतन वासेरे; मिथ्यामत दूर वासना, तेहथकी दूर नासेरे. चंदन० ॥ ४ ॥ द्रव्य समिकत छंमीने, जावसम्यक्त्व जे थापेरे; ते तस खप करतां थकां, किम करी जवभय कापेरे. चंदनण ॥ ५ ॥ समिकत गुणे पूजना. चतननी जे करशेरे, बुद्धिसागर सुख

(२१२)

लही, मुक्तिवधू झट वरशेरे. चंदन०॥६॥ ॐ हीँ श्रीँ परम पुरुषाय० चंदनं यजामहे स्वाहा.

३ कुसुमपूजा.

दुहा.

पूजा त्रोजी पुष्पनी, करीए ख्राणी भाव; पूजा थी पूजकपणुं, बहीए आप स्वजाव. ॥१॥सुवासित सुक्षेत्रथी, उपन्यां पुष्प रसाल; लावी खर्चा जिन करो, होवे मंगलमाल. ॥ २॥

साहेखडियांनी देशी.

कुसुम पूजा जिननो करो, सुखकारिका. जिम जिनमय पूर थाय; दुःखनारिका. चंपक-मालती-केतकी, सुख,-सुगंधी फुल लाय. दुःखा। कुसुम। १॥ कीटक खाधुं न लीजोए, सुख भूमि पड्युं निर-धार; दुःख. निविध जाति फुलधी, सुख. पूजा पुण्य प्रकार. दुःख. कुसुम०॥२॥ मोगरो-जासुलपुष्पथी, सुख. षद्रूतुनां फुल; दुःख. प्रशस्य आगमे जे

(२१३)

कह्यां, सुख. ते लहिये अनुकुख. दुःख. कुसुम० ॥ ३ ॥ वणिक सुता लीखावती, सुख. पामी जिम शिवस्थान, दुःख. तिम भवि भावे कोजीए, सुख. पूजा श्रोजगवान्. दुःख. कुसुम० ॥ ४ ॥

वोरजिणेसर उपदिशे-ए देशी.

सत्य शौच क्रसुमे करी, जे निज चेतन पूजेरे; कर्म कलंक अनादिनुं, तेहथकी झट ध्रूजेरे. सत्यव ॥१॥ सत्य जे आत्मस्वरूपनी, श्रद्धा मनमां कोजेरे; उपनीतादिक भेदने, जाणी सत्य वदीजेरे. सत्यव ॥ २ ॥ कूडकपट त्यागी करी, द्याप स्वभावे रहीएरे; त्याग करी परभावनों, शिवसुख सहेजे खहीएरे. सत्यव ॥ ३ ॥ मन व्यापार निवृत्तिथी, शान्ति चेन्तन पामेरे; आत्म द्यनुजव जागतां, कर्मरोग झट वामेरे. सत्यव ॥ ४ ॥ परपुद्गल संयोगधी, चेतन चउगित जटकेरे; तेहतणा त्यागे करी, जमतो चेतन अटकेरे. सत्यव ॥ ४ ॥ स्वगुणे करी सत्यछे, द्यातम

(388)

राय भवि जाणोरे; बुद्धिसागर सुख खही, होवे शि-वपुर राणोरे. सत्य० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रौ श्रौ परम पु॰ कुसुमं यजामहे स्वाहा.

४ धूपपूजा.

दुहा.

चोथी पूजा धूपनी, दशांगादिक जाण; कर्में न्धनने बाळवा, करता जिक सुजाण. ॥ १ ॥ धूप करो प्रभु खागळे, शास्त्र वचन अनुसार; करतां सुख बहु सीजीए, तरीए भवजलपार. ॥ २ ॥ खिनहांरे जिनमंदिर रिळयामणुरे-ए राग.

भवि भावे धूपपूजा जिननी करोरे, जिम जावे जव जयरोग; चूरण शुद्ध दशांगथीरे, धूप करतां नासे शोग. धूपपूजा. ॥ १ ॥ जवि भावे धूपधाणुं वामांगे ठवोरे, अगरतुरुक्षधनसार; कुंद्रुचंद्न उले वतांरे, पामीजे भवजलपार. धूपपूजा० ॥ २ ॥ भवि जावे शास्त्र विधि अनुसारथीरे, करिये धूपपूजा शुद्ध, स्वर्गतणां सुख पामियरे, वळी लहीए शिवपद बुद्ध.

(२१५)

धूपपूजाः ॥ ३ ॥ भिव भावे विनयंधर सुख पाम-तोरे, धूपपूजाथी विस्तार; तिम जवि भावे करतां थकांरे, बुद्धि शिवसुख निरधार. धूपपूजाः ॥ ४॥

गिरुआरे गुण तुमतणा-ए देशी.

ध्यानधूपनी पूजना, करीए भविजन भावेरे, परपुद्गलदुर्गधता, तेहथकी दूर जावेरे. ध्यानधूप प्रग टावीए ॥ १ ॥ आर्त्त-रीद्र दुर्ध्यान छे, धरतां दुःख बहु लहीएरे, तेनो त्याग करी भवि, श्राप स्वभावे रही एरे. ध्यान०॥ २॥ धर्मध्यान शुजगति दीए, शुक्लध्यान शिव ऋषिरे; गुणठाणे गुण उपजे, जवो भवनां दु:ख कापेरे. ध्यान० ॥ ३ ॥ आत्मध्यान धरतां थका, दुर्गधी दूर नासेरे; योग समाधि लगा-वतां, चढीए मोक्ष खावासेरे. ध्यान् ॥ ४॥ अ-स्थिर आ संसारमां, जीवे बहु दुःख सिह्यांरे; नर-कतणां दुःख जोगव्यां, ते निव जाए कहियांरे. ध्यान० ॥ ५ ॥ चेतन नरक-निगोदमां, वार अनंती जिम-योरे; चारगति संसारमां, अज्ञाने जीव रिमयोरे.

(२१६)

भ्यान०॥६॥ पुद्गलजामा पहेरीने, चेतन नाटक करतोरे; राजा कबहु रंक घइ, पुद्गल संगे फरतोरे. भ्यान०॥७॥ रुवे नाचे खेलतो, हसतो खातो रोगीरे; कबहु चेतन जोगी ने, कबहु वियोगी शो-गीरे. भ्यान०॥८॥ कर्मे करो ए सब हुवे, कर्म दूर जब थावेरे, बुद्धिसागर सुख लही, चिदानंद कहावेरे. भ्यान०॥९॥

ॐ हीँ श्रीँ परम० धूपं यजामहे स्वाहा.

५ दीपपूजा.

दुहा.

दीपक पूजा जिननी, करीए छाणी भाव; आ-रमगुण हितकारिका, जवजलमां जिम नाव. ॥१॥ प्रजु छागळ दीपक धरो, दक्षिण पास रसाळ; द्रव्य दीपकनी पूजना, करतां मंगळमाळ.॥२॥

(२१७)

सुतारीना बेटा तुने विनंबुरे खोख-ए देशी.

जवि भावे दीपकनी पूजनारे खोल, जिन त्र्यागळ करीए नित्यजो: मिध्यात्व अनादि निवा-रीएरे लोल, प्रभु पूजीए चोले चित्तजो. प्रभु दीप पूजा रळियामणीरे खोल, ज्युं पूजा करे सुर-इंद्रजो तिम पूजो जिव जिनचंदजो, बहो शाश्वत शिव सुख कंदजो. प्रभु० ॥ १ ॥ धूम छज्ञान नासे वेग-**छुरे लोल, गुद्ध आत्मरूप प्रगटायजो; रजत-कनक** -ताम्रनां कोडियारे खोख, तेमां घृत धरो हित ला-यजो. प्रभु०॥ २॥ जिनमंदिर वासण मांजियेरे खोल, घृत कोडिया मांजिये खासजो; दीवा उघाडा नावि मूकीएरे खोख, चित्त होय जो शिवसुखन्ना-शजो. प्रभु ।। ३ ॥ दीपपूजायो जिनमति धनसि-रिरे होह, जिम पामी शाश्वत सुखठायजो; तिम भक्तिजावे जिन पूजीएरे लोख, इम बुद्धिसागर गुण गायजो. प्रभुण ॥ ४ ॥

(२१८)

कोइलो पर्वत धुंथलोरे लोल-ए देशी.

भाव दीपक ते ज्ञान वेरे लाख, भविजन ऋति सुखकाररे; हुं वारीखाल. मित अद्वावीश जेदछेरे लाल, त्रणसे चालीश तिम धाररे. हुं. जाव० ॥१॥ चौद वीश जेद श्रुतनारे लाल, पामतां सुख यागरे; हुं. श्रुतज्ञानी केवली समोरे लाख, प्रेमे प्रणमो पाय रे. हूं. जाव० ॥ २ ॥ अवधि स्रासंख्य प्रकारहेरे लाल, मुख्य भेद षट् धाररे; हूं. मनःपर्यव भेद दो कहारे खोल, केवल एक उदाररे. हुं. भाव०॥ ३॥ केवलज्ञान प्रत्यक्ष छेरे लाल, तेहंथीं सर्व जणायरे: हुं. तीर्थंकर ते गुण वरीरे खाल, उपदेश दे सुखदा-यरे. हुं. भाव०॥ ४॥ ज्ञानसहीत किरिया कहीरे खाख, साचो मोक्ष उपायरे हुं. वस्तु एकांते जे यहे रेलाल, भवमां ते भटकायरे. हुं. जाव० ॥ ५ ॥ वि-नय करो ज्ञानीतणोरे लाल, ज्ञानीतणुं बहुमानरे; ट्टं. भणो भणावो ज्ञाननेरे लाख, लखो लखादो ज्ञानरे. ट्वं. जाव० ॥ ६ ॥ शासन चाले ज्ञानथीरे लाल, उपदेश ज्ञानथी थायरे; हुं.समिकत प्रगटे ज्ञा-

(२१९)

नथीरे खाल, मिथ्यात्व दूरे जायरे. हुं. जाव० ॥७॥ पंचमकाले आधार छेरे लाल, ज्ञान श्रुत निरधाररे हुं. वरजो आशातना श्रुततणीरे लाख, पामो ज्युं जव पाररे. हुं. भाव० ॥ ८ ॥ ज्ञान क्रिया छांतर सु-णोरे लाख, खजुळा जानु समानरे; हुं. जाव० महिमा ज्ञाननी ऋति घणोरे लाख, जाख्यो ते निव जायरे; हुं. आत्मस्वरूप समजो भवीरे लाल, पामो **शिवपुरठायरे. हुं भाव० ॥ १० ॥ किरियारहित** ज्ञान पांगळुरे लॉल, आंधळी किरिया तेमरे; हुं. थातां संगम दोउनोरे लाल, थावे शिवसुखक्षेमरे. हुं. जव० ॥ ११ ॥ आलंबन प्रभुनुं प्रहीरे पूजो चेतन द्रव्यरे; हुं. बुद्धिसागर सुख बहीरे लाब, पामे शिवपुर भव्यरे. हुं. भाव ॥ १२॥

> ॐ ह्वाँ श्राँ-परमण्दीपं यजामहे स्वाहा. ६ अक्षतपूजा.

दुहा.

समकित निर्मल कारिका, अक्षतपूजा एह; भवि जन भावे बीजीए, लहीए शिवपुरगेह. ॥ १ ॥ ज-

(२२०)

त्तमक्षेत्रे नीपन्या, अखंड नयनानंद; उज्ज्वल तंडुल पूजना, करीए श्रीजिनचंद. ॥ २ ॥

मेरु शिखर न्हवरावो हो सुरवर, मेरु०-ए देशी.

अक्षत पूजा कीजेहो भविका, ख्रक्षतपूजा कीजे, शुभतंद्वल उज्ज्वल शुभक्षेत्रे, नोपन्या तेहीज ल-हीए; गोधूम पण तिम पूजा कीजे, शुभभावे गहग-हीए हो. भविका० अ० ॥ १ ॥ चारगतिच्रकस्व-स्तिक प्रभु--त्र्यागे कीजे भावे; त्रणपुंज रत्नत्रयी वरवा, करतां भव दुःख जावे हो भविका. अ०॥ २॥ सि-द्धशिला उपर एक योजन, चोवीसमा तस जागे; मोक्षशिव सिद्ध पदने हेते, सिद्धशिला करो आगे हो भविका. अ०॥३॥भवभवनां पुनरावर्त्त हरवा, वरवा शिवपटराणी; नंदावर्त्त करो भवि भावे, होवे जिम त्रक्षत पूजा, करतां सुख बहु लोघुं; बुद्धिसा-गर शिवसुख संपदा, पामवा मनकुं की धं हो भ-विका. छा ॥ ५ ॥

(२२१)

कयुं जाण्युं कयुं वनी ख्याबही.-ए देशो.

ग्रुज परिणाम ते जावथी, ख्रक्षत पूजा सारहो जविकः; भावरोग दूर टाळवा, ख्रौषधसम चित्त धारहो भविक. जावपूजा अतिसुख दोए० ॥ १ ॥ हिंसा जूठ चोरी तजो, परनारी निरधारहो भविक; तनु धनममता परिहरो, रयणीजोयण अंधकारहो भविक. भाव० ॥ २ ॥ दिसिगमननो नियम करो. चौद नियम नित्य धारहो भविकः बत्रीश अनंतकायः तिम, श्रप्तक्ष्य बावीस निवारहो जविक, जावव ॥३॥ कषाय मद विकथा वळी, विषय निद्रा त्यागहो जविक; चित्त संतापना हेतु जे, तेथी न धरीए रा-गहो भविक. भाव० ॥ ४ ॥ अहं मम मोह मंत्रनो, त्याग करो गुणवंतहो भविक; विपरीत मंत्र मनन थकी, याख्यो शाश्वत सुखवंतहो जविक. भावणापा अनंतरत्नत्रयी गुणे, चेतनद्रव्य विचारहो भविकः कर्मविनाशथी संपजे, स्थिति सादि ख्रपारहो भविक. भाव. ॥ ६ ॥ अक्षतत्रक्षयसुखजणी, भावपूजा सुर-

(२२२)

सालहो भविक; बुद्धि शिवसुखसंपदा, पामे मंगल-मालहो भविक. जाव.॥ ७॥

ॐ ह्वाँ श्रीं-परमञ्रक्षतं यजामहे स्वाहा.

७ नैवेद्यपूजा.

दुहा.

नैवेद्यपूजा सातमी, दुःखदोहग हरनार; सुरनर शिवसुख पामवा, कल्पवृक्षसम सार. । १॥ विविध दुःखमृग-सिंहसम, शान्ति तुष्टि करनार; प्रभुपूजाथी रोग शोग, ए सहु दूर थानार. ॥ २॥

(तेजे तरुणीथी वडोरे-ए देशी.)

नैवेचपूजा सातमीरे, करीए आणी प्रेम; भव-जल तरवा नाविकारे, आपे शिवसुखक्षेमहो भविका. नैवेचपूजा कीजीएरे. जिनआणा शिर दीजीयेरे, जन्ममरण दूर जाय. ॥ १ ॥ मोदक लापसो देंथरांरे, बरफी पेंडा कुलेर; घेबर घारी सांकलीरे, विधिये करी निज घेरहो. ज. नै. ॥ २ ॥ पापड पूरी रेवडीरे,

(२२३)

खुरमां खाजां सार; फेणी जलेबी खीरथीरे, पूजा करो मनोहारहो ज. नै. ॥ ३ ॥ गुंदवडां न रेवडीरे, शाल दाल घृत गोळ; प्रभु भक्तिथी पूजीएरे, होवे ज्युं रंग चोलहो भ. नै. ॥ ४ ॥ इलीयपुरुषपेरे पूजन् नारे, जे करशे नरनार; बुद्धि शिवसुखसंपदारे, पामी लहे भवपारहो भ. नै. ॥ ४ ॥

(बोर जिणेसर उपदिशे-ए देशो.)

जावनायूजा जावधी, नैवेचनी जे करहोरे; प्रव-हणसम छे भावना, भावे ते शिव वरहोरे. भा. ॥१॥ आ संसार अनित्य छे, संध्यारंगसम देखोरे; तेमां जन्ममरण कर्यी, आवे निह तस लेखोरे. भा. ॥१॥ शरण निह संसारमां, मरता जीवने कांहरे; मृत्युवहा थया जीवने, निह कोइ जगमां सखाइरे. जा. ॥३॥ त्रण भुवनमां प्राणियो, भटक्यो ब्यनंतिवाररे; माता खलनापणे हुवे, पिता पुत्र विचाररे. जा. ॥ ४॥ पुरुष स्त्रोपणे थावतो, ए संसारस्वरूपरे; संसारमां जे राचहो, ते पहहो भवकूपरे जा. ॥ ४॥ पुत्र स्त्रो

(२२४)

परिवारने, मारुं मारुं मानेरे; सत्यव्यन जिनवरतणां, सांभळतो नहि कानेरे. जा. ॥ ६ ॥ शरीरपंजरमां रह्यो, चेतन एक मन आणरे; एकखो ख्राव्यो एकखो, जाइश परभव जाणरे. भा. ॥ ७ ॥ तन धन मंदिर माखीत्र्यां, पुत्र कलत्रने भाइरे; ताराघी ए भिन्न छे, जूठी तास सगाइरे. जा. ॥ ८ ॥ सातथातुषी नो-पनी, अशुचिमय छे कायारे: विष्टा मुत्र शरीरमां, करवी शी ? तस मायारे. जा. ॥ ९ ॥ जीव माताना पेटमां, मलमूतरमां रहियोरे; इःख अनंतु त्या सद्यं, पवित्र ज़ुं? हवे थइयोरे. जा. ॥ १० ॥ समये समये कर्मने, रागादिकथी बाधेरे; शिवसुखकारण धर्मने, केम मनथी नवि साधेरे. भा. ॥ ११ ॥ जेथी कर्म रोकाय छे, तेहीज संवर जाणोरे: करवो आदर तेहनो, एहीज धर्म वखाणोरे. ना. ॥ १२ ॥ तप चित्त धारीए, लोकस्वभावने समजोरे: श्चापस्वभावे स्थिर चइ, परपुद्गल मत रमजोरे. भा. ॥ १३ ॥ बोधिदुर्क्षभ जाणीने, जिनश्राणा शिर

(२२५)

वहीएरे; श्रारिहंतजाषित धर्म छे, सत्यधर्म जिन कहोएरे. भा. ॥ १४ ॥ जड पुद्गलथी भिन्न छे, अरूपी आत्मस्वरूपरे; बुद्धिसागर ध्यावतां, थावे शिवपुरजूपरे. भा. ॥ १५ ॥

ॐ हैं। श्री-परम० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा.

८ फलपूजा.

<u> दुहा.</u>

श्राठमी फलनी पूजना, करिए जिन हित लाय; फलपूजाथी पामीए, शिवफल अतिसुखदाय. ॥१॥ उत्तम वृक्ततणां यही, फळ रमणिक मनोहार; प्रेमे पूजो भिनजना, होने जयजय-कार.॥२॥

-194/61-

(ऋषज्ञजिणंदशुं प्रोतलडी-ए देशो.)

फळपूजा जिनराजनी, जिन कोजे हो भावे सुखकार; शास्त्रविधि अनुसारथी, लहो श्रुभ फळ १५

(२२६)

हो पामो भवपार. फळ. ॥ १ ॥ श्रीफळ आम्र बदामने,सीताफळ हो दाडीम हितकार; केळां पिसतां नीमजां, रायणफळ हो मेवो जवकार. फळ. ॥शा काळ अनादि जीवने, नहीं तृप्ति हो मनमांही लगार; विविधफळ भक्षण करी, जीव रझळ्यो हो चउगति मोझार. फळ. ॥ ३ ॥ जीव लालचियो रुंपटी, फळभक्षणुथी हो नहि विरम्यो लगार; पापजय नहीं चित्त गएयो, भक्ष्याभक्ष्यनो हो नवि करियो विचार. फळ. ॥ ४ ॥ जिनशासन अंगी-करी, प्रभु खागे हो करुं विनति एम; फळमूर्डा उतारतो, प्रभु आगे हो ठवुं आणी प्रेम. फळ. ॥ ५॥ त्रापो शिवफळ जिनवरा, जे पामी हो भवनां दुःख जाय; बुद्धिसागर सुख लहो, पामे शिवफळ हो जे ऋतिसुखदाय. फळ. ॥ ६ ॥

> (सांभळजो मुनि संयम रागे-ए देशी.) शाश्वत शिवपद स्वाद खहो भिव, जैनधर्म

(२२७)

चित्तधारीरे; द्रव्यभावयी धर्म जे जाणे, जाउं तेहनी बलीहारोरे. शा. ॥१॥ सातनयो उत्तर तस भेदो, आगमथी जे जाणेरे; सप्तजंगी जे शुद्धि जाणे, ते मुक्तिसुख माणेरे. शा. ॥ २ ॥ षम्द्रव्यग्रणपर्याय जाणे, जाणे खात्मस्वरूपरे; उपादेय खातमने जाणे, ते न पडे भवकूपरे. शा. ॥ ३ ॥ नवतत्त्व जिनेश्वर जाखे, बोधं तास जे करशेरे; हेय ज्ञेय उपादेय समजी, समकित-श्रद्धा वरशेरे. शा. ॥ ४ ॥ श्र-द्धार्थी समकित शुद्धं प्रगटे, तेथी विरंति लहियेरे; विरितथी क्षय कर्मनो करतां, शिवपुरमारग वहि-येरे. ज्ञा. । ५ ॥ बाहिर द्यंतर परम ए तीन, ऋात्म परिणति समजोरे; परमातम पद लक्ष्य वि-चारी, खंतर खातम रमजोरे. शा. ॥ ६ ॥ शरीर वाणी मनथी जूदो, आत्मद्रव्य चित्त धरतोरे; अ-रूपी निःसंग आतम निर्मल, तास ध्यान मन करतोरे. शा. ॥ ७ ॥ राग द्वेष मोहरायना योद्धा, तेहनी साथे वढतोरे; ञ्चातमा ञ्चाप स्वरूपे खेली, क्ष-

(२२८)

पक श्रेणीए चढतोरे. शा. ॥ ८ ॥ वीर्योहास वधे गुण प्रगटे, कर्मकलंक खपावेरे: गुक्रध्यानपायाए चढतो, केवलज्ञान गुण पावेरे. शा. ॥ ९ ॥ आयुष्यस्थिति पूर्ण करीने, शरीरसंग दूर कर-तोरे; जन्ममरणना फेरा टाळी, सादिव्यनंत स्थिति वरतोरे. शा.॥१०॥ दुःखाभावरूपमुक्ति माने, नैया-यिकमतवादीरे; सर्वव्यापकमुक्ति माने, ते पण छे उन्मादीरे. शा. ॥११॥ स्वामीसेवकजाव स्वीकारे, मुक्तिमां ते खोटोरे; कर्म खप्याथी सर्वे सरखा-माने ते जीव मोटोरे. शा. ॥ १२ ॥ गमनागमन मुक्तिमां माने, मतवादी अज्ञानीरे; गमनागमनरहित छे मुक्ति, जाणे स्याद्वादज्ञानीरे. शा. ॥१३॥ त्र्यनंतसु-खमयमुक्तिफलने, पामे भवि नरनारीरे; बुद्धिसागर शिवसुख पामे, चिदानंदपद धारीरे. शा. ॥ १४ ॥

ॐ हैं। अँ। परम-फलं यजामहे स्वाहा.

(२२९) सर्वोपरी गीतं.

(नमो नमोभवियण भावशुं ए-ए देशी.)

अष्टप्रकारी पूजना ए, द्रव्य भाव मनोहार; भविजन पूजीए ए. जिनप्रतिमा जिनसारिखी ए, जार्ख। शास्त्रमजार. जवि.॥१॥ दर्शन दीठे देवनुं ए, पापपंक दूर थाय; भवि. जगवतीमांही मुनिवराए, प्रतिमावंदन जाय. भावि. ॥२॥ नामनिक्षेपो उच्च-रेए, स्थापना किम न मनाय; भवि. शुद्धभावथी पूजतांए, जन्ममरण दूर जाय. जवि. ॥३॥ सांकळ-चंद्सुत जाणीएए, चुनीलाल उदार; जवि. नथुजा-इसुत जाणीएए, जेठाजाइ हितकार. भवि. ॥ ४ ॥ जेठालाल नरोत्तम कारणेए, मूळचंदभाइना काज; भवि. डाह्याभाइनी विनतिए, करतां शिवसुख राज. जवि. ॥ ५ ॥ शासन वीर जिनेश्वराए, होरविजय सूरि राय; जिव. सहेजसागर उपाध्यायजीए, तास शिष्य वखणाय. भवि. ॥६॥ तास शिष्य उपाध्याय-

(२३०)

जी ए, जयसागर जयकार; भवि. पाटपरंपर शोज-ताए, नेमिसागर सुखकार भवि.॥ ७॥ तस शिष्य रविसागर ग्रुरु ए,संवेग) अनगार; जवि. तस शिष्य ऊखसागर ग्रुरु ए. गामोगाम विहार. जवि.॥ ८ ॥ वसोनगर पधारियाए, संघ सकल हरखाय; भवि. ऋषभदेवतीर्थकराए, निरखी आनंद थाय. भवि. ॥९॥ तास पसाये ए रचीए, पूजा ऋष्टप्रकार; जवि. जणो जणावो सांभळो ए, भावथकी नरनार. भवि. ।१०। मेरुपरे ए स्थिर घइए, करजो जविमन वास; भवि. चंद्र सूर्य जब लग रहेए, जगमां करता प्रकाश. जवि. ॥११॥ तब लग पूजा विस्तरो ए, शांति तुष्टि करनार; भवि. ऋक्ति वृद्धि सुख संपदा ए, पूजाथी हिवनार. भवि.॥१२॥ संवत ओगणीस उपरे ए, ओग-'ठनी साल; भवि. फागण वदि एकाद्शी ए, अर्ण विज्ञाल, भवि. ॥१३॥

(२३१)

कलश.

एम सकलसुखकर द्रव्य जावे, पूजा अष्टप्रका-री ए; भणे जणावे सुणे जे जवी, ते शिवसुख लहे जारी ए. तपगच्छशाखा गगनमंडळ-दिवाकरपेरे छाजता; वैराग्यरंगे व्याप्युं जस मन, मिहमा जग जस गाजता. ॥१॥ रविसागर ग्रह प्रेमे प्रणमुं, संवेगो सिरदार ए; जस नाम देतां सकलमंगल, पामे भवी-नरनार ए. तस पद्पंकजभृंगसम श्री—सुखसागरग्रह-बाल ए; एम बुद्धिसागर शिव सनातन, पामे मंगलमालए. ॥ २॥

इति अष्टप्रकारीपूजा संपूर्णा.

(१३२)

वास्तुकपूजा.

दुहा.

श्री संखश्वरपार्श्वनाथ, त्रेवीसमा जिनराय; घर-णेंद्र पद्मावती, पूजे जेहना पाय. ॥ १ ॥ पार्श्वयक्ष जस शोजतो, सेवा करे चित्त लाय, पुरिसादाणी पार्श्वनाथ, ध्याता शिवसुख थाय.॥श॥ वास्तुकपूजा घरतणी, करतां सुख विशाल; ऋदि वृद्धि जय संपजे, कीर्ति मंगलमाल.॥३॥पंच पंच वस्तुथको, संखेश्वर-प्रभुपास, पूजो भवो जावे करी, सफल होवे मन खाश.॥ ४ ॥ चिंतामणिसम पार्श्वनाथ, पार्श्वमणि समनाम; ध्यातां गातां प्राणोनां, सिद्धे सघलां काम.॥ ४॥

प्रथमपूजा.

(मिल्लिजिन वंदीए जवी भावेरे-ए राग.)

संखेश्वरपासप्रभु नित्य गावोरे, शाश्वत शिव-कमळा पावो,सं० काशीदेश वणारसीगामरे, विश्वसेन-

(२३३)

राजा अजिरामरे; वामामाता सुखिवश्राम. संखेश्वर. ॥१॥ प्रभु मातकुले जब आयारे, इंद्र चोसठ सुरगिरि लायारे; सुरासुर मनमा हरखाया. संखेश्वर. ॥ २ ॥ एक खाखने साठ हजाररे, आठजाति कळश मनो-हाररे; प्रभु न्हवण करे जयकार. संखेश्वर. ॥ ३ ॥ इंद्राणीयो हस्ती गातीरे, जिनदर्शन करो हरखातीरे; नाटक करी मनमां माती. संखेश्वर. ॥ ४ ॥ एवा पार्श्वप्रभु घर खावोरे, शुभ सिंहासन पधरावोरे; प्रभु न्हवण करी सुख पावो. संखेश्वर. ॥५॥ रोगशोग सहु दूर नासेरे, प्रभुश्रद्धा मनभां वासेरे; शाश्वतपद बुद्धि जासे. संखेश्वर. ॥६॥

मंत्रम्-ॐ नमो भगवते श्री संखेश्वरपार्श्वना-याय है। धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय जन्मजरामृत्युनि-वारणाय क्तद्रोपद्रपद्मानाय जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दोपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजमाहे स्वाहा. (२३४) द्वितीयपूजा. दुहा.

स्नात्र भणावी पार्श्वनुं, पूजा की जे सार; पूजक पूज्यनी पूजना, समजीजे सुखकार. ॥ १ ॥ बेज पासे वींजीए, चामर चारु उमंग; दर्पण प्रभु आगळ थरो, होवे जयजय रंग. ॥ २ ॥

(सुतारीना बेटा तुने विनवुंरे लोख–ए देशी.)

प्रज्ञ पार्श्वजिनेश्वर गावी ऐरे लोल, श्री संखेश्वर प्रभु नामजो, तुज नामधी नवनिधि संपजेरे
लोल, मनवांछित सिद्धे कामजो; नाम रुद्धं संलेश्वर
पासनुंरे लोल, मिण्यात्वदशा दूर थायजो; शुद्धः
श्रद्धा हृदय प्रगटावजो. नाम रुद्धं.॥१॥ पूजा
वास्तुक दोय प्रकारनीरे लोल, ग्रुभ अशुभ जेद
कहायजो; द्रव्य वास्तुकपूजाना ए कह्यारे लोल, तेह
हरले कहुं चित्त लायजो. नाम रुद्धं.॥२॥ घर
महेल करावी तेडियेरे लोल, ब्राह्मण होमादिक वासजो; वेद गायत्री मंत्र भणावी एरे लोल, ब्राह्मण

(२३५)

जमाडीए खासजो. नाम रुकुं. ॥ ३ ॥ देवदेवी ब्रह्मा-दिक पूजियेरे खोल, पाडाबुद्धिए कोळुं कपायजो; मरी नरकतणां पुःख भोगवेरे खोल, मिथ्या वास्तु-कपूजा कथायजो. नाम रुडुं. ॥ ४ ॥ फल श्रीफल प्रमुखने होमतांरे लोख, पंचेन्द्रिय हिंसा थायजो; अपमंगल एह खरुं कछुंरे खोल, अञ्जज वास्तुक-पूजा कहायजो. नाम रुकुं. ॥ ५ ॥ ग्रुभ वास्तुक-पूजा वर्णवुंरे खोल, जेनुं रुकुं विशाल स्वरूपजो, बुद्धि शाश्वत संपदा पामीएरे लोख, पास नाम ते मंगल रूपजो. नाम रुदुं. ॥ ६ ॥

मंत्रम्-ॐ नमो भगवते-जलं, ६ंदनं, पुष्पं, भूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेयं, फलं, यजामहे स्वाहा.

तृतीयपूजा.

दुहा.

शुभ वास्तुकपूजा कहुं, आणी अतिशय भावः स्वर्गादिक सुख पामीए, होवे शिवसुख दाव. ॥१॥

(२३६)

देव अरिहंत जाणीए, दोषरहीत अहार; गुरु सु-साधु महाव्रती, पाळे पंचाचार. ॥ २ ॥ जिनवरभा-षित सत्य छे, जैनधर्म जगजोय; सुख दुःख होवे कर्मथी, अवर न कर्ता कोय. ॥ ३ ॥

(अनिहारे न्हवण करो जिनराजनेरे-ए देशी.)

अनिहारे वास्तुकपूजा शुभ कीजीऐरे, तजी अवर देवनी आशः; सत्पात्रे दानने दीजीपेरे, सूत्रश्र-वणरुचि छाजिलाष, श्री संखेश्वर प्रभु पासजीरे. ॥ १ ॥ भवी जावे द्रव्यार्थिकमये करीरे, शाश्वत हे लोकालोक; कर्ता तेहनो को नहिरे, केम कर्ता मा-नीए फोक. श्री संखे. ॥२॥ उंचो नीचो एवा तीरढा लोकनीरे, स्थिति हे अनादिअनंतः कर्ता तेहनो को नहींरे, एम जाले श्रो भगवंत. श्री संखे. ॥३॥ नवतत्त्व षमुद्रव्य छे नित्य शाश्वतारे, द्रव्य ग्रुणप-र्यायस्वरूप; बे जेदे जीव दाखियारे, तस लक्षण छे चिद्रप. श्री संखे. ॥ ४ ॥ परिणामी पुद्गख जीव दो जाणीएरे, अनादि संबंध विचार; कर्ता कर्मनो

(२३७)

श्चातमारे, तेम भोक्ता हृद्ये धार. श्री संखे. ॥ ५ ॥ शुजाग्रुभकर्म यही भोगी त्र्यातमारे, वेदे शाता अशाता दोय; देव मनुज नारक तिरिरे, चउगतिमां भटके जोय, श्री संखे. ॥६॥ जीवे कीधां पुण्य पाप ते भोगवेरे, परपुद्रगद्धसंगे खास; राच्यो माच्यो पुदुगलमां वस्योरे, बन्यो पुदुगलनो जीव दास; श्री संखे. ॥ ७ ॥ प्रभुपूजा करतां प्राणिया सुख लहेरे, नासे कर्माष्ट्रकपाशः स्वामीवच्छल नवकारशीरे, हेतु सुखनां दीसे खासः श्री संखे. ॥८॥ ग्रुभभावे नैवेच थाळमां मूकीनेरे, प्रभु छागळ धरीए चंग; रत्नत्रयी कमळा वरेरे, बुद्धिशाश्वतपद्रंग. श्री संखे. ॥ ९ ॥ मंत्रम्-ॐ नमो जगवते-जलं, चंदनं, पुष्पं, ध्पं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा.

चतुर्थपूजा.

दुहा.

शरीरपुद्गलमां वस्यो, पुद्गल मानो गेह, पर-जव साथ न आवतुं, क्षणमां नाशी तेह. ॥१॥ देह (२३८)

श्चनंतां छंडियां, जटकी श्चा संसार; खाख घोराशी हुं भम्यो, तार तार प्रभु ! तार. ॥२॥ (सांभळजो मुनि संयम रागे, उपशम श्रेणि चढीश्चारे—ए राग.)

श्री संखेश्वरपार्श्वप्रभु नित्य, मनमंदिरमां धरी-एरे; ध्यावी गावी पाप गमावी; श्रद्धा समकित वरी एरे. श्री संस्वे.॥१॥ यादवलोकनी जरा निवारी, षड्दर्शन विख्यातरे;वामानंदन, जगजन रंजक नमतां पावन गात्ररे. श्री संखे.॥२॥ परपरिणतिथी अष्टकर्म ग्रही, परभोगीपरकर्तारे;श्रुतुलब्खीपण कर्मपिंजरमां,वसियो निजगुण धरतारे. श्री संखे. ॥३॥ ख्रौदारिक वैक्रिय आहारक, तैजस कार्मण पंचरे: पंचशरीर घर मानी वसियो, करतो कर्मनो संचरे. श्री संखे. ॥४॥ सुरा-पानी बकतो फरे वळी, धत्तुरत्रक्षक जेमरे, अवली परिण्तिची छाहो छातम, स्वरूप भृहयो तेमरे. श्री संखे. ॥ ५ ॥ भवमां जमतां पुण्योद्यथी, सद्युरु सहजे मळियारे; बुद्धि शिवसुख पामे अविचल, सकळ मनोरथ फळियारे. श्री संखे. ॥६॥

(२३९)

मंत्रम्-ॐ नमो जगवते-जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं. दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा.

पंचमपूजा.

दुहा.

सद्गरु पंचमहात्रतो, पंचमहात्रत धार, जावधी वास्तुकपूजना, कहेवे अतिसुखकार. ॥१॥ पुद्गलद्र-व्यथी जिन्न हे. अचल अमल गुणवान्; गुद्ध बुद्ध परमातमा, चिदानंद भगवान्. ॥२॥ घर आतमनुं ओळख्युं, जेनो रुडो महेल; वास खरो मुज एहमां, वसतां शिवसुख सहेख. ॥३॥

(नमोरे नमो श्री शत्रुंजय गिरिवर-ए राग.)

वास्तुकभावपूजा निजजावे, चेतननी शुद्ध दाखीरे; वास वासे चेतन जे मध्ये, तेहनी पूजा भाखीरे. श्री. संखेश्वरपासजी गावो. ॥१॥ असंख्य-प्रदेश आतमना जाणो, शुद्धवास जीव होयरे; गुण-पर्याय स्वजाव अनंता, एकेक प्रदेशे जोयरे. श्री संखे. ॥२॥ ज्ञाता ज्ञेय ने ज्ञान त्रिभंगो, आतम-

(280)

मांही समायरे; ऋस्ति नास्ति समकाले लाघे, एवो आतमरायरे. श्री संखे. ॥ ३ ॥ धर्माधर्मने पुदृगद्धाः काश, तेहतणा प्रदेशरे; गुणपर्यायधर्म तसकेरा, नहि एक जीव लेशरे. श्री संखे. ॥४॥ शुद्ध बुद्ध परमा-त्मस्वरूपी, अव्याबाध अभंगरे; अविनाशी अकलंक अजोगी, भोगो अयोगो ऋसंगरे. श्रो संखे. ॥ ५ ॥ नित्यानित्यने स्रेकानेक, सद्सत् भाव विचाररे; वक्तव्यावक्तव्य ए आठ-पक्षतणो आधाररे. श्री संखे. ॥६॥ शुद्धस्त्ररूपी ज्ञानानंदी, चेतनवास कहा-यरे: सुख अनंतु चेतनघरमा, वचनअगोचर थायरे. श्री संखे. ॥७॥ खात्मथको छूटे जब कर्म, तब पामे शिवस्थानरे; शाश्वतअमलअचखपद जावे, वास्तुक-पूजा मानरे. श्री संखे. ॥८॥ एणीपेरे वास्तुकपूजा करहो, ते तरहो संसाररे;बुद्धिसागर क्षायिकसमिकत, पामी लहे भवपाररे. श्री संखे. ॥९॥

कलश.

गाइ गाइरे ए वास्तुकपूजा गाइ, अचल अमल अजंग महोद्य, शुद्धसत्ता निज ध्यायी; समकितदा-

(288)

कहेते पूजा, करतां हर्ष वधाइरे. ए वास्तुकपूजा गाइ. ॥ १ ॥ मिथ्यापरिगति नाशक तारक-आ-त्मस्वजावे सुहाइ; परमातम पद प्राप्तिकारक, सुख-कर समकितदाइरे. ए वास्तुक. पद्मावती देवी, जेहनी सारे सेव; सुरपति यतितति भूपति पूजित, श्री संखेश्वर देवरे. ए वास्तुक. ॥३॥ तास पसाये पूजा रची ए, हर्ष अति दिख खायो: जयजय मंगळ माळा कमळा, आतममा प्रगटाइरे. ए वास्तुक. ॥ ४ ॥ जन्मभूमि विजापुरगामे, मास-कल्प करो सार; ओगणिश साठ माघ सुद्धि बारस; ग्चतां जयजयकाररे. ए वास्तुक. ॥५॥ विद्यादायक धर्मसहायक, गंभीर श्रद्धावत; दोशी नथुजाइ मंठा-राम-हेते एइ रचंतरे. ए वास्तुक. ॥ ६ ॥ रोठ ठगनलाल बेचरकाजे, कीथी रचना जावे; संघ सक-खमां आनंद मंगल, ऋद्धि वृद्धि सुख थावेरे. ए वा-स्तुक. ॥ ७ ॥ तपगच्छमंडन हीराविजयसूरि, जस गुण सुरनर गाया; तास शिष्य श्रो सहेजसागरजो, 25

(२४२)

जपाध्याय कहायारे. ए वास्तुक. ॥ ८ ॥ पाटपरंपर नेमसागरजी, क्रियावंत महंत; तास शिष्यश्री रवि-सागरजी, वैरागी गुणवंतरे. ए वास्तुक. ॥९॥ संवेगी आतमगुणंरगी, सुखसागर गुरुराया; गामोगाम विहार करंता, विद्यापुरमां आयारे. ए वास्तुक.॥१०॥ चढते जावे हर्ष उल्लासे, कीधी रचना एह; जब्य जीवने अमृतसम ए, चातकने जेम मेहरे. ए वा-स्तुक. ॥ ११ ॥ शांति तुष्टि सुखसंपदा थावे, रोग शोग दूर जाय; बुद्धिसागर शाश्वतपद खही, मुक्ति-वधू सुख पायरे. ए वास्तुक. ॥ १२ ॥ श्री संखेश्वर-पास त्रभुजो, गातां सुख विशाल; श्री विद्यापुर स-कल संघमां, होवे मंगल मालरे. ए वास्तुक. ॥१३॥ मंत्रम्-ॐ नमो जगवते-जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं. ऋक्षतं, नैवेद्यं, फलं यजामहे स्वाहा.

वास्तुकपूजा विधि.

दरेक वस्तु पांच पांच क्षेवी, अष्टप्रकारी पू-जानो सामान लेवो, आठ स्नात्रीया करवा.

(२४३)

एक कळश प्रहण करे, बीजो केशरनी वाटकी महण करे, त्रीजो फुलनो हार वा बुटां फुल प्रहण करे, चोथो धूप, पांचमो दीपक, वठो रकेबीमां अ-क्षतनो स्वस्तिक लड्ने उभो रहे, सातमो नैवेद्य लड़ उभो रहे, खाठमो फळ लड़ उभो रहे. दरेक पूजाए अभिषेक करी पूजा करवी.

य कळश, ५ केशरनी वाटकी, ५ फुलना हार, भूपधाणुं, ५ दोपक, ५ चोखाना साथीआ, ५ नैवेद्य, ५ फळ.

वास्तुकपूजा जेनुं घर करे, छने तेमां प्रवेश करे ते भणावे. तेने घेर आ पूजा भणावतां आनंद मंगळ थाय. रोग, शोक, वहेम सर्वे नाश पामे. नव-स्मरण, छंजनी स्थापना करी अने दीवो करी जणवां. शक्ति होय तो स्नात्रीयाने जमामवा. इंद्राणी छो छोकरीओने करे तो करवी.

इति वास्तुकपूजा संपूर्ण

www.kobatirth.org

(288)

अष्टप्रकारीपूजा.

परमेश्वर महावीर जिन, तीर्थकर गुणधाम; चोवीशमा श्रीजिनपति, सर्वजीविवश्राम. ॥१॥ द्यनंतगुण उपकारीजे, शासन नायक देव; द्रव्यभावणी पूजतां, प्रगटे आनंद मेव.॥२॥ द्रव्यभावणी पूजना, अष्टप्रकारी बेश; करतां नरने नारीओ, दूर करे सहु क्केश. ॥३॥ महावीरदेवे पूजना, भाखी भवीहितकार; ते कारण पूजा रचुं, मनगुद्धि कर-नार.॥४॥ कारण कार्यनी सिद्धि छे, द्रव्यथी भाव सधाय; जिक्तमंता धर्मीजन, पूजाणी शिव पाय.॥॥॥

प्रथम जल पूजा.

सांभळरे सहियां हमारी. ए देशोनी चोपाया चाल.

प्रभु महावीर जग जयकारी, परमेश्वर जिन उपकारी; द्रव्य भावथी स्नात्र करीजे, प्रभु उपर प्रेम धरीजे. तेथी निजनी पूजावरीजेरे, द्रव्यभा-वथो पूजा सारी; मोहवृत्तिने हरनारी. प्रभु. ॥ १॥

(२४५)

मेरु उपर प्रभुने लाव्या, जलधी इन्द्रे न्हवराव्या; पंचरूप धरी गुण गायारे, तेम स्नात्र करी नरनारी, करे समकित शुद्धि अपारी. प्रभु. ॥ २ ॥ जाव समिकत जल ऋतिषेके; मिथ्यामेल रहे न विवेके; पूजो महावोरजिनने टेकेरे, त्यजी जूठी दुनिया-दारी; प्रभु शरण ब्रही हितकारी. प्रभु. ॥ ३ ॥ मों-घाकाले नयने दीठा, लाग्या त्यातमरूपे मीठा; यया कुदेव मोही अनीठारे, लागी तुजथको एक तारी; खागी ताह्यरी मूर्ति प्यारी. प्रजु. ॥ ४ ॥ तुज उपर जल सहु वारी, प्रभु ताह्यरो साची यारो; मरुं मर्या पहेलां मोह मारीरे, एवी पूजा बनो हितकारी; करो करुणा एहवी सारी. प्रभु. ॥ ५ ॥ प्रभु पूजा करुं प्रभुरंगे, निज आतम शुद्ध उमंगे; कदि पहुं न मिथ्या ढंगेरे, बुद्धिसागर प्रभु अवधारो; लही आ-तम सुखनी खुमारो. प्रभु. ॥ ६ ॥

ॐ हैं। श्रें। प० जलं यजामहे स्वाहा ॥

(२४६)

द्वितीया चंदनपूजा.

चंदनथी प्रभु पूजतां-आतम शोतल थाय. भावथी समताचंदने, पूजे ते शिवपाय ॥१॥ हर्षभाव केशर भळे, लाली प्रगटे खंग. श्रद्धा प्रेम सुवासथी, प्रगटे खानंद् रंग ॥ २॥

रहों गुरुजी फागण चोमासुरे, ए राग.

प्रभु महावीर जिनवर मिळियारे, म्हारा मनना मनोरथ फिळियारे. प्रभु ॥ समताचंदन घसी रंगेरे, अर्चु महावीर प्रभु छंगेरे; दिखं चढता जाव ऊमंगेरे. प्रभु ॥ २ ॥ शुद्ध छमृतरसनी क्यारीरे, रह्या मोही जगत नरनारीरे; सत्य सद्जूतमूर्ति प्यारीरे. प्रभु ॥ ३ ॥ प्रभु दोठे प्रमणा जागीरे, सम्यक्त्वदशा घट जागीरे, रोमेरोम थयो तुजरागीरे. प्रजुः ॥ ४ ॥ प्रभु मिळिया आविर्जावेरे—निजसद्भूत छात्मस्वभा-वेरे. शमचंदने पूज्या सुहावेरे. प्रभु ॥ ५ ॥ प्रजु दिलमांधरी प्रभु थावुंरे, प्रभु चंदन पूजाभावुंरे; बुद्धिसागर जिनवर गावुंरे. प्रभु ॥ ६ ॥

(२४७)

🕉 हैं। श्रें। परमण चंदनं, य० स्वाहा॥

तृतीया पुष्प पूजा.

द्रव्यजावधी पुष्पनी, पूजा प्रभुनी बेश; करतां दुर्गुण दुःखडां, नासे सघळा क्केश. ॥१॥ जावधी पंचाचार छे. गुणकरपुष्प प्रधान; तेथी जिनवर पूजतां, बनो स्वयंभगवान् ॥२॥ काल अनादि न ओळख्यो, खोळख्यो ज्ञाने आज, पंचाचारना पुष्पथी, पूजुलुं जिनराज ॥३॥

> सांभळजो मुनि संयम, रागे-जपशम श्रेणि चढियारे ए. राग.

पूजुं महावीर जिन जयकारी, चिदानंदरूप-धारीरे; तुज उपयोगे क्षणक्षण जीवुं, भक्तिभाव व-धारीरे. पूजुं ॥ १ ॥ ज्ञानने दर्शन चरणाचारे, तपने वीर्याचारेरे; रहेतां द्रव्यने भावणी आतम, धर्मसुगंधी प्रसारेरे. पूजुं. ॥ २ ॥ क्षयोपशमने उपशम क्षायिक, भावनी शुद्धि वधोरेरे; पंचाचार सुपुष्पे पूजा, करतां

(386)

शिवपद् धोरेरे. पूजुं ॥ ३ ॥ मैत्रीप्रमोद् मध्यस्थ करुणा, सात्विक पुष्पनी माळारे; प्रजुना कंठे प्रेमे चढावी, पीवुं प्रभुरस प्यालारे. पूजुं. ॥ ४ ॥ प्रभु गुण गावे समरे ध्यावे, आतम प्रभुरूप थावेरे; जेवी जावना तेवी सिद्धि, खंतरमां सुख पावेरे. पूजुं. ॥ ५ ॥ हाथे चढियो आंखे देखायो, हवे न छोठुं क्योरेरे; बुद्धिसागर आत्मउजागर, जपयोगे निजन्तारेरे. पूजुं ॥ ६ ॥

ॐ हैं। श्रें। प० पुष्पं य• स्वाहा.

चतुर्थ धूप पूजा.

द्रव्य भाव बे भेद्यी, धूपनी पूजा श्रेष्ठ; क रतां आतम बळ वधे, पडतुं पशु बल हेठ. ॥ १ ॥ चारे ध्यानना धूपथी, पूजतां जिनराज; मोहनी दुर्गधी टळे, सिद्धे शिवपद काज. ॥ २ ॥ भावयी प्रभुनी पूजना, आतम पूजा जाण; सम्यग्दृष्टि जी-वनी, करणी सर्व प्रमाण. ॥ ३ ॥

(585)

झुंमखमानी देशी.

धन्य प्रभु महावीरनेरे, सत्य जणाव्यो धर्मः म-हावीर पूजीए: बार वर्षना ध्यानथीरे, टाळ्यां धा-तीकर्म. महावीर. ॥१॥ पिंमस्थने पदस्थथीरे, रूपस्थ रूपातीतः, महावीर. चारध्यानरूप धूपश्रीरे, ऋातम शुद्ध प्रतीत. महावीर. ॥ २ ॥ आर्त रौद्रदुर्गधनेर, टाळो वेगे दूर, महावीर. एकता लीनतायोगथीरे, प्रभुजी हजराहजूर. महावीर. ॥ ३ ॥ धर्म शुक्क वे ध्यानचीरे, आपोआप प्रकाश; महावीर. ध्यानधूपे प्रञ्ज पूजतारे, व्यक्तानंद विलास. महावीर. ॥ ४ ॥ इयल जूमरी संगधीरे, जूमरीरूप सुहाय. महावीर. बुद्धिसागर व्यातमारे, प्रभुध्याने प्रभु थाय. महा-चीर, ॥ ५ ॥

ॐ ह्री श्री० प० धूपं० यजामहे स्वाहा

पंचमी दीपक पूजा.

पंचमी दीपक पूजना, करतां ख्रात्मप्रकाशः; मतिश्चत ज्ञानना दीपके, मिथ्यातमनो नाश ॥१॥

(३५०)

सम्यग् ज्ञानी जीवने, सवळुं सहु प्रणमायः श्रास्रः व ते परिश्रवपणे, थावे आतममांद्य. ॥ १ ॥ दीपक मीसे ज्ञाननो, दीपक जो प्रगटायः श्रातम जाणे वि-श्वनो, ज्ञानी निश्चय थाय. ॥ ३ ॥

> जिनपद जगमां याचुं जाणो स्वरूप रमण सुविखासी. ए राग.

धन्य प्रभु महावीर जिनेश्वर, अनंतग्रणा उपकारीजी; जेनुं संप्रित शासन वर्ते, जावद्या भंगारी,
जिनवर भजीएजी; पामी सम्यग्ज्ञान, दीपके यजीएजी. ॥१॥ दर्शनमोह टळ्याथी सम्यग्,—भावे
ज्ञान प्रकाशेजी; मतिश्रुत अवधिने मनपर्यव, केवलज्ञान विकासे. जिन०॥२॥ मति अद्वावीश त्रणसो
चालीश, भेदे वीरे प्रकाश्युंजी; चछद वीश श्रुत जेद
प्रकाश्या, समिकतीने विकास्युं. जिन०॥३॥ अन्वधि असंख्यप्रकारे प्रगटे, मनपर्यव बे भेदेजी;
क्षयोपशमजावे ए चारे, ज्ञान ज तमने छेदे. जिन०

(२५१)

॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाशक केवल, ज्ञान ते व्यापक एकजी; मतिश्रुत दीपकथी प्रभु पूजे, प्रगटे धर्म विवेक. जिन० ॥ ५ ॥ द्रव्य भावश्री दीपक पूजा, यही यतिने अधिकारेजो; बुद्धिसागर त्रातमशुद्धि, निश्चयने व्यवहारे. जिन०॥ ६ ॥

🅉 हूँ। श्री० परमण दीपं यजामहे स्वाहा.

षष्टी स्वस्तिकपूजा॥

स्वस्तिक प्रभुनी खागळे, करतां स्वस्ति थाय: द्रव्यभाव स्वस्तिक करे, जव्यो शिवपद पाय ॥१॥ चतुर्गतिरूप साथीयो, करीने मागो एम: सिद्ध शिला-नी उपरे, शिवस्थानक सुखक्षेम ॥ २ ॥ चारकषायथी चउगित, कोधां भ्रमण स्रमंतः स्वस्तिक करी प्रभु आगळे, पामो शिवपद संत ॥ ३ ॥

> विमलाचलवासो मारा व्हाला सेवकने विसारो नहीं विसारो नहीं. ए राग.

महावीर जिनेश्वर पाये पठुं, तुजरूप बनुं रूप-बतुं; समभावे रही एकरूप बनी उपयोगे भणुं योगे

(२५२)

जणुं: चतुर्गतिरूप खस्तिक आगळ, दर्शन ज्ञानचा-रित्र; त्रण्य पुंजने सिद्ध शिखापर, मुक्तिनुं चिह्न पवित्र; प्रभुतुजरूप. म० ॥ १ ॥ चारे सामायिक स्वस्तिकथी, रत्नत्रयीज पमायः तेथी सिद्धशिला-पर मुक्ति, भक्तयोगी झट प्राय. प्रभु तुज. म० ॥२॥ चारे प्रकारे संघनो स्वस्तिक, संगलस्य सदाय. पा-मी त्रिपदी ज्ञान करीने जक्तयोगी शिवपाय. प्रभु. मण ॥ ३ ॥ चार महायम स्वस्तिकरूपी, त्रण ग्रित जे पाय: पूरण आत्मसमाधि पामी, पूर्ण सुखी झट थाय. प्रभु. म० ॥ ४ ॥ त्राध्यात्मिक संकेते ज्ञानी, अभुने पूजो एम; बुद्धिसागर क्षायिक जावे, पामे योगने क्षेम. प्रभुतुज. मण ॥ ५ ॥

ॐ ह्वा अाँ परम० स्वस्तिकं यजामहे स्वाहा॥

सप्तमी नैवेचपूजा.

दुहा.

द्रव्यभाव नैवेद्यथी, प्रभुने पूजे जेह; प्रभु स्व-रुपे थे रहे, देह बता वैदेह. ॥ १॥ अनुभवनैवेद्ये

(२५३)

भली, आतम पुष्टि थाय; आत्मरसी आतम बनी, बाह्यरित निह थाय. ॥२॥ जडरस नैवेद्य मूकीने, आतमरस नैवेद्य; पामवुं ते प्रभु पूजना, तेथी रहे निह वेद.॥३॥

व्हाला वीर जिनेश्वर जन्म जरा निवारजोरे. ए राग.

व्हाला खातम वीर जिनेश्वर पूर्जु भावधीरे, सहेजे आनंदनैवेदो पूजु गुणदावधीरे; आतम रस प्रगटातो ज्यारे, बाह्यमां रसनी च्रांति न त्यारे; जडमां बंध न मुक्ति सहजजाव उपयोगथोरे. व्हाला. सहेजे ।। १ ॥ तुजरसमां रंगाया जेळा, पछीथी नहि जडरसिया तेओ; एवी नैवेद्य पूजाए पूजुं उमंगथीरे. व्हाला. सणाशा तुज मुज द्यंतर्जेद ज भागे, स्रातम स्रापस्वरूपे जागे; पढीथी शांति तुष्टि पुष्टि सहज स्वभावथीरे. व्हाला ॥ ३॥ एवी पूजा यातां सारो, प्रगटे आनंद पूर्ण खुमारी; पढीथी दुःख रहे निह जडवस्तुना ऋजावधीरे. व्हाला॰ १। ४ ॥ जीवन्ती प्रभु पूजा एवी, उपयोगे अंतर्मां (२५४)

खेवी; पामे बुद्धिसागर त्यानंद त्यात्मस्वभावशीरे. व्हाखा ॥ ५॥

👺 ह्वी श्री० य० नेेेेेेेेेेेेेेेेेे यजामहे स्वाहा ॥

अष्टमी फलपूजा.

मुक्ति फलने पामवा, फलथी पूजुं देव; फलथी फल निश्चय मळे, नासे मोहनी टेव. ॥ १ ॥ द्रव्यभाव वे भेदथी, निश्चयने व्यवहार, सापेक्षे फल पूजना, उपयोगे सुलकार. ॥ २ ॥ विनयने बहुमान्यी, श्रद्धा प्रीतियोग; फलपूजा जिनराजनी, करतां शिवसंयोग. ॥ ३ ॥

उत्तम फखपूजा कीजे, ए राग.

धन्य महावीर उपकारी, त्रिशलानंद जयकारी; सिद्धारथकुलमनेहारीरे, लगनी तुज साथे लागी. भाग्य दशा पूरण जागीरे॥ लगनी ॥ तुजरूपे थइयो रागीरे. लगनी ॥ १ ॥ पूरणरागे घट धार्यों, नाठो मोह घणुं हार्यों; महं न हवे कोथी मार्योरे.

(२५५)

खगनी. ॥२॥ फलपूजा करतां भावे, उपयोगे शिवफल पावे: भक्ति नकामी निह जावेरे. लगनी. ॥३॥ समिकतोनी सहु करणी, मोक्तमहेलनी निःसरणी; पूजादिक निर्जर वरणीरे. लगनी.॥४॥ तुज श्रद्धा प्रीति साची, जडनी माया सहु काची; माची रह्यो तुजमां राचीरें लगनी.॥४॥ निष्कामें सेवाजिक, करतां प्रभु प्रगटे शक्ति; बुद्धिसागर प्रभुव्यक्तिरे. लगनी.॥६॥

कलश.

गायो गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो, त्रिश-लानंदन शासन नायक; परमेश्वर जगरायो; ऋष्टप्र-कारो पूजा रचीने, जावधी गायो ध्यायोरे. महा-वीर. ॥ १ ॥ चउनिक्षेपे सातनयोथो, पूजा पूज्यने जाणी; द्रव्यने भावधी पूजा करतां, पामे मुक्ति निशानीरे ॥ महावीर. ॥ २ ॥ सम्यग् दृष्टिने द्रव्य-ने भावधी, पूजा शिवसुखकारी; चढतेभावे निर्जरा-

(२५६)

कारी, मुक्ति अनुजनधारीरे. महानीर. ॥ ३ ॥ जक्तः जनो भक्तिरस पावे, भावे ते चित्तलावे; जिक्तथी चित्त शुद्धिने ज्ञाने, क्षणमां मुक्ति सुहावेरे. महावीर. ॥ ४ ॥ श्रद्धा प्रीति सेवाजाक्ति, करनारां नरनारी; निश्चयमुक्ति पद्ने पामे, उपयोगे ग्रणधारीरे. महा-वीर. ॥ ५ ॥ वीरजिनेश्वर । इ परंपर, तपगच्छी सूरिराया; जगगुरु हीर विजय सूरि मोटा, नरपति-सुरपति गायारे. म. ॥ ६ ॥ पष्टपरंपर सागर शाखे, रविसरखा गुरुराया. रविसागर गुरु पूर्णप्रतापो, जार-तसंत सुहायारे. म. ॥ ७ ॥ तस शिष्य संवेगी मुनिशेखर, सुखसागर ग्रहराया; तास कृपाए पूजा रचीने, ऋानंद अतिशय पायारे. म. ॥ ८ ॥ ओग-णिश अठ्योत्तर चैत्रीसुदि, नवमीने गुरुवारे; विजा-पुरमां चढता पहोरे, पूजा रची प्रजुप्यारेरे. महा-वीर. ॥ ए ॥ प्रभुमय मनवच काया थाशो, भक्तिगुण प्रगटाशो; शुद्धातम महावीरोपयोगे, आयु एम व-हाशोरे. म.ा। १० ॥ अनुत्रव आनंद प्रगटयो न

(२५७)

छूपे, छूपे न जानु छूपायो; बुद्धिसागर ख्रानंद मंगल, ख्रातम तेजे सुहायोरे. म. ॥ ११ ॥

अ प. महावीर जिनेन्द्राय फलं य. स्वा.

महाग्रुरु श्री रिवसागर गुरुपूजा. प्रथम सहुरु संगति जखपूजा.

परमेश्वर महावीर जिन, चोवीशमा जिनदेव;
परमबद्धा परमातमा, तीर्थकर करुं सेव. ॥१॥ गणधर गुणवंता गुरु, श्री सुधर्म प्रधान; गणधर पद परंपरा, श्वेतांवर गुणवान्. ॥२॥ वडगह्यथी तपगहानी,
परंपरा वर्ताय; जगगुरु हीरविजयसूरि, थया महागुरु राय. ॥ ३ ॥ विद्यासागर मुनिवरा, सहज सागर मुनिराज; पट परंपर शोभता, संवेगी शिरताज.
॥ ४ ॥ नेमिसागर मुनिवरा, व्रताचार गुणवंत; तास
शिष्य गुण गणधरा, रविसागरजी संत. ॥ ५ ॥ गुरु
पूजा रचु जावथी, मुनि परमेष्ठी जेह; गुणी गुण
गातां जावतां, पवित्र मनवच देह. ॥ ६ ॥

(२५८)

॥ मेतारज मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार.॥

मरुदेशे शुभ पाली नगरे, श्रावक कुलमांही चंद; श्रेष्टी राघवजी गुणवंता, पत्नी माणिक गुण-वंत: तस क्रखे जन्म्या रवचंद पुत्र उदार.॥१॥ अनंत पुण्ये श्रावक कुलमां, जन्म जवोनो थाय; ब्यनंत पुण्ये संत समागम, धर्मरुचि प्रगटाय: श्री जैन धर्मनो जगमां छे आधार. ॥२॥ मात पितानी साथे ब्याव्या, आजीविका हेत; नेमिसागर गुरुजी मळिया, पूर्व पुण्य संकेत; शुभ साधु संगति भवी जीवने हितकार. ॥ ३॥ साधु संगे देवगुरुने, धर्मनी श्रद्धा थाय; मिथ्या बुद्धि झट टळेने, सत्यबुद्धि प्रग-टाय. शुज. ॥ ४ ॥ गुरु सेवा भक्ति करेजी, विनय धरी बहुमान; बुद्धिसागर सद्युरु संगे, प्रगटे कोटि कस्याण. शुभ०॥ ५॥

🎉 ह्वाँ श्रौ ग्रहपद पूजाय जलं. य. स्वाहा ॥

(२५९)

द्वितीया चंदन पूजा गुरुमुख आगमश्रवण. दुहा.

गुरुपासे नित्य सांभळे, ख्रागम शास्त्र प्रमाण; जिनवर वाणी सांभळे, प्रगटे मतिश्चतज्ञान. ॥१॥ पुखलवइ विजय जयोरे ए राग.

विनय अने बहुमानधारे, करी गुरुनी सेव; जे गुरुवाणी सांभळेरे, ते पामे शिवमेवरे भविका; सुणजो गुरुगमशास्त्र. ॥ १ ॥ गुरुमुखे त्र्यागम सां-भळेरे, ते धन्य धन्य नरनार; धर्मशास्त्रना बोधथीरे, सफल मनु अवताररे. ज० ॥ २ ॥ गुरुसेवा जिक्क बळेरे, सम्यग् प्रकटे ज्ञान; नगुरा नास्तिक प्राणि-यारे, धारे दिख अज्ञानरे. ज० ॥ ३ ॥ गोतार्थ गुरु-गमवंडरे, विघटे मिथ्याबुद्धिः, वैयावची प्रेमथोरे, करतो हृदयनी शुद्धिरे. जा ॥ १ ॥ गुरुमुखे तत्त्वने सांभळेरे, ज्ञाननी वृद्धि थाय; गुरुश्रद्धा प्रीतिबळेरे, सवळुं सह प्रणमायरे. जा ॥ ५ ॥ गुरुमुखथी शास्त्रो सुणीरे, पाम्या रवचंद् ज्ञान; देवग्रुरुने धर्मनीरे,श्रद्धा

(२६०)

प्रगटी प्रमाणरे. भ०॥६॥ नयगम भंग प्रमाण-थीरे, खातम ज्ञान सुहाय; बुद्धिसागर गुरुमुखेरे, धर्म सुणे शिव थायरे. भ०॥७॥

🕉 ह्वी श्री खागम श्रवणार्थे गुरुपद भक्तये चंदनं.

य० स्वाहा ॥

सम्यक्त्वयहणरूपा तृतीया पुष्पपूजा.

गुरु द्यागम व्यालंबने, समिकत श्रद्धा थायः उपराम क्षयोपराम तथा, क्षायिक घट प्रगटाय. ॥ १॥ व्यवहारे समिकतित्तणां, कारण जेह गणायः ते अवलंब्या भिवजना, समिकत भाव सुहाय.॥२॥ समिकित पाम्यो आतमा, कर्मोद्ये जटकायः उच्च नीच जव पामतो, अंते मुक्ति पाय.॥ ३॥

कानुको न जाणे मारी प्रीत. ए राग.

समिकत पामो नरने नार, ग्रुरुमुख बोध ग्रही-नेरे. समिकता देवगुरुपर रुचि, समिकत प्रगटचां थावे; प्रगटे पूर्ण श्रद्धा प्रेम, ब्रह्मनो बोध वहीनेरे.

(२६१)

समकितव ॥ १ ॥ द्रव्यथी भाव जे खावे, व्यवहारे निश्चय थावे; कारणयोगे कार्य सधाय, त्यातमधर्म स्वजावेरे. सम्कितः ॥ २ ॥ सम्यग्जावे जाणे, सम-किती खातमज्ञाने; आस्रव हेतु जेने थाय, संवर-भावे सुतानेरे. समकितः ॥ ३ ॥ मिथ्याशास्त्रो सवळां, कोइ न थातां ख्रवळां; सम्यगृदृष्टियोगे हेतु,-सर्वे थाता सबळारे. समकित० ॥ ४ ॥ सम-कितमां छे शक्ति, प्रगटावे केवल व्यक्ति: जडमां प्रगटयो मोह विजाव, टाळे झट खासक्तिरे. सम-कितः ॥ ५ ॥ सद्गुरु संगे प्रगटे, मिथ्याबुद्धि झट विघटे; नगुरा नास्तिक मूढालोक, मिथ्याज्ञाने भ-टकेरे. समकित्र ॥ ६ ॥ नेमिसागरजी बोधे, रव-चंद तन्त्रो शोधे: पाम्या द्रव्यजाव समकित, मोहनी वृत्ति रोधेरे. समिकत् ॥ ७ ॥ व्यवहारे समिकत यहियुं, त्यांतर जावे वाहियुं सम्यग् दृष्टिए ऋध्यात्म-रूपज द्यांतर लहियुरे. समिकति ॥ ८ ॥ देवग्ररुपर भाक्त, धर्मनी साची प्रीति; बुद्धिसागर गुण सम्य-क्त, प्रगटे धर्मनी रीतिरे. समकित. ॥ ९ ॥

(२६२)

देशविरति व्रतब्रहणुरूपा चतुर्थी धूपपूजा.

समिकत परिणित बलवडे, विरित प्रगटे खास; विरितिथी होय निर्जरा, कर्मक्षये शिववास. ॥ १ ॥ समिकतवण व्रततपवडे, मळे न साचीमुक्ति; सम्य गृदृष्टिजीवनी, सफळी सर्व प्रवृत्ति. ॥ १ ॥ समिकत योगे उपजे, मनमां विरितभाव; भावविरित, सम-कितीने, प्रगटे निमित्तदाव ॥ ३ ॥

सांभळशो मुनि संयमरागे ए राग.

श्रावकव्रतनी छे बिलहारी, धर्मीने हितकारीरे; ग्रुरुपासे उचरी नरनारी, पामे भवोद्धि पारीरे. श्रावक. ॥ १ ॥ पंचमगुण स्थानक देशविरति, देश उपाधि हठावेरे; जे जे श्रंशे निरुपाधिकता, ते श्रंशे सुख थावेरे. श्रावक. ॥ २ ॥ सम्यग्दृष्टिने व्रताकि रिया, मुक्तिहेते थावेरे; समिकतद्यक गुरुजिक्ए, मुक्ति अनुभव श्रावेरे. श्रावक. ॥ ३ ॥ नेमिसागर गुरुनी पासे, रवचंद भावे रहियारे; श्रावकनां व्रत

(२६३)

बारे बहियां, शुजभावे गहगिह यारे. श्रावक. ॥ ४॥ पडावइयक भावे साधे, गुरुने मुनि ब्याराधेरे; चढता जावे निशदिन वाधे, प्रगट्या गुण न विराधेरे. श्रावक. ॥ ५॥ देवगुरुने धर्मनी सेवा, करता मुनि व्रत इच्छारे; गुरुने विनवे ब्यापो मुझने, सर्व विरित्ति होकारे. श्रावक. ॥ ६॥ सर्व विरित्त होवानी इच्छा, श्रावकने होय नक्कोरे; बुद्धिसागर ब्यातमब-ळथी, पामे दोक्षा पक्कीरे.

ॐ हैं। श्रें। अईसद्गुरुभक्तये, धूपं. य. स्वाहा ॥

पंचमहात्रत सर्वविरतियहण्रूपा पंचमोद्रोपपूजा.

देशथी सर्वविरितिविषे, अनंती खातमशुद्धि, प्रगटे आत्मानंदता, क्षयोपशमगुणऋद्धि. ॥ १ ॥ छडागुणस्थानकतणो, क्रिया द्रव्य चारित्र; भावथो विरितिपरिणिति, प्रगटे आत्मपवित्र. ॥ २ ॥ ग्रहस्थ-थको त्यागी मुनि, छनंतगुण छे महान्; व्या सर्षपने सुरगिरि, चारित्रगुण बलवान् ॥ ३ ॥ व्यव- (२६४)

हारे मुनिसद्गुरु, जैनागम्यी प्रमाण; सर्वविरति चारित्रथी, प्रगटे केवलज्ञान. ॥ ४ ॥ द्रव्यन्नाव चा-रित्रनी, इच्छा जेने होय; समकिती देशविरति. भावथको ते जोय. ॥५॥ गृहस्यभावे भावना, मुनि पद लेवा काज; अवसर बल प्रगटे तदा, दीका ले शिवसाज. ॥ ६ ॥

सिद्धिएनमो सिद्ध श्रमंता, ए राग.

धन्य धन्य मुनि अनगारी, सर्वविरति चारित्र थारी; जेह सर्वजीव उपकारोरे, संयमी गुरुजी नमो गुणकारी. नमो आतम उपयोग धारीरे, संयमी. ॥१॥ द्रव्यने जावयो हिंसाटाळे; जेह उत्सर्ग ऋव-वादे चाले, सत्य वदता अस्तेयने पाळेरे. संयमो. ॥ २ ॥ द्रव्यजाव ब्रह्मचर्यनाधारी, नवविध परिग्रहना जे निवारी, रात्री भोजनना परिहारोरे. सं. ॥ ३ ॥ चारित्र एवं धरे व्यवहारे, निश्चयथी निज उपयोग म्हाले, नेमिसागर गुरु कलिकालेरे. संयमी. ॥ ४ ॥ संवत ओगाणिसे सातनी साले, मौन एकादशो

(२६५)

शुभवारे, गुरुपासे दीका बही म्हालेरे. सं. ॥ ५॥ नाम थापियुं रिवसागर मुनिराया, गुरुराजना निश-दिन सेवे पाया, बुद्धिसागर गुरु गुण गायारे. संयमी. ॥ ६॥

🕉 है। श्री अँहींगुरुपूजार्थ दीपं. य. स्वाहा.



गुरु कुलवास वैयावृत्य विनय करणरूपा. ॥ उठो अक्ततपूजा ॥

गुरुकुल वासी गुरुवरा, पामे जगमां मान; ए-कल विहारोने नहिं, तप संयम जप ध्यान. ॥ १ ॥ गुरुपासां जे सेवता, रही गुरुनी पास; शिष्य धर्म जे पालता, बनी गुरुना दास. ॥ २ ॥ गुरुकुलवास रह्या मुनि, संयममां स्थिर थाय; बहुश्रुत अनुभव पा-मता, ज्रष्टपणुं नहि पाय. ॥ ३ ॥

जवि तुम वंदोरे सातमुं पद भळुंरे. ए राग.

गुरुकुल वासीरे मुनि गुरुवंदतांरे, ख्यातम ग्रुद्धि थाय: गुरुने स्वार्पणभावे जे सेवतारे, स्वर्ग अने शिव

(२६६)

पाय. गुरु ॥ १ ॥ आचारांगने दश वैकाखिकेरे, गुरु कुल वास वखाण; उत्तराध्ययने वैयावच्चोनोरे, पडतो थाय न जाण. गुरु० ॥ २ ॥ गुरु वैयावच योगे गुण वधेरे, गुण प्रगद्या नहि जाय; गुरुना विनय अने बहुमानघोरे, मति श्रुत वृद्धि थाय. ग्रुरु ॥ ३ ॥ ग्रुरुनी आपी शिक्षाओं महेरे, ग्रुरु आशय सह जा-णः; अवळामांची पण सवळुं घहेरे, समतादिक गुण खाण. ग्रुरु ॥ ४ ॥ स्थातम उपयोगे करणी करेरे, चढता भावे सदाय; गुरु ब्याज्ञामां अर्पाइ जतोरे, गुरुपर श्रद्धा प्यार. गुरु० ॥ ५ ॥ द्रव्यने गुण पर्या-यथी आतमारे, नयथी जाणे तन्त्र; आतम शुद्ध स्वरूपे परिणमेरे, पामे उत्तम सन्त्र. गुरु० ॥ ६ ॥ गुरुनी श्रद्धा प्रीतियोगधीरे, प्रगटे त्र्यातमज्ञान; स्वाभाविक ए जगमां कायदोरे, पाळे ते गुणवान्. गुरु. ॥ ७ ॥ नेमिसागर गुरुनो पासमारे, रविसागर मुनिराज; रहीने गुरुनी सेवाजिकथीरे, साध्यां आ-तम काज. ग्ररु० ॥ ८ ॥ ग्ररु आज्ञामां धर्मने जाणी

(२६७)

नेरे, साधे आतम धर्म; बुद्धिसागर गुरुनी महेरथीरे, प्रगटे मुक्तिशर्म. गुरु० ॥ ९ ॥

> ॐ० गुरुपद्पूजार्थे ख्रक्षतं य० स्वाहा ॥ सप्तमी चारित्राराधनरूपा नैवेद्यपूजा

दोहरा.

गुरु आज्ञाए वर्ततां, संयमयोग सधाय; आस्न-वना पण हेतुओ, संवर हेतु थाय.॥१॥ आतमना उपयोगथी, कर्मोदयमां धर्म; थातो निश्चयभावथी, करतां बाहिर कर्म.॥२॥ आतमगुणमां रमणता, ते चारित्र सुहाय; आत्मरमणता कारणा, ज्ञानोने सहु थाय.॥३॥

तेजे तरणिथो वमोरे. ए राग.

ग्राम नगर पुर विचरतारे, पाळे पंचाचार; चा-रित्र लहीने पाळवुंरे, शूरानो व्यवहार हो. जगमां, चारित्र पाळवुं दोहिलुंरे. ॥ १ ॥ गुर्जर सोरठ देश-मांरे, विचरे दे लपदेश; तप तपता जणे आगमोरे,

(२६८)

सहे परिषद्द ने क्लेश हो. जगमां चा • ॥ २ ॥ नेमि सागर ग्रुरुवरेरे, निजपहे गुणी जाणु; थाप्या रवि-सागर गुरुरे, सर्व समय सावधान हो. जगमां चा० ॥ ३ ॥ धर्मकिया योगी मुनिवरारे, सागरवर गंभोर; सिंहनो पेठे पराकमीरे, मेरुपेठे धोर हो. जगमां चा० ॥ ४ ॥ मूळ उत्तर चारित्रनोरे, धरता शुभ व्यवहार; धर्म प्रभावना बहु करेरे, सुधरावे आचार हो. जगमां चा० ॥ ५ ॥ कहेणी रहेणी जेहनीरे, सरखो मुनि शिरदार; ते काखना मुनिवृन्दमांरे; उ त्कृष्टा अनगार हो. ज० चा०॥ ६ ॥ भावसागरजी नामनारे, शिष्य कर्या अनगार; बीजा सुखसागर कर्यारे, समता गुणभंडार हो. ज॰ चाण ॥ ७ ॥ जाणे गुरुनुं सद्भ गुरुरे, गुरुथी जेह अजिन्न; बुद्धिसा-गर सद्गुरुरे, समभावे खयखीन हो. ज० चा० ॥।।।।

ॐ० गुरुपदपूजार्थ नैवेद्यं य० स्वाहा० ॥ ऋष्टमी ध्यानसमाधिरूपा फलपूजा.

ध्यान समाधि योगथी, प्रगटे सहजानन्द; स-हजानन्दने पामवा, धर्म प्रवृत्ति वृन्द. ॥ १ ॥ दर्शन

(२६९)

ज्ञानने चरणमां, वर्ते सहज समाधि; आतम आन-न्दफलतणा, स्वादे रहे निह आधि. ॥ २ ॥ आतम आनन्द पामवा, ध्यान समाधि योग; उपादान कारण कह्युं, निमित्त गुरु संयोग. ॥ ३ ॥

जिनपद जगमां जाचुं जाणो-ए राग.

सर्व विरित्धर गुरु जयकारी, नमुं पूजुं उपकारीजी, समिकत चारित्रदायक गुरुनी, जगमां छे
बिहारी; गुरुजी जजीए जी, पामी गुरु छपदेश,
मोहने तजीए जो ॥१॥ आर्त रीद्रने प्रगटयां त्यागे,
धर्मध्यानमां जागेजी; वर्ते आतमगुण उपयोगे,
जे वैराग्ये. गुरु०॥ २॥ वर्ते आतमगुण उपयोगे,
आतम आनंदभोगेजी; दिलमां रहे निह हर्षे
शोके, क्षण न रहे जे ढोंगे. गुरु०॥ ३॥ आतमनाः
उपयोगे म्हाले, आतम गुण अजुवाळेजी; मोहासकिनां बी बाळे, चारित्र एवं पाळे. गुरु०॥ ४॥
ध्यानसमाधि योगे रमता, मोहवने निह भमताजी;

(२७०)

सर्व कार्य करंतां समता, ज्ञाने मोहने दुमता. गुरू ॥ ५ ॥ क्षयोपशम आनंदने पामे, ख्रांतरमां विश्रामे जी: निश्चय ठरता खनुभव ठामे, पडे न मिथ्या भामे: गुरु. ॥ ६ ॥ त्यातम सुख फल पूजाए जे, परम प्रभुने पूजेजी, गुरु रविसागर गुरु सुखसागर, पूजंतां मोह ध्रुजे. गुरु. ॥७॥ मेसाणामां वृद्धपणामां, रहीने ब्यातमध्यावेजी; सुडतालीश वर्षतक संयम, पाळी मोह हठावे. गुरु. ॥८॥ संवत् श्रोग णिशचोपनसाले, वृदि एकाद्शी आवेजी; जेठ मासमां चढ्ता प्रहरे, गुरुजो स्वर्ग सिधावे. गुरु. ॥ ९ ॥ आत्मोपयोगे जड चेतनमां, समजावे परिणामीजी; बुद्धिसागर सद्गुरु चंद्र, अतिजावे शिरनामी. गुरु. ॥ १० ॥

कलश.

गाया गायारे एम गुरुगुण भावथी गाया. नेमि-सागरजो रिवसागरजी, सुखसागरगुरु गाया; द्रव्य-जावथी गुरुपद पूजा, करतां जाव चढायारे. एम. ॥१॥ तपगच्छजगगुरुहीरविजयसूरि, पट परंपरत्याया;

(२७१)

समिकतचारित्र गुण प्रगटाया, आतम अनुजव पायारे. एम. ॥२॥ गुरुने गातां गुरुगुण प्रगटे, निश्चय एह जणाया; ओगणिश अठ्योतर चैतरनी, पूर्णिमा पूजा रचायारे. एम. ॥३ ॥ गुर्जरदेश विजापुरमांही, पूजारची सुखकारो; संघ चतुर्विध मंगलकारो, शांति पृष्टि करनारो रे. एम. ॥ ४ ॥ गुरुने गातां प्रगटी-खुमारी, जतरे ते न उतारी; बुद्धिसागरगुरु जगकारी, पूजो जवी नरनारी रे. एम. ॥ ५ ॥

> श्री सद्गुरु सुल्सागर गुरुपूजा. प्रथम सेवारूप जखपूजा. दोहरा.

प्रणमुं श्री परमातमा, तीर्थंकर महावीर; गौ-तम छादि सूरिवरा, छनेकगुण गंभीर. ॥ १ ॥ श्रेतांबर तपगच्छमां, अनेक मुनि गुणवंत; संप्रति जे जग विचरता, तेमां जत्तम संत. ॥२॥ श्रो सुख-सागर मुनि गुरु, थया जगत् विख्यात; सर्व गच्छ

(२७२)

मुनिवृन्दथी, वखणाया जगन्नात ॥ ३ ॥ ग्रह गातां स्तवतां थकां, पूजंतां सुख थाय; ते कारण ग्रह पूजना, रचतां मुक्ति सुहाय. ॥४॥ ग्रह चरग स्थापी करी, पूजा अष्ट प्रकार; द्रव्य भावथी जे करे, ते तरतां नरनार. ॥ ४॥

मेरु शिखर न्हवरावे हो सुरपति, ए राग.

सद्गुरु जग उपकारी हो, सद्गुणी; सद्गुरु जग जपकारी; समकित चारित्र दायक सद्गुरु, जगमां तुज बिलहारी; सर्वजावे तुजमां अर्पावुं, सद्गुरु सेवा ए सारी हो. सद्गुणी. स•॥१॥ नाम रूपनो मोह निवारी, खातम जाव समारी; व्हालुं सहु तुज उपरे वारो, सेवा करं सुखकारी हो. स०॥ २॥ प॰ वित्र सेवा जलची पूजुं, तुज चरण उपकारी; पुष्ट निमित्त गुरुजी किलकाले, खातम ग्रुद्धिकारी हो. स०॥ ३॥ कुंजे बांध्युं वारि रहे पण, घटवण होय न पाणी; ज्ञाने मनवश पण गुरु मळतां, ज्ञान प्रगट

(२७३)

गुणलाणी हो. स० ॥ ४ ॥ गुरुजी मळिया फेरा ट॰ ळिया, गुरुतेवामां हाळिया; सुखसागर गुरु पूजा करतां, बुद्धि वंछित फाळियां हो. स० ॥ ५ ॥ ॐ अई श्री सद्गुरु चरण पूजार्थ जलं. य. स्वाहा.॥

द्वितीया गुरु समतारूपा चंदनपूजा.

आतमने शीतल करे, समता चंदन मान; स-मता चंदन पामीने, पूजुं गुरु ग्रुणलाण. ॥ १ ॥ भव-दव ताप शमाववा, समता चंदन वेश; गुरु हृद्यमां जो वसे, तो प्रगटे निह क्लेश. ॥ २ ॥

धुवपद गोडी राग.

लगनी श्री सद्गुच्थी लागी, त्रांति त्रमणा भा-गीरे; रंगायो रागी थे रंगे, जोयुं हवे घट जागीरे. लगनी० ॥ १ ॥ मुख्थी महावीर जाप जपंता, त्रा-तमना जपयोगीरे. सरल हृद्यने समता गुणमय, भासक निजगुणजोगीरे. लगनी० ॥ २ ॥ प्रेमो थेने परस्या पूरा, निश्चय निर्मलनुरारे; सत्ताए पर-१८

(२७४)

मातम सद्गुरु, संयमपाखन शूरारे. खगनी० ॥३॥ आतमअसंख्यप्रदेशे समता, चंदनपूजा करतारे, बुद्धिसागर आतम सद्गुरु, पामी जवी शिव वर-तारे. खगनी. ॥ ४ ॥

ॐ ह्वी श्रो ऋहं सद्गुरू चरणपूजार्थ चंदनं, यजामहे स्वाहा॥

तृतीया गुन्गुणराग प्रहण्रूपा पुष्पपूजा.

सद्गुरु गुणरागी बनी, गुरुगुणनो फेलाव; करी ए विनयने मानथी, एछे पूजनल्हाव. ॥१॥ गुरु-रागे गुण संपजे, गुरु निंदे गुण जाय; गुरुनी श्रद्धा श्रीतिथी, गुरुना गुण बहवाय. ॥२॥ गुरुनी श्रद्धा श्रीतिथी, गुरुनो बोध बहाय; सेवा जिक्क संपजे, सगुराने समजाय. ॥३॥

निशानी कहा बतावुरे-राग.

गुरुनी करुणा सारो रे, जेथी यतो रंक राय. गुरुनी. गुरु करुणा गुरु रागथीरे, तनमन अर्प्ये प्राण; जेओ प्रभुपद पामियारे, गुरु कृपा त्यां जाण. गुरु.॥१॥

(२७५)

गुरुनी रीझमां विश्वनी रे. खोज न गणवी खगार: गुरुरागे रंगाइयारे, ते धन्य धन्य नरनार. गुरु. ॥२॥ नगुरा नास्तिक लोकथीरे, जेह नहीं भरमाय; शिर-न्नाटे गुरु सेवनारे. पामे करुणा सहाय. गुरु. ॥ ३ ॥ गुरु कृपा ते जन छहेरे, गुरुह्रप थे जाय; निष्कामी थे गुरु जजेरे, गुरुथी अलगो न घाय. गुरु. ॥४॥ गुरुरागी गुरुगुण यहीरे, सुखसागर महाराज; गुरुगुणप्रेमसु पुष्पथीरे, पूजे शिव साम्राज्य. गुरु. ॥ ५ ॥ द्रव्यभाव गुरु रागियारे, करता त्यातमश्रुद्धि; बुद्धिसागर त्यात-मारे, छाविभीवे ऋद्धि. गुरु. ॥ ६ ॥

ॐ ह्वी ऋँह सद्गुरूपद पूजार्थ पुष्पं यजामहे स्वाहा॥

चतुर्थी गुरुनाम मंत्रजापरूप धूपपूजा.

सद्गुब्नामने स्थापना. द्रव्यभाव निक्षेप; साचा ते अवलंबतां, रहे न कर्मनो रेख. ॥ १॥ सद्गुरु नामना जापथी, मोह न आवे पास; प्रभु महावीर नामना, जापे सद्गुण वास. ॥ २ ॥ सद्गुरू, नामना

(२७६)

जापथी, स्थातमशुद्धि याय; द्रव्यभावयी धूपनी, पूजा छे शिवदाय.॥ ३॥

सारंगराग.

रीझीए रीझीए रीझीए, गुरुनाम जपो दिल रीझीए: ग्रुरुसंगी रसिया थै रागे. ऋातमरसने पीजीए. गुरु ॥ १ ॥ गुरुना द्वेषी नास्तिकजननी, संगति क्यारे न कीजीए: ग्रुरुना रागी भक्तनी संगे, आत-मरसने सीजीए. गुरु. ॥२॥ समकिती चारित्री गुरु-पर, शंकादि न धरीजीए: कडवी शिक्षा अमृतसरखी. मानी क्यारे न खीजीए. ग्रन्थ ॥ ३॥ आतम सर्वे गुरुने निवेदी, गुरुभक्तिरस पीजीए; गुरुनिन्दक प्रति-पक्षी वसन्पर, विश्वास क्यारे न दीजीए. ग्रह. ॥४॥ गुरुनाम जापनी धूपपूजाथी, दुर्गधमोह हरीजीए: बुद्धिसागरसद्गुरुजापे, प्रभुपद सहेजे वरीजीए. गुरु० ॥ ५ ॥

ॐ हैं। श्री श्रॅंई गुरुपद पूजार्थ धूपं यजामहे स्वाहा.॥

(२७७)

पंचमी गुरुगम ज्ञानरूप दीपकपूजा.

गुरुथी ज्ञान प्रकाश छे, गुरुवण छे ख्रज्ञान; गुरु-गम वण शास्त्रो भणे, थाय न सम्यग्ज्ञान. ॥ १ ॥ जैनागम शास्त्रो सकल, गुरुगमथी समजाय; गुरुनी सेवा जित्तिथी, सवलुं सहु प्रणमाय. ॥ २ ॥ नयगम भंग निक्षेपथी, षड्द्रव्यादिक ज्ञान; गुरुमुखथी श्र-वणे सुणी, करीए प्रगटे सान. ॥ ३ ॥

ध्यानिक्रयां मनमां आणीजे ए राग.

गुरुनी सेवा भक्ति करंतां, सम्यग्ज्ञान लही-जरे; सम्यग् मित श्रुत ज्ञान प्रगटतां, ख्रातमरूपे वहीजेरे; गुरुगम ज्ञान करो नरनारी. ॥ १ ॥ गुरु वि-नये ने गुरु बहुमाने, गुरु ख्राणाने पाळेरे; गुरुमाटे स्वार्षण भक्तिए, प्रगटे ज्ञान सुचालेरे. गुरु. ॥ २ ॥ गुरु कृपाथी सम्यग्दृष्टि, प्रगट सर्व के सवळुरे; गुरु कृपा वण आपमातिने, मिश्यादृष्टिए अवळुरे. गुरु. ॥ ३ ॥ गुरुकृपा प्रगटे एम वर्ते, विनयी जे नर-

(२७८)

नारीरे; परमातमपद वेगे पामी, मुक्ति खहे अवि-कारीरे. गुरु. ॥ ४ ॥ मतिश्चुतथी अविध मनपर्यव, केवलज्ञान प्रकारोरे; गुरुसुखसागर पूर्णकृपाथी, बुद्धिः प्रभुपद पासेरे. गुरु. ॥ ५ ॥

🕉 ऋँह गुरुपद पूजार्थ दीपं यजामहे स्वाहा ॥

षष्टी पंचाचारपालनरूपा अक्षतपूजा.

पंचाचारना अक्षते, अक्षत आतमरूपः पूजी जे बहुप्रेमथी, नासे भवजय धूप० ॥ १ ॥ गुरु चर-णने अक्षते, पूजंतां शिव यायः स्वस्तिक गुरुनी आगले, करती पाप पलाय. ॥ २ ॥ पंचाचारने पाळवा, अक्षतपूजा एहः भावथी पूजा पूज्यनी, प्रगटावे शिवगेह. ॥ ३ ॥

कान्हरो.

अक्षतपूजा आनंदकारी, द्रव्यने भावधी हे जयकारी; दर्शन ज्ञानने चरणाचारी, तप वीर्थे गुरु जग उपकारी. अक्षत. ॥ १ ॥ स्वस्तिक करतां स्व-

(२५९)

स्तिभारी, जयजयग्रह तुज जग बिलहारी; द्रव्यजा-वथी पंचाचारी, उपयोगी ग्रहजी हितकारी. अक्षत. ॥ २ ॥ पंचमहावत पालनकारी, प्रतिबोध्यां बहुलां नरनारी; एकांते ग्रहजी सुखकारी, अंतर ख्रात्मप्रदेश विहारी. अक्षत.॥ ३ ॥ ख्रातम सुखसागर ग्रह्मारी, रोमेरोमे लागी यारी; बुद्धिसागरग्रह ख्रनगारी, आनंद मंगलप्रद ख्रविकारी. अक्षत.॥ ४ ॥

> ॐ अँह महावीरजिनेश्वरपट परंपर प्रवर्तित श्री ग्रहपूजार्थे अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

सप्तमी ध्यानरूपा नैवेचपूजा.

ध्यानरूप नैवेद्यथी, गुरुपूजा करनार; उपशम क्षयोपशम अने, क्षायिकग्रण वरनार.॥१॥ असंख्य प्रदेशी आतमा, प्रतिप्रदेशे अनंत; ग्रुणपर्यायनाष्या-नथो, प्रगटे शिवपदकंत.॥ २॥ बाह्य नैवेद्यना रसवडे, नित्य तृप्ति निह्न थाय; आतमरस नैवेद्यथी, जडरस रुचि विणशाय.॥ ३॥ (260)

जिनदुर्शन मोहनगारा, ए रागनी चाल.

गुरुद्दीन छे सुखकारी, गुरुसंतनी वे बलिहारीरे. गुरु. द्रव्यगुणपर्याय विचारी, ध्यान समाधिधारी; आतमरसियाने अविकारी, गुरुनी गति हे न्यारीरे. गुरु. ॥ १ ॥ स्त्रातम स्रसंख्यप्रदेशविहारी, द्रव्य-जावव्यवहारी: षडावर्यक धर्माचारी, उत्कृष्टा अन गारी रे: गुरु. ॥२॥ अंतरची नहीं जडनीयारी, आतम परिणति प्यारी: क्रियायांगी साचा उपकारी, संत सदा जयकारीरे. गुरु. ॥ ३ ॥ गुरुमूर्ति द्रव्यजावथी प्यारी, शुद्धप्रदेशी सारी; कर्म करे पण निर्वध भारी, सर्वजीव ऋाधारो रे. गुरु. ॥ ४ ॥ गुरुनी अकलकखा सहु न्यारी, समजे नहि अविचारी; बुद्धिसागर ध्याननुं नैवय-धरतां सुख निर्धारीरे. गुरु. ॥ ५ ॥

ॐ हैं। श्री अहि महावोर परमेश्वर पट परंपर शोभित गुरुपद ध्यानार्थ नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

(२८१)

श्रष्टमी ज्ञानानन्दानुभवरूपा फलपूजा.

आतम आनंद पामीने, जडरस पेलोपार; आ-रमद्शाना अनुभवी, जय जय ग्रुरु सुखकार. ॥ १ ॥ आतम अनुभवफलतणो, आनंदरस छे अनंत; आतमरसो ज्ञानी ग्रुरु, पामे भवनो खंत. ॥ २ ॥ द्रव्यभाव फल पामवा, फलथी पूजे जेह; जक्तशिष्य सुखरस लहे, पमे न पाठो तेह ॥ ३ ॥

निशदिन जोउ त्हारी वाटडी, घेर त्यावोने ढोला.

ए राग.

खातम अनुभव फलवडे, ग्रह पूजीए भावे, द्रव्य थकी भाव संपजे, निज गुण रस आवे. खातम. ॥ १ ॥ संत ग्रहनो पूजना, नहीं निष्फळ जाती; कारणे कार्यनी सिद्धि छे, प्रभुता परखाती. आतम. ॥ २ ॥ गुह हृदयमां छे प्रभु, तेम गुह प्रभु जाणो; ग्रह पूजे प्रभु प्राजिया, श्रद्धा प्रेमे प्रमाणो. आतम.

(२८२)

॥ ३॥ गुरुषी सिद्धता संपजे, गुरु प्रभुने जणावे; निमित्त गुरुषी ख्रात्मनी, गुरुता जवी पावे. ख्रातम. ॥ ४॥ गुरु सेवा भक्तिवमे, षाती हृदयनी शुद्धि; आतम ज्ञान ज संपजे, नवक्षायिक ऋद्धि. आतम. ॥ ५॥ गुरुषी ख्रातमरस मळे, जमरस टळे ज्रांति; गुरुषी ख्रातमरस लह्मो, मळी ख्रातम शांति. ख्रातम. ॥ ६॥ ख्रनुजव फल्ण्यी पूजिया, गुरुजी जयकारी; बुद्धिसागर सद्गुरु, प्रभु विश्वोपकारी. ख्रातम. ॥ ७॥

ॐ ऋँही परमप्रभु परब्रह्मपरमात्ममहावीर तीर्थिकरदेवपट्टपरंपरवार्ति सद्गुरुचरणानुजव फल पूजार्थ फलं, य. स्वाहा ॥

कलश.

गुरु पूजा गाइ गुणकारो, मंगलदायी शिवसुख कारी. गुरु. खाधि व्याधि उपाधिहारो, गुरु पूजायी तरे नरनारी. गुरु. ॥ १ ॥ खोगणिश अट्योतरनी

(२८३)

साले, चैत्र विद बीजने गुरुवारे. गुरु. मधुपुरी (महुडी) मां भक्ति विचारे, पूजा रची शुभ भावविद्याले. गुरु. ॥२॥ गुरु पूजा जे भणे नरनारी, पामो मंगल ऋदि अपारी; घर घर आनंद प्रगटो भारी, गुरु पूजाथी शांति थनारी. गुरु. ॥३॥ गुरु जकोनी चढती थाशो, धर्म कमाणी सस्य कमाशो; गुरुभक्ते दुःखो दूर जाशो, गुरु नामे ए आशी सुहाशो. गुरु. ॥ ४॥ द्रव्यथी भावथी महा उपकारी, श्री सुखसागरजी हित कारी. बुद्धिसागर गुरु बिसहारी, व्हारे आवी बे-डली तारी. गुरु. ॥ ४॥

कलश.

गाइ गाइरे गुरुपूजा जावधी गाइ. ए टेक.

द्रव्य जावथी मुनि गुरुपूजा, आनंद मंगल-दायी; श्रोता वक्ता घर घर मंगल, संघमां शांति वधाइरे. गुरु. ॥ १ ॥ स्रोगणिश अट्योत्तर चैत्रनी, वदि बीजने गुरुवारे; मधुपुरी (महुमी) मांही गुरु

(२८४)

भक्तियी, पूजा रची जवी तारेरे. गुरु ॥२॥ गुरुजिकथी पातिक शापो, आधि व्याधि प्रणाशोः गुरुभक्तिथी संघमां घर घर, मंगल सुखडां प्रकाशोरे. गुरु ॥३॥ गुरुजिकथी जक्तजनोनी, वळशो सुखनी वेळाः गुरु भक्तिथी प्रभुपद पामो, मळशो वांछित मेळारे. गुरु ॥ ॥ ॥ गुरुजिकरिसियां नरनारी, सुखसागर गुरु धारी; बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि—कीर्ति जयपदकारीरे. गुरु. ॥ ५॥

गुरुपूजा भणाववानी विधि.

उपाश्रयमां ख्रगर बीजी जग्याए गुरुनां पगलां स्थापवां;केशरचंदननी बेपादुकाकरवी, अगरचोखानी पण बे पादुका करवी. गुरुनी छबी होयतो ते स्था-पवी, स्नात्र जणाववानी जरूर नथी; जलपूजानो कलश, जलपूजा जणावीने आगल स्थापन करवो. पाषाणधातु ख्रादिनी गुरुमूर्ति होयतो तेनापर जलनो अभिषेक करवो, तथा चंदननी पूजा वगेरे जिनप्र-

(२८५)

तिमानी माफक करवी, पगलां पाषाणनां होयतो ते पर जल अजिषेक तथा चंदन पुष्प वगेरे प्रतिमानी पेठे चढाववां, धृपदीप आगल करवो. पगलां खगर मूर्तिनी आगळ, स्वस्तिक नैवेद्यफलने ढोकवां: केशरचंदननी पादुका करी होयतो तेनी आगळ जल कखशादिक मुकवा. जिनमन्दिरमां गोखखामां गुरु-मूर्ति अगर पादुका होयतो श्रीजिनप्रतिमानो मूळ गजारो बंध करीने गुरु पादुका अगर मूर्ति आगळ पूजाभणाववी, अरिहंत जेम परमेष्ठी हे तेन झाचार्यः उपाध्याय अने मुनि ए त्रण पंचपरमेष्टीमां छे तेथी तेमनी मूर्ति पादुका हे ते जिनमूर्ति वा पादुकानी पेठे पूजवा योग्य छे जे दिवसे सूरिवाचक साधुए देहोत्सर्ग कर्यो होय ते दिवसे गुरुपूजा जणाववी. स्नात्रियाओने जमामवा. तेमने लाडु आदिनी प्र-जावना करवी. पूजामां खावनार सर्वनी प्रभावनाथी भक्ति करवी. शक्ति होयतो जमण पण करवुं. पा-दुका ऋगर मृर्ति आगळ जत्सव करवो. सांजरे

(२८६)

टोळी बेसाडी ग्रहजितनां गायनो स्तवनो गावां. ग्रहनी भक्तिना निमित्ते वर्तमान साधु साध्वीनी सेवा जित्त करवी. ग्रहचरित्रनुं व्याख्यान सांजळवुं, ते निमित्ते धार्मिक पुस्तको छपाववां. ग्रहनो महिमा वधारवो. ग्रहना उपदेशोनुसारे वर्तवुं. ग्रहपादुकानी वा मूर्तिनी सुगंधी पुष्पथी पूजा करवी.



(२८७)

अथ सत्तरनेदी पूजा.

प्रभु महावीर जिनपति, तीर्थंकर जगदेव; श्री जिनवाणी सद्गुरु, प्रणमी करु ग्रुभ सेव. ॥ १ ॥ सत्तरजेदी पूजा जली, द्रव्य जाव सुखकार; श्राव-कने वे जेदथी, यतिने जावथी सार. ॥२॥ आगम शास्त्राधारथो, पूजा भिव हितकार; श्रद्धा प्रीतिभ-किथी, आत्मशुद्धि करनार.॥ ३ ॥

प्रथम न्हवणपूजा.

॥ ध्रुवपदं, गोडीरागेण गीयते ॥

जिनपतिने न्हवरावेहो सुरपति, मेरुशिखर न्ह-वरावेरे; उज्वल शुभ आतमपरिणामे, जिनगुण भावना भावेरे. जिन०॥१॥ प्रभु तुज उपरे श्रद्धा प्रीति, न्हवण पूजा में धारीरे; दुनियानी खीज दूर निवारी, तुज पर जन सहु वारीरे. जिन०॥२॥ तुज भक्तिमां मुज मन प्रणम्युं, तुज रागे रंगायोरे; तुज रागे समकित गुण निश्चय, तन्मयभावे सुहा-

(344)

योरे. जिन० ॥ ३ ॥ गंगादिक निर्मल जल स्नाने, भावथी भक्तिकामेरे; बुद्धिसागर पूजा करतां, आतम निज ग्रुष पामेरे. जिन० ॥ ४ ॥

द्वितीया चंदनविलेपनपूजा.

द्रव्यत्तावथी कीजीए, चंदनपूजा बेश; जावथी समचंदनवमे, पूजे विघटे क्केश. ॥ १॥ धन्याश्री रागेण गीयते.

द्रव्यने भाषधी चंदनपूजा, जिनवरनी जय-काररे; सत्य सुगंधी चूर्ण विलेपन, समता चंदन सा-ररे. द्रव्य•॥१॥ प्रभु नवअंगे चंदन चर्चे, भाव धरी नरनाररे; श्रद्धा प्रीति प्रभुपर वधतां, परपरि-णति परिहाररे. द्रव्य०॥१॥ तुजमां राचुं तुजपर माचुं, जूली दुनिया भानरे; बुद्धिसागर प्रजुमय जी-वन; रंगे थयो गुल्तानरे. द्रव्य०॥१३॥

तृतीया चक्षुर्युगलपुजा.

द्रव्य भावथी चक्षुनी, युगलपूजा सुस्रकार; चढता प्रीति भावथी, करतां शिवसुस्र सार. ॥१॥ (२८९)

दीपचंदी ताल सोरठ.

जिनदर्शन मोहनगारा, ए राग.

तुज मूराति प्रभु !!! मुज व्हाली, आंखे देखी देखी धारीरे. तुज० सम्यग् मित श्रुत चश्च युगलथी, प्रभु पूजा जयकारो; केवल दर्शन ज्ञान प्रगटतां, पूजा पूर्ण प्रकारोरे. तुज० ॥ १ ॥ शब्दनये तुज मूरति प्यारी, देखे तस बलिहारी; नयव्यवहारे स्थापना सारी, जिवजीवने हितकारीरे. तुज० ॥ २ ॥ तुज भक्ति शिवपुरनी बारी, मिध्यामत संहारी, सम्यग् दृष्टिनी करनारी, अनंत कर्म संहारीरे. तुज० ॥३॥ भावथी पूजंतां नरनारी, त्यानंदनी लहे क्यारी; बुद्धिसागर जिनगुण धारी, पूजा छे सुखकारीरे. तुज० ॥ ३॥ तुज० ॥ ३॥

-iother-

चतुर्थी वासपूजा ॥

चंदन घसी घनसारने, मेळवी पुष्प सुवास; वासथकी प्रभु पूजीए, जावथकी विश्वास. ॥ १ ॥

(२९०)

गीत राग-मालवी गोडी.

वासथकी प्रभु पूजा सारी, भक्तजनोने प्यारीरे;
शुणीनी सेवा प्रकट करे गुण, प्रभुगुणनी बिलहारीरे. वास० ॥ १ ॥ समिकत वासे प्रभु पूजंतां,
शुणाण प्रगटे भारीरे; प्रभुगुणवासे वासित आतम,
शुद्धातम निर्धारीरे. वासठ ॥ २ ॥ सर्व विरित्त
संयमगुण वासे, मोहनी प्रगिध नासेरे; समिकतवासे
प्रभु निज पासे, आपोद्याप प्रकाशेरे. वास० ॥ ३ ॥
निमित शुद्ध उपाद्धान वासे, चढतां भाव वधारीरे;
बुद्धिसागर ब्राह्मविकासो, प्रभु पूजी नरनारीरे.
वास० ॥ ४ ॥

पंचमी पुष्पपूजा.
द्रव्यजावसुपुष्पथी, पूजंतां जिनराज;
अंतर द्यातम उह्नसे, प्रगटे प्रभु साम्राज्य.॥॥
प्रभु निर्भल दर्शन कीजीए ए-राग.
सारंगरागेण गीयते.
पूजीए पूजीए पूजीए, जिनसजने प्रेमे पूजीए,

(२९१)

प्रभुगुण अमृत पीजीए, जिनराजने प्रेमे प्रजिए; द्वायथकी ग्रुजगंधी पृष्पे, प्रभुनी पूजा कीजीए, जावथकी व्रतपंचाचारना, पृष्पे पूजीने रोझीए. जिनराजण॥१॥ क्योपशम उपशमने क्षायिक, आतमग्रेणे प्रकटीजीए; व्यातमग्रेण अनुयायी चेतना, प्रगटावी सुख लीजीए. जिनराजण॥१॥ प्रभु तुज्यी मुज खगनी लागी, मुज पर करुणा कोजीए; बुद्धिसागर व्यातम व्यानंद, रसजर प्याता पीजीए. जिनराजण॥३॥

षष्टी पुष्पमासा पूजा.

पुष्पमालथी पूजता, प्रभु गुण प्रकटे खंगः ईयल भमरी ध्यानथी, जमरी पद छहे रंगः ॥१॥ चेतन अब मोहे दरिशन दोजे. ए रागः

प्रभुजी महावीर तुज रह लागी, थयो तुज गुण द्यंतर रागी. प्रजुजी० तुज गुण गणतां पार न आवे, कोटी वर्ष वही जावे; तुज अनुभव झांबी

(२९२)

घट प्रगटे, छानंद जगमां न मावे. प्रभु०॥१॥ आतमग्रण पंच पुष्पनी माला, जात्रथी पूजा प्यारी; जिनपूजा ते छातमपूजा, निश्चयथी सुखकारी. प्रभुजी०॥२॥ छातम द्रव्यना ग्रण पर्याये, छा-स्मोपयोग समारी; बुद्धिसागर छाविर्मावे, प्रभु प्रकटे जयकारी. प्रभुजी०॥३॥

सप्तमो कुसुम द्यांगी रचनारूपपूजा.
देव गुरुने धर्मनो, श्रद्धा भक्ति प्रकार;
कुसुम आंगी पूजाभली, करतां जबी नरनार. १
राग बिरुखो ख्रथवा पीलु ॥
सोवे सोवे सारी रेंन गुमाइ. ए राग.

कुसुम आंगीनी पूजा सारो, द्रव्य भावधी जिंव हितकारी. कु॰ समिकत सड सठ बोल वि-चारी, कुसुमनी आंगी मलपरिहारी. कु॰ ॥१॥ देव गुरूने धर्मनी जिक्त, करतां प्रगटे आतम शक्ति. कु॰ समिकत वण वत तप जप रोति, तेथी टळे निह

(२९३)

भवनो जीति. कु० ॥ २ ॥ तुज श्रागमनी श्रद्धा धारी, तुजपर तन मन जाउ वारी; कु॰ ॥ तुज संतोनी साची यारी, बाकी जूठी दुनियादारी. कु० ॥ ३ ॥ श्रावक साधु गुणगण भारी, जावथी पूजा ए निर्धारी; कु० ॥ बुद्धिसागर भक्ति प्यारी, भाव-थकी शिवसुख देनारो. कु० ॥ ४ ॥

अष्टमो चूर्णपूजा.

घनसारादिक चूर्णथी, जिनपति पूजा एह; भावथी उपराम चूर्णथी, पूजे जिनवर तेह. ॥ १ ॥ ध्रुवपद काफी रागेण गोयते.

प्रभु तुज दर्शननी बिलहारी, दर्शननी बिलिहारी. प्रभु० द्रव्यने जावथी दर्शन पामे, धन्य ते नरने नारी; द्रव्यभाव चूरणथी पूजा, करता तस बिलहारी. प्रभु० ॥१॥ क्रोध मान मायाने लोजनो, उपशम जेटलो थावे; तेटलो प्रभु गुण अनुभव आवे, समिकतीने ए सुहावे. प्रभु० ॥ २ ॥ आनंद

(388)

जाननी प्रकट प्रभुता, प्रज्ञ भक्ति तेह सावे; क्षयो प्रमम उपग्रसना भाने, प्रगटे अनुजन आहे. प्रज्ञ० ॥३॥ सातनयाथी दुर्शन पूजा, सेना साची जाणी; मुद्धिसागर प्रभुनी पूजा, ख्रापोआप प्रमाणी. प्रभु०॥ ४॥

नवमी ध्वजपूजाः

द्रव्यभाव वे भेद्थी, ध्वजपूजा सुखकार; ध्व-जथी जिनवर पूजतां, भक्ति वधे जयकार. ॥ १ ॥ नसुं रविसामर ग्रुरु राया,

जिन शासन जय बर्ताया. ए राग.

घन घटा भुवन रंग छाया. ए राग.

ध्वजपूजा हे जयकारी, जिन शासन शोभा कारी. ध्वज ॥ प्रभु धर्मने जग फेंटावे, ध्वज पूजा भावना दावे; जाणे तेनी बिखहारी. ध्वज० जिन० ॥ १ ॥ जे थया प्रजावक सारा, तेणे प्रभु पूज्या प्यारा; ध्वज पूजा एहवी धारी, ध्वज. जि० ॥ २ ॥

(२९५)

(जन शासन जे शोजावे, ते भावथी पूजा पावे, प्रशु भक्तनी हे बिलहारी. ध्वज० ॥ ३ ॥ प्रभु पूजाथी प्रभु प्रगटे, चढता भावे मल विघटे; बुद्धिसागर सुसकारी. ध्वज. ॥ ४ ॥

दशमी ऋाज्रवणपूजा.

द्रौपदीने सूर्याभनी, पेठे पूजे जेह; द्रव्यथी भावना पूजना, निश्चय पामे तेह.

श्री श्रेयांसजिन अंतरजामी. ए राग.

श्री जिनवरनी पूजा प्यारी, सुख आपे निर्धार्थ रीरे; द्रव्यभावथी पूजा सारी, करतां नरने नारीरे श्री० ॥ १ ॥ नयनिक्षेपे पूजा विचारी, सम्यग्र हिष्ट धारीरे; द्रव्यजाव पूजा श्राचारी, हठ कदावह वारीरे. श्री० ॥ २ ॥ बारने चार ठे जावना भूषण, निश्चयने व्यवहारीरे; बुद्धिसागर जावना पूजा, प्र-गटी घट सुखकारीरे. श्री० ॥ ३ ॥

(२९६)

एकादशमी कुसुमग्रहपूजा कुसुम गरहे प्रभु थापीने, जे पूजे नरनार; ते मुक्तिवेगे वरे, सम्यग्दष्टि उदार ॥ १ ॥ आज सखी मोंये वाल्हमा, मुज मंदिर आये. ए राग. मारु वा. ॥

ऋथवा उत्सव रंग वधामणां. ए राग. वेलावल. ॥

परम प्रभु परमातमा, मुज दिल दर्शायो; बा-ह्यांतर स्वरूपथी, पूरण परखायो. परमण ॥ १ ॥ स-म्यग्दष्टि जीवनी, सहु करणी लेखे; ऋल्पबंध बहु निर्जरा, करे सम्यग् पेखे. परमण्॥ २ ॥ बाह्याभ्यं-तर ऋतिशय,—पुष्प घरमां बिराजो; असंख्यप्रदेशी पुष्पना, घरमांही छाजो. परमण्॥ ३ ॥ द्रव्यने न्नावथी पुष्पनुं, घर करो जिन थापे; बुद्धिसागर आतमा, प्रभु छापे व्यापे. परमण्॥ ४ ॥

बारमी कुसुम मेघपूजा.

द्रव्यथी कुसुमना मेघथी, प्रभुपूजा सुखकार; जावथी प्रज उपदेशना, मेघथी पूजा सार. ॥ १ ॥

(२९७)

राग फाग-सिद्ध जजो भगवंत, प्राणी पूर्णानन्दो. ए राग.

जिनवर छे जयकार, जवी; भावथी पूजो; द्रव्यने भावथको जिनपूजा, अमृतरस धरनार. भवी० आतम गुण पर्यायस्वजावे, धर्म प्रगट करनार. भवी०॥१॥ जिनवर वाणीपुष्पनामेघे, द्यातम शांति थनार. भवी० द्यानुजवपुष्पना मेहुला वरसे, सुगधनी बहु द्रार. भवी०॥२॥ मोहनी पुर्णध दूरे नासे, समता शीतलता सार. भवी० मुजमन तुज उपदेश स्वरूपी—मेघे मोह्यं द्यपार. भवी०॥३॥ पुष्पना मेघो तुज शिर उपर, वर्षांतुं धरी व्हाल. जवी० बुद्धिसागर मुजपर वर्षो, जिनवाणी मेघ द्यपार. भवो०॥४॥

त्रयोदशमी ऋष्टमाङ्गलिक पूजा.

स्वस्तिक ने श्रीवस्त हे, घट जद्रासन चार; नंदार्वतने वर्धमान, मीनयुग द्रिण सार. ॥ १ ॥

(286)

ऋष्ट ए सँगरुषी प्रभु, पूजे पाप पक्षाय, पद पद मंगल संपजे, लिघ सिद्धि प्रगटाय. ॥ २ ॥

॥ ध्रुवपद गोडी रागेण गीयते ॥
प्रभुनी आगळ आठे मंगल, पुण्यातिशये
चालेरे; द्रव्यथी मंगल आलेखे जे, जावमङ्गल ते
जाळेरे. प्रभु० ॥१॥ सहज ग्रुण जे चार ते स्वस्तिक,
दर्पण ज्ञानने धारोरे; सम्यग्दृष्टि कुंभ विचारो,
विरति श्रीवच्छ प्यारोरे. प्रजु० ॥ २ ॥ संयम
मद्रासन नंदावर्त, श्रमुभव आनंद पामारे; श्रातम
समाधि वर्धमान छे, भाव मंगलथी जामोरे. प्रभु०
॥ ३ ॥ मीन युगलते ज्ञानने दर्शन—उपयोगे जयकारीरे; बुद्धिसागर प्रभुनो पूजा, द्रव्यजाव हितकारीरे. प्रभु० ॥ ४ ॥

॥ चतुर्दश धूपदीपक पूजा ॥ द्रव्यभावथी धूपने, दीपक पूजा सार; जिन-चरनी जे जन करे, पामे शर्म खपार.

(२९९)

विधा निज महेले पधारोरे, करी करूणा महाराज पिया. ए राग मारु. ॥

प्रभु तुज प्रीतमी लागारे, प्रगट्युं रुचिर-सपूर. प्रभु० ॥ १ ॥ ध्याता ध्येयने ध्याननीरे, एकतामांहि न जेद; निर्विकल्प समाधिमांरे, जोति हेष न खेद. प्रभु० ॥ १ ॥ आतमना उपयोगमांरे, प्रजु तुं छे मुज पास; ध्यान धूपने ज्ञानमारे, दीप-कनो ठे प्रकाश. प्रभु० ॥ १ ॥ कोटि वर्ष सम ताह्यरोरे, क्षणविरहो न खमाय; बुद्धिसागर प्रेम-थीरे, पूजा करे ज जीवाय. प्रभु० ॥ ३ ॥

पन्नरमी गीत पूजा.

प्रभु गुण पर्याय गीतथी, प्रभुने पूजे जेह; चढता भावोल्लासथी, प्रभुपद पामे तेह.

नाथ कैसे गजको बंध छुडायो-ए राग. सारंग. ॥

प्रभु तुज गान घणुं गुणकारी, खातम आनंद-कारी. प्रभु० वीणादिक तालमानने ताने, प्रभु

(300)

गुण गान उमाह्योः; नरघां मरदंग तान सुत्ताने, आनंद रस रंगायो. प्रञ्ज ॥ १ ॥ प्रभु तुत्र सन्मुख चेतना करवा, उपयोगथो हर्षायोः; प्रभु तुज्ञगाने भान न जगनुं, खातम झांखी पायो. प्रभु० ॥ २ ॥ प्रभुने गातां सुखनी खुमारी, प्रगटंती जयकारोः; पूर्णानंदी प्रभुने पूजो, गीतवके नरनारो. प्रभु० ॥ ३ ॥ परापश्यंती मध्यमागाने, अनहदगीत सुरताने; बुद्धिसागर प्रभुरसपाने, जक्त प्रञ्ज घट माने. प्रञ्ज० ॥ ४ ॥

सोळमो नृत्यपूजा.

प्रभु आगळ जावे करे, नृत्यनी पूजा जेह; आतम्शुद्धि ते करे, पामे शिवपुर गेह.॥१॥

अवसर बेरबेर नहि स्रावे. ए राग. आज्ञावरी.

शुभंकर जिनपूजा जयकारी, द्रव्यभावथी नृत्यनी पूजा, आतम आनंदकारी. शुजंकर.॥ एक शत आठे देवकुमरने, सुर कुमरी शुभ नाचे;

(३०१)

सुरनर नृत्य करीने माचे, आत्मरसी थे राचे. शुभं-कर०॥ १॥ चढते भावे धर्म रसीला, प्रभु प्रेमे उल्लिया; सुर नरनारी हर्षे नाचे, श्रद्धाजिकमां विसया. शुजंकर.॥ २॥ भिकष् रोम रोम जस विकसे, दिलमां हर्ष न मावे, भावथी नवरसना शृंगारे, अंतरनाचे सुहावे. शुभंकर.॥ ३॥ भिक्त-रसे गुल्तान बनीने, गुणपर्याये नाचुं; बुद्धिसागर स्थात्ममहावीर, सहज स्वभावे राचुं. शुजंकर.॥ ४॥

सत्तरमी सर्ववाद्यपुजा.

सर्वजाति वाजिंत्रथी, चढता भावोछास; नर-नारी प्रभु पूजतां, पामे शिवसुख खास ॥ १ ॥

राग. प्रभात.

समवसरणमां वाजां वाजे, ख्रंबरतलमां गा-जेरे; देवदुंदुभि वाजी ठाजे, जिनपति महिमाए रा-जेरे. सम० ॥ १ ॥ सारंगी शरणाइ जूंगळ, भेरी न फेरी वीणारे; जल्लरी ढोल ने वंशळी वाजे, सुरकुम-

(३०२)

रीना स्वर झीणारे. सम० ॥ २ ॥ मुरज कंसालांने मृदंगने, पणवादिक वाजींत्रेरे; जिनवर पूजा भिन्ने जन करता; मोह शत्रुने जीतरे. सम० ॥ ३ ॥ सुरन्तर वाजिंत्रे जिनपूजा, भावथी करी नर नारीरे. तीर्थंकर ख्यादि पद पावे, निजपरिणतिने समारीरे. सम० ॥ ४ ॥ योगाभ्यासे अंतरवाजां, वाजे अनहद तानेरे; शुक्क शुक्क उज्वस परिणामे, धर्म ध्यान निजमानेरे. सम० ॥ ४ ॥ ख्यारमोह्यास रस वाजिंत्रे प्रभु, पूजामां थइ रिसयोरे; बुद्धिसागर आत्म स्वजावे, ख्यानंद ल्हेरे उह्यसियोरे. सम० ॥ ६ ॥

कलश-धनाश्री.

गाया गायारे प्रभु महावीर गुणगण ध्यायी, सत्तर जोदी पूजाथी प्रभु, गातां मुक्ति वधाइरे. प्रभु महाबोर. ॥ १ ॥ द्रव्य जाव प्रभुपूजा रचीने, आतम ख्रानंद पायो; ओगणिश अव्योतर चैतर वदि, दशमी जय वर्तायोरे. प्रजु० ॥ १ ॥ जिनवर

(३०३)

महावीर पट परंपरा, तपगच्छ सागर शाखे, रवि-सागर ग्रह सुखसागर ग्रह, जिन व्यापा दिल रा-खेरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ मधुपुरीमां पद्मप्रभु जिन, ग्रहनी पूर्च कृपाए; आनंद मंगल ऋदि सिद्धि, पूजा करंतां थाएरे. प्रजु० ॥ ४ ॥ घर घर संघमां आनंद मंगल, पूजाथी सुख भारी. बुद्धिसागरस्रि ऋदि, बृद्धि कीर्ति जयकारीरे. प्रजु० ॥ ४ ॥

> अय नक्पद[्]लघु पूजा. प्रथम अरिहंत पद पूजा.

परम प्रभु परमातमा, परब्रह्म महावीर; शास-नपित अरिहंत जिन, सर्व श्रीर महाधीर. ॥ १ ॥ वंदी पूजी ध्याइने, नव पद पूजा सार; रचुं स्वपर-हित कारणे, खात्म शुद्धि करनार. ॥ २ ॥ तीर्थेकर सर्वे प्रभु, खर्हतू पद्मां समाय; चार निक्षेपे जाण-तां, पूजे शिव सुख थाम. ॥ ३ ॥ (308)

राग. सोरठ.

अरिहंत द्रव्यभाव सुखकारो, साची खागी श्चरिहंत यारी. शुद्धातम उपकारी. श्चरिहंत. चोत्री-श अतिशय धारी जिनेश्वर-बारगुणे जयकारी; पां-त्रीश वाणीगुणना धारण-तीर्थंकर हितकारी. अ-रिहंत. ॥ १ ॥ संघ चतुर्विघ तीरथ स्थापक,–केवल ज्ञानी विहारो; विश्वोद्धारक कर्म संहारक, शुद्धानं-द्ना धारी. अरिहंत. ॥ २ ॥ तुजपर पूरण प्रीति प्रगटी, कोची न उतरे उतारी; निश्चयथी अरिहंत निजातम, जाण्युं उपयोग धारी. अरिहंत. ॥ ३ ॥ सत्ता व्यक्तिजावे अरिहंत, निश्चय नय व्यवहारी; बुद्धिसागर त्र्यरिहंत आतम-शुद्ध बुद्ध अविकारी. ऋरिहंत. ॥ ४ ॥

ॐ ह्वी परम॰ अईन् पद पूजार्थ जलंग-यण स्वाहा.

द्वितीया सिद्धपद पूजा.

पूजुं प्रज गुण भावथी, सिद्ध सदा जयकार; अष्ट-गुणी परमातमा, एकत्रिंश गुणधार. ॥ १ ॥ अनंत;

(304)

ज्योते झळहळे, छानंत आनंद धाम; निराकार परब्रह्मने, हो उपयोगे प्रणामः ॥ २ ॥

नाथ कैसे गजको बंध छुडाया. सारंग वा. राग-आशावरी.

निरंजन सिद्धप्रभु सुखकारी, कर्म रहित जयकारी. निरंजन० क्षायिक नवलिंध ग्रणधारी,
निराकार निर्धारी; अनंत ज्योते झळहळता विभु,
पूर्णानंदी अपारी. निरंजन०॥१॥ श्राह्मस्त अरूपी
जन्म मरण नहीं, ग्रणपर्यायाधारी; श्रुद्धातम परब्रह्म श्रखंमित, अविनाशी अविकारी. निरंजन०॥१॥ सकस्त सिद्धने वंदु पूजुं, ग्रुद्धोपयोग समारी;
सत्ताए निज आतम सिद्ध छे; समरंतां सुख भारी.
निरंजन०॥३॥ सम्यग् दर्शन ज्ञान चारिश्रना,
ग्रुद्धोपयोगे विहारी, बुद्धिसागर सिद्ध स्वयं थै, पामे
शिव नरनारी. निरंजन०॥ ४॥

ॐ०=॥ सिद्धपद पूजार्थ जलं० य० स्वाहा ॥

(305)

तृतोया आचार्यपद पूजा.

द्रव्यभाव व्यवहार्योः निश्चयथी सूरिराजः; वंदतां पूजतां ध्यावतां, प्रगटे शिवसाम्राज्यः ॥१॥

सोवे सोवे मारी रेनग्रमाइ. राग. बिरुखो. ख्रथवा पोल्ल.

वंदु पूजुं सूरिवर रागे, ज्ञानादिक ग्रण अंतर जागे—वंदु. ॥ छत्रीशो छत्रीशो ग्रणगण मंडित—सम्जावे वर्ते वैराग्ये. वंदु. ॥ १ ॥ धर्मना रक्षक धर्म प्रवर्तक—जेह्यो मोहनो दूरे भागे. वंदु; । द्रव्य क्षेत्र काल भावने जाणे—विषयोमां नाहि वर्ते रागे. वंदु. ॥ २ ॥ जिनवाणीनो अर्थ जणावे. द्रव्यने भावथी वर्ते त्यागे. वंदु. । ज्ञानी ध्यानो योगो सनूरा—म्हाखे आतम ग्रणना वागे. वंदु. ॥ ३ ॥ निश्चयथी सूर्रिवर निज आतम— शुद्ध परिणति भावमां लागे; बुद्धिसागर ब्रह्मसूरि घट— प्रगटंतां जय डंको वागे. वंदु. ॥ ४ ॥

ॐ - आचार्य पद पूजार्थ जलं० यण स्वाहा ॥

(309)

चतुर्थी उपाध्याय पद पूजा.

द्रव्य भाव वाचक नमुं, पूर्जं जग हितकार; ज्ञानी पंच महात्रती, सेवंतां सुखकार. ॥ १ ॥

श्चाज सखो मुज व्हालमा, मन मंदिर श्चाये. ए राग. वेलावल. ॥

वाचक पदने वंदोए, पूजीए जयकारी; वाचक सेवा भक्तिथी, निज शुद्धि थनारी. वाचक. ॥१॥ द्रव्य क्षेत्र काल भावथी, वर्ते जयकारी; निश्चय दृष्टि दिख धरी, वर्ते व्यवहारी. वाचक. ॥२॥ धर्म शास्त्र पाठक प्रभु, विश्वजीवीपकारी; व्यातम उपयोगे रहे, ब्रह्म वाचक धारी. वाचक. ॥३॥ निश्चय वाचक आतमा, पच्चीश गुण धारी; बुद्धिसागर धर्म-ना,—वाहक हितकारी. वाचक. ॥ ४॥

ॐ ह्वी०-प० वावक पद्यूजार्थ जलं या स्वाहा ॥

(306)

पंचमी साधु पद पूजा.

चउनिक्षेपे साधुपद, क्षेत्रकाल खनुसार; वं-दतां सेवतां पूजतां, ध्यातां दार्म खपार.

मेरुशिखर न्हवरावेहो सुरपति. ए राग.

साधु सदा उपकारी हो जगमां, साधु सदा उपकारी. ॥ व्यवहारथी जे पंचाचारी, पंच महाव्रत धारी;
साधुसंगतनी बिलहारी, जेथी तरे नरनारी हो.
जगमां. साधु. ॥ १ ॥ द्रव्यादिक प्रतिबंध निवारी,
रागने रोष संहारी; व्यवहारथी व्यवहारे वर्ते, निश्रय उपयोग धारी हो. जगमां. ॥ २ ॥ साधु संतनी सेवा करीए, दोषनी दृष्टि निवारी; वेषाचारथी
अनंत उत्तम, गुण लेजो नर नारो हो. ॥ ३ ॥
आतम ते साधु परमातम, उपयोगे ल्यो धारी; बुखिसागर साधु सेवा, अनंतगुणी गुणकारी हो. जगमां. ॥ ४ ॥

ॐ ह्वी०-प०-साधु पद पूजार्थ जलं० य० स्वाहा॥

(309)

षष्ठी दर्शनपद पूजा.

सम्यग् दर्शन पद नमुं, पूजुं ध्यावुं सत्य, स-

राग. गोडी. तिशानी कहा बतावुरे. ए लय.॥ ब्रानुभव दर्शन पामोरे, ग्रुरुगमधी नरनार. ब्रानुभव०॥

देवगुरुने धर्मनीरे, श्रद्धा प्रीति थायः सडसठ बोले श्रलंकपुरे, प्रगटे दिलमां जणाय. श्रनुभव. ॥ १॥ द्रव्यजाव व्यवहारथीरे, निश्चय समकित जाणः सातनयोथी जाणतारे, रहे नहीं अज्ञान. श्र-नुजव. ॥ २॥ दर्शन ज्ञान चरित्रनीरे, एकपरिणति थायः निश्चय दर्शन आतमारे, शुद्धोपयोगे सहाय. अनुजव. ॥ ३॥ सम्यग् दर्शन पामतारे, निश्चय मुक्ति थायः बुद्धिसागर श्रातमारे, परमातम पद पाय. श्रनुजव. ॥ ४॥

🎳 ह्वी० प० दुर्शनार्थे जलं० य० स्वाहा ॥

(ई१०) सप्तमी ज्ञान पूजा.

द्रव्य भावथी ज्ञानने, वंदु पूर्जु बेश, सम्यग् ज्ञानने पामतां, नासे सघळा क्लेश. ॥ १ ॥ राग मालवी. गोडी.

समयग् इत्तन खहो नर नारी, निह कोइ ज्ञान समानरे; ज्ञानी श्वासाच्छ्वासमां कर्मने, टाळी खहे निर्वाणरे. सम्यग्. ॥ १ ॥ मतिश्रुत अविध ने मन पर्यव, केवल पांचमुं ज्ञानरे; दरीन पामे मतिश्रुत, जावणी, सम्यग् ज्ञान प्रमाण रे. सम्यग्. ॥ २ ॥ आतम श्रानुभव ज्ञानापयोगे, क्षणमां मुक्ति सुहाय रे; ज्ञानविना कोइ ध्यान न पावे, ज्ञाने श्रानंद थाय रे. सम्यग्. ॥ ३ ॥ स्वपर प्रकाशक ज्ञान ते श्रातम् म, गुण गुणीरूप प्रमाण रे; बुद्धिसागर आतम ज्ञाने, प्रगटे केवल ज्ञान रे. सम्यग्. ॥ ४ ॥

ॐ ह्राँ० प०-ज्ञानार्थे जखंग् य० स्वाहा.

(३११)

अष्टमी चारित्र पद पूजा.

द्रव्य जाव चारित्रयो, खातम शुद्धि थाय, प्रगटे परमानन्दता, खातम सिद्ध सुहाय.॥१॥

कीजीए कीजीए कीजीए प्रभु निर्मेख दर्शन कीजीए. राग. सारंग.

पामीए पामीए पामीए, शुद्ध चारित्र पदने पामीए, वामीए वामीए वामीए; मोहजावने दूरे वामीए. ॥ पामीए. ॥ व्रत वेष तप जप त्यागाचार-थी, द्रव्य चारित्रमां झामीए; सम परिणामे आत्मो-पयोगे, जावचरण विश्रामीए. ग्रुद्ध. ॥ १ ॥ द्रव्य ते जावनुं कारण जाणो, जारुंगु महावीर स्वामीए; जम विषयोमां रागने द्रेषनी, परिणतिथको विरामीए. ग्रुद्ध. ॥ २ ॥ खात्मस्वभावे रमवुं चरण छे, चारित्रीने शिर नामीए; चारित्रमां खर्पाइ जातां, पूर्णानन्दे खारामीए. शुद्ध. ॥ ३ ॥ व्यवहार निश्चय चारित्र वरवा, ग्रुरुगम ज्ञानने पामीए; बुद्धिसागर

(३१२)

श्रातम त्रानंद, प्रगट चारित्र प्रणामीए. शुद्ध. ॥४॥ ॐ ह्वाँ० प० चारित्र पूजार्थ जलं०-य. स्वाहा ॥

नवमी तपपद पूजा.

द्रव्य भावथी तप तपे, आठे कर्म विनाश; ज्ञान अने निष्कामथी, थावे शिवपुर वास. ॥ १ ॥

॥ ध्रुवपद काफी रागेण गीयते ॥

महावीर तपग्रणनी बिलहारी, तपग्रणनी बलिहारी. महावीर०॥ तपथी लिह्मयो प्रगटे जारी,
मनडुं बने अविकारी; सुल दुःलमां समभावता
धारी, अहंपणुं न लगारी. महावीर०॥१॥ बाह्य
अभ्यंतर तप जयकारी, पुद्गलनी निह यारी; राग
देवनी वृत्ति संहारी, पर परिणति परिहारी. महावीर०
॥ २॥ धन्य धन्य वीर जगजयकारी, सह्या परिषह
भारी; प्रगटाव्युं घटमांही केवल, वंदु वार हजारी.
महावीर०॥३॥ तप ते आतम निश्रय धारी, त-

(३१३)

पशो नरने नारी; बुद्धिसागर शुद्धातम रस,-स्वाद खद्यो तपधारी. महावीर**ण ॥ ४ ॥**

कलश.

गाइ गाइरे नवपदनी पूजा गाइ०॥ ओगणिश अठ्योत्तर स्राश्विन बीज, मेसाणामां रचाइरे, नव-पद्नी पूजा गाइ ॥ वीर प्रभुनी पट परंपर, श्वेतां-बर सुखदायी; तपगच्छ हीरविजय सूरि जमग्रुरु, पट्ट परंपरा छाइरे. नव०॥१॥ नेमिसागर रिवसा-गर ग्रुरु, सुखसागर ग्रुरु ध्यायी; नवपद पूजा रचतां ऋद्धि, वृद्धि कीर्तिं सुहाइरे. नव० ॥ २ ॥ घट घट नवपद ऋदि सिद्धि, सत्ताए रही छे सुहाइ; बुद्धि-सागर पुर्णानन्दनी, प्रगटी घटमां वधाइरे. नवणा३॥

ॐ० प० तपः पद्पूजार्थ जलं० य० स्वाहा ॥

(考(8])

अथ पंचधा योग पूजा.

परम प्रभु परमातमा, प्रभु महावीर जिनेश; परमब्रह्म परमेश्वरा, प्रणमुं विभु विश्वेश. ॥ १ ॥ पंच योग पूजा रचुं, छातम शुद्धि काज; अष्टप्रकारे पूजना, करतां शिव साम्राज्य. ॥ २ ॥ ऋध्यातमने जावना, ध्यानने समता चार; वृत्तिसंक्षययोगयो, पूर्ण शुद्धि सुखकार. ॥ ३ ॥ योगनो मूमिका प्रथम, अनुक्रमे पांचे योग, सुणतां ध्यावतां संपजे; ऋातम शिव सुख भोग. ॥४॥ आतम सुख (नश्चय थता, योग रुचि प्रगटाय, पंच योगनी साधना; कर्मविनाशक थाय. ॥ ५॥ महावोर देवे प्रकाशिया, असंख्य योग प्रकार, सर्व मुख्य दर्शन अने, ज्ञान चरण छे उदा-र. ॥ ६ ॥ तेमां सह योगो शमे, तोपण जिव हि-तकार; पंचयोग दर्शाविया, तस पूजा सुखकार.॥७॥ प्रथम योग भूमिका पूजा.

अथम याग मूामका पूजा.

प्रभु महावीर जिनेश्वर भाखे, योग जूमिका सारजी; योग भूमिका गुद्धि करतां, मन शुद्धि नि-

(384)

र्धार. योगने धारोजी: प्रथम ग्रुरु देव सेव, धरीए श्राचारोजी. ॥ १ ॥ श्रोघे देव गुरु वृद्ध सेवा, पूजन थाय सुरागजो, सदाचार प्रवृत्ति प्रगटे, तपनी वृत्ति स्याग. योगने. ॥ २ ॥ उपकारीनी सेवा थावे, प्रभु द्रीन गुणरागजी; चारिसंजीवन दृष्टांते, धर्म कर्म वै-राग्य. योगने. ॥ ३ ॥ देव गुरुनी निन्दा न थाती, थाय सुपात्रे दानजी; परोपकार प्रवृत्ति थावे, गुण ब्रहणता तान. योग. ॥ ४ ॥ प्रभुता पामे गर्व न थातो, सत्य पथ्य हित बोखजी; सत्य तन्वनी इहा प्रगटे, सत्यासत्यनो तोल. योग. ॥ ५ ॥ साधु सं-तनी सेवा भक्ति, रुचे धर्मीपदेशजी; मार्गानुसारी नीतिरीत, मुक्तिपर नहीं द्वेष. योग. ॥ ६ ॥ प्रमा-णिक व्यवहार प्रवृत्ति, सत्यप्रतिज्ञा पळायजी; चोरी व्यभिचार व्यसन निवृत्ति, कुखाचार वर्ताय. योग. ॥ ७ ॥ मांस मदिरा त्यागने सज्जन,-रीतिनो व्यवहारजी; मात पिता ग्रुरु वर्गनी आज्ञा, ऐवो सदाचार धार, योगने. ॥ ८॥ नास्तिक दुष्टनी संग

(३१६)

न रुचे, रुडा प्रगटे विचारजो; योगनी दृढ जूमिका एवी, दंभतणो परिहार. योगने. ॥ ९ ॥ अनन्य विषगरलनी निवृत्ति, तखेतु शुभ थायजी; समिकत पूर्वक ज्ञानथी अमृत, शुभ अनुष्ठान सुहाय. ॥ १० ॥ योगनी पूर्व सेवा योगजूमि, चरमावर्ते पायजी; बुद्धिसागर योगना योग्य ज, नरनारी ते गणाय. योग. ॥ ११ ॥

ॐ हाँ श्राँ परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जनम ज-रा मृत्यु निवारणाय, योगभूमिका सेवार्थ जलं, चं-दनं, पुष्यं, धूपं, दीपं, ख्रक्षतं, नैवेद्यं, फलं, यजा महे स्वाहा ॥

॥ प्रथमा ऋध्यात्मयोग पूजा ॥

प्रभु वचनानुसारथी, तत्त्वनी चिंता थाय; ग्रही-त्यागी वत युक्तने, मैत्र्यादि भाव सुहाय. ॥ १ ॥ स्थातमज्ञानने स्थात्मनी, ग्रुद्धिनुं अनुष्टान, द्रव्यभाव स्थाप्तात्मनो, योग जलो ग्रुण खाण. ॥ २ ॥

(३१७)

द्रव्य क्षेत्रकाल भावथी जाणी, अध्यातम योग धारोजी; आतमज्ञानीने योगथी सिद्धि, राग रोष परिहारो. योगने धरीएजी. टाळी मोइनी टेव; शिव-सुंख वरीएजी. ॥ १ ॥ देव मंत्रने जपीए विधिये, श्रंभ वृत्ति निवारीजी; श्रासन जय प्राणायामा-भ्यासथी, देहग्राद्धि हितकारी. योग ॥ २ ॥ अध्या-स्मयोगनी आगळ इठनी, किंमत जाणो कोमीजी; आतम ज्ञानीओए दिल्मां, शुद्धातम प्रीत जोमी. योगण ॥ ३ ॥ आत्मस्बरूप विचारणा करवी, मनवच तन् वश राखीजो; ग्रहस्थ त्यागी वत ग्रण पाखन, प्रारब्धे थवुं साक्षी. योग० ॥ ४ ॥ मनवच काया अशुभ प्रवृत्ति, त्यागी शुजने भजीएजी, शुभ थकी शुद्धभावमां प्रणमो, प्रकटपणे गुण सजीए. योग० ॥ ५ ॥ सुख दुःख ऋावे हर्ष न शोक ज, देव ग्रुरुने वंदोजी; प्रत्याख्यानची इच्छात्रो रोधो, प्रगटे ते दोषने निंदो. योग० ॥ ६ ॥ देह ममत्व निवारी श्चातम, उपयोगी ये रहेवुंजी, आवश्यक धर्म कर्मने

(386)

करवां, अंतरमां चित्त देवुं. योग० ॥ ७ ॥ मैत्री प्र-मोद मध्यस्य करुणा, भावना जावीए चारजी, सा-धन्थी साधंतां साध्यज, नासे मोह विकार. योग० ॥८॥ अध्यात्मयोगयो आतम शुद्धि, क्षणमां थावे मुक्तिजो, बुद्धिसागर आतम आनंद, प्रगटे अनु-भव युक्ति. योग० ॥ ९ ॥

🅉 ह्वी० अध्यात्म योग पूजार्थ जलं० य० स्त्राहा ॥

द्वितीया भावनायोगपूजा ॥

आतम स्वरूप विचारणा, वारंवार जे थाय; मन समाधि सहित ते, भावना योग जणायण॥१॥ आतमना उपयोगनो, पुनः पुनः अभ्यास; भावना योगे संपजे, आतम शुद्ध प्रकाशण॥२॥

दशमे देशावगासीएरे. ए राग.

धन्य प्रभु महावीरनेरे, साध्यो पूरण योग; ख्रा-तम परमातम कर्योरे, पाम्या अनंत सुख भोग हो.

(३१९)

घटमां, महावीर प्रभुने लावीएरे, भावना योगने जावीएरे; कर्म रिपुने हराबीएरे, प्रगटे परमानन्द० ॥१॥ पहेली श्रुतनो भावनारे, सुणीए धर्भ सिद्धांत; वांचीए श्रुत शास्त्रो भवारे, गुरुगमथी निर्द्रान्त हो. घटमां, भावना० ॥ २ ॥ स्थातम जड बे तन्त्रनोरे, निश्चय करीए सत्य छातम ज्ञानथी छात्मनारे, क-रीए धर्मनां ऋख हो. घटमां, भावना० ॥ ३ ॥ श्रुत-ज्ञाने संशय टळेरे, आतम अनुमव थाय; आतम ते परमातमारे, निश्चय दिल प्रगटाय हो. घटमां० ॥ ४ ॥ बीजी तपनी भावनारे, भावीए थै निष्काम; सर्वेच्छाओ रोधवीरे. तप ते आतमराम हो. घटमां० ॥ ५ ॥ सर्व त्रिषयनी कामनारे, टाळे ते तप बेश; सर्वशुभाशुज वृत्तियोरे, तेना शमता क्रेश घटमां० ॥ ६ ॥ त्रीजी सत्वनी भावनारे, आतम शक्ति अनंत; त्यातम सत्त्वे मोहनोरे, आवे क्षणमां अंत हो. घटमां॰ ॥७॥ परिषद्घ संकट वेठतारे, रहेवुं आतममां स्थिर; सुख दुःखमां चलवुं नहींरे, मेरु पेठे

(३२०)

थबुं घीर हो. घटमां० ॥८॥ आतमना उपयोगथीरे, अप्रतिबद्ध विहार; निःसंग वनवास निर्भमेरे, ध्यान समाधिधार हो. घटमां ॥ ९ ॥ इन्द्रादिक सुख त्रांति छेरे, आतम सुखनी पास; छात्म स्वतंत्रता धारवीरे, कर्म हणीने खास हो. घटमां० ॥१०॥ चोथी एकत्व छे जावनारे, जावीए धरी उल्लास; जह जगमां नहीं जीवनुरे, कोइ पोतानुं खास हो. घटमां० ॥११॥ पांचमी तस्वनी जावनारे, जीवादिक नव तस्वः षड् द्रव्योने विचारतारे, प्रगटे निज एकत्व हो. घटमां० ॥ १२ ॥ स्थातम तत्वने जाणतांरे, जाण्या सर्व प-दार्थ; बुद्धिसागर जावनारे, जावे शिव परमार्थ हो. घटमां० ॥ १३ ॥

ॐ ह्वीँ श्रीँ परम० भावना योग पूजार्थ जलं० य० स्वाहा ॥

⁽३) तृतीया ध्यान पूजा ॥ ज्ञान प्रमाणे ध्यान छे, ग्रुरुगमथी छे ध्यान

(३२१)

संयम स्थिरता संपजे, ध्यानथी केवल ज्ञान. ॥ १ ॥ ध्याननो भेद समाधि छे, मति श्रुतज्ञाने ध्यान; साकारी उपयोगथी, श्रंतर्मुहूर्त प्रमाण. ॥ २ ॥ आत्तम आदि तन्त्रमां, जपयोगे एकतान; अंतर्मुहूर्त ध्यान हे, ध्यान प्रवाह बहु मान. ॥ ३ ॥ आर्तरीद्र वे परिहरी, धर्म शुक्क वे ध्यान; ध्याइए उपयोगथी, जीव बने भगवान् ॥ ४ ॥

हे सुस्तकारी आ संसारथकी जो मुजने उद्धरे. ए राग.

महावीर प्रभु तुज ध्याने लय लागी बीजुं न-हीं ममें; तहें ध्यान धर्यु बार वर्ष खगी तेमां मुज आतम रमे, तहें ध्याने केवल प्रगटाव्युं; मुज मनमां ध्यान ते शुभ भाव्युं, ध्याने प्रगटे सुख समजायुं. महावीर. ॥ १ ॥ वायु वण दीप शिखापरे, खातम ध्याने आनंद बहेरे; रहेवुं शुद्धातम निज बहेरे. म

(३२२)

हावीर. ॥ २ ॥ मेरुपरे स्थिर ध्याने थावुं, अंतरमां साक्षो थै जावुं; ध्याने आतम पोते ध्यावुं. महावीर. ॥ ३ ॥ पिंडस्थ पदस्थ वे ष्याइजे, रूपस्थने दिखमां पाइजे; रूपातीतथी शिव पाइजे. महावीर. ॥ ४ ॥ आतम ध्याने लगनो लागे. ऋद्वि सिद्धि सब्धि जागे, घातीकर्मों वेगे भागे. महावीर. ॥ ५ ॥ शु.-द्धातम उपयोगे रहीए, आनंन्दोल्लासे गहगहीए: जीवंतां मुक्ति सुख खहीए. महावीर ॥ ६ ॥ खेद् उद्देग जुमने परिहरीए, उत्थानने क्षेपने झट ह-रीए: आसंग त्यजी ध्यान ज धरीए. महावीर. ॥७॥ अन्यत्र प्रेमने नहीं करीए, रागोदयमां स्थिरता ध-रीए: संकल्प विकल्पने परिहरीए. महावीर. ॥ ८ ॥ शूजध्याननी जावना भावीए, खातम खाली प्रगटा-वोए, खातम गुणपर्याय ध्यावीए. महावीर. ॥९॥ म-नवचतनुनी स्थिरता करीए, कदि मोहना मार्या नहीं मरीए; आतम महावीरद्शा वरीए. महावीर. ॥ १० ॥ ध्याने ज्ञानादिक ग्रण सिद्धि, क्षायिक नव

(३२३)

प्रगटे घट खब्धि; बुद्धिसागर आनंद ऋद्धि. महा-वीर.॥ ११॥

ॐ ह्वाँ श्राँ परम० ध्यानयोग पूजार्थे. जसं० य० स्वाहा.

चतुर्थी समता योगपूजा.

समताथो शिव संपजे, खाठ कर्म दूर जाय; समता प्रगृट्या वण कदि, कोइ न मुक्ति पाय. ॥१॥ सर्व योगशिरोमणि, समतायोग महान्, राग रोष हे विषमता, त्यजे स्वयं भगवान् ॥ २ ॥ सर्वधर्म दर्शनविषे, समभावे हे मुक्ति; समता दिखमां धा-रीष, सर्वयोग वम रोति ॥ ३ ॥

वगडानो वाशीरे मोरशिद मारियो. ए राग.

प्रभु महावीर समताग्रणना द्रियारे, रागने रोष विषमता परिहरी; समता ग्रणथी भरिया जोवो तरियारे, ममताने त्यागेरे समता छे खरी. समताने धारेरे शिवसुख थाय छे, ममता ने ऋहंता दूरे जाय

(३२४)

डे: आतम ते परमातमपद पाय छे. आतम एक आपोआप सहाय हे. ॥ १ ॥ जडविषयोमां शुभः अशुभ नहीं वृत्तिरे, सुख दुःखमां हर्ष न शोक जरा रहे, लाभालाजमां परण जोवनमां समतारे, आतः मना उपयोगे साक्षीपणुं वहे. समताने० ॥२॥ शुजा-शुभपणुं जगमां नहीं कल्पातुंरे, आतम जम निज निज भावे जणाय छे, जडमां सुख दुःख विषमप-णानी ज्रांतिरे, थाती नहीं आतम निःसंग थाय छे. समताने ।।३॥ कमठ अने धरणेंद्र उपर सम्भावीरे, धन्य धन्यरे पार्श्वप्रभो !! तहारी दशा; चंडकोशिया सं-गम इन्द्रनी उपरेरे, समताना योगीरे महावीर दिख वस्या. समता० ॥ ४ ॥ समताजावे स्कंधक सूरिना (ज्ञाब्योरे, रहियारे क्षणमां मुक्तिपद वर्या; अवंकारी भट्टा खन्निकापुत्रेरे, सद्गतिने साधीरे जनसामर तर्याः समताते ॥ ५॥ दमदंतने नमि राजर्षि शिव पाम्यारे, मेतारज समताए मुक्ति लह्या; गज सुक्रमाले समता घटमां धारोरे, एम अनेक समतास शिवपद वह्या. समताने० ॥ ६ ॥ नामरूप शाखाः

(३२५)

दिक वासना टाळीरे, खोकादिक संज्ञारे टाळेरे सम पशुं; पंचेन्द्रिय विषयोनी कामना टळतांरे, मनमांरे प्रगटे नहीं विषमीपणुं. समताने ।। ७ ॥ समताए श्यातमनुं सुख श्रनंतुरे, तेनीरे श्रागळ जडसुख नहीं कर्युं; ऋहंपणुं ममता टाळंतां ज्ञानेरे, ज्ञानीना दि-ल्मां खनुभव सुख वस्युं. समताने० ॥ ८ ॥ जम्बे-तनमां समजावी उपयोगीरे, एवोरे छातम हं साक्षी रह्यो; कर्मैविपाकमां मुंछं नहीं समजावेरे, उपयोग एवा निश्चय में लहाो. समताने ॥ ९ ॥ प्रभु महा-वीर !!! हुं तुज समता अनुसरतारे, शुद्धातम महावीर पदने पामशुं; आतमज्ञाने शिवपुर दोवं मीवंरे, पा-मीशुं योगथंकी त्यां झामशुं. समतानेण ॥ १० ॥ समतायोगने उपयोगे दिख धरोएरे, वरीएरे मुक्ति दशा जोव्यावते. बुद्धिसागर समतासंगी रंगीरे, मुक्तिरे सर्व धर्म समताछते. समताने० ॥ ११ ॥

अ हाँ श्री परम • समतायोग पूजार्थ जलैं। यव स्वाहा ॥

(३२६)

पंचमी वृत्तिसंक्षययोग पूजा.

मोहादिनी चित्तमां, प्रगटी वृत्ति निरोध; चि-त्तनी वृद्धि निरोधथी, प्रगटे केवल बोध. ॥ १ ॥ सर्व संकल्प विकल्प जे, मोहनी वृत्ति गणाय; तेना पूरण नाशथी, नवलिध प्रगटाय. ॥ २ ॥ तिरो-भाव निज ऋद्धिनो, त्याविजीव जे घाय; पूर्णयोग ते जाणवो, साध्य स्वरूप सुहाय. ॥३॥ ज्ञान ध्यान समताथकी, मोहनी वृत्ति विनाश; ज्ञानावरणादिक टळे, निज गुणे शोजे खास. ॥ ४ ॥

चउमासी पारणुं आवे. ॥

धन्य महावीर प्रभु जयकारी, पूजुं ध्यावुं शिव सुखकारी; चित्तवृत्ति हणी जयकारी, वृत्ति संक्षय योगना धारीरे; महावीर प्रभु जयकारी. मोहवृत्ति हणो नरनारीरे. महावीर. ॥१॥ तर्व अशुज वृत्तिना त्यागे, देवगुरु धर्म जपरे रागे; शुभवृत्ति व्यापार ना लागे, योग प्रथमद्शामां ए जागेरे. महावीर

(३२७)

॥२॥ धर्मार्थे शुज परिणामे, काया वाणी धर्ममां झामे; प्रशस्यकषायना ठामे, ग्रभ दर्शन चारित्र ठामेरे. महावीर. ॥ ३ ॥ सेवामक्ति शुभ प्रवृत्ति, शुभ योगे त्र्यातम व्यक्तिः; सारिवक परिणामनी शक्ति, शुजयो-गमां ग्रुभ आसक्तिरे. महावीर. ॥ ४ ॥ शुज वृत्ति टळे शुद्धजावे, शुद्ध उपयोग ध्यान प्रजावे; सिव कल्पता दूरे जावे, मनोवृत्ति व्यापार न थावेरे. महा-वीर. ॥ ५ ॥ टळे सर्व कषायो ज्यारे, प्रगटे केवल ज्ञान त्यारे; मनोवृत्ति रहे न लगारे, घाती कर्मो रहे नहीं चारेरे. महावीर. ॥ ६ ॥ शुभाशुन चित्तवृत्ति विनारो, ग्रुद्ध उपयोग वीर्योद्वासे; श्रुत उपयोगना श्रभ्यासे, शुद्ध त्यातम ज्ञान विकासेरे. महा. ॥ ७॥ सयोगी ग्रण स्थान सुहावे, पछे अयोगी थे शिव जावे; साधन योग स्थभाव ज थावे, सिद्ध बुद्ध परम प्रभु थावरे. महावीर. ॥ ८ ॥ एक एकज योगे अनंता, जीवो मुक्ति पदने वरंता; आतम शुद्धिमां सर्वे म-ळंता, जाणे सापेक्षज्ञाने संतारे. महावीर. ॥ ९ ॥

(११८)

क्षयोपरामे उपराम जावे, जाव क्षायिके चेतन श्रावे; शुद्ध परिणामे प्रणमे स्वभावे, निवृत्तिपणुं झट था-वेरे. महावीर. ॥ १० ॥ पंच समिति त्रिशुति पाळी, मन मोहनी वृत्तियो टाळी, देजो श्रातममां मन वाळी,; बुद्धिसागर श्रानंदलालीरे. महावीर. ॥११॥

कलश.

गायोरे गायोरे महावीर जिनेश्वर गायो. ॥ पंच प्रकारी योगनी पूजा, रचीने प्रभु गुण गायो; योगनी पूजा ते प्रभु भक्ति, करतां छ्यानंद पायोरे. महावीर० ॥१॥ दर्शन ज्ञानने चारित्र योगमां, सर्वे योगसाया; पांच योग पंच समिति त्रिग्रित, असंख्य योग कथायारे. महावीर० ॥ २ ॥ चउद्गुण स्थान अष्टांग योग ज, छातममांहो समाया; शुद्धातम जपयोगमां सर्वे, छंतभीवने पायारे. महावीर० ॥३॥ आतममांही भेदाभेदे, सर्वे योग समाता; पातंजल आदि योग भेदो, पंचथी न्यारा न थातारे. महान

(३२९)

वीर० ॥ ४ ॥ ग्रुरूमभूषी योग साधता जब्यो, अनंत शैकि सुहाता; चिदानंद अनुभवने पाता, सिद्ध बुद्ध थै जातारे. महावीर॰ ॥ ५ ॥ प्रज्ञ महावीर पट्ट परं-परा, श्वेतांबर साम्राज्ये; तषगच्छ जगगुरु होरविजय सुरि, सूर्वनी पेठे ठाजेरे. महावोर० ॥ ६ ॥ तसपट्ट सागरपट्ट परंपरा, नेमिसागर गुरुराया; तस शिष्ध रविसागर ग्रेरु रविसम, भारत सुजश न्वायारे. महा वीरः ॥७॥ तस शिष्य सुखसागर समतावैत, सुनि गणमांहि सवाया; तस शिष्य बुद्धिसागरसूरिए, योगथकी प्रभु ध्यायारे. महावोरण ॥ ८ ॥ संवत् ओगणिश अव्योत्तरना-त्राश्विनमां जयकारी; विद पांचम बुधवार सवारे, पूजा रची सुखकारीरे. महा-वीर०॥ ९॥ जणरो ग्रुणरोने सांजळरो, भावथकी आचरशे; नरनारी ते शिवपद वरशे, भवपायोधि तरशेरे. महावीर० ॥ ०॥ मेसाणा संघ भक्तिथी कीधुं, चोमासुं सुखकारी; बुद्धिसागर ऋद्धि वृद्धि, कीर्ति लहो नरनारीरे. महावीर० ॥ ४१ ॥

(३३०) पंचपरमेष्ठी पूजा.

प्रणमुं प्रभु महावीर जिन, चोवीसमा श्रारिक्तः, वर्तमान शासनपति, परमेश्वर शिवकंत. ॥१॥ परमेष्ठी पूजा रचुं, द्रव्यने जावथो बेशः, जणतां सुणतां आचरे, नासे सर्वे क्षेशः.॥ २॥ श्राहिन् सिद्धने सूरिजी, वाचक मुनि जयकारः, परमेष्ठी मंगलकरा, सुख शांति दातार.॥ ३॥

प्रथम अरिहंत पद पूजा.

चउ निक्षेपे प्यावतां, स्तवतां पूजतां सारः अरिहंत प्रभु वंदतां, कर्म टळे निर्धार. ॥१॥ अरिहंत छे ख्यातमा, ग्रण पर्याये ग्रुद्धः प्रजु भजतां निज खातमा, थावे प्रभु जिन बुद्धः ॥ २॥ दोष खढार रहित विभु, अरिहंत जिनराजः पूजंतां प्रगटे प्रभु अण भुवन शिरताजः ॥ ३॥

(\$\$\$)

राग वेलावस. मेरु शिखर न्हवरावे हो जिन-पति. ए राग.

अरिहंत जिनपित भजीए हो भावे, ऋरिहंत जिनपित भजीए॥ द्रव्यने जावथी वीशस्थानक पद, हषोंद्वासे आराधे; ऋनंतपुण्यमयी जिननामने, बांधी प्रभुपद साधे हो. अरिहंत जिनपित भजीए जावे०॥१॥ समवसरणमां जाव अरिहंत, जवि-जनने उपदेशे; त्रष्णकाल जिनवर पूजंतां; मनछुं न रहे जबहुशे हो. ऋरिहंत०॥२॥ द्रव्य ग्रण पर्याय अरिहंत, ऋातम आप स्वरूपी; बुद्धिसागर प्रेम प्रतीते; चिदानंदफलरूपी हो. ऋरिहंत०॥३॥ ॐ० प० अहत्पद पूजार्थ ज० य० स्वाहा.

द्वितीया सिद्ध पूजा.

षउ निक्तेपे सिद्ध पद, सेवंतां नर नार; अष्ट कर्म क्षय झट करो, सिद्ध बने निर्धार. ॥१॥ शु. द्ध बुद्ध परमातमा, सिद्ध प्रभु जगवंत; परब्रह्म पर- (332)

मेन्यस, यूजंता भविसंत. ॥ २ ॥ श्रातम गुण पर्या-यनी, पूर्ण शुद्धि जे श्रायः ते निज पर्यव सिद्धता, जातममांहि समाय. ॥ ३ ॥

प्रभु दुर्शन मोहनगारा. ए राग.

प्रसु परमातम रह लागी, प्रञ्ज सिद्धनी प्रीत-ही जागीरे. प्रभु ॥ आठे कर्म रहित शुद्ध खातम, आध्रुणे वहभागी; गुण एकर्जिश अनंत गुणिजे, थयो प्रभुषद रागीरे. प्रभु. ॥ १ ॥ घडनिक्षेपे सात-नये सिद्ध, जाणता लय लागी; आतम ते सिद्ध बुद्ध प्रभु छे, सत्ताए सीभागीरे. प्रजु. ॥ २ ॥ आतम पूरण शुद्धि सिद्ध ते, पूजंतां वैरागी; बुद्धिसागर नि-भेय देशी, निमोही महात्यागीरे. प्रभु. ॥ ३ ॥

ॐ पण सिद्धपद पूजार्थ जण्य. स्वाह्म.

(३३३)

तृतीया आचार्य पद पूजा.

वत्रीशी छत्रीशी ग्रणवने, ग्रुणी ने झानी महंतः, पंचाबारने पाळता, पूजु सूरि संत. ॥ १ ॥ द्रव्या-दिक अनुसारथी, श्री सूरि ग्रणवंतः, जावधी आ-तम सूरि छे, पूजो प्रणमो संत. ॥ २ ॥ नय निक्षे-पथी सूरिपद, निजपरने हितकारः, निश्चयने व्यव-हास्मी, पूजो नरने नार. ॥ ३ ॥

सरा देशास्य.

जगत्मां सूरीश्वर जयकारो. जिन शासनही शोभाकारो, प्रभु षेठे उपकारी जगत् ॥१॥ छत्रोशी ठत्रोशी गुणगण शोजित, पंचाचारो विहासी; कलि-काले प्रभुपाटे प्रभुसम, संघ सकल खाधारो. ज. ॥ २॥ जैनधर्भ वर्तावे जगमां, निश्चयी जे व्यव-हाही; शुद्धादम गुणध्यान समाधि, राता आनंद-काली, ज. ॥ ३॥ आतमकानी जे मस्तक्षनी, आतम

(338)

ऋानंद धारी; बुद्धिमागर सद्गुरु सूरि, पूजंतां जवपारी. जगत्. ॥ ४ ॥

ॐ० सूरिपद पूजार्थ ज० य. स्वाहा,

चतुर्थी उपाध्याय पद पूजा.

पचीश गुणथी शोभता, वाचक धर्माधार; भणे भणावे साधुने, सम्यक् श्रुत दातार. ॥ १ ॥ अनेक गुणथी शोजता, साधे धर्माचार; संयममां वर्ते सदा, साधु धर्म धरे सार. ॥ १ ॥ श्रुतने चारित्र धर्मथी, खातम धर्म प्रकाश; करता वाचक पूजतां, थावे कर्म विनाश. ॥ ३ ॥

सोवे सोवे सारी रेंन ग्रमाइ. ए राग. पीछु. ॥ वाचकपद आतम ग्रण धारी, ज्ञानने दर्शन च रण विहारी. वाण ॥ स्थातम शुभ परिणति जयकारी,

(३३५)

वाचक पूजानी बालिहारी. वाचक ॥ १ ॥ ज्ञानानु-जवसुखनी क्यारी, पंच महावत पंचाचारी. वाण् मुनिगण पाठक जगहितकारी, श्रुतरित्या संयम गुणधारी. वाचक ॥ २ ॥ पूजी वंदी वाचक पदने, ज्ञानंद पामो नरनेनारी; बुद्धिसागर गुरु अवतारी, वाचक जगमां हे सुखकारी. वा० ॥ ३ ॥

ॐ० वाचक पद पूजार्थ ज० य० स्वा०

॥ पंचमी साधुपद पूजा ॥

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्रनी पदवी न इच्छुं खेश; क्षण पण साधु संगति, इच्छुं रहे न क्रेशण ॥ १ ॥ पूजुं मुनिपद प्रेमथी, इच्छुं मुनिवर संग; क्षण पण साधु संगतें, प्रगटे ज्ञान तरंग ॥ २ ॥ संतथी प्रजु परखाय छे, विणसे मोहविखास; प्रभुदर्शन प्रभु प्राप्तिमां, साधु दखाल ज खास ॥ ३ ॥

(३३६) राग वसंत.

तुंतो पाठक पद मन धर हो. रंगीले जिउरा ए राग.

जीव मुनिवर संगत कररे, प्रभु रसिया प्यासः जक चेतनसां जे समभावी, गुणीना गुण दिलमां घरोहे. प्रभु<u>त ॥१॥ श्र</u>ुतज्ञानी निजयर उपकारी, खे**द** द्वेष नहि जरी मररे. प्रभु० संतनां दर्शन ते प्रभु द्र्शन, जेने नहीं धन नारी घररे. प्रभु० संतहृद्य माहि प्रभुजी वे परगट, संत वचनामृत पान कररे. प्रभु० ॥ २ ॥ स्त्राधि व्याधि सर्वे उपाधि, नासे मन न रहे चंचळरे. प्रभु० श्रद्धाप्रीतिथी स्वार्पण करी सङ्क, तुंतो साधुनी सेवा कररे. प्रभु० ॥ ३ ॥ शांति पमाने संत ते साधु, बहु विनय करी मन धररे. प्रभु० साधु क्रपाथकी प्रजु परगट दिल, मोहजारे न पह्नो फररे. प्रजु० ॥ ४ ॥ आतम ग्रण पर्यायकी शुद्धि, पंचपरमेष्ठी पद स्मररे. प्रभु० बुद्धिसागर पू-र्णानन्दी, उपयोगे घटमां विचररे. प्रभु०॥ ५॥

(३३७)

कसरा.

गाइ गाइरे पंच परमेष्ठी पूजा गाइ, ओगणिश श्राच्योत्तर श्रक्षयत्रीज, चढते प्रहरे रचाइ; शांति तुष्टि पुष्टि सिद्धि,-देनारी सुखदाइरे. पंच. ॥ १ ॥ प्रभु महावीर पट्ट परपेरा, तप गच्छ जग सुखदायी; जगगुरु हीरविजय सूरिराजा, सहुगच्छमांही सवा-इरे. पंच ।। २ ॥ सागर शाखा पद परपरा, रविसा-गर गुरुराजा; सर्व मुनि गणना शिरताजा, मुनि ग्रुणगणनी माझारे. पंच. ॥ ३ ॥ रविसागर शिष्य-गुरु सुखसागर, शांत दांत सुखदायी; गुरुक्टपाने आ-शीर्वादे, ब्यातम स्थिरता पाइरे. पंच. ॥ ४ ॥ पंच परमेष्ठी पूजा रची शुभ, आनंद मंगलदायी; बुद्धि-सागर ऋदि वृद्धि, कीर्ति जयगुण छायोरे, पंच अथा 🕉 मुनिपद पूजार्थ० ज• य. स्थाहा.

(३३८)

श्रथ श्री महावीर जन्म कल्याणक जयंती महोत्सव पूजा.

॥ दुहा ॥

परमेश्वर परमातमा, महावीर जिनराजः वी-तराग अरिहंतजी, सर्वदेव शिरताज ॥ १ ॥ चोवी-शमा तीर्थकरा, सर्वविश्व श्राधार: केवलज्ञाने बोधीने, तार्यो नरने नार. ॥ २ ॥ भारत आदि दे-शनो, कीथो धर्मोद्धार; वर्तमान शासन प्रभु, तोर्थ-कर त्र्यवतार. ॥ ३ ॥ जेना कल्याणक दिने, नरक विषे उद्योत; शातापामे विश्वजीव, खनंत निर्मल ज्योत. ॥ ४ ॥ कल्याणक पांचे भक्षां, च्यवन जन्म कल्याणः प्रभु महावीर देवनां, गातां खानंद ल्हाण. ॥ ५ ॥ जन्मोत्सवने उजवे, जन्मादिक नहि थायः प्रभुभक्तियो भक्तनां,-दुःखो दूरे जाय. ॥ ६॥ द्रव्य जाव भक्तिथकी, आतम शुद्धि थाय; च्यवन ज न्मने गावतां, पुण्योद्य प्रगटाय. ॥ ७ ॥ प्रभु ज-न्म कल्याणनो, पूजा विविध प्रकार; गातां स्तवतां

(३३९)

भक्त जंन, सुख शांति खहे सार. ॥ ८॥ ते कारण पूजा रचुं, छानंद मंगल काज; घर घर पूजा गा-वतां, स्तवतां सुख साम्राज्य. ॥ ९॥ शुभ कार्यों करतां थकां, समिकती नरनार; वर्धमानपूजाबखे, शांति लहे नरनार. ॥ १०॥ प्रभु महावीर देव-ना, जन्म गुणो गानार; शांति लृष्टि पृष्टिने, जय खहमी वरनार. ॥ ११॥ महावीर जन्मजयंती दिन, उत्सव जे करनार; पूजा जेह भणावशे, सुख लहेशे जयकार. ॥ १२॥ छनंत गुण उपकारोजे, विश्वोद्धा-रक देव; जन्म जयंती महोत्सवे, रितया पामे सेव.॥ १३॥

॥ प्रथमभवे समकितप्राप्ति प्रजा ॥ पुखखवइ विजये जयोरे. ए राग.

पश्चिम महाविदेहमारे, प्रामपित नयसार; ग्रुषरागी विनयो भलोरे, प्राप्तता आधाररे वे-

(३४०)

तन ! समकित छे जयकार, जेथी लहा जव पाररे. चेतन. स॰ ॥ १ ॥ एक दिवस वनमां गयोरे, काष्टा-दिकने काज: जल्या पड्या एक साधनेरे, दीधी प्रेमे साजरे. चेतन० ॥ २ ॥ साधुनी सेवा करीरे, वहोराव्यो आहार; राच्यो माच्यो हर्षियोरे, धन्य गण्यो ऋवताररे. चेतन. स० ॥ ३ ॥ योग्य जाणीने साधुएरे, दीधो धर्मीपदेश; देवगुरुने धर्मनीरे, श्रद्धा प्रगटी बंशरे. चेतन. ॥ ४ ॥ त्रएय करण करी फर-शियुरे, समकित मोक्षनुं द्वार; समकित पामे भव तणीरे. गणतरी छे निर्धाररे. चेतन. ॥ ५ ॥ नय-सारे बहुजावथीरे, मुनिना वंद्या पाय; संतनी सेवा चाकरीरे, निष्फल क्यारे न जायरे, चेतन० ॥ ६ ॥ मिथ्यादृष्टि टळ्या पछीरे. देवग्ररुपर प्रेम: धर्म प्रेम वाधे घणोरे, प्रगटे योगने क्षेमरे. चेतन. ॥७॥ समकितवंता जीवमारे, कमोंदये करे काज; खंत-र्थी न्यारा रहेरे, इच्छे शिवपुर राजरे. चेतन. ॥८॥ **ळांतर्मुहर्त लगी रहेरे, उपराम समकित बेरा; पण**

(388)

ते नियमा जव करेरे, टाळे कर्मना क्वेशरे. चेतन. ॥ ९ ॥ क्षयोपशम समकित भक्षरे, प्रगटे वार अ-संख्य; क्षायिक एकज वारचीरे, आतम करे निःशं-करे. चेतन. ॥ १० ॥ यदा समकित प्रगटे तदारे, देव ग्रुरुपर राग; धर्मराग श्रद्धा घणोरे, मिथ्याचा-रनो त्यागरे. चेतन. ॥ ११ ॥ साधु संतना योगथीरे, जद्रक गुणी नयसार; समकित पाम्यो अंशाचीरे, बन्यो प्रभु अवताररे. चेतन. ॥१२॥ तीर्थेकर महा-वीरनोरे, ञ्चातम चढ्यो गुण थानः ऋषभदेव पौत्रज थयोरे, पाम्यो बहुश्रुत ज्ञानरे. चेतन. ॥ १३ ॥ म-रिचि नामे मुनि थयोरे, बीजा लह्या अवतार; एक-वार समिकत छहेरे, पडे रहोंये घढे साररे. चेतन. ॥ १४ ॥ समकित चारित्र करणीएरे, भवनो निश्चय अंतः बुद्धिसागर वीरनारे, ग्रुणप्रहो मतिमंतरे. चेतन. ॥ १५ ॥

ॐ ह्वाँ श्रों परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमते महावीर जिनेन्द्राय,

(\$84)

जर्स, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेर्य, फर्लं, यजामहे स्वाहा ॥

द्वितीया तीर्थिकर नाम कर्मबंधक पूजा.

धन्य धन्य महावीरनो, पचीशमो अवतार; भ-रत वित्रका नगरीमां, जन्म्या जग हितकार. ॥१॥ जितशत्रु राजातणो, जद्रा राणी कूख; नन्दन न-न्दन नामथी, जन्म्या जस बहु सुख. ॥२॥ पो-हिलसूरि उपदेशथी, ब्रह्मं चारित्र उदार; समिकतने चारित्रथी, निश्चय मुक्ति थनार. ॥३॥ समिकतने पाम्या पढी, समिकत जो टळी जाय; तोपण पालुं ते लही, चारित्री शिव पाय. ॥४॥ सर्वनयोनुं सार हे, द्रव्य जाव चारित्र; चारित्री निश्चय करे, सर्वकर्मने रिक्त. ॥ ४॥

(३४ई)

सांभळजो सखियां हमारी ए चाल.

नमुं नंदन मुनि जयकारो, धन्य मुनिवरनी बिद्धारी ॥ करे मास खमण तप भारी, बीस स्था-नक सेवना सारी; थया जत्कृष्टा अनगारीरे, भावे भावना शुद्ध विचारो; दुछ विश्वजीवो उद्घारी. नमुं. ॥ १ ॥ करुं शासन रसी नरनारी, दुःख दृष्टि टळे दुःखकारी; सर्वजीवविषे उजियारी, करुं पावना एवी सारीरे: प्रगटी श्रम परिणति क्यारी, बांध्युं तीर्थकर पद भारो. नमुं. ॥ २ ॥ प्रत्यारव्यानी क-षाय विरामे, दुष्ट संज्वल परिणति वामे; धर्म प्या-नावलंबन ठामे, वर्षता उज्ज्वलपरिणामेरे; छद्वा गुणस्थानकना धारी, धन्य धन्य मुनि द्यनगारी. नमुं. ॥ ३ ॥ रागद्वेषनी परिणति टाळे, समता सुलमांहि म्हाले; शुभ अशुभ बुद्धिने खाळे, निज आतममां मन वाळेरे; जेणे कंचन कामिनी टाळी, जडथी मुर्च्छा जतारी, नमुं. ॥ ४ ॥ क्षयोपरामी

(३४४)

चारित्र पाळे, प्रगटया दोषो झट टाळे; षडावइयके गुण व्यजवाळे, करे मोहची युद्धज जारेरे; नहीं दि-खमां अरिनी यारी, उपयोगे रहे हितकारी. नमुं. ॥ ५ ॥ चार भावना दिखमां जावे, शुद्ध ब्यातम रूपनेध्यावे; सहे जपसर्गो समभावे, एवा संत मळे शिव थावेरे; एवा सराग संयमधारी, धन्य नं-दन मुनि सुखकारी. नमुं. ॥ ६ ॥ धन्य चारित्री ग्रुणधारी, द्रव्य ग्रुणपर्याय विचारी; बन्या द्रव्य किया व्यवहारी, जे निश्चय उपयोग धारोरे; बुद्धि-सागर मुनि महाराजा, सुरपति नरपति शिरताजा. नमुं.॥७॥

ॐ ह्राँ श्रीं प॰ श्रीमते महावीर जिनेन्द्राय, जलं, चंदनं पुष्पं, धूपं, दोपं, ख्रक्षतं, नैवेद्यं च सं-यतगुणलाभाय य० स्वाहा ॥

(३४५)

तृतीया प्राणांत स्वर्गगमनद्शावर्णन पूजा.

श्रायु क्षये नंदन मुनि, दशमा स्वर्ग मझार, उपज्या वीश सागर उपम, श्रायुश्री जयकार. ॥१॥ मति श्रुत अवधिज्ञानना,—धारक सुर सुखकार; पूर्व भवोने जाणता, ग्रुभ परिणामी उदार. ॥२॥ जोगवे मनथी जोगने, पण निह जोगी जेह; सम्यग्दृष्टि देवने, वर्ते निह संदेह. ॥ ३॥

सांभळशो मुनि संयम रागे-ए राग.

सांभळशो महावीर प्रभुनो, उद्दीशमो भव सा-रोरे; मतिश्रुत अवधिना उपयोगे, जातो सुर जन्मा-रोरे. सांभळशो०॥१॥सराग संयम तप जप कमें, स्वर्ग गतिने पामेरे; सम्यग्दृष्टि, मुक्ति माटे, विचरे रहे विश्रामेरे. साजळशो०॥१॥ वैकिय देही पुद्-गळ शक्ति,—धारक जिक्तधारीरे; धर्मीजीवोने स-हाय करंता, कर्मयोगी जपकारीरे. सां०॥३॥ शुक्क

(३४६)

शुक्क परिणामना धारी, कामी बतां जे खकामीरे; सम्यग्दृष्टियोगे सब्द्धं, जाणे न धारे खामीरे. सां ॥४॥ पुण्य भोग जोगवता विचरे, मुक्ति सुख श्रभिलाषीरे; सघळुं श्रायुष्य पूरण करता, शुद्धातम विश्वासीरे. सां ॥ ४॥ अनंत निर्जरे अल्पकर्मबंध, सम्यग्दष्टि योगेरे; बाह्यथकी देवजवना सुखने, भोगवे उद्यप्रयोगेरे. सां ॥६॥ तीर्थकर पद बांध्य जाणे, भावी जन्मने जाणेरे; एक समये चवतां नहि जाणे, उपयोग मुहूर्त प्रमाणेरे. सांव ॥ ७ ॥ शिव मारग विसामो सुरभव, वीरप्रभुनो जाणोरे; बुद्धि-सागर प्रभुगुणभक्तें, जन्म सफल थयो मानोरे. सां० ॥ ८ ॥

ॐ ह्वाँ श्राँ परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमते महावीर जिनेन्द्राय, भक्तिलाभार्थ ज० य० स्वाहा ॥

(३४७)

चतुर्थी च्यवन कल्याण पूजा.

जारत माहन कुंममां, ब्राह्मण ऋषभदास; देवा-नंदा ब्राह्मणी, पित्रता जे खास. ॥१॥ प्राणत स्वर्गथकी प्रभु, जोगवी सुरनुं आय; देवानंदा कुख विषे, प्रगट्या पुण्यपसाय. ॥२॥ चौद स्वप्नने देखती, देवानंदा मात; ऋषभदासना बोधथी, जाणी चै रिळियात. ॥३॥

मेतारज मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार. ए राग.

कर्मोद्यथी देवानंदा, कुलमां चवी प्रभु आय; ज्यासी रात्री दिवस त्यां रहिया, कर्मथकी न छू-टाय; त्रिज्ञानी प्रग्रजी भोगवे कर्मना भोग. ॥ १ ॥ क्षश्रिय कुंड नगरोमांही, सिद्धारथ ग्रणी राय; त्रि-शाला राणी तेनी कुलमां, ख्याच्या प्रभु सुखदाय. त्रिण ॥ २ ॥ त्रिशला माता चौद स्वप्तने, देली ह-र्षित थाय; जोषी खो बोले तीर्थकर,—प्रगटथा छे

(386)

जगराय. त्रि०॥३॥ राजा जोषीगण संतोषे, दाने अने सन्माने; त्रिशला माता प्रज्ञुणजक्ते, ब्यायु वहे ते न जाणे. त्रि०॥४॥ गर्जे रहिया त्रिज्ञानो प्रभु, उपयोगे जिनराय; शाता वेदनो वेदे गर्जमां, गर्भकाल वीती जाय. त्रि०॥४॥ नव मासने उपर साडा—, सात दिवस वही जाय; बुद्धिसागर प्रभु महावीर, गर्भ गुफामां सुहाय. त्रि०॥६॥

ॐ ह्वाँ श्रीं० प० महावीर च्यवन कल्याणक पूजार्थ जा य० स्वाहा ॥

॥ पंचमी श्री महावीर जन्म कल्याणक पूजा ॥

त्रिशा माता विधियी, गर्भवहे सुलकार; शांति तुष्टि पुष्टिथी, आरोग्य ज धरनार. ॥ १ ॥ चैत्री सुदि त्रयोदशी, मध्य रात्रीना योग; सर्व दिशा निर्मेख छते, जन्म्या प्रभु गुण जोग. ॥ २ ॥ अज-वाळुं नरके थयुं, चौद भुवन उद्योत; सर्व जीव शा-

(३४९)

ता यइ, जेनी निर्मल ज्योत. ॥ ३ ॥ छप्पन दिशि कुमरी तुरत, आवी प्रभुने पास; सूति कर्म जावे कर्यु, माता हर्ष उछास. ॥ ४ ॥

॥ मेरु शिखर न्हवरावे हो सुरपति० ॥ ए राग ॥

प्रभु जन्म्या ते काले हो सुरपति, सघळा म-ळी झट आवे; प्रभुनी माता पासे आवी, प्रभु प्र-णमीने वधावे हो; सुरपित सघळा मळी तिहां छा-वे.॥१॥ प्रजु विंब मूकी प्रभुपासे, प्रभुने मेरु क्षेइ जावे; आठ जातिना कलश भरीने, स्नात्र करी गुण जावे हो; सुरपित प्रेमे प्रभु न्हवरावे. ॥ २ ॥ चोसठ इन्द्रो प्रभु गुण गावे, हैंडे हर्ष न मावे; त्र-ण्य जगतुना नाथने ध्यावे, भक्ते उछसित थावे हो; सुरपति प्रेमे प्रभु न्हवरावे. ॥ ३ ॥ चार निकायना देव देवी खो, इन्द्रो असंस्य त्यां खाये; विधिए पूजी प्रभुने मातनी,-पासे मूकी जावे हो. सुरपति. ॥४॥ प्रातःकाले जन्मने जाणी, सिद्धारथ नृप जावे; प्रभु

(३५०)

जनमोत्सव देश नगरने, घर घरमां विरचाने हो; प्रजुजी जन्म्या जग जयकारी. ॥ ५ ॥ शांति तुष्टि पुष्टि मंगल,-वायु जारत वायो; भारतमांही सोना सूरज, उग्यो प्रगट सुहायो हो. प्रभुजी. ॥ ६ ॥ भारतमां सुख शांति वर्तो, रोग उपद्रव शामो; प्रभु कल्याणक योगे जगत्मां, सर्व जोवो सुख पामो हो. प्रजुजी. ॥ ७ ॥ ओगणीश व्यव्योत्तर चैत्र सुदि, त्रयोदशो रविवारे; प्रभु महावीर जन्म महोत्सव, गायो हर्ष विचारे हो. प्रभुजी. ॥ ८ ॥ प्रभु महावीर गावो भावो, रत्नादिकथी वधावो, सकख संघमां आनंदमंगल, शांति पुष्टि यावो हो. प्रभुजी महावीर देव वधावो ॥ ९ ॥ जन्म कल्याणक पूजा गाइ, विजापूरमां सारी, बुद्धिसागर त्यानंद मंगख, पामो नरने नारी हो. प्रभुजी महावीर देव वधावो. ॥१०॥

ॐ० प० श्री महावीर जिनेश्वर जन्म कल्या-णक पुजार्थे ज० य० स्वाहा.॥

(३५१)

॥ प्रभु महावोर तीर्थकर देवनी अष्ट प्रकारी पूजा ॥

परब्रह्म परमातमा, चोवीशमा जिनराजः वि-श्वपति जिनपति विभु, सारो वंडित काज. ॥ १ ॥ प्रणमुं महावीर जगपित, जिन शासन सुल्तान; अष्ट प्रकारे द्रव्यथी, पूजुं तुज जगवान् ॥ २ ॥ म-न्वच कायाथी कर्यु, प्रजु तुज शरणुं बेश; ऋर्पायो तुजमां प्रभु, जाग्यो श्रसंख्य प्रदेश. ॥ ३ ॥ जडथी त्रीति टाळोने, धारी तुजपर त्रीत; तुजपर श्रद्धा धारतां, रही न जोति अनीति. ॥ ४ ॥ परोक्ष मति श्रुत ज्ञानथी, परोक्ष तुं परखाय; केवलज्ञाने तुं ५ भु, प्रत्यक्त घट पेखाय. ॥ ५ ॥ तुज स्थागमना **ऋनुजर्वे, अनुभव्यो जिनदेव; द्रव्यभाव पूजा** रची, करुं तुजरूपनी सेव. ॥ ६ ॥ अनंत गुण प-र्यायनो, शुद्धि करवा काज; निज स्नातम तुज सा-थमां, योज्यो करो सनाथ. ॥ ७ ॥ तुज ग्रण

(३५२)

गातां घ्यावतां, स्तवतां सर्व प्रकार; निज स्थातमनी द्युद्धता, पूज्यपणुं निर्धार. ॥ ८ ॥

प्रथमा जलपूजा.

श्रद्धा त्रोति जलवडे, पूजो महावोर देव; स-म्यग् दृष्टि योगथी, नासे मिण्या टेव. ॥१॥ श्रद्धा प्रेमने सत्यनी—, जल पूजा सुलकार; सम्यग् दृष्टि भक्तने, जिक्त शिव देनार. ॥ १॥ द्रव्यभाव सम्य-कत्वथी, तुज सेवक नरनार; निश्चय मुक्तिपद वरे, जमे नहीं संसार. ॥ ३॥

सब जन धरम धरम मुख बोले. ए राग.

प्रभु महावीर जगत् जयकारी, तीर्थकर छप-कारीरे. प्रभु ॥ तुजपर श्रद्धा प्रीति धारी, कीधुं श-रण तुज भारी; ॐ द्यहें महावीर प्रजुजी, जापे ल-गनी धारीरे. महावीर• ॥ १ ॥ शुद्ध गुण पर्यायना योंगें, निज उपयोगे सुधारी; प्रभु तुज साथे मिळि-

(343)

यो हळियो, लेजो झट उद्घारीरे. महावीरण॥२॥ तत्त्वम[स सोऽहं ने ओऽहं, एकता छोनता धारो; भूल्यो जडमाया तुज भाने, तुजपर जउ सहु वारीरे. महावीर० ॥ ३ ॥ प्रजु तुज रोझनी व्यागळ जगनो, खीज गणुं न लगारी; ज्यां देखुं त्यां तुंहि तुंहि तुंहि, प्रगटंती धून भारीरे. महावीर० ॥ ४ ॥ ख-क्ष्मी सत्ताथी न पमातो, निराकार निर्धारो; श्रद्धा प्रीति उपयोगे प्रभु, मळतो तुं सुखकारीरे. महावीर० ॥ ५॥ श्रद्धा प्रीति जल पूजायी, पूजुं जग हित-कारी; ज्ञानानन्द जे अंशे प्रगटे, पूजाफल निर्धा-रीरे. महावीरण ॥ ६ ॥ जगनी माया मन पमछाया, मुं जुं नहीं त्यां लगारी; बुद्धिसागर प्रभुमहावीर, लेजो हवेतो उगारीरे. महावीर० ॥ ७ ॥

ॐ हुँ। श्रो परम पुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रोमते महावीर जिनेन्द्राय, जरुं यजामहे स्वाहा ॥

(३५४) द्वितीया चंदन पूजा.

प्रभु महावीर गुण घणा, वैखरीथी न कथाय; परा पर्यंती भासता, अनंत तुज महिमाय.॥१॥ धर्म क्षमा चंदनथकी, पूजुं प्रभु तुज अंग; जाणं-तां तुज धर्मने, लाग्यो अविहमरंग.॥२॥ एक-वार तुज आगमे, जो प्रभु जाण्यो जाय; तो भव-ताप रहे नहीं, निश्चय ए निर्माय.॥३॥

॥ प्रभु सुमतिरे सुमति खापो प्यारा, मुज प्राणतणा आधारा ॥ ए राग. ॥

प्रभु महावीररे तुज साथे रंग लाग्यो, म्हारो अंतर महावीर जाग्यो; प्रभु गुरुगमथी तुं जणायोरे, पूरा प्रेमचकी परखायोरे, धातोधातेरे मिळियो आनंद पायो, रोमेरोमे प्रभु रंगायो. प्रभु. ॥ १॥ खागे निह तुजवण कोइ प्यारंरे, नहीं तुजवण कोइ जग म्हारंरे; मोह मारेरे तुजथी मेळ सुद्दातो, भेद

(३५५)

जागे जाएयो जातो. प्रभु. ॥ २ ॥ गुण अनंत पर्याय दिखोरे, बीजा सात्विक गुणगण भरियोरे, उपदेशेरे तार्या जीव करोडो, जडे नहीं तुज जगमां जोडो. प्रभु. ॥ ३ ॥ प्रभु देह छतां साकारारे, देहातीत थतां निराकारारे; घया सिद्ध ज रे पूर्ण असंख्यप्रदेशो, अरिहंत अलख ब्रह्म देशी. प्रभु. ॥ ४ ॥ जे आतम निह ते शुं? मागुंरे, मेंतो मागणपणुं हवे त्याग्युरे; प्रभु परखीरे निष्कामी थेजाग्यो, तुजलगनी-एघट जाग्यो. प्रजु.॥ ४ ॥ पूर्ण प्रभुथी पूर्ण रंगायोरे, पूर्ण आनंद घटमां हायोरे; बुद्धिसागररे पूर्णनी पूरण पूजा, उपयोगे महावीर पूज्या. प्रभु. ॥ ६ ॥

🖫 प० महावीरं जिनेन्द्राय, चंद्नं. य. स्वाहा.

॥ तृतीया पुष्पपूजा. ॥

प्रभु महावीर जित्तथी, मुक्ति खहे नरनार; प्रभु गुण पुष्पनी मालची, पूजो प्रभु जयकार.॥१॥

(३५६)

जैनधर्म श्रद्धा धरो, सर्व संघनी सेव; प्रभु महावीर देवनी, पूजानी ए टेव. ॥ २ ॥ प्रभु महावीर उप-दिश्यां, पड् द्रव्यो नव तत्त्व; सत्य गणीने वर्तवुं; ए.प्रभु पूजा सत्त्व. ॥ ३ ॥

निशानी कहा बतावुरे. ए राग.

प्रभु महावीर तुं प्यारोरे, सर्व विश्व खाधार.
प्रभु ॥ १ ॥ तुज हृद्यथी प्रगृटियोरे, जैनधर्म छे
सत्य; सकल संघनी सेवनारे, तुज पूजानुं कृत्य.
प्रभु ॥१॥ केवलज्ञानी तुं प्रभुरे, तुज वचनानुसार;
वर्तवुं पुष्पनी पूजनारे, धरवा धर्माचार. प्रभु ॥१॥
मुज मन मन्दिरमां वसोरे, क्षण पण थाओ न दूर;
तुज विरहो न खमी शकुरे, रहेशो हजराहजूर.
प्रभु ॥ ३ ॥ नय निक्षेप प्रमाणधीरे, जैनागम अनुसार; प्रभु तुज ध्यान समाधिथीरे, प्रगट्यो रस
जयकार. प्रभु ॥ ४ ॥ अनेकांत सत्तामयीरे, अनंत

(३५७)

गुण खाधार; एक आधार प्रभु तुंहिरे, खानंदमय निर्धार. प्रभु० ॥ ५ ॥ सेवा खादि गुणमयीरे, सा-स्विक पुष्पनी माल; प्रभु महावीर कंठमारे, स्था-षंता कल्याण. प्रभु० ॥ ६ ॥ तुज स्वरूप थइ तुज ज्ञजुंरे, चढता जावोछास; बुद्धिसागर आतमारे, आ-नंद खनुजव खास. प्रभु० ॥ ७ ॥ ॐ प० महावीर जिनेन्द्राय पु० य० स्वाहा ॥

चतुर्थी धूप पूजा.

देव ग्रुह्ने धर्मनी, श्रद्धा समिकत खास; ग्रुह्म पासे समिकत ग्रही, टाळो मिध्यावास. ॥ १ ॥ खेद भीति ने द्वेष वण, प्रज्ञने पूजे भक्त; देहादि जडसंगी पण, मन निह जम खासक्त. ॥ २ ॥ प्रभु नामना जापनो—धूप करी नरनार; प्रभुने पूजे प्रेम-थी, कर्म टळे निर्धार. ॥ ३ ॥

(346)

एँ ग्रण वीरतणो न विसाह, संजाह दिन रातरे. ए राग.

ॐ ऋँई महावीर जिनेश्वर, जाप जपुं दिन रा-तरे; प्रभु वण बीजुं कांइ न इच्छुं, मात पिता तुं चातरे. ॐ ऋँहै० ॥ १ ॥ परापइयंती मध्यमा वैखरी, जापे टळे सहु पापरे; राग द्वेष न पासे आवे, जाप जपंतां ऋमापरे. ॐ अँई० ॥ २ ॥ ज्यां त्यां अंतर बाहिर धारणा, त्राटक तुज उपयोग्रेर; जीभ न हाले मानस जापे, प्रगटे ब्यानंद जोगरे. 👺 ब्याई० ॥ ३॥ जड चेतन सह विश्वमां प्रभुनी,-सत्ता धारणायोगरे; आत्ममहावीरसत्ता प्रगटे, थातो कर्म वियोगरे. ॐ ऋँई० ॥ ४ ॥ प्रभु तुज जापना धूपथी नासे, दुः र्बुद्धि दुर्गेधरे; क्षण क्षण आतम शुद्धि दृद्धि, आ-तम थाय ऋबंधरे. ॐ अँहैं० ॥ ५ ॥ प्रभु जापे प्रभु घटमां प्रकार्या, प्रगटो सुखनी खुमारीरे; बुद्धिसागर महावीर लगनी, प्रगटी न उतरे उतारीरे. ॐ अईं०॥६॥ ॐ० पण महावीर जिनेन्द्राय-धूपं राजामहे स्वाहा॥

(३५९) ॥ पंचमी दीपक पूजा ॥

मतिश्रुत ज्ञानना दीपके, पूजा महावीर देव; करतां दुर्गुण दोष सहु, नासे छे ततखेव. ॥ १ ॥ मिध्या तम दूरेटळे, दीपक पूजा योग; केवल ज्ञानने दर्शने, मुक्तिपुरी संयोग. ॥ २ ॥ तिरोभाव निज ऋकिनो, आविर्जाव जे थाय; आत्ममहावीर सि-द्धता, देहछतां सोहाय. ॥ ३ ॥

आशा ओरनको क्या कोजे. ए राग. ब्याशाउरी.॥

घटमां महावोर जिनवर भास्या, छापो छाप प्रकाश्या. घटमां० चौदलोक आकारे मनुष्यनुं, तनु मन्दिर जयकारी; छातंष्यप्रदेशी छात्ममहावोर, शोजंतुं सुखकारी. घटमां० ॥ १ ॥ गुरुगम ज्ञाननी कुंचीयोगे, समकित द्वार उघाडयुं; मतिश्रुत आखे छानंत ज्योति, प्रभुनुं रूप निहाळ्युं. घटमां० ॥ २॥ अनहद नादनो घंट वगाडयो, खळी लळी नमो

(३६०)

प्रभु पाये; आनन्द प्रगटयो ख्रितशय जारी, त्रण्य भुवन न समाये. घटमां० ॥ ३ ॥ दिल फानस मन कोडीयामां, प्रीति घृत पूर्यु सारुं; सद्विचार दीवेट करी शुज, ज्ञानामि जिजयारुं. घटमां० ॥ ४ ॥ धर्म बुद्धिनो दीपक एवो, झळहळतो प्रभु ज्योते; प्रज महावीर पासे शोभे, क्षयोपशम उद्याते. घटमां० ॥ ५ ॥ क्षयोपशमना ज्ञान दोपकथी, महावीर जिनवर पूज्या, बुद्धिसागर गुरुक्टपाए, सत्य प्रकाशे सूज्या. घटमां० ॥ ६ ॥

ॐ० पण महावोर जिनेन्द्राय-दीपं य० स्वाहा.

षष्ठी अक्षत पूजा.

अक्षत महावीर रूपनी, अनंत झळहळ ज्योत; अक्षतयो प्रभु पूजतां, त्रएय भुवन उद्योत. ॥ १ ॥ इया दान दमशीलने, संतोषे महावीर; पूजंतां निज आतमा, शुद्ध बने महावीर. ॥ २ ॥ सार्विकने जे

(३६१)

सहज है, जाणी ग्रणगण बेश; प्रभु महाबीर पूजतां, रहे न मिश्याक्छेश. ॥ ३ ॥

राग. आज्ञावरी. ॥

महावीर अकसकला प्रभु त्हारी, सर्व विश्वना पुरमेश्वर छो. सकल जगत् उपकारी महावीर०॥ पृथ्वी चाळी भानु हाही बे, आरती मंगल भारी: महा मेघनां वाजां वागे, विजळी महिमा भारी. महावीर० ॥ १ ॥ वेदो आगमो महिमा गावे, ऋषियो ध्याइ गयारी; व्याप्यने व्यापक सद्सद्रूपो, गुणपर्याय मयारी. महावीर० ॥ २ ॥ सद्ग्रुणरूपके पंच महाजूत, ज्ञाने शोभी रह्यारी; अनंत गुण गणना तमे दरिया, आविर्जावे रह्यारी. महावीर० ॥ ३ ॥ चारगति चूरक स्वस्ति-कने, रत्नत्रयी पुंज धारी; सिद्ध शिखा सिद्ध चिह्न करीने, पूर्जुं भाव वधारी ।। ४ ॥ नयनिक्षेपा भंग

(३६२)

विकल्पे, घ्यान दशा छे विचारी; बुद्धिसागर शुद्ध उपयोगे, महावोर जग जयकारी. महावोरः ॥ ५॥

सप्तमी नैवेचपूजा.

बाह्यांतर तुज रूपने, जाणे भक्त गणाय; तुज पर श्रद्धा धारतां, मुज मन निर्मेख थाय. ॥१॥ चौद भुवनमां खायड्यो, पड्युं न न्यांये चेन; पण तुजमां मन धारतां, प्रगटो सुखनी घेंन. ॥२॥ वर्धमान महावीर तुं, एक खरो आधार; तुजपर स्वार्पण सहु कर्यु; तुज शरणुं सुखकार. ॥३॥

नाथ कैसे गजको बंध बुमायो. ए राग.

प्रभु तुज श्रानंदरस बिलहारो, तीर्थिकर अवतारी. प्रभु० अनंत भवमां ठाम न ठरियो, दुःख लह्यो बहु भारी; बाहिरजड रसथी रंगायो, तृप्ति थई न लगारी. प्रभु०॥ १॥ परमातम तुज श्रानंद

(\$ 4 \$ 5

रसियो, थातां प्रगटी खुमारी; कोटि प्रयत्नो कोइ करे पण, उतरे नहि ते उतारी. प्रभु तुज आनंद रस बिलहारी. ॥ २ ॥ तुज रस पामे विषयरस छूटे, मनद्धं ठरे निर्धारी; सेवा भक्ति आतमज्ञाने, तुज रस मळतो भारी. प्रभु० ॥ ३ ॥ कोटि उपाय करे जन कोइ, सत्यानन्दने माटे; पण जड जगथी न त्र्यानंद पामे, आनंद छे तुज हाटे. प्रभु० ॥ ४ ॥ अमृत आस्वाद्या पठी विषना,-पाननो प्रेम न जागे. एकवार तुज रसने पामे, मन न रहे जडरागे. प्रमुख ॥ ५ ॥ क्षयोपशम आतम रस पामी. क्षायिक आ-नंद माटे; सहेजे तुजमां मन रंगायुं, माख छे शिरने साटे. प्रभु० ॥ ६ ॥ ऋानंदरस नैवेशे पूजुं, बाह्य नैवेचथी पूजुं; बुद्धिसागर महावीर पामी, बीजे क्यांये न मुंछु. प्रभुण ॥ ७ ॥

ॐ० पण महावीर जिनेन्द्राय—नैवेद्यं यजामहे स्वाहा॥

(३६४)

अष्टमी फलपूजा.

महावीरमां मन घरी, चालंतां व्यवहार; आस् सिक्त वण आतमा, प्रभुपद पामे सार. ॥ र ॥ वास् द्यांतर अतिशयी प्रजु, महावीर जिन परखाय; श्रद्धा प्रीति स्वार्पणे, मुक्ति अंते थाय. ॥२॥ प्रभु महावीर तुं धणी, सर्व विश्वनो देव; निष्कामे दिखमां घरो, करुं ताह्यरी सेव. ॥ ३ ॥

राग सारंग. प्रभु निर्मल दर्शन को जोए. ए राग. प्रभु वीर !!! थयो तुज रागियो, आतमज्ञाने जागियो. प्रभु० इन्द्रादिक पद सुख नहीं इच्छुं, तुज स्वरूपे लागियो; भव मुक्तिमां समद्यत्ति थे, नहि त्यागी वैरागियो. प्रभु० ॥ १ ॥ जम जगमां त्याग प्रहणनी दृत्ति, टळतां थयो सौजागियो; बुद्धिसागर प्रभु महावीर, परमानंद फल चाखियो. प्रभु० ॥२॥

(३६५)

विनितिपणे हुं विनर्दुं, घेर आवोने ढोखा. ए राग.

क्षयोपंशम जपशम फले, प्रभु पूज्या स्वभावे; निमित्त साधन साधना, साधुं प्रोतिजाने. क्षयोप-शम॰ ॥ ३ ॥ प्रभु पूजन फल ज्ञानने, ब्यानंद रस बीधुं; प्रभु रीझे जग खीजमां, छेश चित्त न दीधुं. क्षयोपराम० ॥ ४ ॥ बाकी क्षायिक भावथी, पूजन फल रहियुं; शुद्धातम तुज रंगमां, मुज मन गहग-हियु. क्षयोपशमण ॥ ५ ॥ उत्पत्ति व्यय धौव्यथी, सर्वे द्रव्य प्रमाएयां; सम्यग् दृष्टि योगथी, तुज व-चनी जाएयां. क्षयोपशमण।। ६॥ देव ग्रुक्ते धर्मनी. भक्ति,-व्यवहारे; रहियो प्रभु तुज आणथी, उपयोग विचारे. क्षयोपशमण ॥ ७ ॥ साखिक आदि मोहना, पडदामां रहेलो; बुद्धिसागर आतमा, देखी मळियो मेळो. क्षयोपशम० ॥ ८॥

(३६६) कलश धन्याश्रो.

कीधी कीधीरे प्रभु महावीर पूजा कीधी. आ-नंद मंगल लोला प्रगटी, भोगवी आतम ऋद्धिरे. प्रजु० ॥ १ ॥ द्रव्यने जावथी ग्रहीने पूजा, त्यागीने जावथी (सद्धि; प्रभु गातां ध्यातां स्तवतां सुख, अष्ट सिद्धिनी समृद्धिरे. प्रभु० ॥ २ ॥ स्रोगणिश अठयोत्तर वैशाखी, वदि चोथने सोमवारे: विद्या पुरमां पूजा रची शुज, भवी जननां दुःखवारेरे. प्रभु० ॥ ३ ॥ प्रभु महावीर पूजायोगे, जैन संघोन्न-ति थाशो; जैन धर्म आराधी भव्यो, परमानंद्ने पाशोरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ प्रभु पूजा भणतां ने गातां, थाशो संघ समृद्धि; बुद्धिसागर ऋदि वृद्धि, कोर्ति जय शिव सिद्धिरे. प्रभु० ॥ ५ ॥

(३६७)

श्री घंटाकर्ण महावीर पूजन विधि.

श्री शांति स्नात्र ऋष्टोत्तरी स्नात्र तथा प्रतिष्ठा प्रसंगे पूर्वाचार्य मुनियोए घंट कर्ण महावीर मंत्रयंत्रनी थाळी थापवानुं जणाव्युं छे अने ते प्रमाणे वर्तमानमां प्रवृत्ति थाय छे. तथा देवप्रतिष्ठा शांति स्नात्र काले घंटाकर्ण महावीरना मंत्रनो १०८ वार जाप करीने सु-खडी सहित मंत्रनी स्थाळी बांधी स्थापवामां आवे छे. घंटाकर्ण महावोरनी श्री महुडो (मधुपुरी) गाममां श्री पद्मप्रभु जिन मंदिरनी बहार देरी हे, तेमां घंटाकर्ण महावीरनी मूर्ति स्थापवामां खावो छे. घगा भक्तो-ना आग्रहथी वोरनी पूजा रचवामां ऋ।वो हे, तथा आरती रचवामां आवी छे. ग्रहगम पूर्वक पूजा ज-णावत्री अने करवी. शासन रक्षक वीर तरीके पू-वीचार्योए घंटाकर्ण महावीरने स्थाप्या हे. घंटाकर्ण महावीर कस्प वे त्रण जातिना छे. कलिकालमां शा-सन प्रभावक वोरना अनेक चमत्कारो थाय हे. स-म्यग् दृष्टि वीर ते सम्यग् दृष्टियोने स्वधर्मी तरीके

(३६८)

जिक्त करवा योग्य हे. परमात्म महावीर देवना भक्त रागी वीरने स्वधर्मी तरीके मानवामां पूजवामां अः तिचार नथी. स्वधर्मी तरीके श्री घंटाकर्ण महावीर-नी सहाय इच्छवानी जेस्रोनी इच्छा होय तेओए घंटाकर्ण महावीरनी पूजा आदिष्यी आराधना करवी. मिथ्यात्वी देव देवीनी सहाय इच्छवा करतां सम्यग् दृष्टि स्वधर्मी देव वीरनी सहाय इच्छवी ते विशेष उत्तम हे. गीतार्थ आचार्य मुनि मंत्र ज्ञाताओनी पासे रही मंत्र, विद्या, देवोपासना वगेरेनुं रहस्य स-मजुं. जेओने चारनिकायना स्वधर्मी देवादिनी सहायादिनी इच्छा न होय, तेस्रोने माटे तो वीरा-दिनुं पूजन नथी. इत्यादि सर्व बाबत गुरु गम-थी जाणवी.

(३६९)

जैन शासन भक्त श्री घंटाकर्ण महावीर पूजा.

परब्रह्म परमातमा, महावीर जिनराजः इन्दा-दिक पूजे सदा, सर्व देव शिरताज ॥ १ ॥ चोवी-शमा तीर्थकरा, विश्वोद्धारक देव: सर्व देवने देवीओ, करती प्रेमे सेव ॥ २॥ यक्षयक्षिणी योगिनी, प्रभ पद् ध्यावे बेश; बावन वीरो सेवता, टाळे जविना क्केश ॥ ३ ॥ सर्व वीरमां श्रेष्ठ जे, महावीर शिर-दार: घंटाकर्ण विराजता, प्रभु जक्त अवतार परमातम महावीरना, परमजक्त बलवंत; घंटाकर्ण प्रसिद्ध छे, साझ करे गुणवंत ॥ ५ ॥ प्रभु महावीर देवना, भक्तो नरनेनार; तेओनां संकट टळे, समरे स्हाय थनार ॥ ६ ॥ सम्यग्दष्टि भक्त हे, घंटा-कर्णजी वीर; साधर्मिक जक्ति करे, प्रगटे आतम थीर ॥ ७ ॥ साधार्मिक महावीरनी, पूजा ग्रही नर-नार; करतां समकित निर्मेह्यं, करतां धरी दिलप्यार. ॥ ८ ॥ त्यागी मुनिवर कारणे, धर्म प्रभावन हेत; मंत्र स्मरे गुण बोखीने, धर्मवृद्धि संकेत. ॥ ९॥

(३७०)

धर्मी रागी समिकती, वीर करंतो स्हाय; सम्यग्दिष्टि धर्मीने, संकट खाव्यां जाय ॥ १० ॥ धूपने दोपक पुष्पनी, सुखडी पूजा सार, सुवर्ण आदि वरखथी, पूजा छे श्रीकार० ॥ ११ ॥

प्रथमा धूपपूजा.

कानुको न जाणे मोरी प्रीत. ए राग.

घंटाकर्ण महावीर देव, अझूत महिमा धारीरे. घंटाकर्ण० समरंतां चढता व्हारे, संकट पडियां टाळे, रहारो महिमा अपरंपार, जक्तना रोग निवारेरे. घंटाकर्ण० ॥ १ ॥ घंटाकर्णना मंत्रे, श्रद्धाची विधि यंत्रे; साधे सिद्धे सघळां काज, ग्रुरुगम भाषित तं-त्रेरे. घंटाकर्ण० ॥ २ ॥ प्रत्यक्ष दर्शन आपे, भक्तोना मनमां व्यापे; आपे धर्म करणमां साज, कष्टनी कोटो कापेरे. घंटाकर्ण० ॥ ३ ॥ रहारा मंत्रोना जापे, श-कियो दिखमां छापे: तजरागी नरनेनार, धर्भने जन्

(308)

गमां स्थापेरे. घंटाकर्ण० ॥ ४ ॥ महिमा त्हारो जग गाजे, ज्यां त्यां जय डंको वाजे; समरे रहेशो हजरा हजूर, त्हारु विरुद्ध न लाजेरे. घंटाकर्ण० ॥ ४ ॥ व-नमां रणमां सागरमां, पृथ्वीतलमां अंबरमां; करोने धर्म कर्ममां साज, दरबारे ने घरमांरे. घंटाकर्ण०॥६॥ धूपे पूजी गुण गावुं, सम्यग् दृष्टि दिल लावुं; बुद्धि-सागर शासन देव, जगमां स्थापी भावुंरे. घंटा-फर्ण० ॥ ७ ॥

मंत्र-ॐ घंटाकर्ण महावीराय, सर्व रोगोपद्रव शमनाय, इष्ट लाभाय. शांति तुष्टि पुष्टयर्थे धूपं य-जामहे स्वाहा.

द्वितीया दीपक पूजा.

सेवक अरज करे छे राज, अमने शिव सुख आपो. ए राग.

घंटाकर्ण महावीर बळिया धीर, शांति जगमां

(३७२)

पसारो; तहारो महिमा अपरंपार हो वीर!!! संघर्मा शांति प्रचारो. ॥ माग्रं न मागणपेठे स्वार्थे, बाधा मान्यता सर्वे; राखे ते नहीं जैनो भक्तो, तुज प्रेमे रहियो अगर्वे हो वीर! संघमां० ॥ १ ॥ स्वार्थथी मान्यता बाधा वण हुं, धर्मनुं सगपण धारी; दीपक करीने प्रेमे पूर्जुं, निष्काम जाव वधारी, वीर! संघ-मां० ॥ २ ॥ याचक थइ तुज पासे न याचुं, ऋातम प्रेमे राचुं; शुद्ध प्रेमधी सगपण साचुं, परमार्थे नित्य माचुं हो वीर! संघमां० ॥ ३ ॥ लाज न जावा देजे वीरा, सहायक वड धीरा; महिमा न जूठो पडवा देजे, समकिती गुण हीरा हो वीर!!! संघमां० ॥ ४ ॥ धर्मी वीरा साथे रहेशो, धर्मे स्हायने देशो; परमार्थे पुजनने वहेशो, कीधुं ध्यानमां लेशो हो वीर ! संघमां० ॥ ५ ॥ सर्व जगत्मां महिमा छवा-यो, उग्यो रवि न छुपायो; साधर्मिक प्रीतिए सुहा यो, कलिमां जागतो गायो हो वीर ! संघमां० ॥६॥ जेम घटे तेम मित्रनी पेठे, धर्ममां साथी रहेशो; बु-

(३७३)

ब्रिसागर प्रत्यक्ष अनुजन, महावीरनो संदेशो हो कीर!!! संबमां०॥ ७॥

ॐ घंटाकर्ण महावीराय शांति तुष्टि पुष्टयर्थे दीपं यजामहे स्वाहा ॥

तृतीया पुष्प पूजा.

दशमे देशावगाशिकरे. ए राग.

प्रभु महाबोर शासनेरे, घंटाकर्ण सुवीर; शा-सन रिसया देव छोरे, टाळो जक्तनी पीम हो; ज-गमां. जैनधर्म प्रसरावजोरे, संघनी व्हारे आवशोरे; करशो समरे सहाय० ॥१॥ पुष्पनी माळा कंठमांरे, स्थापी हरखुं चित्त; साधर्मिक देव प्रीतिथीरे, दिखकुं यातुं पिनत्र हो. जगमां० ॥२॥ साधर्मिक देव रीति हेरे, प्रार्थ्या वण करे काज; धर्म कष्ट पडतां थकांरे, राखे स्वधर्मी लाज हो. जगमां० ॥३॥ दिख्यांषधीथी महाबखीरे, देव कृपा सुखकार; मुक्ति पंथमां भक्त-

(308)

नेरे, साज घणी करनार हो. जगमांण ॥ ४ ॥ नर्नारी जे जे जावथीरे, जावे ते ते जाव; फख पामें भावे खहरे, देख्या ते ते बनाव हो. जगमांण ॥ ५ ॥ प्रभु महावीर देवनोरे, तुं वडजक्त छे वीर; विश्वमां सर्वत्र जागतोरे, सागरसम गंजीर हो. जगमांण ॥ प्रभु महावीरना संघनीरे, सेवामां लय खीन; बुद्धिसार भक्तिमारे, जलमां ज्युं वर्ते मीन हो. जगमांण ॥ ७ ॥

अ घंटाकर्ण महावीराय जैनशासन रक्षकाय पुष्पं च पुष्पमाखां यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्थी सुखडी नैवेद्य पूजा.

विमला नव करशो उच्चाट. ए राग.

घंटाकर्ण महावीर स्हाये व्हेखा आवशोरे; प्रेमे धर्मीओन स्हाय करीने सुहावशोरे-परमब्रह्म महावीर

(३७५)

मामे, शरण करी जे ठरतो ठामे; तेवा भक्तोमी ज-किमा धून लगावशोरे. घंटाकर्ण, ॥१॥ श्रद्धा प्रीति प्रेर्या ह्यादो, जिक्तविना नथी कोइनो दावो; जयकर मंगलमाला, कीर्तिध्वज फरकावशोरे. घंटाकर्ण. ॥२॥ क्षणमां पृथ्वीने डोखावो, क्षणमां मेरुने कंपावो: एवो महिमा रहारो, शापने ताप शमावशोरे. घंटाकर्ण. ॥ ३ ॥ दुर्जन दुष्टोनेज हठावो, जैनधर्म जगमां फेळावो; प्रभुश्री महावीर नामना जर्पने जग प्रस-रावशोरे. घंटाकर्ण. ॥ ४ ॥ तुज प्रेमी घर मंगलमा-ला, पुत्रादिक धन ऋष्टि विशाला: श्रापी वांतित सहुने चित्त प्रसन्न सुहावशोरे. घंटाकर्ण. ॥ ५ ॥ पुएयोद्ये तुज साधन मळतुं, श्रद्धा प्रीति योगे फ-ळतुं; प्रगटी शासन सेवामांही चित्त खगावशोरे. घंटाकर्ण. ॥ ६ ॥ प्रत्यक्ष प्रेमे महावीर दीठा, शासन देवा खाग्या मीठा: बुद्धिसागर दिलमां प्रभु संदेश जणावशोरे. घंटाकर्ष. ॥ ७ ॥

(398)

अ घंटाकर्ण महादीर जैन शासन रक्षकाय शां-तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धि वृद्धिं कुरु कुरु नैवेचं यजामहे स्वाहा ॥



पंचमी श्रीफल पूजा.

आवशो आवशो खावशोरे मुज पासे महावीर आवशो. श्रद्धा प्रेमना जोरे पधारो, धर्ममां बुद्धि कः रावशोरे. मुज० ॥ १ ॥ जैन धर्ममां स्वार्पण कारक,— भक्तने प्रत्यक्त थावशोरे. मुज० उपर उपरनां खटक सल्लामियां, नास्तिक पासे न आवशोरे, मुज० ॥२॥ नाम ने रूपना मोहे मरेला, भक्तोनी खांखे सुहा-वशोरे. मुज० संतमां जिक्त पूर्ण धरीने, खातमभावे लय लावशोरे. मुज० ॥ ३ ॥ शासन रागे धर्म प्रभा-वक—बनीने प्रभुने जावशोरे; मुज० सकल संघनी सेवा सारी, परम ब्रह्मपद पावशोरे. मुज० ॥ ४ ॥ नुज पूजाथी धर्मीजनोनी, धर्म बुद्धि स्थिर थावशोरे.

(३७७)

मुज॰ बुडिसामर ऋषि वृद्धि, कीर्ति जय जग पा क्योरे. मुज॰ ॥ ५॥

कलश गीत.

गायो गायोरे एम शासन वीरने गायो, पंच प्रकारे पूजा रचीने, समिकत शुद्धिए छायोरे. एम॰ ॥१॥ षंटाकर्ण महाचीर पूजा, कीर्तनथी गुण पायो; सम्यग्दृष्टिदेवनी स्तुति, करतां हवें उमाद्योरे. एम०॥२॥ तपगच्छ सागर शाखा मांहि, नेमिसा-गर गुरु रायो; रिक्सागर गुरु सुखसागर गुरु, जैन-धर्म फेखायोरे. एम०॥३॥ साशु खादि सर्व संघती, बुद्धि थाशो पसायो; सर्व प्रकारे उन्नति खाशो, आ-श्रीवांद सुद्दायोरे. एम०॥॥ ओगाणिश खाळ्योत्तर अक्षय त्रीज, विजापुर जयकारो; बुद्धिसागर चढते पद्दारे, सुख पामो नरनारीरे. एम०॥५॥

ॐ ही मंटाकर्ण महावीराय, सर्वश्चद्रापद्रव सेग निवारणाय, इष्ट फब्बसाभाय फलं यजामहे स्वाहा॥ ॐ अहि महावीर शांतिः

(३७८)

श्री घंटाकर्ण महावीरनी आरती

घंटाकर्ण महावीर गाजे, जड चेतनजगमहि-मा ढाजे; मनवांछित पूरण करनारा, जक्तजनोन। भय हरनारा. घं. आधि व्याधि उपाधि हरता, रोग उपद्रव दुःख संहरता. घं० ॥ १ ॥ ऋदि सिद्धि मं गल करता, सत्वर सहाये पगलां भरता. घं. तुज स्मरणथी वांछित मेळा, भक्तोनी थाती शुभ वेळा. घं ॥ २ ॥ घंटाकर्ण महावीर त्हारी, आरती करतां जे नर नारी; आरत चिंता शोक निवारी, धर्मी थातां दोषने टाळी. घं०॥३॥ गाजी रह्यो जग-मांही सघळे, घरमां सागरमां रणवगडे; स्हाय करंतो वादे झघडे, दुष्टोथी कंइ शुभ न बगडे. घं• ॥ ४॥ देश नगर संघ वर्ती शांति, भक्तजनोनी वधशो कांति: महामारी जय संकट नासो, आरोग्य आ-नंदे जग वासो. घं० ॥ ५ ॥ मंगल माला घर घर प्रगटो, इति उपद्रव विघ्नो विघटो; शांति स्थानंदने प्रगटावो, स्मरतां झट व्हारे खावो. घं० ॥ ६ ॥

(३७९)

श्चारम महावीर शासन राज्ये, सेवा कारक जगमां गाजे; बुद्धिसागर श्चातम काजे, क्षण क्षण ब्हेलो सहाये थाजे. घं०॥ ७॥

ग्रुरुनी आरती.

जय जय ग्रह्मर जग जयकारी, आरती करतां आनंद भारी. जय॰ मही थाळीमां शशी सूरजनी, ख्रारती कुद्रते प्रेमे उतारी. जय॰ ॥ १ ॥ पिंड अने ब्रह्मांडमां मित श्रुत,—आरती थाती जग उपकारी. जय॰ केवलज्ञाननो मंगल दीवो, थातो ग्रह्मम ज्ञान विचारी. जय॰ ॥ २ ॥ जम चेतन सौन्दर्य प्रसारी, सहेजे आरती करे हितकारी. जय॰ आरत टाळे आरती सारी, ग्रुगोग्रुग जीवो ग्रह ग्रुणकारी. जय॰ ॥ ३ ॥ आरती करनारां नरनारी, ख्रानंद पामो मोह निवारी; समिकत दाता ग्रह सुखकारी, जग चिंतामण जग उपकारी. जय॰ ॥ ४ ॥ सेवा भिक्त घृत

(३८०)

भर्यु जारी, कर्मयोग दोनेट वे सारी; बुद्धिसागर गुरु व्यवहारी, ताहारी जाउं सदा बिहारी. जय०॥॥॥

॥ मंगल दीपक ॥

जग गुरु जग जय मंगस दीवो, चतुर गुरु जग चिरंजीवो. जग० चन्द्र सूरज यह फरता फेरा, गुरु रुना प्रकारो रहे न अंधेरा. जग०॥१॥ वेदागम तुज महिमा गावे, गुरु कृपावडे मुक्ति थावे. जग० निश्चय भावथी मंगलरूपी, सदसद्रूपी रूपारूपी. जग०॥२॥ पंचभृत उपमा नहीं पावे, अलख कळा नहीं समजी जावे; बुद्धिसागर मंगल माला, पामो ऋदि वृद्धि विशाला. जग०॥३॥

(३८१) जिनेश्वर देवनी श्रारती.

अप्सरा करती आरती जिन द्यांगे ए राग.

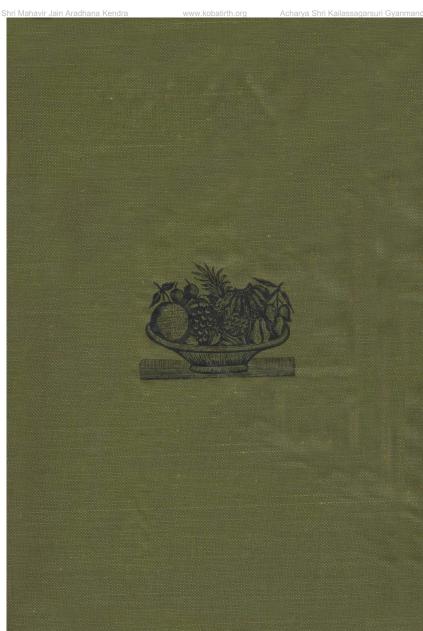
जय जिनवर जिनराजजी जयकारी, परमेश्वर जग उपकारी; जग जीवोने हितकारी, तार्यी नरने नार. जय० ॥ १ ॥ चन्द्र सूरज तुज खारती रूप शोभे, तुज महिमाए जग थोजे; तुज महिमा अपार. जयः ॥ २ ॥ तुज आणाए विश्वमां द्रव्य वर्ते, ज्ञान **ब्याज्ञाएज प्रवर्ते**; कोइ लोपे न ब्याण. जय० ॥ ३ ॥ देव देवी नर नारीस्रो मळी नाचे, तुज रूप ग्रण देखी माचे; बनी जिक्त मगन्न. जय०॥ ४॥ कोटि वर्ष कोटि जीभथी न गवाये, कोटि दिलमां न ध्या-तां समाये; परा पर्श्यती पार. जयवा । ५॥ घनगर्जे मोर टहुकतो मन हर्षे, खुशी चातक घन जब वर्षे; तुज दर्शने मुज मन तरसे, देखी दिखडुं प्रसन्न. जयः ॥ ६ ॥ मही जलवायु अग्निने नन्न पंच, तेनी उपमा न तुजने रंच; तुं तो निरुपम देव. जय०॥७॥

(३८२)

सर्वमांही ने सर्वथी प्रभो न्यारा, सदसद् ग्रण पर्यायाधारा; वीतरागने सर्वज्ञ प्यारा, सर्वदेवना देव. जय०॥८॥ परमब्रह्म महावीरजी जगत्राता, तुंहि माता पिता ने ज्ञाता; बुद्धिसागर यो सुख शाता, संघ मंगस मास. जय०॥९॥

(३८३) मंगख दीपक.

जय जिनवर तुज जग बलिहारो, विश्वोद्धारक जग उपकारी. जय० मंगलदीवो मंगलकारी, तेथी पूर्जुं जिन जयकारी. जय०॥१॥ द्रव्यभाव मंगख **ऋ**वतारी, तुज भक्तें मंगल निर्धारी. जय० जगमां मोटो मंगस दीवो, विश्व जीवन तुं चिरंजीवो. जय० ॥ १ ॥ शक्ति अनंती अगम अपारा, सर्व जीव दि-ल्मां छो प्यारा: जय० नय निक्षेपथी निश्चय न्यारा, सर्व विश्वना छो त्र्याधारा. जय० ॥ ३ ॥ ग्रुणपर्याय अनंता दरिया, अनंत शक्ति स्वन्नावे न्नारिया. जय० नवग्रह इन्द्रादिक तुज बंदा, निशादिन सेव करे सू-रचंदा. जय० ॥ ४ ॥ परब्रह्म महावीर गवाया, छ-रिहंत परमेश्वर जिनराया; जय० बुद्धिसागर मंगल राया, पूजी प्रेमे तुज ग्रण गाया. जय० ॥ ५ ॥



For Private And Personal Use Only